खण्ड-312, अंक-8
शुक्रवार, 13 पौष, शक संवत् 1896
(3 जनवरी, 1975 ई0)

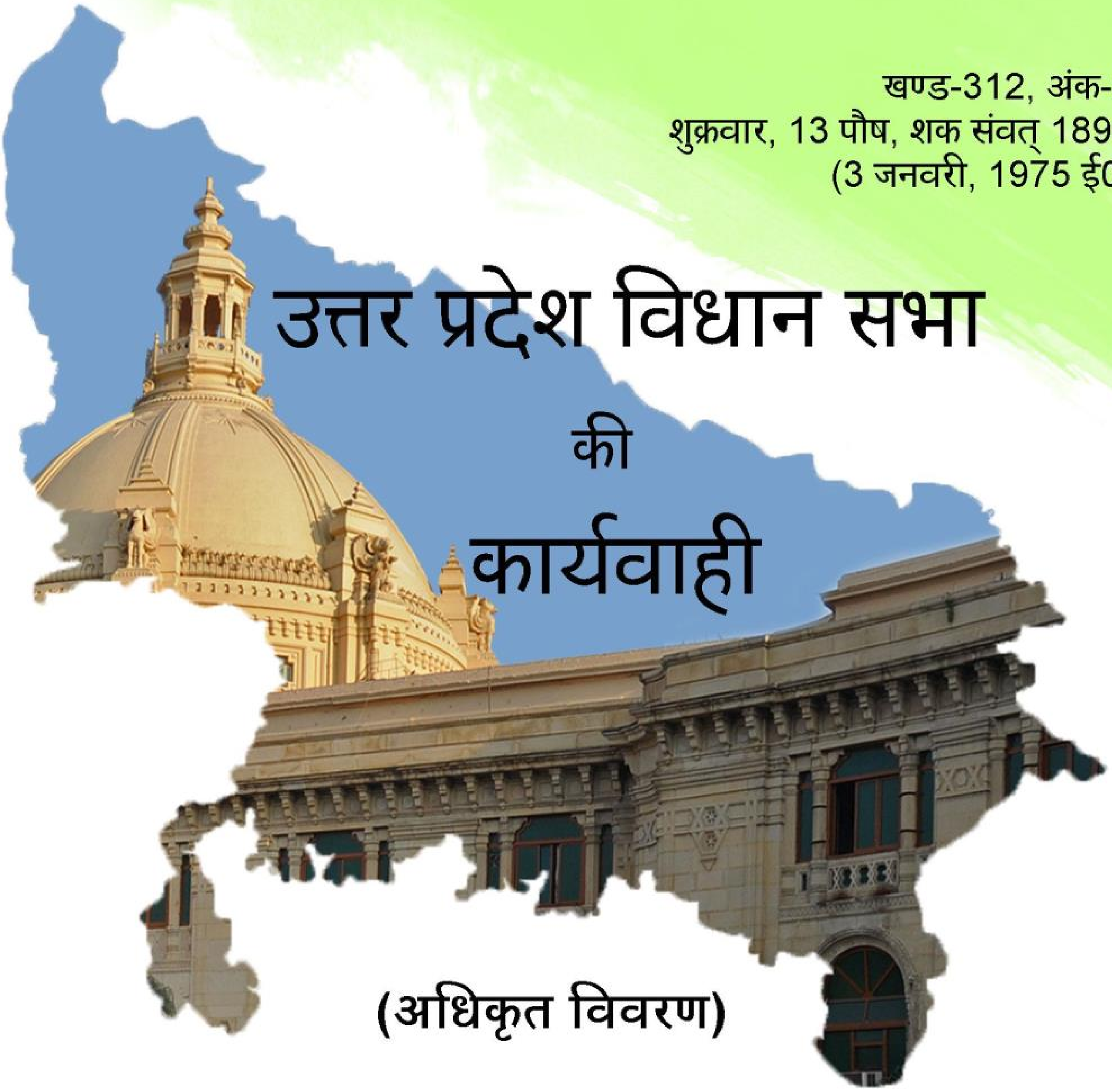

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 312 में 8 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1975

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा की दिनांक 3 जनवरी, 1975 की कार्यवाही का शुद्धि-पत्र

क्रम-सं0	पृष्ठ-सं0	विवरण
1	2	3
1	957	कालम 2 में नीचे के चौदहवीं पंक्ति में "खब चन्द, श्री" के स्थान पर "खूब चन्द श्री" पढ़ा जाय।
2	958	कालम 1 में नीचे से पांचवीं पंक्ति में "ज्ञाजेन्द्र स्वरूप, श्री" के स्थान पर "ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री" पढ़ा जाय।
3	958	कालम 1 में नीचे से नवीं पंक्ति में "जयराम गौतम, श्री" के स्थान पर "जयराज गौतम, श्री" पढ़ा जाय।
4	959	कालम 2 में नीचे से सोलहवीं पंक्ति में "मल चन्द, राजपूत, श्री" के स्थान पर "मूल चन्द राजपूत, श्री" पढ़ा जाय।
5	960	प्रथम कालम की प्रथम पंक्ति में "रघुराज सह, श्री" के स्थान पर "रघुराज सिंह, श्री" पढ़ा जाय।
6	960	द्वितीय कालम की ग्यारहवीं पंक्ति में "राम सजवन, श्री" के स्थान पर "राम सजीवन, श्री" पढ़ा जाय।
7	971	नीचे से आठवीं पंक्ति में "किस" को "जिस" पढ़ा जाय।
8	979	नीचे से द्वितीय पंक्ति में "बाढ़ ग्रस्त" और "को" के मध्य "जिलों" पढ़ा जाय।
9	982	12वीं पंक्ति में "श्री मलिखान सिंह' के स्थान पर "डाक्टर मलखान सिंह" पढ़ा जाय।
10	984	12वीं पंक्ति में अंक "986–1092" के स्थान पर अंक "1086–1092" पढ़ा जाय।
11	984	नीचे से 13वीं पंक्ति में शब्द "कोडलाहार" को "कोठलाहार" पढ़ा जाय।
12	984	नीचे से छठीं पंक्ति में "जमीन" को "जदीद" पढ़ा जाय।
13	985	ऊपर से चौदहवीं पंक्ति में अंक "74 व 1973-74" के स्थान पर "73 व 1973-74" पढ़ा जाय।
14	985	अन्तिम पंक्ति में शब्द "कि" और "हमेशा" के मध्य "वह" पढ़ा जाय।
15	986	नीचे से दसवीं पंक्ति में "प्राविधान" को "विधान" पढ़ा जाय।
16	987	नीचे से नवीं पंक्ति के पहले "फिर यही कहा जायगा—अध्यक्ष महोदय, वही लम्बा प्रोसीजर होगा? तो" पढ़ा जाय।
17	993	चौदहवीं पंक्ति में "विरोधी" और "ने फरनाया" के मध्य शब्द "दल" पढ़ा जाय।
18	996	नीचे से दसवीं पंक्ति में "कहते है" और "आप" के मध्य शब्द "के" के स्थान पर "यहां" पढ़ा जाय।
19	997	13वी पंक्ति में शब्द "सत्य" तथा "बात" के बीच से शब्द "है" निकाल कर पढ़ा जाय।
20	998	नीचे से नवी पंक्ति में शब्द "तथा" के स्थान पर "था" पढ़ा जाय।
21	1004	11वीं पंक्ति में "firm" और "discuss" के मध्य "to" पढ़ा जाय।
22	1004	नीचे से पांचवीं पंक्ति में "सेकती है" के स्थान पर "जाती है" पढ़ा जाय।

1	2	3
23	1005	अन्तिम पंक्ति में शब्द "यह" के बाद "सवा के स्थान पर "सवाल" पढ़ा जाय।
24	1013	नीचे से सोलहवीं पंक्ति में शब्द "जेष" के स्थान पर "शेष" पढ़ा जाय।
25	1018	नीचे से द्वितीय पंक्ति के "अन्तिम शब्द "इन्डस्ट्रियल" के बाद "पीस" पढ़ा जाय।
26	1021	तृतीय पंक्ति में शब्द "क्विन्टल" और "खेतों" के मध्य "गन्ना" पढ़ा जाय।
27	1021	नीचे से पंचम पंक्ति में "सन्तुष्ट" और "है" के मध्य का शब्द "नहीं" निकाल कर पढ़ा जाय।
28	1026	नीचे से द्वितीय पंक्ति में शब्द "कभी" को "सभी" पढ़ा जाय।
29	1030	16वीं पंक्ति में शब्द "श्री घमवीर" को "श्री धर्मवीर" पढ़ा जाय।
30	1031	छठी पंक्ति में शब्द "यह" और "कर" के मध्य शब्द "कह" पढ़ा जाय।
31	1036	श्री रामायण राय के भाषण के दूसरे पैरा की छठीं पंक्ति में शब्द "बात" के स्थान पर "भ्रम" पढ़ा जाय।
32	1036	श्री रामायण राय के भाषण के दूसरे पैरा की अन्तिम पंक्ति में "थोड़ा और "इधर" के मध्य शब्द "आभास" पढ़ा जाय।
33	1037	अंग्रेजी के उद्धरण की सातवीं पंक्ति में शब्द "Sat" को "Jat" पढ़ा जाय।
34	1039	18वीं पंक्ति में "आर0 डी0 ओ0 के स्थान पर "आर0 टी0 ओ0" पढ़ा जाय।
35	1041	अन्तिम पैरा की द्वितीय पंक्ति में शब्द "महल" को "महज" पढ़ा जाय।
36	1042	नीचे से 18वीं पंक्ति में "3 घंटे" के स्थान पर "2 घंटे" पढ़ा जाय।
37	1045	11वीं पक्ति में शब्द "is" को "his" पढ़ा जाय।
38	1046	नीचे से चौथी पंक्ति में शब्द "Prominence" के पूर्व "to" जोड़ कर पढ़ा जाय।
39	1047	पांचवीं पंक्ति में शब्द "Chern" के स्थान पर "Charan Singh" पढ़ा जाय।
40	1056	द्वितीय पैरा में नीचे से पांचवीं पंक्ति में शब्द "सेल्स" के पश्चात् "टैक्स" जोड़ कर पढ़ा जाय।
41	1063	लाइन के ऊपर नीचे से दसवीं पंक्ति में "जब" के स्थान पर "जो" पढ़ा जाय।
42	1068	लाइन के ऊपर नीचे से तृतीय पंक्ति में शब्द "कठोर" को "कठोरतम" पढ़ा जाय।
43	1070	नीचे के तृतीय पंक्ति का प्रथम शब्द "डिशिपल" के स्थान पर "जुडिशियल" पढ़ा जाय।
44	1076	तृतीय पैरा की द्वितीय पंक्ति का शब्द "मत" निकाल कर पढ़ा जाय।
45	1081	16वीं पंक्ति में शब्द "तो" के स्थान पर शब्द "जो" पढ़ा जाय।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, ३ जनवरी, १९७५

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री वासु देव सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य ३९१

अंगने लाल, श्री
अजीजुर्रहमान, श्री
अजीत प्रसाद सिंह, श्री
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम श्री
अनवार जमील, श्री उर्फ जिमी मियां (एडवोकेट)
अनिरुद्ध राय, श्री
अब्दुल बाकी, श्री
अब्दुल रऊफ लारी, श्री
अब्दुल रहमान खां नशतर, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अम्बिका प्रसाद सिंह, श्री
अम्मार रिजवी, श्री
अवधेश कुमार, श्री
आगा जैदी, श्री
आनन्द स्वरूप, श्री
आबिद अली, श्री
आशा राम यादव, श्री
इन्द्र मोहनी, श्रीमती
इन्द्र लाल, श्री
ईश्वरी सिंह, श्री
उदय नाथ, श्री
उमानाथ, श्री
ऊदल, श्री
एदल सिंह श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओम प्रकाश श्रीवास्तव, श्री (जिला जौनपुर)
ओम प्रकाश सिंह, श्री (जिला मिर्जापुर)
ओम प्रकाश, श्री (जिला मुरादाबाद)
ओम प्रकाश, श्री (जिला शाहजहांपुर)
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कबूल सिंह, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काजी जलील अब्बासी, श्री
काली चरण यादव, श्री
काशी नाथ मेहरोत्रा, श्री
काशी नाथ मिश्र, श्री
काशी प्रसाद, श्री
किशन लाल, श्री
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री
कुलतार सिंह, सरदार
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण दत्त, श्री (उर्फ बालराज)
कृष्णवीर सिंह, श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्णा राय, श्री
केदार नाथ अग्रवाल, श्री
केशरी लाल, श्री
कैलाश पति, श्रीमती
कैलाश सिंह, श्री
क्रान्ति कुमार, श्री
खब चन्द, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा देवी विशारद, श्रीमती
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा स्वरूप, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद आर्य, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गया सिंह, श्री
गायत्री देवी, श्रीमती
गिरिजा किशोर मिश्र, श्री
गिरिजा शंकर पाठक, श्री
गुलाब चन्द, श्री

गुलाब सिंह, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गोपाल दत्त ओझा, श्री
गोपी नाथ कामेश्वर पुरी, श्री
गोविन्द प्रसाद गैरोला, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री (जिला अल्मोड़ा)
गोविन्द सिंह नेगी, श्री
(जिला टिहरी गढ़वाल)
गौरी शंकर, श्री (एडवोकेट)
चन्दन सिंह, कामरेड
चन्द्र पाल सिंह, श्री
चन्द्र भान आजाद ,श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरण सिंह, चौधरी
चरण सिंह डाक्टर,
चितरंजन स्वरूप, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा लाल चौधरी, श्री
जंग बहादुर, श्री (अतरौलिया, जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, श्री (मेहनगर,,जिला आजमगढ़)
जंग बहादुर, वर्मा श्री (जिला बाराबंकी)
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदीश मिश्र, श्री
जगदीश अवस्थी, श्री
जगदीश नरायन त्रिपाठी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, जी
जटाधर बाजपेयी, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जफर आजमी, श्री
जुमुना प्रसाद बोस, श्री
जय नारायण सिंह, श्री
जयराम गौतम, श्री
जागेश्वर, श्री
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डाक्टर
जुगल किशोर यादव, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झाम लाल अहिरवार, श्री
झिलमिट, श्री
तीरथ राम कोहिली श्री
तेजनरायन, त्रिवेदी, श्री
तेज बहादुर, श्री
तेज सिंह श्री
त्रिवेणी सहाय, श्री
त्रिवेनी, श्री
दधीच सिंह, श्री
दया राम भास्कर, श्री
दलसिंह यादव, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दीना नाथ सेवक, श्री
दीपनारायन बन महन्थ, श्री
दीपनारायण पाण्डेय, श्री
दुर्योधन, श्री
दुलारा देवी, श्रीमती
देव कुमार यादव, श्री
देव बहादुर सिंह, श्री
देवी सिंह, श्री
धरम राम, श्री
धर्म चन्द्र मिश्र, श्री
धर्मपाल सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
धर्मपाल सिंह, डाक्टर (जिला फर्रुखाबाद)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
धर्म सिंह, श्री
धीरेन्द्र सहाय, श्री
ध्रुव नारायण सिंह, श्री
नजीर अहमद; श्री
नजु राम, श्री
नत्थू सिंह यादव, श्री
नन्द राम ,श्री
नन्हे लाल, श्री
नरेन्द्र सिंह भंडारी, श्री
नाथू राम, श्री
नारायण दत्त तिवारी, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण हरी शर्मा, श्री
निर्भय नरायन सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)
निसार अहमद अन्सारी, श्री
पुरुषोत्तम कौशिक, श्री (जिला देवरिया)
पुरुषोत्तम दास चौधरी, श्री (जिला मिर्जापुर)
पुरुषोत्तम लाल बधवार, श्री (उर्फ राजाजी)
पूरन चन्द, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री (जिला अलीगढ़)

प्यारे लाल वर्मा, श्री (जिला एटा)
प्यारे लाल, श्री (जिला मेरठ)
प्रकाश नारायण गुप्ता, डाक्टर
प्रताप नारायण, श्री
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री
प्रभाकर सिंह, बाबू
प्रभु नारायण, श्री
प्रभु दयाल, श्री
प्रियदर्शी जेटली, श्री
प्रेम दत्त, श्री
प्रेम सुन्दर नरायण सिंह, श्री
फरजन्द अली बेग, श्री
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री
बंशीधर, श्री
बच्चा पाठक, श्री
बनवारी राम यादव, श्री
बलदेव सिंह आर्य, श्री
बलबीर सिंह यादव, श्री
बलवान सिंह, श्री
बलदेव, श्री
बांके लाल, श्री
बादाम सिंह, श्री
बाबू लाल तिवारी, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू सिंह यादव, श्री
बालकृष्ण सनवाल, श्री
बृजपाल सिंह यादव, श्री
बेचन राम, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
बेनी बाई, श्रीमती
बैजनाथ यादव, श्री
बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री
भगवत दयाल, श्री
भगवती चरण निर्मोही, श्री
भगवती प्रसाद, श्री
भगवती सिंह विशारद, श्री
भगौती प्रसाद, श्री
भगौती प्रसाद शुक्ल, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भारत सिंह चौहान, श्री
भीखा लाल, श्री
भीषम, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भूपसिंह केन, श्री
भोला दत्त सकलानी, श्री
मंगरे सिंह, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मनीराम, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्नू खां)
मन्ना लाल, श्री
मन्नी लाल, श्री
मलखान सिंह, डाक्टर (जिला जालौन)
मलखान सिंह सैनी, श्री
(जिला मुजफ्फरनगर)
मलिक मोहम्मद जमीर अहमद खां, श्री
महाबीर प्रसाद, श्री
महाबीर सिंह, श्री
महेन्द्र सिंह, श्री
महेश सिंह, श्री
माखन लाल मिश्र, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधव प्रसाद त्रिपाठी, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मानबहादुर सिंह, श्री
मुन्शी लाल, श्री
मुन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मुलतान सिंह यादव, चौधरी
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुहम्मद असरार अहमद, श्री
मुहम्मद मसूद, श्री
मुहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री
मुहम्मद हयात, श्री
मल चन्द राजपूत, श्री
मेघ नाथ सिंह शिशोदिया, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल कपूर, श्री
मोहन सिंह, श्री
मोहम्मद अयूब सिद्दीकी, श्री
मोहम्मद असलम, श्री
मोहम्मद महमूद अली खां, श्री
मोहम्मद शकील अहमद, श्री
मोहसिना किदवाई, श्रीमती
यशपाल सिंह, श्री
यादवेन्द्र सिंह, श्री (उर्फ लल्लन जी)
रघुनाथ सिंह, श्री
रघुबीर, श्री
रघुबीर सिंह, श्री
रघुराज सिंह, श्री (जिला गोंडा)

रघुराज सह, श्री (जिला देवरिया)
रणंजय सिंह, राजा
रणजीत सिंह, 'जूदेव', श्री
रणधीर सिंह, श्री
रफीउल्ला, श्री
रमा पंत, कुमारी
रमाकान्त द्विवेदी, श्री
रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री
राघवेन्द्र सिंह श्री
राजकिशोर तिवारी, श्री
राजपती देवी, श्रीमती
राजपाल, श्री
राजबहादुर, श्री
राजबहादुर चन्द, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राज मंगल पाण्डेय, श्री
राजेन्द्र कुमार गर्ग, श्री
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद दौनेरिया, श्री
राजेन्द्र शाह, श्री
राजेन्द्र सिंह, श्री
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री
राधा चरण सिंह ठाकुर, श्री
राम अधार, श्री
राम औतार सिंह भदौरिया, श्री
रामगरीब, कैप्टेन
राम जनम राय, श्री
रामजी, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामजी लाल सेन, श्री
राम दयाल सिंह, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव, श्री
रामदेव यादव, श्री
राम नाथ, बाबा
राम नारायण पाठक, श्री
राम निहोर, श्री
राम पति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
राम पाल सिंह, श्री
राम पाल सिंह यादव, चौधरी
राम पूजन पटेल, श्री
राम प्यारे तिवारी, श्री
राम प्रकाश यादव, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
राम बचन, श्री
राम रतन सिंह, श्री
रामरति बिन्द एडवोकेट, श्री
रामरती देवी, श्रीमती
राम लखन, श्री (जिला इटावा)
राम लखन, श्री (जिला बस्ती)
राम लाल राही, श्री
राम शिरोमणि दूबे, श्री
राम सज धन, श्री
राम समझावन, श्री
राम समुझ तिवारी, श्री
राम सुन्दर पाण्डेय, श्री
राम सेवक धोबी, श्री
राम स्वरूप भारतीय, श्री
राम हर्ष चौधरी, श्री
रामायण राय, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
रुद्र प्रसाद, श्री
रूप राम, श्री
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्ष्मी नरायण पांडेय, श्री
लक्ष्मी प्रसाद वर्मा, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लटूरी सिंह, श्री
लालन शर्मा, श्री
लालू राम, श्री
लोकपति, श्री
विक्रम सिंह, श्री
विजय कुमार, श्री
विजयपाल सिंह, श्री
विद्याधर, श्री
विमल प्रसाद तिवारी, श्री
विश्राम, श्री
वीर बहादुर सिंह, श्री
वीर सिंह, सेंगर, श्री
वीरेन्द्र कुमार, चौधरी
वीरेन्द्र वर्मा, श्री
वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, श्री
वेद प्रकाश अग्रवाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शतरुद्ध प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शान्ति देवी यादव, श्रीमती

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शिव कुमारे पाण्डेय, श्री
शिव कुमारी दुबे, श्रीमती
शिव कैलाश, श्री
शिवचरन लाल, श्री
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, कुंवर
शिवपाल सिंह, श्री
शिव प्रसाद गुप्त, श्री (जिला आगरा)
शिव प्रसाद, श्री (जिला आजमगढ़)
शिव लाल, श्री
शिव शंकर सिंह, श्री
शिव सम्पति राम, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
श्याम किशोर, डाक्टर
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम मिश्रा, श्री
श्याम लाल रावत, श्री
श्यामा देवी, श्रीमती
श्री नारायण, श्री (उर्फ भुलई भाई)
श्रीपाल सिंह, कुंवर
श्रीश चन्द्र, श्री
सच्चिदानन्द बाजपेयी, श्री
सत्तार अहमद, श्री
सत्यपाल मलिक, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्य प्रकाश मालवीय, श्री
सत्यवीर सिंह, श्री
सन्तोष कुमारी पाठक, श्रीमती
सरस्वती टम्टा, श्रीमती
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री
सलाहउद्दीन उस्मानी, श्री (उर्फ नब्बन)
सीताराम निषाद, श्री
सुक्खन सिंह, श्री
सुखदा मिश्रा, श्रीमती
सुखदराज सिंह, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल कुरील, श्री
सुरेन्द्र प्रताप नारायन, श्री
सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री
सुल्तान सिंह यादव, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सैयद मुर्तजा अली खां, नवाब
सोहन लाल, श्री (जिला बदायूं)
सोहन लाल लाठ, श्री (जिला रामपुर)
सोहन लाल धुसिया, श्री
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरि राम, श्री
हरीश कुमार गंगवार, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम सिंह, श्री
हुब राज, श्री
हेमराज सिंह, श्री
हेमवती नन्दन बहुगुणा, श्री

नोट:—लघु उद्योग मंत्री, श्री इस्तफा हुसैन भी सदन में उपस्थित थे ?

प्रश्नोत्तर

शुक्रवार, ३ जनवरी, १९७५

अल्प सूचित तारांकित प्रश्न

प्रदेश में शीत लहरी से मृत्यु

**१—श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोडा), श्री दशरथ सिंह (जिला गोंडा) तथा श्री रामपति (जिला गोंडा)—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि दिनांक १ दिसम्बर, १९७४ से १६ दिसम्बर, १९७४ तक सम्पूर्ण प्रदेश में कितने व्यक्तियों की मौत शीत लहरी के कारण हुयी है ? सरकार ने शीत लहरी से मरे व्यक्तियों की सहायता पहुंचाने हेतु क्या किया है ?

राजस्व मंत्री (श्री स्वामी प्रसाद सिंह)—

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु शीत लहरी से नहीं हुई है। शेष भाग का प्रश्न नहीं उठता।

श्री त्रिवेणी सहाय—

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे यह कहना है कि सरकार ने यह जवाब देकर पूरे प्रदेश को अंधकार में रखा है। सरकार की रिपोर्ट यह सरासर गलत है। आप देखें अखबारों में निकला है। "स्वतन्त्र भारत" की खबर ह २१ दिसम्बर की, जिसमें ४२ मरे। "नवजीवन" की खबर ह १७ दिसम्बर की, उसमें फोटी भी छपा है। इसमें लिखा हुआ है—"५०वर्षीय व्यक्ति टाट के टुकड़े ओढ़े हुए मृत पाया गया।" उसके बाद २० दिसम्बर की खबर है शीत लहरी में २४ घंटे में १२ व्यक्ति मरे। "दैनिक जागरण" में एक समाचार प्रकाशित हुआ है—"शीत से मरने वालों की संख्या ६४ हुई प्रदेश में शीत लहरी से मरने वालों की संख्या आज चौंसठ हो गयी। सरकारी सूत्रों के अनुसार जिन दो व्यक्तियों की आज मृत्यु हुई वे दोनों ही बहराइच जिले के रहने वाले हैं। गढ़वाल क्षेत्र में हिमपात जारी है इसलिए संबंधित इलाकों में विशेष ठंड पड़ने की सम्भावना है।" इसमें लिखा हुआ है—"सरकारी सूत्रों के अनुसार" ज्ञात हुआ है। क्या माननीय मंत्री जी इन सब समाचारपत्र को देखते हुए इस बात की जांच कराएंगे कि प्रदेश में विभिन्न जिलों में शीत लहरी से मृत्यु हुई हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, अखबारों की खबर की भी जांच हुई है। अगर माननीय सदस्य किसी के नाम दे दें तो पार्टिकुलर जांच करायी जा सकती है।

श्री कमला प्रसाद वर्मा (जिला बहराइच)—

क्या माननीय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जैसी सूचना सरकारी तौर पर दी गयी है बहराइच में २ व्यक्ति शीत लहरी से मर गये, क्या इसकी पुनः जांच कराएंगे ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

नाम दे दें तो डेफिनिटली उसकी इनक्वायरी करा ली जायगी।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

जब समाचारपत्रों में प्रकाशित हो चुका है, और म अपनी जानकारी के आधार पर इस बात को कह रहा हूं तो आप को अलग से नहीं मांगना चाहिये, जिला अधिकारियों से क्यों नहीं पूछताछ कीजाती है, कि कौन-कौन व्यक्ति मर गये हैं ?

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

माननीय सदस्य कह रहे हैं, मंत्री ने कह दिया कि लिख कर दे दें। आश्वासन समिति में भी इस प्रकार की व्यवस्था है और इसी चेयर से व्यवस्था हो चुकी है कि माननीय सदस्य जो जबानी कहते हैं उसको मानना चाहिये तो क्या लिखा ज्यादा इतमीनान बख्श माना जाता है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

डेफिनिट नाम से डाइरेक्ट इनक्वायरी हो जायगी कि कौन दो आदमी मरे वैसे जिलों से आया है कि कोई ऐसा व्यक्ति कोल्ड से नहीं मरा है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

हां, ठीक है।

श्री शफीकुर्रहमान बर्क (जिला मुरादाबाद)—

क्या मंत्री जी को मालूम नहीं है, कि सरकार के साधन इतने कमजोर हैं जिसकी वजह से उसको मालूम नहीं है कि कितने व्यक्ति मरे हैं सर्दी की वजह से, क्या उनके पास कोई इस किस्म की रिपोर्ट आयी है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, सरकार कमजोर नहीं है। हर जिला अधिकारी को आदेश दिये गये थे कि कोई शीत लहरी से मृत्यु हो जाय तो उसकी सूचना दीजिये और मरा हो तो क्या सहायता दी गयी है। पूरे सूबे के जिला अधिकारियों से सूचना प्राप्त हुयी है कि उनके जिले में कोई व्यक्ति शीत लहर से नहीं मरा।

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)—

क्या मंत्री जी बतायेंगे कि शीत लहरी से बहुत सी मौत होने के कारण और लोगों को उससे बचाने के लिये सरकार ने क्या व्यवस्था की है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्,जिलाधिकारियों को १, १ हजार रुपया भेज दिया गया है कि पब्लिक रास्तों पर, पब्लिक स्कूलों पर, पब्लिक स्थानों पर अलाव जला दिये जायं।

श्री दशरथ सिंह—

समाचार-पत्र में समाचार निकलते हैं तो वह सरकार से जानकारी प्राप्त करके ही निकलते हैं। इसलिये जितनी मौतों के समाचार निकले हैं क्या सरकार का उधर ध्यान गया है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, अखबार मंत्री भी बढ़ते हैं, सरकार भी पढ़ती है और जिलाधिकारी भी पढ़ते हैं तो इन सबको सूचना दी गई है कि जो अखबारों में छपा है उसकी जांच करके सूचना दें।

श्री कृष्णा राय (जिला देवरिया)—

मान्यवर, जो १, १ हजार रुपया आग जलाने के लिये दिया गया है तो सिवाय नगर-पालिका और टाउन एरिया को छोड़कर कहीं भी कोई लकड़ी नहीं जलाई गई। शहरों में जलाई गई है, गांवों में क्यों नहीं जलाई गई ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, गांवों में तो आग जलाने का प्रबन्ध हो जाता है इसलिये शहरों में प्रबंध किया गया है क्योंकि यहां ईंधन का प्रबन्ध मुश्किल से होता है।

श्री त्रिवेणी सहाय—

मान्यवर, २० दिसम्बर के स्वतंत्र भारत में निकला है कि ७२ व्यक्ति मर गये हैं। मुरादाबाद में ९ व्यक्ति, पिछले २४ घंटों में ४ मरे हैं जिनमें से एक १०० वर्ष का बूढ़ा है, कानपुर में ३, रामपुर में ६, बरेली और शाहजहांपुर में २/२ तथा बाराबंकी में एक व्यक्ति मरा है। क्या सरकार ने इसकी जांच कराई है ? यदि हां तो उसकी क्या रिपोर्ट है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, मैं सूचना दे चुका हूं कि जिलाधिकारियों से इत्तिला मंगाई गई है। यदि माननीय सदस्य २, ४ नाम दे सकें तो हम जांच करा लेंगे। यदि वह सही निकले तो कड़ा ऐक्शन लिया जायेगा।

समस्त कर्मचारियों से अल्प बचत योजना में धन जमा करने हेतु मुख्य मंत्री के सचिव की अपील

**२—श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद) —

क्या यह सही है कि सचिव, मुख्य मन्त्री ने अपने कोई अर्द्ध-शासकीय पत्र संख्या ओ/११६६३/सी० एम०, दिनांक ५ दिसम्बर, १९७४ के अन्तर्गत समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया है कि वे जनवरी, १९७५ से मार्च, १९७५ तक के तिमाही में अपने १ मास के प्राप्त होने वाले मासिक वेतन का कम से कम १/४ धन राष्ट्रीय बचत अवश्य नियोजित करें ? क्या इस प्रकार की कोई अपील प्रदेश के विधायकों से भी की गयी है ?

[श्री सत्य प्रकाश मालवीय]
यदि नहीं, तो क्यों ? क्या शासन को इस प्रकार की सूचनाएं प्राप्त हुयी हैं कि अधिकारीगण अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर अनधिकृत दबाव डाल कर उनको जमा करने के लिये मजबूर कर रहे हैं। यदि हां, तो इसकी रोक-थाम के लिये शासन ने अविलम्ब क्या कदम उठाये ? यदि नहीं, तो क्यों ?

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

सचिव, मुख्य मन्त्री के अपने दिनांक ५ दिसम्बर, १९७४ के अर्ध शासकीय पत्र में समस्त कर्मचारियों से अपने एक मास के वेतन का २५ प्रतिशत तीन किस्तों में जनवरी, फरवरी तथा मार्च, १९७५ के दौरान अल्प बचत योजना में स्वेच्छा से जमा करने की अपील की है।

इस प्रकार की अपील प्रदेश के विधायकों से भी करने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है।

शासन के पास अधिकारीगणों द्वारा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर अनधिकृत दबाव डालने की कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

कर्मचारियों और अधिकारियों के पास जो राजाज्ञा भेजी गई है वह चीफ सेक्रेटरी की ओर से क्यों नहीं भेजी गई, मुख्य मन्त्री के सचिव की ओर से क्यों भेजी गई है ? क्या सरकार ने कोई बोर्ड गठित किया है ? यदि हां, तो पदाधिकारियों और सदस्यों के नाम बतायेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

बोर्ड से आपका क्या मतलब है ?

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

मान्यवर, इस सम्बन्ध में प्रदेशीय सरकार ने एक समिति की घोषणा की है। मुख्य मन्त्री उसके अध्यक्ष हैं। उसमें कौन-कौन पदाधिकारी और सदस्य हैं ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

श्रीमन् जरूर यह पहला भाग जो प्रश्न का है माननीय मुख्य मन्त्री जी के सचिव ने अपने अर्द्ध-शासकीय पत्र के अन्तर्गत क्यों भेजा है, वही इस बात का द्योतक है कि कोई शासन का आदेश नहीं है। अगर शासन का आदेश होता तो मुख्य सचिव भेजते। यह माननीय मुख्य मन्त्री की तरफ से निजी अपील है जो विभागाध्यक्षों के पास भेजे गये हैं और उसमें स्वेच्छा से अल्प बचत में धन जमा करके एक उदाहरण प्रस्तुत करने का है। यह उसमें अपील की है माननीय मुख्य मन्त्री जी ने, अपनी इच्छा व्यक्त की है कि समस्त विभागाध्यक्ष तथा स्थानीय कार्यालय इस कार्य में अपनी रुचि लें इसीलिये यह शासन का आदेश नहीं है। यह अपील के तौर पर है और इसलिये यह अर्द्ध-शासकीय पत्र भेजा है। मैं तो माननीय सदस्य का बड़ा आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यह अवसर दिया कि हम सदन के माननीय विधायकों से आग्रह कर सकूं कि जो भी इस दिशा में कदम उठा कर बचा सकें, एक दिन का हो, ५ दिन का हो, महीने दिन का हो, मैं यह उत्तर के माध्यम से अपनी अपील करना कर्त्तव्य समझता हूं। इनका जो सुझाव है, जो माननीय सदस्य इलाहाबाद ने दिया, जो प्रश्न पूछा है, उसके लिये सूचना की आवश्यकता है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

माननीय वित्त मन्त्री जी के कार्यालय के थोड़ी ही दूर पर एक कार्यालय इस सिलसिले में खोला गया है, जिसके अध्यक्ष माननीय मुख्य मन्त्री जी हैं और सदन की माननीय सदस्या, स्वरूप कुमारी बख्शी उसके वरिष्ठ चेयरमैन हैं, राम जी द्विवेदी इलाहाबाद के जो निवासी हैं, वह जूनियर वाइस चेयरमैन गठित किये गये हैं। तो मैं

उसी सम्बन्ध में जानना चाहता हूं कि क्या माननीय मुख्य मन्त्री जी को इस प्रकार की जानकारी है कि नहीं। माननीय मन्त्री जी वित्त विभाग के मन्त्री होते हुये भी उनको जानकारी नहीं है। मान्यवर, उसमें कांग्रेस पार्टी के ही लोग रखे गये हैं ?

श्री नारायण दत्त तिवारी---

मान्यवर, नेशनल सेविंग्स ऐडवाइजरी बोर्ड, राष्ट्रीय बचत सलाहकार बोर्ड यह पहले से ही चला जा आ रहा है और प्रत्येक ३ वर्ष से इसका नामांकन होता है और वह सही है कि इसके अध्यक्ष माननीय मुख्य मन्त्री जी हैं और श्री रामजी द्विवेदी और श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी इसके अध्यक्ष हैं, मुझे याद नहीं है कि बाकी और कौन से लोग इसमें सदस्य हैं।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय---

मान्यवर, श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी और श्री रामजी द्विवेदी ये दोनों ही सदस्य कांग्रेस पार्टी के ही हैं। मान्यवर, मैं यह जानना चाहता हूं कि ५ नवम्बर, १९७३ से लेकर ६ नवम्बर, १९७४ तक के बीच में पिछली मन्त्रि-परिषद् या जो आज की मन्त्रि-परिषद् है, इसमें से किसी भी सदस्य ने एक पैसा भी इस बचत कोष में जमा किया है या नहीं जमा किया है ?

श्री अध्यक्ष–

प्रश्न नहीं उठता।

श्री रामायण राय (जिला देवरिया)---

माननीय अध्यक्ष जी.....मालवीय जी एक प्रश्न मुझे भी कर लेने दीजिये। क्या यह सही है कि माननीय मुख्य मन्त्री जी की अपील के प्रति सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश सेक्रेटेरियट के इम्पलाइज एसोसियेशन ने और इधर के बैठने वाले माननीय सदस्यों ने स्वेच्छा से अपने वेतन और अपने भत्ते में उसकी अपील के अनुसार.....

श्री त्रिवेणी सहाय---

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये भाषण दे रहे हैं कि सवाल कर रहे हैं। सभी लोगों ने इस अपील का विरोध किया है। सेक्रेटेरियट के कर्मचारियों ने भी इसका विरोध किया है।

श्री अध्यक्ष---

आपको मैं इजाजत नहीं देता।

श्री रामायण राय---

मैं माननीय वित्त मन्त्री जी से यह जानना चाहता हूं कि इस अपील पर प्रदेश की आर्थिक कठिनाइयों को देखते हुये सेक्रेटेरियट इम्पलाइज एसोसियेशन ने और कांग्रेस विधायक दल के माननीय सदस्यों ने अपने वेतन से इस कोष में धन देने के लिये आश्वा न दिया है ?

श्री नारायण दत्त तिवारी---

जी हां। सदन को यह जान कर प्रसन्नता होगी प्रदेश भर से समाचार आ रहे हैं कि कर्मचारियों ने बैठकें कर के अपने असोसिएशन के द्वारा अथवा कार्यालय स्तर पर राज्य की स्थिति को मजबूत बनाने के लिये तथा केन्द्रीय सरकार से २/३ सहायता प्राप्त करने के लिए योगदान कर रहे हैं। ७ जनवरी को इस तरह का एक अभियान भी चलाया जा रहा है इसमे वे योगदान देंगे। कांग्रेस दल की पिछली मीटिंग में यह तय किया गया है कि जो उनका एक दिन का वेतन है जो बिल से मिलेगा एक किस्त के रूप में जमा करेंगे।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मैं कह रहा था कि क्या यह सही है कि स्वेच्छा नहीं बल्कि दबाव डाल कर ऐसा किया जा रहा है । इसलिये कर्मचारी ऐसा कह रहे हैं ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

मैं तो आग्रह करूंगा कि माननीय नेता जनसंघ भी कृपया स्वेच्छा से इस समय घोषित कर दें कि वह क्या जमा करने जा रहे हैं ?

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

पिछले साल में इन लोगों की तनख्वाहें बढ़ाना जरूरी समझा गया और तब से चीजों के भाव कम नहीं हुए हैं। क्या गवर्नमेंट इस राय की हो गयी है कि अब ये लोग वालन्टरिली रुपया दे देंगे। क्या गवर्नमेंट कान्ट्रीब्यूशन से चलायेंगे। तो मैं कहना चाहता हूं कि गवर्नमेंट क्या इस राय की हो गयी है राज्य कर्मचारियों के कान्ट्रीब्यूशन से गवर्नमेंट चलेगी ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

माननीय नेता विरोधी दल के प्रश्न के दो पहलू हैं। एक तो यह है कि तनख्वाहें बढ़ा दी गयीं और उससे कीमतें बढ़ गयीं और उसके बाद उनसे कहा गया है कि अपनी तनख्वाह से कान्ट्रीब्यूट करें। मैं कहना चाहता हूं कि जो तनख्वाहें बढ़ायी गयी हैं वह तो पे कमीशन की सिफारिशों के अनुसार बढ़ायी गयी हैं। जहां तक महंगाई भत्ते का सवाल है, वह कास्ट आफ लिविंग से लिन्क्ड है और केन्द्रीय सरकार जितना महंगाई भत्ता अपने कर्मचारियों को देगी, उतना ही हम भी देंगे। इस कमिटमेंट से वह महंगाई भत्ता बढ़ाया गया था। उसमें भी हमने कर्मचारियों को इस बात के लिये राजी किया है कि जितने एरियर्स उनके होंगे, वे प्रोविडेन्ट फन्ड में जमा होगा। इससे एक तो कर्मचारियों का धन सुरक्षित रहेगा और दूसरे राज्य के वेज एन्ड मीन्स के लिये पब्लिक एकाउन्ट में वह रुपया उपलब्ध रहता है। इससे एक ओर तो कर्मचारियों से जो वायदा किया था, वह पूरा हुआ और प्रदेश के जो संसाधान हैं उनमें सहायता मिलेगी और दूसरे प्राविडेन्ट फन्ड का रुपया पब्लिक एकाउन्ट में जमा रहेगा।

जहां तक कर्मचारियों से कान्ट्रीब्यूशन लेने की बात है मैं कहूंगा कि कल माननीय चौधरी साहब ने कल अपने भाषण में बहुत सही बातें बताई थीं, कुछ वैल्यूज बताई थीं और कुछ माप दन्ड बताये थे जैसे कि सिफारिश आदि के बारे में क्या होना चाहिए। मैं उनसे चाहूंगा कि वे अल्प बचत के कार्य को भी अपनी वैल्यूज में लेकर अपनी मुहर लगा दें। हमारे देश के प्रत्येक नागरिक को अल्प बचत करने की आदत डालनी चाहिये। अल्प बचत की आदत बनाने से उनकी पास-बुक खुल जायेगी। दूसरे यह भी नहीं है कि वे एक ही महीने में जमा करें।

श्री त्रिवेणी सहाय—

ये कर्मचारियों की जान ले रहे हैं ?

श्री नारायण दत्त तिवारी—

मैं निवेदन कर रहा था कि अल्प बचत की आदत प्रत्येक नागरिक को डालनी चाहिये जैसे जापान में, जिसका उदाहरण हमारे माननीय नेता विरोधी दल दिया करते हैं, वहां पर ७ प्रतिशत अपनी आमदनी का प्रत्येक नागरिक सेविंग्स बैंक में डालता है। हमारे प्रदेश में अभी केवल साढ़े ७ प्रतिशत लोग ही करते हैं। ९३ प्रतिशत न तो बैंक्स में और न सेविंग्स बैंक में रुपया जमा करते हैं, वे अपने घर में चाहे बचाते हों। इसलिये कर्मचारी वर्ग को भी इसकी आदत पड़े, मैं उनका समर्थन चाहूंगा।

चौधरी चरण सिंह--

माननीय वित्त मन्त्री जी ने फरमाया कि पे-कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर चूंकि हमने कमिटमेंट कर रखा था और सेन्ट्रल गवर्नमेंट ने जो महंगाई भत्ता अपने कर्मचारियों को दिया, वह प्रदेशीय कर्मचारियों को भी दिया गया, इन २ कारणों से आपने इनका डी० ए० बढ़ाया। क्या आप जरूरी समझते थे कि यह दिया जाय। अगर आप इसे जरूरी समझते थे तो यह अनरियलिस्टिक है कि उनसे आप कहें कि वे २५ प्रतिशत कन्ट्रीब्यूशन दे दें। जब से आपने महंगाई भत्ता दिया है तब से भाव और बढ़े हैं।

दूसरे हर आदमी अपनी तनख्वाह में से कन्ट्रीब्यूशन देने की पोजीशन में नहीं है। साल भर से जो आपने तनख्वाह बढ़ाई है और डी० ए० दिया है, उसके बाद भाव बढ़े हैं, आज आप कैसे समझ गये कि वे २५ प्रतिशत अपने वेतन का दे सकेंगे? आप चाहे जितने उनसे अनुरोध किये हों, लेकिन इसे आपने कम्पल्सरी ही कर दिया। जब उनके अफसरान कहेंगे तो कर्मचारियों को देना ही पड़ेगा। यही नहीं आपने एक हजार से अधिक पाने वाले आई० ए० एस० अधिकारियों को भी अधिक डी० ए० दिया। बड़े आदमियों को ज्यादा डी० ए० दिया और छोटे कर्मचारियों को कम दिया, क्या यह भी जापान में होता है?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

यह विषय ऐसा है जिसमें नेता विरोधी दल को बहुत ही तजुर्बा प्राप्त है, उनका एक महत्व है। मैं यह धृष्टता नहीं करूंगा कि इस विषय में उनसे विवाद में पड़ूं। उनका दृष्टिकोण तो यह है कि अगर हमने उनसे सेविंग्स बैंक में रुपया जमा करने की मांग की है, तो तनख्वाह बढ़ाने की क्या आवश्यकता थी या महंगाई भत्ता बढ़ाने की क्या आवश्यकता है। निष्कर्ष इस प्रकार निकलता है।

चौधरी चरण सिंह--

यह नहीं। अगर आप जरूरी समझते थे डी० ए० बढ़ाना तो साल भर के बाद ही २५ परसेंट काटना क्यों जरूरी समझते हैं?

श्री नारायण दत्त तिवारी--

मैं फिर नेता विरोधी दल को आश्वस्त करना चाहता हूं कि यह कम्पलसरी नहीं है। अगर कोई भी कर्मचारी अपना वेतन बचाना नहीं चाहेगा तो उसे किसी प्रकार का कोई नुकसान, कोई ऐडवर्स एन्ट्री नहीं दी जायगी। तो यह कम्पलसरी नहीं है केवल अल्प बचत की आदत डालने के लिये है। भारत सरकार डेवलपमेंट स्कीम्स के लिये स्माल सेविंग्स एकाउन्ट में जितना जमा होता है उसका दो-तिहाई हमको देती है। इस साल एक और कन्सेशन दिया है। निर्धारित परसोनल टारगेट से जितना अधिक धन जमा होगा उसका पच्चीस परसेंट लोन दिया जायगा तो इसलिये यह प्रयास किया जा रहा है।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)--

क्या माननीय मन्त्री जी मेरा सूचना को सही मान कर इस मामले पर कन्सेन्सस प्राप्त करने की कोशिश करेंगे क्योंकि मजदूरों के बीच काम करने के कारण मैं जानता हूं कि कोई भी मजदूर इस कम्पलसरी डिपाजिट के लिये तैयार नहीं है। सरकार जबरदस्ती वसूल उनसे कर रही है। विभागीय अध्यक्ष जबरदस्ती उनसे पे-बिल पर दस्तखत करवा कर कटवा रहे हैं। तो क्या माननीय मन्त्री जी कन्सेन्सस प्राप्त करने की कोशिश करने के लिये तैयर हैं?

श्री अध्यक्ष--

यह सुझाव है माननीय सदस्य का।

चौधरी चरण सिंह—

क्या यह वाक्या है कि डिपार्टमेंटल हेड्स के जरिये अपने सबार्डिनेट्स से कहा जा रहा है कि रुपया जमा करो। अगर वह बिलकुल वालन्टरी था तो आपकी एक जनरल अपील निकल जाती, एक अच्छी सी स्पीच, एक अच्छा सा रेडियो पर भाषण। लेकिन हमको यह मालूम हुआ है कि डिपार्टमेंटल आफिसर्स के जरिये उनसे कहा जा रहा है। तो जो फाइनेन्स मिनिस्टर कह रहे हैं कि यह दवाब नहीं है लेकिन वह दवाब महसूस कर रहे हैं। तो क्या यह वाकया है या नहीं कि अपने सुपीरियर आफिसर्स के जरिये उनसे कहा जा रहा है? उनका कहना दवाब होता है।

मुख्य मन्त्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)—

मुझे अफसोस है कि इस कदर इनाकुअस मेजर के सिलसिले में इतना शुबहा यहां पैदा किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों के पैट्रियाटिज्म पर डाउट करना और यह समझना कि कठिनाई के समय में, वह सरकार का, अपना या जनता का साथ नहीं देंगे, यह सही नहीं है। जहां तक सम्बन्ध चौधरी साहब के कहने का है, एक लाइन आफ कम्युनिकेशन उनके साथ इस्टेब्लिश करने के लिये जिस तरह से हमने अपील की है हेड्स आफ दि डिपाटमेंट्स उसको सिर्फ दोहरा रहे हैं। न उनके साथ कोई जोर है न जबरदस्ती है। वह जानते हैं कि किनके हाथों में उनका हित सुरक्षित है।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

(व्यवधान)

कमिश्नरों ने अपने-अपने जिलाधिकारियों को लिख कर भेजा है कि स्वेच्छा या अस्वेच्छा से यह बचत की जाय।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

एक व्यवस्था का प्रश्न है। इसमें सरकारी कर्मचारियों को विवेक नहीं दिया गया है। एक निश्चित धनराशि रख दी गयी है कि अपने वेतन का २५ परसेंट जमा करें। तो क्या माननीय मन्त्री जी जो २५ परसेंट की बात रखी गयी है उसको हटायेंगे और २५ नवम्बर, १९७३ का सर्कुलर दिखलायेंगे जिसमें आज से सवा साल पहले अपील जारी की गयी थी लेकिन साल भर के अन्दर न चीफ मिनिस्टर ने और न स्वयं वित्त मन्त्री ने एक पैसा भी जमा किया।

श्री नारायण दत्त तिवारी—

मेरे सेविंग्स सर्टिफिकेट्स खरीदे हुये रखे हैं। आप देख सकते हैं।

श्री शतरुद्ध प्रकाश (जिला वाराणसी)—

माननीय शिक्षा मन्त्री सदन में अखबार पढ़ रहे हैं और सिफारिशी काम कर रहे हैं जिससे सदन का अवमान हो रहा है, आप उन्हें यह कार्य करने से रोकिये.....

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

जो माननीय सदस्य यहां बैठते हैं वह सदन का काम ही करते हैं।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

मन्त्री जी इस समय सिफारिसी काम कर रहे हैं जब यह प्रश्नों का समय है। यह नियमों की व्यवस्था के विरुद्ध है। यह जो शिष्टाचार सम्बन्धी पुस्तक आपकी ओर से बटी है, उसके विरुद्ध वे काम कर रहे हैं, उनको ऐसा करने से रोकना चाहिये। यह संसदीय शिष्टाचार के विरुद्ध है। मेरा यह व्यवस्था का प्रश्न है, इस पर आप कृपाकर अपनी व्यवस्था दें कि क्या कोई मन्त्री सदन में सदन के कार्य के अलावा कोई अन्य सिफारिसी काम आदि भी कर सकता है.....

श्री अध्यक्ष—

यह प्रश्नों का समय है। आप कृपया बैठें। मैं इजाजत नहीं दे रहा हूं। यह व्यवस्था का प्रश्न नहीं है। अगर वे कुछ पढ़ भी रहे हैं तो उससे कोई नियम नहीं टूटता। यह औचित्य का प्रश्न हो सकता है। व्यवस्था का नहीं है, मैं इसे रूल आउट करता हूं।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

* * * *

श्री अध्यक्ष—

मैं इजाजत नहीं दे रहा हूं, यह लिखा नहीं जायेगा। आप अव्यवस्थित व्यवहार कर रहे हैं। बिना मेरी अनुमति के बोल रहे हैं। यही शिष्टाचार के विरुद्ध है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

* * * *

श्री अध्यक्ष—

यह लिखा नहीं जायेगा। आप कृपया बैठें। आप शिष्टाचार प्रिय स्वयं नहीं हैं। आप लोगों के प्रश्नों का समय नष्ट कर रहे हैं। प्रश्नों के बीच इस तरह का प्रश्न नहीं उठाना चाहिये..... (व्यवधान)

चौधरी चरण सिंह—

मैं माफी चाहता हूं, आखिर माजरा क्या है?

श्री अध्यक्ष—

मैंने प्रश्न संख्या १–२ को पुकार लिया। इस बीच माननीय सदस्य कह रहे हैं कि शिक्षा मन्त्री जी अखबार पढ़ रहे हैं। मैंने कहा कि यह औचित्य का प्रश्न हो सकता है व्यवस्था का नहीं। जो मनानीय सदस्य यहां बैठे हैं उनसे यही अपेक्षा की जाती है कि वे सदन का काम ही कर रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह—

बात माननीय शतरुद्ध प्रकाश की गलत नहीं है, मन्त्रियों को सदन की कार्यवाही में ध्यान देना चाहिये। चूंकि आप नाराज हो गये, मैं उनसे बैठने के लिये कह देता हूं।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

इस तरह से सदस्यों के प्रश्नों का समय नष्ट होता है और उन्हीं का नुकसान होता है। प्रश्नों में रुकावट नहीं डालनी चाहिये।

तारांकित प्रश्न

सूखा एवं बाढ़ग्रस्त जिलों में टेस्ट वर्क तथा क्षतिग्रस्त मकानों का पुनर्निर्माण

*१—श्री राम सुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़) तथा श्री हरिकेवल (जिला देवरिया)—

क्या राजस्व मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि इस प्रदेश में सूखा एवं बाढ़ग्रस्त जिले कौन-कौन हैं और किन-किन जिलों में कितनी-कितनी रुपये की धनराशि टेस्ट वर्क के लिये दी गयी है? यदि नहीं दी गयी है, तो भूमिहीन एवं खेतिहर मजदूरों के जीवन निर्वाह के लिये सरकार द्वारा कौन सा काम शुरू किया गया है?

[****] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सूखा एवं बाढ़ग्रस्त जिलों की तालिका संलग्न है। इनमें से ११ जिलों को टेस्ट वर्क के लिये धन आबंटित किया गया। प्रत्येक जिले को आबंटित धनराशि उक्त तालिका में सम्बन्धित जिले के सम्मुख दिखा दी गयी है। अन्य जिलों में स्थिति इतनी खराब नहीं है कि टेस्टवर्क चलाने की आवश्यकता हो।

(देखिये नत्थी 'क' आगे पृष्ठ १०८२–१०८३ पर)

*२—श्री रामसुन्दर पांडेय तथा श्री हरिकेवल—

क्या राजस्व मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि बाढ़ ग्रस्त जिलों के गिरे हुये घरों के पुनर्निर्माण के लिये सरकार द्वारा कौन-कौन सहायता और कितनी-कितनी दी गयी है तथा रकम कितनी है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

बाढ़-ग्रस्त १३ जिलों में क्षतिग्रस्त मकानों के पुनर्निर्माण के लिये चालू वित्तीय वर्ष १९७४-७५ में आबंटित की गयी धनराशि का विवरण संलग्न तालिका में दे दिया गया है। इस तालिका में जिलों को तकावी के लिये आबंटित धनराशि का भी उल्लेख कर दिया गया है। आबंटित तकावी गृह-निर्माण के लिये भी प्राप्त की जा सकती है।

(देखिये नत्थी "ख" आगे पृष्ठ १०८४ पर)

(उत्तर पढ़ते समय माननीय मन्त्री ने बतलाया कि उत्तर में जहां अंक १२ है उसके स्थान पर अंक ११ पढ़ा जाय।)

श्री रामसुन्दर पांडेय—

क्या माननीय मन्त्री महोदय बतलाने की कृपा करेंगे कि घाघरा नदी के किनारे वाले जिले जो गोंडा, बहराइच व आजमगढ़ हैं, उनमें इस नदी के किनारे बसे हुए गांवों में भी बाढ़ आयी थी और उनकी दशा दयनीय थी ? यदि हां, तो उनमें टेस्ट वर्क चलाने के लिये सहायता अनुदान क्यों नहीं दिया गया ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, प्रश्न तो यह है कि क्या बाढ़ और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में टेस्ट वर्क हो रहा है। और दूसरा है कि बाढ़ और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में गृह निर्माण के लिये क्या तकावी दी गयी है। तो माननीय सदस्य किस बात को पूछ रहे हैं ?

श्री राम सुन्दर पांडेय—

घाघरा के किनारे वाले जो गांव हैं, जहां बाढ़ आयी हुयी थी और बाढ़ आने के कारण वहां की हालत खराब है, तो वहां टेस्ट वर्क चालू करने के लिये पैसा क्यों नहीं दिया गया ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

यह तो जिले के हिसाब से है। जिलेवार कोई प्रश्न की सूचना नहीं थी।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, सरकार की नीति है कि बाढ़ग्रस्त क्षेत्र या सूखाग्रस्त क्षेत्रों में टेस्ट वर्क प्रारम्भ किया जाय। तो सवाल करने से पहले मैं माननीय मन्त्री जी को स्मरण कराना चाहता हूं कि मैं उनके साथ खड़ा था और जहां खुद उन्होंने जांच की और गड़बड़ी पायी कि अनाज जो बंट रहा है वह पर्याप्त नहीं है, तो क्या वे वहां टेस्ट वर्क प्रारम्भ कराने के प्रश्न पर विचार कर रहे हैं ? अब तक वहां टेस्ट वर्क प्रारम्भ न कराने का क्या कारण है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, क्या माननीय सदस्य, बस्ती जिले का पूछ रहे हैं ?

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

हां, जहां के कलेक्टर ने कहा था कि मैं श्री बहुगुणा का कलेक्टर हूं, श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी का कोई दूसरा कलेक्टर होगा।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, जो तालिका है उसमें दिया गया है कि टेस्ट वर्क के लिये बस्ती जिले को ५ लाख रुपया आबंटन किया गया है।

(व्यवधान)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)—

मान्यवर, मेरे जिले में भी बहुत बाढ़ आयी थी, हमें भी मौका दिया जाय।

(व्यवधान)

श्री प्रेमदत्त (जिला फतेहपुर)—

क्या माननीय मन्त्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि जो तालिका है उसमें भी फतेहपुर जिले का नाम है लेकिन उसी के निकट लगा हुआ जिला बांदा और हमीरपुर है जहां के जिला मैजिस्ट्रेटों ने सूखे की रिपोर्ट बराबर भेजी है। उसके आधार पर यदि वहां टेस्ट वर्क के लिये रुपया नहीं दिया गया है तो क्या माननीय मन्त्री जी बतलाने की कृपा करेंगे कि इसका क्या कारण है जिससे वहां टेस्ट वर्क के लिये रुपया नहीं दिया गया ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, जनपद फतेहपुर में कोई ऐसी बाढ़ और सूखे की समस्या नहीं है जिससे टेस्ट वर्क के लिये रुपया आबंटित किया जाता।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि जो १२ जिले के बारे में मन्त्री जी ने बतलाया कि १ जिला निकाल दिया गया है उस जिले का नाम क्या है और मान्यवर, देवरिया जिले में कितने मकान गिर गये हैं ?

एक सदस्य—

बहराइच और गोंडा में भी भीषण बाढ़ आयी थी.....।

श्री अध्यक्ष—

माननीय पुरुषोत्तम कौशिक ने प्रश्न किया है, उसका जवाब आप दे दें, आप बैठें।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

श्रीमन्, मेरी समझ में नहीं आया है कि किस प्रश्न का जवाब दूं।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, जैसा अभी आपने पढ़ा कि १२ जिलों को शामिल किया गया है और एक एक जिले को हटा दिया गया है तो किस जिले को निकाल दिया गया है ? उस जिले का नाम क्या है और देवरिया जिले में कितने मकान गिरे हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

कोई जिला हटाया नहीं गया है। ११ ही जिले हैं टाइप की गलती से १२ छप गये थे। और देवरिया जिले के लिये जो आबंटन हुआ है....

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

आबंटन की बात मैं नहीं कर रहा हूं। मैं पूछ रहा हूं कि कितने मकान देवरिया में गिरे हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, इसके लिये तो सूचना की आवश्यकता होगी।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

श्रीमन्, पिछले वर्ष क्या वहां ५० हजार मकान गिरने की सूचना नहीं दी गयी थी.....

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

मान्यवर, क्या मन्त्री महोदय बतलाने की कृपा करेंगे कि जनपद गोरखपुर में टेस्ट वर्क का काम शुरू हुआ है? दूसरे जो हाउस सब्सिडी मिली हुयी है क्या किसानों को बांटी गयी है? मेरी सूचना को सही मानते हुये कि वहां के अधिकारियों ने हाउस सब्सिडी नहीं बांटी है और काम नहीं शुरू किया गया तो क्या इस सम्बन्ध में कोई कार्यवाही करेंगे?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, माननीय सदस्य ने गोरखपुर के विषय में पूछा है तो वहां पर गृह निर्माण के लिये अनुदान १५ लाख ५ हजार रुपया का आबंटित हुआ है और तकावी के लिये १३ लाख ४० हजार रुपया आबंटित हुआ है। और जो माननीय सदस्य यह कहते हैं कि वहां पर काम नहीं हुआ है तो अगर वह इस सम्बन्ध में कोई सूचना देंगे तो मैं कार्यवाही करूंगा।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, प्राइवेट कम्पनी ने वहां पर कम्बल और कपड़ा भेजा था क्या उसका वितरण हो गया है?

श्री अध्यक्ष—

यह प्रश्न दूसरा है आप विवरण में जा रहे हैं?

*३—श्री बाबू लाल वर्मा—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त।]

संग्रह तहवीलदार की सेवा की समाप्ति

*४—श्री बाबू लाल वर्मा (जिला बहराइच)—

क्या सरकार ने ऐसा कोई निर्णय लिया है कि सभी राजपत्रित व अराजपत्रित कर्मचारियों को, जिन्होंने १ जनवरी, १९७४ तक की निरन्तर सेवा पूरी कर ली है स्थायी कर दिया जायेगा? यदि हां, तो क्या सरकार को इस बात की भी जानकारी है कि प्रदेश की तहसीलों के उपकोषागारों के संग्रह (कलेक्शन) विभाग के तहवीलदारों (खंजाची) के पद पर सेवारत कर्मचारियों की सेवायें समाप्त कर दी गयी हैं? जब कि ये कर्मचारी जमींदारी समाप्ति के बाद से सेवारत थे? यदि हां, तो क्यों?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सरकार ने ऐसे पदों को छोड़कर जो अस्थायी विभागों में हैं तथा जो बिलकुल ही अस्थायी प्रकार के कार्य के लिये स्वीकृत हैं, उन सभी अस्थायी पदों के स्थायी करने का निर्णय लिया है जो तीन वर्ष से अधिक समय से विद्यमान हैं। संग्रह तहवीलदार का कार्य अस्थायी प्रकार का है। तहसीलों तथा अन्य स्थानों पर स्टेट बैंक की शाखा खुल जाने के फलस्वरूप रुपये पैसे के लेन देन का कार्य कोषागारों से बैंक को हस्तान्तरित हो जाता है और इन पदों पर कार्यरत कर्मचारियों की सेवायें धीरे-धीरे समाप्त की जा रही हैं।

श्री बाबू लाल वर्मा—

मान्यवर, २१ सितम्बर, १९७३ को और २ जनवरी, १९७४ को यह स्वतंत्र भारत में छपा था मुख्य मन्त्री की ओर से कि 'उत्तर प्रदेश सरकार के उन सभी राजपत्रित व अराजपत्रित कर्मचारियों को स्थायी करने का निर्णय लिया गया है जिन्होंने १ जनवरी, १९७४ को ३ वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी कर ली है। क्या निर्णय राज्य परिषद् की बैठक में लिये गये ? इस बैठक की अध्यक्षता माननीय मुख्य मंत्री जी ने किया था। दूसरे मान्यवर, बहुगुणा सरकार के ८ महीने, यह छपा है १४ अगस्त, ७४ को जिसमें लिखा हुआ है कि सरकार ३ वर्ष से अधिक समय से नौकरी करने वाले अपने सभी कर्मचारियों को स्थायी घोषित करती है। तो मैं पूछना चाहता हूं कि मंत्री कहते हैं कि अस्थायी विभाग हैं इसलिये उनमें छटनी की जा रही है लेकिन वक्तव्य जो मुख्य मंत्री जी का है उसमें लिखा है कि सभी कर्मचारियों को स्थायी कर दिया जायेगा। तो कौन सी बात सही है—मंत्री जी जो कह रहे हैं वह या मुख्य मंत्री जी की ?

श्री अध्यक्ष—

यह सवाल नहीं है, दूसरा सवाल करें।

श्री बाबूलाल वर्मा—

मान्यवर, कुछ विभाग ऐसे हैं जो १०–१२ वर्षों से सेवारत हैं और अभी भी चल रहे हैं जैसे परिवार नियोजन, मलेरिया और कलेक्शन विभाग तथा अमीन आदि, परन्तु उनमें छटनी की जा रही है। यदि छटनी कर रहे हैं तो जो बेकार हो जायेंगे क्या उनको रोजगार किसी दूसरे विभाग में दिलायेंगे ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, जो आदेश हुये थे वह यही आदेश थे कि जो स्थायी विभाग हैं या जो स्थायी कर्मचारी हैं और ३ वर्ष से ज्यादा कार्यरत हैं उनको प्रतिबन्धों के साथ स्थायी किया जायेगा। शर्त यह भी थी कि स्थायी विभाग में अस्थायी कार्य के लिये जो लिये गये हैं वह स्थायी नहीं किये जायेंगे।

श्री मोहन लाल कपूर (जिला मेरठ)—

मान्यवर, जितने स्थायी विभाग हैं जैसे पी० डब्लू० डी० या सिंचाई विभाग तो उनमें भी हजारों कर्मचारियों को स्थायी नहीं किया गया है जिनकी सेवा १०–१५ साल की है और स्थायी विभाग में है। तो क्या विधान सभा के सदस्यों की एक ऐसी समिति बनायेंगे जो इसकी जांच करे ?

श्री अध्यक्ष—

यह आपने व्यापक सवाल किया है जो कि प्रश्न के दायरे से बाहर है।

श्री मोहन लाल कपूर—

मान्यवर, क्या जांच करायेंगे कि जो स्थायी विभाग हैं उसमें ऐसे कर्मचारी आज भी हैं जिनकी सेवायें २० साल की हो गयी हैं तो इनको और ३ साल से ऊपर वाले कर्मचारियों को स्थायी करेंगे ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, प्रश्न को यह देखें। प्रश्न इस बात का है कि संग्रह विभाग के तहसीलदार जो खजांची के पद पर हैं उनको स्थायी क्यों नहीं किया गया ? उस विषय में माननीय सदस्य प्रश्न करें। आपको सूचित किया कि यह कार्य अस्थायी था इसलिये स्टेट बैंक की शाखा खुल जाने से काम चलने लगा और जो अस्थायी नियुक्त किये गये थे उनकी कोई आवश्यकता नहीं रही थी।

श्री बाबूलाल वर्मा—

मान्यवर, जो सेवारत कर्मचारी हैं यदि सेवाकाल में उनकी मृत्यु हो जाय तो उनके स्थान पर उनके संबंधी परिवार वालों को रखने की क्या व्यवस्था सरकार करेगी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, प्रश्न तहवीलदारों के सिलसिले में है और अब उनकी आवश्यकता नहीं है और वह पद अस्थायी थे इसलिये विभाग ही समाप्त कर दिया गया।

श्री शफीकुर्रहमान बर्क—

मान्यवर, क्या मंत्री जी को मालूम है कि सेक्रेटेरिएट में ऐसे कर्मचारी हैं जिनको आज तक स्थायी नहीं किया गया है ?

श्री अध्यक्ष—

यह दूसरा सवाल है।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, जो ३० वर्ष से सेवारत हैं और उनको स्थायी नहीं किया गया है। मेरी जानकारी है कि अब्दुल नामक एक व्यक्ति है जिसको काम करते ३० वर्ष हो गये परन्तु स्थायी नहीं किया गया है।

(उत्तर के लिये मंत्री जी को नहीं पुकारा गया)

बहराइच व नानपारा तहसील के कर्मचारियों का स्थायीकरण

*५—श्री कमला प्रसाद वर्मा—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि बहराइच जनपद की तहसील बहराइच, कैसरगंज व नानपारा में रजिस्ट्रार कानूनगो, नायब रजिस्ट्रार कानूनगो, काननूगो एवं लेखपाल कितने ऐसे हैं जो पांच साल से अधिक सेवारत हैं फिर भी उन्हें स्थायी नहीं किया गया ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जनपद बहराइच की तहसील बहराइच में १ नायब रजिस्ट्रार कानूनगो, १ कानूनगो तथा लेखपाल, तहसील केसरगंज में २ कानूनगो तथा २ लेखपाल व तहसील नानपारा में १ नायब रजिस्ट्रार कानूनगो तथा २ लेखपाल पांच साल से अधिक सेवारत हैं, जिन्हें स्थायी नहीं किया गया है। कोई रजिस्ट्रार कानूनगो किसी भी तहसील में अस्थायी नहीं है। उपरोक्त सभी अस्थायी कर्मचारियों के स्थायीकरण के मामले पर नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

क्या मंत्री जी बतलायेंगे कि बहराइच तहसील में जो एक कानूनगो आपने बतलाया है और ५ लेखपालों के नाम क्या हैं और उनको सेवारत हुये ५ साल से ऊपर हो गया है तो उनके स्थायीकरण में क्या कठिनाई है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

लेखपालों के नामों के लिये सूचना की आवश्यकता होगी और उनके स्थायीकरण के जो रूल्स हैं उनके अनुसार कार्यवाही हो रही है। उसको जिला अधिकारी करता है। बाकी लोगों को कमिश्नर करता है। उसकी कार्यवाही चल रही है।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

मैंने नाम पूछा है।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

नामों के लिये सूचना की आवश्यकता होगी।

*६—श्री कल्याण सिंह—

[६वें मंगलवार में प्रश्न संख्या १० के अन्तर्गत स्थानान्तरित ।]

कानपुर जिले की डेरापुर तहसील की अवयवस्थित हवालात

*७—चौधरी रामपाल सिंह यादव (जिला कानपुर)—

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतायेंगे कि कानपुर जिले की डेरापुर तहसील में जो तहसील की हवालात है उसमें कितने व्यक्ति एक साथ बन्द किये जाने का स्थान है ? क्या यह सही है कि उक्त हवालात बहुत संकीर्ण बदबूदार है और गन्दगी से भरी है और उसी हालत में तहसील-दार द्वारा प्रतिदिन दर्जनों किसानों को उस हवालात में भर कर परेशान किया गया है ? यदि हां, तो उक्त तहसीलदार के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

डेरापुर तहसील की हवालात में आठ व्यक्ति एक साथ बन्द किये जाने का स्थान है। यह सही नहीं है कि उक्त हवालात बदबूदार है और गन्दगी से भरी है अथवा तहसीलदार द्वारा प्रतिदिन दर्जनों किसानो को भर कर परेशान किया गया है। अतः प्रश्न का शेष भाग नहीं उठता ।

*८—श्री कल्याण सिंह—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त]

तुलसी की पावन भूमि सूकर खेत (जिला गोंडा) के सर्वेक्षण का सुझाव

*९—श्री त्रिवेणी सहाय तथा श्री दशरथ सिंह—

क्या मुख्य मंत्री को यह जानकारी है कि प्रान्तीय पर्यटन विभाग की प्रभागीय पर्यटक सलाहकार समिति, फैजाबाद मन्डल ने दिनांक २ सितम्बर तथा ७ सितम्बर, १९७४ को आयुक्त फैजाबाद की अध्यक्षता में एक बैठक कर तुलसी की पावन भूमि सूकर खेत की कोई विकास योजना, प्रस्तावित कर सरकार को प्रेषित किया है ? यदि हां, तो उक्त योजना को शीघ्र लागू करने के सम्बन्ध में सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

वन तथा पर्यटन मंत्री (श्री अजीत प्रताप सिंह)—

२ सितम्बर, १९७४ को फैजाबाद मंडल की प्रभागीय पर्यटन सलाहकार समिति की कोई बैठक नहीं हुई थी। ७ सितम्बर, १९७४ को बैठक में समिति ने यह संस्तुति की कि तुलसी की पावन भूमि सूकर खेत (जिला गोंडा) के पर्यटन विकास के लिये विभाग इस स्थान का सर्वेक्षण करके आगणन तैयार करे। समिति ने इस स्थान की कोई विकास योजना प्रस्तावित नहीं की है ।

श्री त्रिवेणी सहाय—

क्या मंत्री जी बतलायेंगे कि यह समिति किस की अध्यक्षता में गठित हुई है और उसमें कौन कौन लोग हैं ? क्या समिति ने जो संस्तुति की है उसको पढ़कर सदन के सामने बतलायेंगे ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

श्रीमन्, इसकी सूचना नहीं है कि सदस्य कौन-कौन हैं लेकिन समिति ने संस्तुति जो दी है उसमें सलाह दी है कि इस स्थल को जो श्री तुलसीदास के गुरू का स्थान था उसको अच्छा बनाया जाय लेकिन जब धन होगा तभी उस पर विचार किया जायगा ।

श्री दशरथ सिंह—

मंत्रीजी क्या इस ओर ध्यान देंगे कि इस समिति के विभिन्न साहित्यकारों ने काफी तलाश के बाद निर्णय दिया कि यह सूकर क्षेत्र ने तुलसीदास को जन्म दिया था, तो क्या इसका गहराई के साथ सरकार पता लगवायेगी और तुलसीदास का क्षेत्र घोषित करेगी और इसको बढ़ाने की व्यवस्था करेगी, ताकि उन्नति हो ?

श्री अध्यक्ष—

वन बनाने की कोई योजना है ।

श्री दशरथ सिंह—

क्या वहां तुलसीदासजी का कोई स्मारक बनवाने की सरकार व्यवस्था करेगी ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

श्रीमन्, मैंने उत्तर में कहा है कि वहां का सर्वे किया जा रहा है । जैसे ही सर्वे हो जायेगा, कार्य आरम्भ किया जायेगा ।

श्री त्रिवेणी सहाय—

मान्यवर, सूकर क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है और यह गोंडा जिले में है । वहीं पर तुलसीदास जी ने अवधी में रामायण की रचना की । इसी क्षेत्र को तुलसीदास जी ने अपनी कार्य-भूमि बनाया । तो मैं मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं कि क्या इस क्षेत्र के विकास के लिये इस दिशा में सरकार की ओर से कोई प्रयास करेंगे और सूकर क्षेत्र के विकास की योजना तैयार करवायेंगे ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

मान्यवर, इसकी जानकारी अवश्य प्राप्त की जायेगी और जो कुछ सुविधा सूकर क्षेत्र को बढ़ाये जाने के लिये दी जा सकती है, वह अवश्य दी जायेगी ।

श्री त्रिवेणी सहाय—

मान्यवर, सूकर क्षेत्र को जाने के लिये सड़क है, क्या उस सड़क को तत्काल बनवाने की कोई योजना सरकार बना रही है, ताकि क्षेत्र में जो बाहर से दूर–दूर से लोग जाते हैं, उनको सुविधा हो ? यह ५ मील सड़क जो कच्ची है, अगर बना दी जायेगी, तो यात्रियों को काफी सुविधा हो जायेगी ।

श्री अजीत प्रताप सिंह—

जैसा कि मैंने पहले बताया, इन सभी चीजों के बारे में सर्वे किया जा रहा है । जैसे ही सर्वे कम्प्लीट हो जायेगा, कार्यवाही तुरन्त होगी ।

*१०—श्री त्रिवेणी सहाय—

[स्पष्टीकरण के लिले हटाया गया ।]

बहराइच जिले के भिनगा नगर को नयी तहसील बनाने का प्रस्ताव

*११—श्री कमला प्रसाद वर्मा—

विधान सभा के शुक्रवार, दिनांक २६–७–७४ के नत्थी (ख) के ता० प्रश्न संख्या ४ के उत्तर के सन्दर्भ में क्या राजस्व मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि जिला बहराइच के भिनगा नगर में नयी तहसील का मुख्यालय बनाने हेतु प्रस्तावित है ? यदि हां, तो राजस्व परिषद् से आख्या अब तक न आने का क्या कारण है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी नहीं । राजस्व परिषद् से प्राप्त प्रस्ताव पर विचार करने के उपरान्त वित्तीय कठिनाइयों के कारण शासन ने नई तहसील बनाने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया है ।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

क्या माननीय मंत्रीजी बताने की कृपा करेंगे कि जनता की कठिनाइयों और प्रशासनिक असुविधाओं को देखते हुये, इस भिनगा नगर में तहसील खोलने के लिये लाखों रुपये खर्च किये जा चुके हैं । तो इन बातों को ध्यान में रखते हुये, क्या अगले वित्तीय वर्ष में भिनगा में तहसील खोलने का प्राविधान करेंगे ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, ऐसा आश्वासन देना कठिन है ।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

मान्यवर, पिछले सत्र में जब मैंने इस संबंध में प्रश्न किया था तो उत्तर दिया गया था कि इसमें विचार किया जा रहा है । केवल राजस्व परिषद् से आख्या मांगी गयी है । तो क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि राजस्व परिषद् ने इस संबंध में क्या रिपोर्ट दी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मान्यवर, उसमें पहले जवाब था कि विचार हो रहा है । फिर राजस्व परिषद् ने कहा कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह अस्वीकार किया जाता है ।

श्री कमला प्रसाद वर्मा—

क्या माननीय मुख्य मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जो बहराइच जिले से वहां पर तहसील खोलने के सम्बन्ध में परिसीमन करके जो नक्शा बनाकर भेजा है, क्या वह सरकार को प्राप्त हुआ है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

मौजूदा सूचना से इसका कोई संबंध नहीं है ।

*१२—श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

[३रे सोमवार में प्रश्न संख्या ३७ के अन्तर्गत स्थानान्तरित]

गोरखपुर जिले में पनियरा (बांकी) के रेन्जर श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव के विरुद्ध शिकायत

*१३—श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

क्या वन मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि गोरखपुर जिले के पनियरा (बांकी) के रेंजर (श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव) के विरुद्ध लगाये गये आरोपों की हाल ही में प्रारम्भिक जांच एक विभागीय अधिकारी ने की है एवं जांच के दौरान भ्रष्टाचार एवं अनियमितता के कई मामले प्रकाश में आये हैं ? यदि हां, तो क्या उक्त रेंजर को स्थानान्तरित कर, मेरे आरोप-पत्र जो माह जुलाई, १९७४ में आपको प्रेषित है, उनके संदर्भ में पूरे मामले की सार्वजनिक एवं विस्तार-पूर्वक जांच करने की व्यवस्था करेंगे ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

गोरखपुर जिले में पनियरा (बांकी) के रेंजर श्री रमेश चन्द श्रीवास्तव के विरुद्ध माननीय सदस्य श्री जनार्दन प्रसाद ओझा द्वारा अपने दिनांक २३ जुलाई, १९७४ के पत्र में लगाये गये आरोपों की विभागीय अधिकारी द्वारा जांच की गई और जांच के दौरान उक्त रेंजर के विरुद्ध कोई भ्रष्टाचार का मामला प्रकाश में नहीं आया। लेकिन अनियमितता का एक मामला प्रकाश में आया है जिसमें जांच प्रारम्भ हो गई है। श्री श्रीवातस्व का बांकी रेंज से स्थानान्तरण के आदेश हो चुके हैं।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

मन्त्री जी के उत्तर से सम्बन्धित, क्या मुख्य मन्त्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जो अरोप-पत्र प्रेषित है, उसकी जांच किस अधिकारी ने की और क्या उस जांच की सूचना हमें भी दी गयी ताकि हम अपनी बात कह सकते ?

नोट—तारांकित प्रश्न सं० १३ के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया।

श्री अजीत प्रताप सिंह—

मान्यवर, जांच वहां पर डी० एफ० ओ० ने की थी। जहां तक सूचना का सम्बन्ध है, जब वह जांच करने गये तो माननीय सदस्य को वहां के डी० एफ० ओ० ने सूचना दी थी कि उनसे मिल लें। शायद माननीय सदस्य को समय नहीं मिला और वह उनसे नहीं मिल पाये।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

मेरी सूचना यह है कि जो जांच हुई है हमारी अनुपस्थिति में बिना सम्पर्क स्थापित किये वह जांच भी उस अधिकारी के विरुद्ध है क्या उसको दृष्टि में रखते हुये पुन: जांच कराने की कोशिश करेंगे और जो प्रारम्भिक जांच हुई है उस पर कार्यवाही करेंगे तथा जो अनियमितता जांच के दौरान ज्ञात हुई है उसके लिये हमको अपनी बात कहने के लिये और अवसर देंगे ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

मैं डी० एफ० ओ० से कह दूंगा वह उनसे मिल लें और जब वह कहेंगे तो फिर से जांच करवा दूंगा।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

जो जांच उपलब्ध है मेरी सूचना के अनुसार वह उस अधिकारी के विरुद्ध है तो उस सन्दर्भ में क्या कोई आवश्यक कार्यवाही मन्त्री जी करेंगे ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

जितने आरोप थे सबकी जांच हो चुकी है और वह वहां के डी० एफ० ओ० ने की है और उसमें कोई आरोप सिद्ध नहीं हुआ। एक ऐसा आरोप था मकान खरीदने के बारे में जिस पर अभी जांच जारी है और उस पर जांच अभी तक हो कर नहीं आई है।

श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)—

अक्तूबर माह में वह अधिकारी गोरखपुर हेडक्वार्टर पर ट्रान्सफर हो कर बुला लिया गया था और दूसरे आदमी को चार्ज दे दिया गया था तो किस के दवाब में उनको पुन: वापस वहां भेज दिया गया।

श्री अजीत प्रताप सिंह—

इसकी सूचना मुझे नहीं है कि वह फिर से वहां भेज दिया गया है।

*१४—श्री राम सेवक यादव—

[निधन हो जाने के कारण निरस्त।]

पीलीभीत वन खंड के ककरा कम्पार्टमेन्ट के अन्तर्गत वृक्षारोपण एवं भूमि का पट्टा

*१५—श्री इन्द्र लाल (जिला नैनीताल)—

क्या वन मन्त्री कृपया बतायेंगे कि पीलीभीत वन खंड के रेन्ज सुरई के ककरा कम्पार्टमेंट के अन्तर्गत कितनी भूमि पर सन् १९७४–७५ में वृक्षारोपण करने की योजना बनायी गयी है और इस कार्य हेतु कितनी भूमि लीज आउट कितनी-कितनी धनराशि में, किन-किन व्यक्तियों को दी गयी है और अब तक कितनी शेष भूमि पर विभाग द्वारा वृक्षारोपण करने की योजना है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

सूचना एकत्रित की जा रही है ?

तराई, भावर हल्द्वानी, जिला नैनीताल के भूतपूर्व उप अरण्यपाल के विरुद्ध भ्रष्टाचार की शिकायत

*१६—श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

क्या वन मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि तराई भावर हल्द्वानी, जिला नैनीनाल के भूतपूर्व उप अरण्यपाल (श्री जे० एस० चौहान) के विरुद्ध १९७२–७३ एवं नवम्बर, १९७४ तक भ्रष्टाचार तथा अनियमितताओं सम्बन्धी कितनी शिकायतें मिलीं ? शिकायतें क्या थीं तथा उन पर अब तक क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

सूचना एकत्रित की जा रही है।

भू-राजस्व की आय को जिला परिषदों को स्थानान्तरण

*१७—श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि भू-राजस्व के अधीन लेवी के रूप में वसूल किये गये धन का कुछ भाग जिला परिषदों को विकास कार्यों के लिये देने के प्रश्न पर विचार कर रही है? यदि हां, तो कुल वसूली का कितना अंश दिया जायगा।

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

उत्तर प्रदेश भूमि विकास कर अधिनियम, १९७२ में विकास कर के रूप में किसी भी वित्तीय वर्ष में संग्रहीत धनराशि के १५ प्रतिशत के बराबर धनराशि के जिला निधियों में हस्तान्तरित करने की व्यवस्था थी। अब २९ अक्तूबर, १९७४ से पारित अध्यादेश द्वारा यह कुल आय का १० प्रतिशत कर दिया गया है। ३१ मार्च, १९७४ तक वसूल की गई धनराशि में से जिला परिषदों को उनका अंश देने का प्राविधान आगामी वर्ष के आय-व्ययक में रखा जायेगा।

ललितपुर एवं झांसी जिलों में सूखा

*१८—श्री रघुनाथ सिंह (जिला झांसी)—

क्या सरकार को पता है कि ललितपुर एवं झांसी जिलों में सूखा के प्रभाव से खरीफ की फसल बरबाद हो जाने के बाद भी किसानों से सरकार की सभी प्रकार की वसूलियां लगान, तकावी आदि चालू हैं ? यदि हां, तो ऐसा क्यों ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

ललितपुर—

इस जनपद में पहले जुलाई माह एवं अगस्त में अधिक वर्षा हुई बाद में १५ दिनों तक लगातार वर्षा न होने के कारण सूखे की स्थिति होने तथा फसलों के सूख जाने की सम्भावना होने लगी थी। किन्तु २४ सितम्बर से २६ सितम्बर तक पर्याप्त वर्षा हो जाने से खरीफ की फसलों में सुधार हो गया एवं फसलों की क्षति की मात्रा इतनी नहीं रह गयी कि सरकारी देयों की वसली स्थगित की जाये। अतः सभी सरकारी देयों की वसूली नियमानुसार की जा रही है।

झांसी—

सूखा के प्रभाव से इस जनपद में फसलों को आंशिक रूप से क्षति पहुंची थी। क्षति गम्भीर न होने के कारण रबी १३८१ फसली की देय धनराशि की बसूली चालू रही।

बाढ़ग्रस्त जिलों को सबसिडी के रूप में दी गयी धनराशि

*१९—श्री अवधेश कुमार (जिला गोरखपुर)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि १९६४ में बाढ़ के कारण हुयी क्षति की पूर्ति हेतु कितना-कितना धन बाढ़ ग्रस्त को सबसिडी के रूप में दिया गया तथा यह धन किस-किस मद पर व्यय किया गया !

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सूचना एकत्र की जा रही है।

तहसील हसनगंज जिला उन्नाव के लेखपालों का कार्य-काल

*२०—चौधरी रामपाल सिंह यादव—

क्या राजस्व मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद उन्नाव के अन्तर्गत तहसील हसनगंज से सम्बन्धित कुल कितने लेखपाल ऐसे हैं जो एक ही परगने में १० वर्ष व हल्के में ५ वर्ष से हैं। कितने लेखपाल ऐसे हैं जिनका स्थानान्तरण एक ही परगना में कई बार रोका गया है? और क्यों?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

तहसील हसनगंज में एक ही परगने में १० वर्ष से कार्यरत ३१ लेखपाल हैं तथा एकही हल्के में ५ वर्ष से कार्यरत २ लेखपाल हैं। इस तहसील में ऐसा कोई लेखपाल नहीं है जिसका स्थानान्तरण एक ही परगने में किया गया हो और कई बार रोका गया हो।

*२१—श्री झिलमिट—

[४थे शुक्रवार के लिये स्थगित।]

*२२—श्री हरिकेवल—

[४थे शुक्रवार के लिये स्थगित।]

*२३—श्री हरिकेवल—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त।]

नगरपालिका सेवहारा जिला बिजनौर की भूमि पर अनधिकृत कब्जा

*२४—श्री अब्दुल वहीद (जिला बिजनौर)—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि नगरपालिका सेवहारा, जिला बिजनौर में ग्राम समाज की कुल कितनी आराजी है और क्या यह सही है कि उक्त ग्राम समाज की भूमि पर अनधिकृत रूप से लोगों ने कब्जा कर रखा है? यदि हां, तो इसके लिये कौन जिम्मेदार है तथा इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की जा रही है?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जिला बिजनौर में नगरपालिका सेवहारा में १८ गांवों की कुल आराजी ३०७ एकड़ शामिल है। इस आराजी में केवल १६ एकड़ बंजर भूमि है, और शेष क्षेत्रफल आबादी सड़क, रास्ता, कब्रिस्तान आदि हैं। उक्त १६ एकड़ बंजर भूमि में से ७ एकड़ भूमि पर नाजायज कब्जा पाया गया है जिसको हटाने के लिये जमींदारी विनाश नियमावली के नियम ११५-ग के अन्तर्गत कार्यवाही की जा रही है नाजायज कब्जों की रोक-थाम का उत्तरदायित्व नगरपालिका पर है।

तहसील चकिया जिला, वाराणसी की रिठिया बंधी की भूमि पर फर्जी इन्दराज

*२५—श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

क्या माल मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि तालुका नौगढ़, तहसील चकिया, जिला वाराणसी की रिठिया बंधी नं० २१३ रकबा ९७११ बीघा को जो गांव सभा की मिल्कियत थी हल्का लेखपाल ने फर्जी परताल कर दिया था जिसका मुकदमा अर्सा १२ वर्ष से परगनाधिकारी, चन्दौली, वाराणसी के यहां प्रधान रिठिया ने किया जब सिर्फ एक वर्ष का ही फर्जी इन्दराज था और क्या उक्त फर्जी इन्दराज के ऊपर तहसील चकिया ने दस गुना लेकर उक्त व्यक्तियों को भूमिधर बना दिया है? यदि हां, तो ऐसा क्यों और वे कैसे बेदखल किये जायेंगे?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सूचना एकत्र की जा रही है ।

*२६–२७—श्री हिम्मत सिंह—

[४थे शुक्रवार में प्रश्न संख्या ९–१० के अन्तर्गत पुनः स्थानान्तरित ।]

ललितपुर एवं झांसी जिलों में सूखा

*२८—श्री रघुनाथ सिंह—

क्या सरकार को पता है कि ललितपुर एवं झांसी जिला सूखा से प्रभावित हुये हैं तथा वहां खरीफ की फसलों को भारी नुकसान हुआ है तथा उक्त जिला के कुछ क्षेत्रों में भीषण भुखमरी खड़ी हो गयी है ? यदि हां, तो इस दैवी आपत्ति से जनता को राहत देने हेतु सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

(१) ललितपुर—

इस जिले में पहले तो माह जुलाई एवं अगस्त में अधिक वर्षा होती रही बाद में १५ दिनों तक लगातार वर्षा नहीं हुई जिससे सूखे की स्थिति होने एवं फसलों ,के सूख जाने की सम्भावना हो गयी थी । किन्तु २४ सितम्बर से २६ सितम्बर तक पर्याप्त मात्रा में वर्षा हो जाने से खरीफ की फसलों में सुधार हो गया एवं फसलों की क्षति की मात्रा चिंताजनक नहीं रह गयी थी इस जिले के किसी भी क्षेत्र में भुखमरी की स्थिति नहीं है खाद्यान्न की स्थिति सामान्य है और कहीं राहत कार्य खोले जाने की आवश्यकता नहीं है ।

(२) झांसी—

यह सही है कि जुलाई और अगस्त, १९७४ दोनों महीनों के प्रथम सप्ताह में निरन्तर वर्षा होती रही जिसके फलस्वरूप ज्वार और मक्का जैसी खरीफ की मुख्य फसलें बोने में कठिनाई हुई और कुछ खेत देर में बोये गये, बाद में अनावृष्टि के कारण वे फसलें जो देर में बोयी गयीं थीं ठीक प्रकार से पनप नहीं सकीं । सितम्बर, १९७४ में इस जनपद में थोड़ी बहुत वर्षा अवश्य हुई । इससे उन फसलों में सुधार हुआ जिनकी प्रगति ठीक थी लेकिन जो फसलें सूख गई थी उनमें विशेष सुधार नहीं हुआ । परिणाम स्वरूप ज्वार, मक्का, धान, कोदों, उर्द, मूंग, मूंगफली में आंशिक रूप से क्षति हुई है लेकिन ५० प्रतिशत की क्षति कहीं-कहीं ही हुई है और ऐसी स्थिति नहीं आई है कि राहत कार्य प्रारम्भ किए जायं या किसी को निःशुल्क अनुदान दिया जाय ।

अतारांकित प्रश्न

१—श्री शारदा प्रसाद रावत—

[७वें गुरुवार में प्रश्न संख्या ७ के अन्तर्गत स्थानान्तरित ।]

हल्द्वानी वन प्रभाग एवं तराई भावर वन प्रभाग की भूमि पर अनधिकृत कब्जा

२—श्री इन्द्र लाल—

क्या वन मंत्री कृपया बतायेंगे कि पश्चिमी वन वृत्त में वन प्रभाग, हल्द्वानी प्लान्टेशन प्रभाग व तराई भावर वन प्रभाग में १ अप्रैल, १९७४ से अब तक कितने व्यक्तियों ने वन भूमि पर अनधिकृत कब्जे कर लिये हैं ? यदि हां, तो शासन द्वारा इस संबंध में क्या कार्यवाही की गयी है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

पश्चिमी वृत्त के हल्द्वानी वन प्रभाग व तराई भावर वन प्रभाग में अप्रैल, १९७४ से अब तक ८५ व्यक्तियों ने वन भूमि पर अनधिकृत कब्जे कर लिए हैं । इन लोगों को वन भूमि से हटाने की कार्यवाही की जा रही है ।

३—श्री श्रीनारायण—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त ।]

देवरिया जिले की हाटा तहसील में बाढ़ से क्षतिग्रस्त मकान

४—श्री श्रीनारायण (जिला देवरिया)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले की हाटा तहसील में किन-किन गांवों के कितने-कितने घर इस साल वर्षा और बाढ़ से क्षतिग्रस्त हुये तथा सरकार ने उसके लिये क्या व्यवस्था की ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

अपेक्षित सूचना संलग्न सूची में दे दी गई है ।

(देखिये नत्थी 'ग' आगे पृष्ठ १०८५ पर)

बन्दोबस्त अधिकारी, (चकबन्दी) जिला जालौन के विरुद्ध भ्रष्टाचार की शिकायत

५—श्री मलिखान सिंह (जिला जालौन)—

क्या राजस्व मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि एक ग्राम प्रधान निवासी पीपरीकल (जालौन) ने चकबन्दी अधिकारी के भ्रष्टाचरण के विरुद्ध प्रार्थनापत्र प्रश्नकर्ता के माध्यम से दिनांक २-८-७४ को दिया था ? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही की गयी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी हां । ग्राम प्रधान, जिसने बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी के विरुद्ध हरिजन आबादी की भूमि के एलाटमेन्ट में भ्रष्टाचरण के आरोप लगाये हैं, ने उक्त एलाटमेन्ट के विरुद्ध निगरानी विचाराधीन होने के कारण और जांच सम्भव नहीं है ।

नैनीताल की तराई में जंगल -भूमि पर अनधिकृत कब्जा

६—श्री गोविन्द सिंह नेगी (जिला टिहरी-गढ़वाल)—

क्या वन मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला नैनीताल की तराई में जंगलात की कुल कितनी भूमि पर कितने व्यक्तियों का अवैध रूप से कब्जा है ? क्या यह सही है कि सरकार ने इन अवैध कब्जों को रेगुलराइज करने का निर्णय लिया है ?

श्री अजीत प्रताप सिंह—

जिला नैनीताल की तराई में जंगलात की कुल १२०३.४०७ हेक्टर वन भूमि पर १३५९ व्यक्तियों का अवैध रूप से कब्जा है । उपर्युक्त वन भूमि में से ११४.५३ हेक्टर वन भूमि को, जिस पर दिनांक ३१-३-१९६३ से पूर्व का अवैध कब्जा है, कब्जा करने वाले लोगों को भूमि पट्टे पर दिये जाने की कार्यवाही की जा रही है । इसके अतिरिक्त ३८.७४७ हेक्टर वन भूमि को टौंगिया काश्तकारों को, जिनके कब्जे में भूमि है, पट्टे पर दिये जाने की कार्यवाही की जा रही है । शेष भूमि से अवैध कब्जा हटाये जाने की कार्यवाही की जा रही है ।

नैनीताल के तराई भावर राजकीय आस्थान एवं उपनिवेशन योजना की भूमि पर अनधिकृत कब्जा

७—श्री गोविन्द सिंह नेगी—

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला नैनीताल की तराई में सरकारी व ग्राम समाज की कुल कितनी भूमि पर लोगों ने नाजायज कब्जा कर रखा है ? क्या यह सही है कि सरकार ने इन नाजायज कब्जों को रेगुलराइज करने का निर्णय लिया है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जिला नैनीताल के तराई भावर राजकीय आस्थान और उपनिवेशन योजना के अन्तर्गत ५४३६७ एकड़ और ग्राम समाज के १५७ एकड़ भूमि पर अनधिकृत कब्जा है। अनधिकृत कब्जों के नियमीकरण का प्रश्न शासन के विचाराधीन है।

अलीगढ़ जिले के मौजा रसूलपुरा में चकबन्दी

८—श्री इन्द्रपाल सिंह (जिला अलीगढ़)—

क्या राजस्व मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि अलीगढ़ जिले की तहसील कोल का मौजा रसूलपुरा स्वाद कस्बा जो कि जनवरी, १९७४ से अलीगढ़ नगरपालिका की सीमा के भीतर मिला दिया गया है उसके बाद भी उक्त ग्राम में चकबंदी करने के लिये काश्तकारों को नोटिसें १ फरवरी, १९७४ से ३१ जुलाई, ७४ के बीच जारी की गयी हैं? यदि हां, तो क्यों?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जी हां। प्रश्नगत क्षेत्र में जमींदारी विनाश अधिनियम, १९५० लागू होने के फलस्वरूप दिनांक ३१ मार्च, १९७३ की विज्ञप्ति द्वारा चकबन्दी क्रियायें प्रारम्भ करने की अधिसूचना प्रकाशित की गई थी। यह क्षेत्र जनवरी, ७४ से नगरपालिका की सीमा में अवश्य मिला दिया गया है पर अधिनियम के अनुसार इसका कोई प्रभाव चालू चकबन्दी क्रियाओं पर नहीं पड़ेगा।

९—श्री श्रीनारायण—

[१ले शुक्रवार में तारांकित प्रश्न संख्या १७ के अन्तर्गत उत्तरित।]

राजस्व परिषद् को समाप्त करने का विचार

१०—चौधरी राम पाल सिंह यादव—

क्या राजस्व मंत्री कृपया बतायेंगे कि सरकार राजस्व परिषद् समाप्त करने पर विचार कर रही है? क्या यह सही है कि राज्य सरकार को राजस्व परिषद् के बनाये रखने का अब कोई औचित्य नहीं है? यदि हां, तो राजस्व परिषद् को कब तक समाप्त कर दिया जायेगा? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

उत्तर प्रदेश पंचम विधान सभा की प्राक्कलन समिति के राजस्व परिषद् से सम्बन्धित दशम प्रतिवेदन में राजस्व परिषद् को समाप्त करने की संस्तुति की गई है, जो अभी शासन के विचाराधीन है।

फर्रुखाबाद जिले के चकबन्दी से छूटे हुये ग्रामों की चकबन्दी

११—श्री अनवार जमील (जिला फर्रुखाबाद)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जनपद फर्रुखाबाद की तहसील छिबरामऊ के जो ग्राम पहले चकबंदी में छूट गये थे उन ग्रामों में चकबंदी यथाशीघ्र करवाने पर विचार करेगी? यदि हां, तो कब तक?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जनपद फर्रुखाबाद की तहसील छिबरामऊ के चकबन्दी से छूटे हुए ग्रामों में चकबन्दी पंचम पंच वर्षीय योजना काल में कराना संभव नहीं है, पर छठी पंच वर्षीय योजना के लिये कार्यक्रम निर्धारित करते समय इन ग्रामों को चकबन्दी के अन्तर्गत लेने पर विचार कर लिया जावेगा।

१२—चौधरी राम पाल सिंह यादव—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त।]

१३—श्री कमला प्रसाद वर्मा—

[९वें बुधवार में प्रश्न संख्या २ के अन्तर्गत स्थानान्तरित।]

बहराइच तहसील के बाढ़ग्रस्त ग्राम

१४—श्री कमला प्रसाद वर्मा—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि बहराइच जिले की तहसील बहराइच में वर्ष १९७४ की बाढ़ से कौन-कौन गांव प्रभावित हुये और उन गांवों में व्योरेवार किस-किस प्रकार की कुल कितनी सहायता की गयी ? साथ ही सम्पूर्ण बहराइच तहसील में बाढ़ से कितने प्रतिशत फसलों की क्षति हुयी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

जिला बहराइच की तहसील बहराइच में वर्ष १९७४ की बाढ़ से कुल १६४ गांव प्रभावित हुए हैं। प्रभावित गांवों की सूची व दी गई सहायता का उल्लेख संलग्न तालिका में कर दिया गया है ।

सम्पूर्ण तहसील बहराइच में बाढ़ से औसत ५९ प्रतिशत क्षति हुई।

(देखिये नत्थी 'घ' आगे पृष्ठ.. ९८६-१०९२ पर)

१५—श्री श्रीनारायण—

[पुनरावृत्ति के कारण निरस्त]।

देवरिया जिले के ग्राम खुटही की भूमि की सीलिंग

१६—श्री श्रीनारायण—

क्या राजस्व मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले के रामकोला ब्लाक के खुटही ग्राम में सन् १९७० में किन-किन जमींदारों की कितनी-कितनी भूमि सीलिंग में निकाली उनका नम्बर और रकबा भी बताने का कष्ट करें तथा यह भी बतावें कि उस जमीन की क्या व्यवस्था हुयी ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

देवरिया जिले में हाटा तहसील के रामकोला ब्लाक के खुटही ग्राम में सन् १९७० में किसी खातेदार की कोई भूमि उत्तर प्रदेश अधिकतम जोत सीमा आरोपण अधिनियम के अन्तर्गत अतिरिक्त घोषित नहीं हुई है। प्रश्न का शेष भाग नहीं उठता।

उन्नाव जिले में कोठलाहार ग्राम का कब्रिस्तान

१७—श्री किशन लाल (जिला पीलीभीत)—

क्या राजस्व मन्त्री को जानकारी है कि जिला उन्नाव के अन्तर्गत तहसील हसनगंज के परगना मोहान के मौजा कोउलाहार की भूमि नम्बर १६१, एक पुराना कब्रिस्तान है और उक्त भूमि के सम्बन्ध में जिला उन्नाव के अन्तर्गत ग्राम न्योतिनी के किसी निवासी ने जिलाधिकारी, उन्नाव को सितम्बर, १९७२ से अब तक इस आशय के अनेक प्रार्थना-पत्र दिये हैं कि उक्त भूमि पर उसके परिवार का पुराना कब्रिस्तान है ? क्या इसकी जांच करायी गयी ? यदि हां, तो जांच की रिपोर्ट क्या है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

प्रश्नगत भूमि संख्या १६१, का क्षेत्रफल भू-अभिलेख के अनुसार ४ बिस्वा अंकित है, जिसमें ३ बिस्वा कब्रिस्तान तथा एक बिस्वा परती जमीन बन्दोबस्त सोयम में दर्ज था। इस समय उक्त भूमि श्री बैजनाथ पुत्र रोहतम के नाम अंकित है। उक्त भूमि के सम्बन्ध में ग्राम न्योतनी के एक निवासी ने दिनांक ५ मई, १९७५ को एक प्रार्थना-पत्र जिलाधिकारी, उन्नाव को दिया था पर इस भूमि के सम्बन्ध में जांच प्रार्थना-पत्र प्राप्त होने के पहले ही कराई जा चुकी है। जांच से यह प्रकट हुआ था कि भूमि पर दो कब्रें तथा ८ पेड़ हैं और यह इस समय श्री बैजनाथ के खाते में अंकित है।

देवरिया जिले में बड़ी गंडक से ग्रामों का कटाव और बाढ़ग्रस्त विकास खण्ड

१८—श्री श्रीनारायण—

क्या मुख्य मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले में छितौनी बन्ध पर इस वर्ष अब तक (सितम्बर, १९७४ तक) कितनी वर्षा हुयी और बड़ी गंडक नदी का जल स्तर क्या रहा और कौन-कौन से गांव नदी की धारा में विलीन हो गये और उसकी सरकार की तरफ के क्या व्यवस्था हुयी ?

१९—क्या मुख्य मन्त्री ये भी बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले के कौन-कौन से विकास खंड उस वर्ष पूर्णतया बाढ़ पीड़ित क्षेत्र घोषित किये गये हैं ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सूचना एकत्र की जा रही है।

मिर्जापुर जिले में टेस्ट वर्क के अन्तर्गत सड़कों का निर्माण

२०—श्री आशाराम यादव (जिला मिर्जापुर)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला मिर्जापुर में वित्तीय वर्ष १९७२-७४ व १९७३-७४ के टेस्ट वर्क योजना के अन्तर्गत किन-किन सड़कों को लिया गया उनमें से किन-किन सड़कों में कितना निर्माण कार्य हुआ और कितना शेष है ? उसे पूर्ण करने हेतु आगे कौन सी कार्यवाही की जा रही है ?

श्री स्वामी प्रसाद सिंह—

सूचना एकत्र की जा रही है ?

उपाध्यक्ष के निर्वाचन के स्थगन तथा उपाध्यक्ष द्वारा सभापतित्व किये जाने वाली समितियों का कार्य चलाने हेतु श्री अध्यक्ष को अधिकार देने का संकल्प

श्री अध्यक्ष—

अभी उपाध्यक्ष पद के चुनाव के लिये कार्य-सूची २ पर उपाध्यक्ष पद के लिये नाम-निर्देशित अभ्यर्थियों की घोषणा होनी थी लेकिन मेरे कक्ष में अभी माननीय नेताओं ने कुछ निर्णय लिया है उस सम्बन्ध में वह बतलायेंगे।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने आपसे अर्ज किया था सभी नेताओं की राय थी कि आज इसको मुल्तवी कर दिया जाय और अगला जो सेशन हो उसमें पहले दिन चुनाव कर लिया जाय। कोशिश सिर्फ यह है कि इलेक्शन न हो, सर्वसम्मति से हो जाय।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)—

मैं आपका ध्यान नियमावली की धारा ९ की ओर ले जाना चाहता हूं जिसमें उपाध्यक्षके निर्वाचन का नियम है। अगर चौधरी साहब की बात मान ली जाती है और सारे सदन को वह मान्य हो लेकिन मुझे वह मान्य नहीं है और अगर आप सब को मान्य हो तो इस नियम को तब तक के लिये स्थगित कर दिया जाय जब तक कि उपाध्यक्ष का चुनाव न हो जाय।

श्री अध्यक्ष—

मैं काशीनाथ जी को सूचना देना चाहता हूं और उनकी स्मरण शक्ति को जाग्रत करना चाहता हूं कि सर्व प्रथम नियम का ही निलम्बन हुआ था तब इसके बाद यह चुनाव टला था।

श्री काशीनाथ मिश्र—

यह प्रस्ताव नहीं हुआ था कि तब तक के लिये यह निलम्बन किया जाता है जब तक कि चुनाव न हो जाय, ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं पास हुआ था। यह केवल उस काल के लिये था। ऐसा थोड़े ही है कि हमेशा के लिये निलम्बित हो जाय। ऐसा प्रस्ताव नहीं आया था।

श्री गंगा प्रसाद (जिला एटा)—

मान्यवर, इनको नियमावली से कोई मतलब नहीं है इनका तो अखबार में नाम आ जाना चाहिए।

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, यह सदन नियमावली के किसी भी अंश को निलम्बित करने के लिये सक्षम है। नेता बिरोधी दल ने प्रस्ताव रख दिया तो नियमों को सस्पेंड करने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

वित्त मन्त्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

जैसा कि माननीय नेता विरोधी दल से और अन्य नेताओं से आपके कक्ष में बात हुई थी और यह निर्णय हुआ था जिसका उल्लेख अभी माननीय नेता विरोधी दल ने किया है। नियमों का निलम्बन भी जरूरी है तो वह भी निलम्बित कर दिये जायं। दूसरी बात यह है कि उपाध्यक्ष, जो कि हमारी कुछ समितियों के पदेन सभापति होते हैं, के न चुने जाने तक उन समितियों का काम रुका न रहे, आप स्वत: ही या तो उनमें अध्यक्षता करें या जिन समितियों में आपने सभापति के लिये नामांकन किया है, उनमें से किसी को इन समितियों के सभापति के लिये नामांकित कर लें।

श्री अध्यक्ष—

इस सदन की सर्व सम्मत राय है कि नियमों को स्थगित करते हुये उपाध्यक्ष का चुनाव आज स्थगित करके जब अगला सत्र हो तो पहला काम उपाध्यक्ष का चुनाव हो। यह आपके समक्ष है। मैं समझता हूं कि इसमें किसी को आपत्ति नहीं है।

(कोई आपत्ति नहीं की गयी)

कुंवर श्रीपाल सिंह (जिला सुल्तानपुर)—

अध्यक्ष महोदय, एक स्पष्टीकरण चाहता हूं कि जो नामांकन आज हुआ है, क्या अगले सत्र में जब उपाध्यक्ष का चुनाव होगा तो यही नाम रहेंगे या फिर से नामांकन होगा ?

श्री अध्यक्ष—

वह फिर से करना पड़ेगा। जैसा कि मैंने पहले कहा कि आज की प्रक्रिया को निरस्त करते हुये उस समय पहले दिन नामजदगी के लिये आपको अवसर मिलेगा और दूसरे दिन चुनाव हो जायेगा ;

दूसरी बात यह है कि जैसा कि संसदीय कार्य मन्त्री ने संकेत किया है आप थोड़े अधिकार अध्यक्ष को दे दें। विशेषाधिकार समिति, याचिका समिति, आवास मन्त्रणा समिति तथा विधान मन्डल पुस्तकालय समिति जिनके उपाध्यक्ष पदेन सभापति होते हैं, का कार्य करने के लिये प्रविधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियमों को निलम्बित करते हुये यह सदन श्री अध्यक्ष को यह अधिकार देता है कि वह समितियों का कार्य करने के लिये जो भी आवश्यक कार्यवाही हो, करें। मैं समझता हूं कि आप सहमत होंगे।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ)।

कतिपय विषय

श्री गंगा प्रसाद (जिला एटा)—

विधायकों के समान वेतन के लिये आपने नेताओं को बुलाकर एक मीटिंग की थी। कुछ लोग तो बढ़िया-बढ़िया कमेटीज में मजा कर रहे हैं..... इससे ८ लाख रुपये की बचत होगी। उसको लाने में क्या दिक्कत है ?

श्री अध्यक्ष—

यह सवाल उठाया गया। वह यहां कहने की बात नहीं है। इस सम्बन्ध में जो निर्णय किया गया उसके उल्टे ही आप कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में नेताओं से बात हो गई है। आप नेताओं से बात कर लें।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

अध्यक्ष महोदय, मैंने ३०१ में सूचना दी है....

श्री अध्यक्ष—

अगर आज के बाद सदन नहीं बैठता है और प्रोरोग हो जायेगा तो फिर सूचना देनी पड़ेगी।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

अध्यक्ष महोदय आप ३०१ में स्वीकार करलें तो वह चलती रहेगी। (व्यवधान) बड़ा अहम प्रश्न है। मान्यवर, आप उसे मान लें नहीं तो बाद में फिर यही कह दिया जायेगा।

श्री अध्यक्ष—

बहुत से सवाल हमारे सामने होते हैं तो वह खत्म भी हो जाते हैं। आप फिर से उठायेंगे.....

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

फिर उसमें देर होगी।

श्री अध्यक्ष—

देर होगी लेकिन आप उठा सकते हैं। बात यह है कल आपने ऐसे ही उठा दिया लेकिन जब मैंने फाइल में देखा तो मैं उसे अस्वीकार कर चुका था। आपने ऐसे ही उठा दिया तो उसमें मैंने कहा था कि मैं विचार करूंगा। जबानी तो हर बात याद नहीं रहती है। तो आपको इसको फिर देना पड़ेगा।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

अध्यक्ष महोदय, आज मैंने पुनः दे दिया है।

श्री अध्यक्ष—

इसको देख लेंगे, पुन: निर्णय करेंगे और आपको सूचना दे देंगे।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

अध्यक्ष महोदय, मैंने आज दिया है।

श्री अध्यक्ष—

आपने आज दिया है तो उसको देखा नहीं है मैंने उसको देख कर निर्णय करके आपको बता देंगे। आपको फिर मौका मिलेगा।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

फिर यह नियम ३०१ का कब उपयोग होगा।

श्री अध्यक्ष—

उस पर हम विचार करेंगे आपको मौका देंगे, पुनः देने का।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

अध्यक्ष महोदय, विचार करके फिर इसी नतीजे पर पहुंचेंगे? तो श्री मालवीय की बात मान लीजिये उसे स्वीकार कर लीजिये फिर कहां मौका मिलेगा इसलिये अभी कह दीजिये।

श्री अध्यक्ष—

अवसर मिलेगा।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

फिर अवसर इसी बात का मिलेगा जिसको मैं २६ तारीख से लगातार रखते आ रहा हूं। २६ को रखा, २७ को रखा, २८ और २९ को छुट्टी थी फिर ३०, ३१ और पहली दूसरी तारीख को दिया।

श्री अध्यक्ष—

वह ५६ में दिया ५१ में दिया।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

अध्यक्ष महोदय, ३११ में दिया फिर आप से बात हुई। मेरा निवेदन है कि इस नियम के अन्दर दिया है। आज के बाद फिर वह स्टेज आयेगी नहीं। इसलिये आप इसे स्वीकार कर लें फिर चलता रहेगा।

श्री अध्यक्ष—

उसको देख लेंगे कि नियम में आता है या नहीं आपको बता दिया जायेगा। आपको फिर अवसर मिलेगा अगली दफा।

चौधरी चरण सिंह—

अध्यक्ष महोदय, इतने में तो पत्थर भी पसीज जाता है और आप तो बड़े दयावान हैं इसे मान लीजिये और कह दें कि मान लिया है।

श्री अध्यक्ष—

कह दिया है।

प्राक्कलन समिति का द्वितीय प्रतिवेदन†

श्री अध्यक्ष—

अब सभापति प्राक्कलन समिति, उत्तर प्रदेश छठी विधान सभा की प्राक्कलन समिति (१९७४-७५) का द्वितीय प्रतिवेदन, जो शासन द्वारा विशेष वेतन के रूप में व्यय की जाने वाली धनराशि तथा इस व्यय के औचित्य से संबन्धित है, प्रस्तुत करेंगे।

श्री रामायण राय (जिला देवरिया)—

अध्यक्ष महोदय, मैं सभापति प्राक्कलन समिति, उत्तर प्रदेश छठी विधान सभा की प्राक्कलन समिति (१९७४-७५) का द्वितीय प्रतिवेदन जो शासन द्वारा विशेष वेतन के रूप में व्यय की जाने वाली धनराशि तथा इस व्यय के औचित्य से सम्बन्धित है, को प्रस्तुत करता हूं।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)—

अध्यक्ष महोदय, हिन्दी साहित्य जगत के महान....

प्रतिभा सिनेमा से सम्बन्धित याचिका

श्री अध्यक्ष—

अब माननीय भीखा लाल याचिका उपस्थित करेंगे।

श्री भीखा लाल (जिला उन्नाव)—

अध्यक्ष महोदय.....

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव (जिला जौनपुर)—

अध्यक्ष महोदय, श्री भीखालाल जी की याचिका से सम्बन्धित प्रस्ताव पर आपत्ति है। यह इसे नहीं रख सकते हैं।

श्री अध्यक्ष—

याचिका को अध्यक्ष की आज्ञा से रखते हैं फिर वह याचिका समिति में जाती है।

---

†छापा नहीं गया।

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव—

अध्यक्ष महोदय, नियम २३६ में दिया हुआ है उसमें स्पष्ट लिखा हुआ है अध्यक्ष को सम्मति से निम्न पर याचिकायें उपस्थित या प्रस्तुत की जा सकेंगीं—यह सब १, २, ३ दिये हुये हैं तो श्रीमन्, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि विधान सभा में व्यक्तिगत विषयों को वेन्टीलेट करने के लिये विधान सभा में अवसर नहीं दिया जा सकता है। इसलिये यह सिनेमा से सम्बन्धित विषय पर नहीं विचार हो सकता है।

श्री अध्यक्ष—

एक याचिका वह रखना चाहते हैं जिस पर समिति निर्णय करेगी। (व्यवधान) अभी याचिका सदन के समक्ष रख रहे हैं। वह तो याचिका को प्रस्तुत करने का प्रस्ताव कर रहे हैं। जैसे कोई बिल प्रस्तुत करते हैं। और विशेषाधिकार का सवाल प्रस्तुत करते हैं, तो यह आपका दृष्टिकोण नहीं हो सकता है कि माननीय भीखालाल जी प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। यदि वह इस सदन के सदस्य हैं, सक्षम हैं तो वह प्रस्तुत कर सकते हैं। वह स्वीकृत होता है या अस्वीकृत होता है, इसे सदन की कमेटी देखती है।

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव—

मेरा निवेदन यह था कि वह सक्षम ही नहीं हैं इसके लिये . . . .

श्री अध्यक्ष—

मैं इससे सहमत नहीं हूं। आपके याचिका समिति की जो परिधि है, उसमें माननीय अध्यक्षों द्वारा बढ़ाये गये निरन्तर कार्य का आपको कोई पता नहीं है। ऐसे भी विषय वहां उठाये गये हैं, जो किसी दुखिया आदमी का है, जिसे कहीं कोई न्याय नहीं मिलता है, उसको भी उठाने के कारण उसमें दिये गये हैं। आप अभी जानकारी इस विषय की नहीं रखते हैं। यदि आपको जानकारी लेनी है, तो मेरे कक्ष में आएं, मैं समझा दूंगा। याचिका की परिधि बढ़ाने के सम्बन्ध में अनेक व्यवस्थाएं, आदेश और निर्देश माननीय अध्यक्षों द्वारा दिये जा चुके हैं।

श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव—

मेरा तो श्रीमन्, मूल पर ही आघात है।

श्री अध्यक्ष—

सवाल यह है कि आपकी कमेटी के सामने वह जायगा। सदन के सामने इस पर विचार नहीं होता है। आप अभूतपूर्व काम कर रहे हैं। जो प्रस्तुत की जाती है वह गलत या सही भी प्रस्तुत हो सकती है। आप यह नहीं कह सकते हैं कि इनको अधिकार ही नहीं है। यह बात कोई अजनवी कहता तो समझ में आता, लेकिन आपसे ऐसी आशा नहीं की जाती। आप याचिका सम्बन्धी जो सानुज्ञात बातें हैं उनको जानने की कोशिश करें।

श्री भीखालाल—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से विधान भवन के समीप निर्मित प्रतिभा सिनेमा को सरकार द्वारा लाइसेंस दिये जाने के सम्बन्ध में श्री मोहनलाल, गूंगेनवाब पार्क, अमीनाबाद, लखनऊ द्वारा हस्ताक्षरित याचिका उपस्थित करता हूं।

श्री अध्यक्ष—

एक विशेषाधिकार की अवहेलना का प्रश्न है।

श्री शिवकुमार पान्डेय (जिला सुल्तानपुर)—

एक प्रार्थना-पत्र मैंने दिया है, उस पर विचार कर लीजिये।

श्री अध्यक्ष—

मेरे पास नहीं है।

श्री शिवकुमार पाण्डेय—

सचिव महोदय के पास है ।

श्री अध्यक्ष—

यह प्रश्न विशेषाधिकार के प्रश्न के बीच में क्यों उठा ? कोई चिट्ठी अभी सचिव को देता है तो उसको मैं नहीं मानता हूं । १० बजे के पहले देनी चाहिये । यह प्रक्रिया है ।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)—

अभी ओम प्रकाश जी ने जो सवाल उठाया था, उसको आपने रूल आउट कर दिया, यह विधान सभा में याचिका प्रस्तुत करने की जो बात है । जब आप नियमावली देखेंगे तो उसके अनुसार वही विषय याचिका समिति में आ सकता है जिसका कोई अन्य और तरीका न हो . . . .

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

मैं इसकी इजाजत नहीं देता हूं । इस काम को इस सदन की समिति देखेगी ।

श्री काशीनाथ मिश्र—

नियमों में साफ है, जो कहीं नहीं हो सकता है वह याचिका में आ सकता है, वही आता है ।

श्री अध्यक्ष—

यदि अस्वीकृत करेगी तो वह इसके गुण-अवगुण में जाकर अस्वीकृत या स्वीकृत करेगी । यह माननीय सदस्य अपनी जानकारी पर रख रहे हैं, उसको खारिज करने के मालिक दूसरे हैं ।

(व्यवधान)

यह नियमानुकूल है । एक मर्तबा—

(व्यवधान)

श्री काशीनाथ मिश्र—

माननीय ओम प्रकाश जी ने जो कहा है, मैं उससे भिन्न बात कह रहा हूं । जो बात कहीं नहीं उठायी जा सकती वह याचिका में उठायी जायगी ।

श्री अध्यक्ष—

कानून और नियमों का लचीलापन किस हद तक अध्यक्षों के निर्णयों के अन्तर्गत कैसे विकसित होता है यह सवाल है । जब अध्यक्ष ने उसको देख कर, एक बार यह सवाल उठा था, याचिका समिति या विशेषाधिकार समिति में, निर्दिष्ट कर दिया है, मैंने यह दृष्टि उस वक्त रखी थी । मैंने कहा कि किसी चीज को भेज देने का अर्थ नहीं है कि अध्यक्ष उसके बारे में गुणावगुण देख कर उस पर निर्णय कर रहे हैं । इस हाउस में इस पर बहस होगी । सवाल यह है कि अगर आप कहें कि नियमानुकूल नहीं है तो दूसरा कहेगा कि नियमानुकूल है, सदन यह बहस नहीं करता । उसको उन्होंने प्रस्तुत कर दिया । समिति अगर अस्वीकार करने लायक होगा तो अस्वीकार कर देगी । चूंकि प्राग्दर्शन में बनता है इसका अर्थ यह नहीं है कि निश्चित रूप से यह कोई वेद वाक्य है । वह उस पर स्वीकार या अस्वीकार का विवेक इस्तेमाल नहीं करता । स्वीकार भी हो सकता है, अस्वीकार भी हो सकता है, लेकिन समिति करती है, हाउस में इस तरह से नहीं होता ।

वित्त मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष—

माननीय दशरथ सिंह ने एक सूचना दी है कि माननीय वित्त मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने सदन में गिरफ्तार छात्रों की सूची में श्री राजेन्द्र अग्निहोत्री का नाम दे कर अकारण उन्हें मामले में घसीटने का प्रयत्न किया है तथा आदरणीय सदन को गुमराह किया है। माननीय दशरथ सिंह ने इस आधार पर माननीय वित्त मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना का प्रश्न उठाने की सूचना दी है।

वित्त मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मैंने उनका सीधा नाम लिया नहीं। जहां तक मैंने जितेन्द्र अग्निहोत्री का जिक्र किया था, जो वहां कोलाहल हुआ था, मैंने, मुझे याद है—राजेन्द्र अग्निहोत्री का नाम नहीं लिया था।

श्री अध्यक्ष—

यह परम्परा है कि जब आप कहते हैं कि माननीय सदस्य ने कहा, माननीय सदस्य कहते हैं कि नहीं कहा तो, उन्हीं की बात मानी जाती है।

एक सदस्य—

नाम लिया था।

श्री अध्यक्ष—

प्रोसीडिंग में हम देख रहे हैं। बृजेन्द्र अग्निहोत्री तथा कुछ अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार किया? इसलिए यह अस्वीकृत।

शिक्षा मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना के प्रश्न की सूचना

श्री अध्यक्ष—

माननीय मोतीलाल देहलवी ने सूचना दी है कि माननीय शिक्षा मंत्री ने ३१ दिसम्बर, १९७४ को श्री शिवानन्द नौटियाल के अल्पसूचित तारांकित प्रश्न संख्या २ का जानबूझ कर गलत उत्तर देकर सदन को गुमराह किया है व असलियत को छिपाया है और इस प्रकार सदन का अवमान किया है। माननीय मोतीलाल देहलवी ने ऐसी ही एक सूचना कल भी दी थी जिसको अस्वीकार कर दिया गया था। अस्वीकार करने के आधारों में से एक आधार यह भी था कि सूचना के साथ उन लेख्यों की प्रतिलिपि संलग्न नहीं थी जिनके आधार पर माननीय देहलवी ने यह निष्कर्ष निकाला था कि माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा जो उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर दिया गया है वह गलत था। आज सूचना के साथ माननीय देहलवी ने तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजबिहारी सिंह के २९ दिसम्बर, १९७३ के पत्र, श्री राधेश्याम शर्मा, उप सचिव (शिक्षा–६) अनुभाग के २८ जनवरी, १९७४ के पत्र तथा "उत्तर प्रदेश में जनतांत्रिक सरकार के ५५ दिन" नामक पैम्फलेट की एक–एक प्रति संलग्न है। ३१ दिसम्बर, १९७४ को माननीय शिवानन्द नौटियाल ने सदन में माननीय शिक्षा मंत्री से यह अनुपूरक प्रश्न पूछा था कि श्री राजबिहारी सिंह जो तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री थे, क्या वह सरकारी बेसिक शिक्षा परिषद् के अध्यापक हैं, उनको जो वेतन भत्ते दिये जा रहे हैं वही गैर सरकारी हाई स्कूलों और इंटरमीडिएट के अध्यापकों को भी दिये जायेंगे।

इस अनुपूरक प्रश्न के उत्तर में माननीय शिक्षा मंत्री ने यह कहा था कि कोई लिखित आश्वासन नहीं दिया गया था, लेकिन बातचीत के दौरान कहा जरूर था और यह बात तय हुई थी। लेकिन उसकी स्वीकृति शिक्षा निदेशक द्वारा नहीं मिली। इसलिये वह बात वहीं पर रुक गई।

शिक्षा मंत्री (श्री रामजीलाल सहायक)—

मान्यवर, जो प्रश्न का उत्तर दिया जाता है वह वही दिया जाता है जो विभाग द्वारा आता है। मुझे यह बताया गया था कि लिखित रूप में कोई भी प्रतिलिपि नहीं है, इसलिये मैंने उत्तर दिया था।

श्री अध्यक्ष—

विभाग ने गलत सूचना दी तो मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि उससे वे सदन को अवगत करा दें जैसा कि माननीय मोतीलाल देहलवी का कहना है तो वह इस संबंध में उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा जारी किये गये करण अंक (२) के पैरा २०७ के अनुसार कार्यवाही करके यथासमय सदन को भी सूचित करने की कृपा करें।

श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)—

मान्यवर,.....(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

आपके पक्ष में ही हो गया है।

श्री मोती लाल देहलवी—

श्रीमन्, निवेदन करूं.....

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

यदि आप निवेदन करेंगे तो निर्णय उलटाना चाहते हैं क्या ? आपकी बात मानी है तब भी आप कह रहे हैं। मैंने निर्णय दे दिया है। अब सुनने का मतलब यह है कि सवाल को फिर से खोल दें।

श्री मोती लाल देहलवी—

मान्यवर, मुझे निवेदन करना है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

अब मेरा निर्णय हो गया है और जो आप चाहते थे आप के हक में है।

श्री हुकम सिंह का टाइम्स आफ इंडिया द्वारा गलत दल छाप देने के संबंध में आपत्ति

श्री अध्यक्ष—

माननीय हुकम सिंह जी ने एक सूचना दी है कि टाइम्स आफ इंडिया में जो समाचार प्रकाशित किया है उसमें मुझे विरोधी पक्ष का सदस्य दर्शाया गया है जबकि मैं शासक दल में हूं। मैं आशा करता हूं कि टाइम्स आफ इंडिया के जो सम्वाददाता हैं वह कृपया इस भूल को सुधार लें।

श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)—

मान्यवर, स्पष्ट आदेश हैं। माननीय शिक्षा मंत्री उनको लागू करने के आश्वासन दे दें।

श्री शिवकुमार पांडेय की सूचना

श्री अध्यक्ष—

एक सूचना माननीय शिवकुमार पांडेय की है जिसमें मुझ से स्पष्टीकरण मांगा है। यह अनियमित है।

श्री शिवकुमार पांडेय (जिला सुल्तानपुर)—

मान्यवर, मेरी भावना यह नहीं थी।

श्री अध्यक्ष—

हम आपके हृदय में प्रविष्ट होने का साहस नहीं करेंगे।

श्री रामजी सिंह तथा श्री झिलमिट (गाजीपुर) द्वारा दल परिवर्तन के सम्बन्ध में सूचना

श्री अध्यक्ष—

मुझे सदन को यह भी सूचित करना है कि श्री रामजी सिंह (गाजीपुर) तथा श्री झिलमिट (गाजीपुर) जिन्होंने अपने को भारतीय क्रान्ति दल का सदस्य बताया है, परन्तु जो विधान सभा में विभिन्न दलों के सदस्यों की सूची (दिनांक २४ दिसम्बर, १९७४ तक संशोधित) के अनुसार भारतीय लोक दल के सदस्य हैं, ने सूचित किया है कि वे कांग्रेस दल में सम्मिलित हो गये हैं।

मंत्रि परिषद् के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)*

श्री ईश्वरी सिंह (जिला बुलन्दशहर)—

अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि अविश्वास के प्रस्ताव को रखते हुये माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य विरोधी दलों के नेताओं ने जो तर्क रखे हैं वे बिलकुल अर्थ-हीन और तर्कहीन हैं। अविश्वास के प्रस्ताव पर बोलते हुये माननीय नेता विरोधी ने फरमाया था कि खेती की तरक्की की तरफ कतई ध्यान नहीं दिया गया है।

मान्यवर, कल मैंने आपके माध्यम से निवेदन किया था कि सिंचाई के संबंध में सम्भवतः उन्हें भ्रम है। सिंचाई के साधनों पर जितनी तरक्की होनी चाहिये, जितनी आवश्यकता है, उतनी नहीं हो पाई है, यह सही है। लेकिन यह उनके मन का भ्रम है कि बहुत कम तरक्की सिंचाई के साधनों पर हो पाई है। आज मैं आपके माध्यम से उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस तरीके से जो खेती में और दूसरे तरीके से जो तरक्की की गई है, जैसे मिसाल की तौर पर इस दौरान में हाई ईल्डिगं वेरायटी निकाली गई धान के उत्पादन के क्षेत्र में, गेहूं के उत्पादन के क्षेत्र में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन किये गये हैं। इसी का परिणाम है कि हमारा देश जो बहुत सा खाद्यान्न विदेशों से मंगाने के लिये निर्भर था अब उतना नहीं है। आप इस बात पर गौर करें और माननीय सदस्य गौर करें कि चावल, गेहूं, गेहूं का आटा वगैरह जो बाहर दूसरे देशों से मंगाया जाता था, १९६५ में चावल ७ लाख ८३ हजार टन यह इम्पोर्ट किया जाता था, लेकिन १९७२ में आकर यह चावल कुल १ लाख ३१ हजार टन रह गया। इसी तरीके से गेहूं जहां पर कि ६५ लाख ८३ हजार टन, १९६५ में इम्पोर्ट किया गया था, १९७२ में आकर कुल ३ लाख ५ हजार टन इम्पोर्ट रह गया। मेरा अर्ज करने का मतलब यह है कि यह हो सकता है कि हमारे नेता विरोधी दल को खेती के उत्पादन से संतोष न हो कि जितना उत्पादन होना चाहिये था वह नहीं हुआ। लेकिन उसको यह कहना कि खेती की तरफ पंडित जवाहर लाल जी ने या इंदिरा गांधी जी ने प्रायोरिटी नहीं दिया, मैं कहता हूं कि यह उनका भ्रम है।

मैं इसी संदर्भ में और जब निवेदन करूंगा, उससे पहले यह बता देना चाहता हूं कि असल में जो आर्थिक उन्नति की हमारी आकांक्षा है या जो वास्तव में उन्नति हुई है, उन दोनों में यह अन्तर है कि हमारी आवश्कताएं, हमारी आकाक्षाएं काफी हैं लेकिन फिर भी कोई आज देश में आर्थिक उन्नति गलत दिशा की तरफ नहीं जा रही है। असल में, मूल प्रश्न है जैसा कि मैं समझता हूं विरोधी पार्टी भी जानती है कि देश के अंदर खेती के संबंध में, उद्योग धंधों के संबंध में या कुटीर उद्योग के संबंध में तरक्की हो रही है। लेकिन असली बात क्या है? असल बात यह है कि आज हमारे हिन्दुस्तान में कांग्रेसी सरकार ने और विशेष रूप से श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में, केन्द्रीय सरकार नहीं बिल्क हमारी प्रदेशीय सरकार ने यह निश्चय

*२ जनवरी, १९७५ को कार्यवाही से।

[श्री ईश्वरी सिंह]
किया है कि यह जो बीच के मुनाफाखोर हैं, बीच के जो सरमायेदार हैं, जो ज्यादा से ज्यादा किसानों का शोषण करते हैं, उनके हाथ से पूंजी के साधनों को निकाल कर आम जनता के हाथ में दिया जाय ।

श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से यह बता देना चाहता हूं कि यही कारण है कि पांचवी पंचवर्षीय योजना में आप इन आंकड़ों को देखेंगे और मैं माननीय नेता विरोधी दल से निवेदन करूंगा कि वह इस बात का अध्ययन करें कि आज जो हमारे देश में पूंजी लगाने की जो पांचवी पंचवर्षीय योजना में प्लान रखी गई है, वह इस प्रकार है:—पब्लिक सेक्टर में रखा गया है—३ खरब, १४ अरब रुपया, जब कि प्राइवेट सेक्टर में है कुल— १ खरब, ६१ अरब रुपया। मान्यवर, आप देखें कि कितना अन्तर है । इसी तरीके से कोआपरेटिव सेक्टर में रुपया रखा गया है । मतलब यह है कि जहां हमारा ४ खरब ७५ अरब और ६१ करोड़ का टोटल इनवेस्टमेंट का पैटर्न है, उसमें प्राइवेट सेक्टर में कुल १ खरब ६१ अरब और ६१ करोड़ रखा गया है । इसी से साफ जाहिर है कि हमारी सरकार और हमारी पार्टी का उद्देश्य पब्लिक सेक्टर को बढ़ाना है और उसी संदर्भ में विभिन्न कारपोरेशन्स को खोलने का निश्चय किया गया है जिससे कि माननीय नेता विरोधी दल और नेता जनसंघ चौंकते हैं। उनको यह ऊट-पटांग की बात मालूम पड़ती है । मैं आपसे निवेदन कर रहा था जहां तक पब्लिक सेक्टर को बढ़ाने की बात है, वह कारपोरेशन्स के जरिए ही बढ़ाया जायेगा । तभी देश का विकास होगा, चाहे वह औद्योगिक विकास हो या खेती का विकास हो, अगर हम इसको निजी व्यक्तियों में निहित कर देंगे तो समाजवाद नहीं आ सकता है । अगर हम समाजवाद लाना चाहते हैं तो सहकारी सेक्टर से ही ला सकते हैं । इसलिये सहकारी सेक्टर को बढ़ावा देना होगा । तो हमारे समाज-वाद के अन्दर प्रशासन को चलाने का तरीका है वह विकेन्द्रित होगा, केन्द्रित न होगा । इसी वजह से जो हमारे विरोधी हैं वह अब तक सरमायेदारी का ख्वाब देखते रहे हैं । उनका यह समाजवादी की बात ऊटपटांग लगती है ।

मैं मान्यवर, इसी सम्बन्ध में कह रहा हूं । असल में बात और है । बात यह है कि हमारे माननीय चौधरी साहेब ने जैसा कि वह देखते हैं कि अगर यह समाजवाद की चीज बढ़ेगी तो जो उनके सहयोगी हैं माननीय बीजू पटनायक, पीलू मोदी, उनका जो ढांचा है, वह इस समाजवादी तरीके में सही ढंग से फिट—इन नहीं होंगे । उनके अन्दर झुंझलाहट है और सही चीजों को देखने के बजाय बार-बार इस लाछन को लगाते हैं कि पंडित जवाहर लाल जी ने खेती को प्राथमिकता नहीं दी । मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि बजट भाषण के दौरान मैंने कहा था कि खेती की प्रगति के लिये बड़े-बड़े कारखानों की आवश्यकता है। खेती की प्राथमिकता के साथ-साथ बड़े-बड़े कारखानो को छोड़ा नहीं जा सकता है,उनकी तरक्की से खेती की तरक्की है । मिसाल के तौर पर मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि फर्टीलाइजर के कारखाने को ले लीजिये । खाद का कारखाना है, यह कोई छोटे पैमाने पर नहीं खोला जा सकता है । इसको लगाने के लिये बहुत रुपये की आवश्यकता होगी । फर्टीलाइजर के उत्पादन से खेती का उत्पादन बढ़ेगा । तो अगर आप खाद के कारखाने को चलाते हैं तो उस पर आप को रुपया खर्च करना पड़ेगा । अगर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने खाद का कारखाना लगाया तो वह खेती की प्रगति के लिये लगाया । इस देश की प्रगति के लिये लगाया था ।

अब मैं दूसरी बात कहना चहता हूं । खेती में जो पैदा होता है मान लीजिये कपास पैदा होती है । अगर कारखाने नहीं लगाये जायेंगे तो उनसे कपड़े का निर्माण कैसे होगा । कपड़े की मिलें कैसे होगी । अगर कपास की कीमत नहीं ज्यादा होगी तो किसानों को फायदा नहीं पहुंचेगा । किसानों को सही कीमत नहीं मिल सकती है। अंग्रेजों के समय में लीवर पूल और मैनचैस्टर से हमारे लिये कपड़ा बन कर आता था। चमड़ा हमारे यहां पर होता था लेकिन वहां से जूते बन कर आते थे। आज वही हिन्दुस्तान है जहां से अरबों-खरब रुपये का कपड़ा

और जते विदेशों, अफ्रीका और रूस जैसे प्रगतिशील देशों को भेजे जाते हैं जहां पर औद्योगीकरण हो चुका है, वह भी हमारे देश से यह सामान मंगाता है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या यह सही नहीं है कि स्पिनिंग मिल्स होने के बावजूद ही आज बुनकरों को सूत मिल पाता है? मेरठ में पिलखुआ एक जगह है, जहां पर अगर स्पिनिंग मिल से सूत न मिलता तो वहां के बुनकर भूखों मर जायेंगे और उनका रोजगार ठप्प हो जायगा। आज खेती की पैदावार को और औद्योगिक उत्पादन को आर्थिक सन्तुलन में अलग-अलग नहीं किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह (जिला मेरठ)—

मैं अपने छोटे भाई से यह पूछना चाहता हूं कि एक कहावत है कि "लेखा जोखा सही, हिसाब ज्यों का त्यों तो कुनबा डूबा क्यों।" मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि आज ६० प्रतिशत आदमियों को पर्याप्त मात्रा में कलौरिज में भोजन नहीं मिल रहा है, आपके पास कोई इसका जवाब है, इसका जवाब दो?

श्री ईश्वरी सिंह—

जहां तक मेरे परम आदरणीय भाई की भावना का सम्बन्ध है कि लोगों को ज्यादा से ज्यादा खाने को मिलना चाहिये, मेरी भावना उनके साथ है। मैं यह भी मानता हूं कि उत्पादन की कमी है, मैं यह भी मानता हूं कि हमारी वितरण प्रणाली में कुछ गड़बड़ी है, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि और उन्हें याद होगा कि १९४२ में जब हम अंग्रेजों के सींखचे में बन्द थे, उस समय बंगाल और बिहार में कुछ सूखा पड़ा था। वह अंग्रेज जिसके अधीन कैनाडा था, आस्ट्रेलिया था और वे अमेरिका से भी गेहूं मंगा सकते थे लेकिन उन्होंने नहीं मंगाया और ४०-५० लाख लोग भूख से तड़पड़ा कर मर गये। आज हमारी प्रधान मन्त्री, श्री मती इन्दिरा गांधी, ने या उनके सिपाहियों ने यद्यपि ऐसे बड़े हिस्से में हिन्दुस्तान में सूखा पड़ा लेकिन यहां के लोगों को महंगाई के बावजूद भी मरने नहीं दिया गया। मैं उनकी इस बात से सहमत नहीं हूं कि हमारी सरकार की दिलचस्पी खेती की तरक्की में नहीं है लेकिन वास्तव में उतनी उन्नति नहीं हुई है, जितनी होनी चाहिए। मैंने आज तक कोई लेख या पुस्तक नहीं पढ़ी है जिसमें माननीय स्वर्गीय जवहार लाल जी ने या इन्दिरा जी ने यह कहा हो कि खेती को प्राथमिकता न दी जाय। यदि उन्होंने कोई ऐसा लेख पढ़ा हो तो उसे मुझे भी दिखाने की कृपा करेंगे और यदि यह सही होगा तो मैं अपनी बात को वापस ले लूंगा।

श्री अध्यक्ष—

अब आप अपनी बात को समाप्त करें, आपका समय समाप्त हो चुका है।

श्री ईश्वरी सिंह—

श्रीमन्, मैं १० मिनट का समय और चाहता हूं। मैं अब अपनी आखरी बात पर आ रहा हूं।

एक बात यहां पर उठाई गई कि कांग्रेस के शासन में बहुत बड़ा भ्रष्टाचार है? विरोधी भाइयों ने कहा है कि यह हमारी मौलिक कमजोरी है। माननीय नेता विरोधी दल ने यह भी कहा कि यह जो बहाना कांग्रेस लेती है कि ब्यूरोक्रेसी गड़बड़ी करती है यह गलत है। मैं उनके सामने एक मिसाल पेश करना चाहता हूं कि उनके ही मुख्य मन्त्रित्व-काल में हालांकि वह बड़े सतर्क रहते थे, सब कुछ रहते थे, लेकिन उन्हीं के यहां एक अधिकारी ने मैं नाम नहीं लूंगा जो सन् १९६५ में बहैसियत चीफ इन्जीनियर हाइडल रिटायर हो गये थे लेकिन जब दिनांक १७ फरवरी, १९७० को संविद सरकार आयी तो दिनांक १८ मार्च, १९७० को यह चीफ इन्जीनियर महोदय फिर वहीं पर एप्वाइंट कर

[श्री ईश्वरी सिंह]

दिये गये और इन चीफ इन्जीनियर महोदय ने हरदुआगंज में थर्मल पावर हाउस लगा था वहा ६० मेगावाट का एक जनरेटर उन्होंने खरीदवाया जोकि आज केवल २४ मेगावाट बिजली का उत्पादन करता है, यानी आधे से भी कम। उन्होंने फर्म से सांठ-गांठ कर ली थी और उसमें घोटाला हुआ था।

श्री मुहम्मद असरार अहमद (जिला बदायूं)—

संविद सरकार के किसी मन्त्री का घोटाला बताइये।

श्री ईश्वरी सिंह—

माननीय सदस्य सही कह रहे हैं। मुझमें और किसी का घोटाला बताने की हिम्मत नहीं है लेकिन बड़े भाई का घोटाला जरूर बता रहा हूं जो उनसे सम्बन्धित है। इसी तरह से ओबरा में ब्वायलर्स और टरबाइन्स खरीदे गये १.५ करोड़ के। उसमें भी यही हुआ। इतना ही नहीं। यह चीफ इन्जीनियर महोदय हमेशा एयर कन्डीशन्स कार इस्तेमाल करते थे। यही नहीं। यदि माननीय नेता विरोधी दल चाहें तो मैं एक एग्जीक्यूटिव इन्जीनियर के हाथ के लिखे हुये ओरिजिनल लेटर्स जो मेरे पास घर पर हैं दिखा सकता हूं कि उसी दौरान इन्हीं चीफ इन्जीनियर ने बी० के० डी० के लिये सन् १९७१ के एलेक्शन के लिये कई लाख रुपये चन्दे में इकट्ठा किये। मेरी मंशा आरोप लगाने की नहीं है? मेरी मंशा केवल उनको यह बताने की है कि इस ब्योरोक्रेसी पर, इन सरमायेदारों पर, ठेकेदारों पर एक लालच सवार है। अगर हम और आप एक हैं तो इन पर लगाम लगायी जा सकती है और अगर आप यह कहें कि मीठा-मीठा हप और कड़ुवा कड़ुवा थू और जब हमारा मौका आये तो आप आरोप लगाने लगे इससे काम चलने वाला नहीं है। अगर इस भ्रष्टाचार के खिलाफ कुछ करना है तो हम और आप को मिल कर करना होगा।

श्री मुहम्मद असरार अहमद—

मैं यह पूछना चाहता हूं कि कभी भी उन्होंने मन्त्रि-परिषद् के किसी सदस्य से या अपनी पार्टी में भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में जो सड़क के आदमी को भी करोड़पति बना रहा है कभी कुछ कहा है?

श्री ईश्वरी सिंह—

उसके सम्बन्ध में हम अपनी पार्टी में कहते हैं कि आप कहिये तो मैं आखिर में एक बात अपने कम्युनिस्ट भाइयों को याद दिलाना चाहता हूं कि दोस्तों....

श्री अध्यक्ष—

"दोस्तों" न कहिये।

श्री ईश्वरी सिंह—

मैं अपने कम्युनिस्ट भाइयों से कहना चाहता हूं कि आज जो देश में फासिस्टवादी ग्रुप बनने जा रहा है जिसमें माननीय बीजू पटनायक, माननीय पीलू मोदी जैसे लोग एक एलायन्स बना कर इस देश में फासिज्म लाना चाहते हैं उससे आप लोग सावधान हों। जर्मनी के कम्युनिस्टों की मूर्खता को न दोहरावें उनसे सबक लें। फासिस्टवादी हिटलर का जन्म उनकी गलती से हुआ था।

जर्मनी के कम्युनिस्टों ने आपस में टकरा कर समय खो दिया था।..... (व्यवधान) मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर आप आपस के टकराव में रह गये तो आपके सामने भी फासिज्म ताकतें उभर आयेंगी। मैं हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी को दाद देता हूं कि उसने दूरअन्देशी से काम लिया। इन शब्दों के साथ मैं अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

चौधरी चरण सिंह—

अगर माननीय सदस्य ने यह कहा है कि किसी इन्जीनियर ने बी० के० डी० के लिये रुपया इकठ्ठा किया तो यह बिलकुल गलत है और निराधार है।

श्री ईश्वरी सिंह—

मैं आपके सामने प्रमाण प्रस्तुत कर दूंगा। (व्यवधान)।

एक सदस्य—

जब उनकी मीटिंग हो रही थी और माननीय नेता विरोधी दल बोल रहे थे तो वे चन्दे के लिये अपील कर रहे थे। उसी को मैंने कहा। यह सत्य है, बात है।

*श्री सत्य पाल मलिक (जिला मेरठ)—

मैं अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मन्त्री जी को इसके लिये मुबारकबाद देना चाहता हूं कि जब उनके विरुद्ध कुछ आरोप लगाये गये तो उन्होंने कुछ चुनौती दी। उसके पूर्व मैं बाजरा कांड के पहले ही निजी रूप से और सार्वजनिक रूप से जांच कराने के लिये चुनौती दे चुका हूं। आज हिन्दुस्तान का कोई जनरल डेमोक्रेसी को खत्म करना चाहता है तो उसके पास तर्क है। आज इस सरकार और इस सरकार के मंत्रियों के चरित्र पर से जनता का यकीन उठ गया है। आज डेमोक्रेसी को जिन्दा रखने के लिये उस यकीन को दोबारा पैदा करना जरूरी हो गया है। जांच करने वाली मेरी उस चुनौती को स्वीकार किया जाय और उसी के लिये मैं यहां खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसके पहले कि मैं सत्तारूढ़ दल की नीति और नीयत के बारे में कुछ कहूं, मैं अपने दोस्त जो साम्यवादी पार्टी से सम्बन्ध रखते हैं, मुझे उनके दल से कुछ शिकायत नहीं है, सारी दुनियां में जो साम्यवादी पार्टियां हैं उनका चरित्र रूस ने बनाया है, उसके विषय में मैं सरकार से सत्तारूढ़ दल से, एक अपील करना चाहता हूं और वह यह कि सत्तारूढ़ दल इन्हें अपनी मिस्ट्रेस यानी रखैल के रूप में न रखे, उसे पत्नी का पूरा हक दिया जाय ताकि राजनीति में साफ-साफ तरीके से वे सहायक हो सकें (हंसी)।

मान्यवर, मैं अपनी तमाम बातों को बड़ी विनम्रता के साथ और अदब के साथ कहना चाहूंगा। आज जो प्रदेश की स्थिति है उसका सही-सही चित्रण करने के लिये मेरे पास सामान्य कोष के शब्द नाकाफी हैं, फिर भी मैं कोशिश करूंगा कि कोई अप्रिय शब्द न निकले। माननीय सदस्यों से, जो सत्तारूढ़ दल के हैं, प्रार्थना है कि यदि मेरी बात उनको सही न लगे, तो भी वे उसे सुनने की कृपा करें, क्योंकि उनकी तरफ से जवाब देने के लिये उनके पास माननीय मुख्य मन्त्री जी से बढ़ कर बेहतर वकील कोई और है नहीं।

इस अविश्वास के प्रस्ताव का और सरकार के त्याग-पत्र देने का सबसे बड़ा मुद्दा यह है कि इस सरकार ने जो पिछला बजट पेश किया वह एक बहुत बड़ा राजनैतिक

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री सत्य पाल मलिक]

धोखा था। अभी धर्मयुग में माननीय मुख्य मन्त्री का एक इन्टरव्यू छपा है उसमें उन्होंने कबूल किया है कि बजट में उन्होंने जो १८ करोड़ का घाटा दिखलाया है वह १११ करोड़ का है और यह दोष विरोध पक्ष के लोगों का है क्योंकि उन लोगो ने हमको बताया नहीं। यह उन्होंने उसमें कहा है ; मान्यवर इससे बड़ी और दूसरी कोई लचर दलील हो नहीं सकती कि विरोधी पक्ष उसके लिये जिम्मेदार है।

दूसरा मुद्दा इस सरकार के त्याग-पत्र देने का यह है कि साल भर के लिये प्रदेश भर के सारे विकास कार्य सरकार ने एक दम रोक दिये हैं। वे ठप्प हैं। आप मन्त्रि-मन्डल बढ़ा नहीं पा रहे हैं, मोस्ट इनकाम्पीटेन्ट लोगों के जरिये सरकार चला रहे हैं। मैं इन तमाम चीजों को छोड़े देता हूं, आप की पालिसी क्या है, आपकी नीयत क्या है, जो नैतिकता आपकी इस प्रदेश की सरकार को चलाने की है, उसके बारे में जिक्र करना नहीं चाहूंगा। मान्यवर, जब माननीय मुख्य मन्त्री जी यहां उत्तर प्रदेश में आये, उसके बाद उन्होंने सबसे पहले और सबसे बड़ी जिम्मेदारी निभायी चुनाव की। चुनाव के समय वे कार्यवाहक मुख्य मन्त्री भी थे। चुनाव में जो अनियमिततायें हुई उसको मैं दोहराना नहीं चाहता हूं। उस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है और उसको मैं अपनी भाषा में नहीं कहूंगा क्योंकि जो कुछ भी मैं कहूंगा यही समझा जायगा कि विरोधी दल के लोगों की यह राय है। बर्गीज साहब जो हिन्दुस्तान टाइम्स के एडिटर रह चुके हैं और जो प्रधान मन्त्री के सबसे बड़े प्रशंसक रहे हैं १९७१ में, उन्होंने हिन्दुस्तान टाइम्स में छापा है, उसकी एक लाइन ही मैं पढ़ूंगा।

न्याय मन्त्री (श्री राज मंगल पांडेय)—

अध्यक्ष महोदय, मुझे श्री मलिक की भाषा पर कोई एतराज नहीं है। जिस भाषा की मैंने कल्पना की थी उसी तरह की भाषा को उन्होंने अपने भाषण में इस्तेमाल किया है। चौधरी साहब के मन्त्रिमन्डल में मुझे भी कार्य करने का सौभाग्य रहा है। उनके मन्त्रि-मन्डल में एक व्यक्ति को छोड़ कर बाकी सब वही मन्त्री हैं जो उनके मन्त्रि-मन्डल में मौजूद थे। लेकिन चौधरी सहाब ने कभी भी किसी के लिये यह नहीं कहा कि वे इनकम्पीटेंट या इनएफिशिएन्ट हैं और न इस तरह की कोई बात सदन में पहले आयी। मान्यवर चौधरी साहब के कार्य की भी आलोचना किसी और माध्यम से ही अगर श्री सत्यपाल मलिक जी करना चाहते है तो बात दूसरी है क्योंकि इस तरह की राय उनकी न कभी सामूहिक तौर से रही है और व्यक्तिगत रूप से ही कि उनके मन्त्रि-मन्डल में कोई इनकम्पी-टेंट रहा जो चौधरी साहब के साथ काम कर चुके हैं।

चौधरी चरण सिंह—

अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये मैं सदन को बतला दूं कि मेरे साथ जो कांग्रेसी मन्त्री थे, मेरे च्वायस के नहीं थे। उनके लिये च्वायस तथा इन्दिरा जी का। मैं उसकी तफसील में नहीं जाना चाहता हूं। दूसरी बात यह है कि यह जरूरी नहीं है कि जो १९७० में अच्छा काम कर रहा हो वह सन् १९७४ में भी अच्छा काम करता होगा ? यह बहुत सी चीजों पर निर्भर है।...

श्री सत्य पाल मलिक—

अध्यक्ष महोदय, तो मैं बतला रहा था कि माननीय मुख्य मन्त्री जी ने सबसे पहले और सबसे बड़ा जो काम अन्जाम दिया था वह था आम चुनाव का। श्री वर्गीज ने हिन्दुस्तान टाइम्स और इमप्रिंट में कहा है—"उत्तर प्रदेश के चुनाव में सरकारी मशीनरी और काले धन का दुरुपयोग से इस देश का जितना बड़ा नैतिक नुकसान हुआ है उतना २७ साल के किसी

मामले में नहीं हुआ है ? मान्यवर, बंगला देश में मुजीब साहब की पार्टी जीती थी और पश्चिमी पाकिस्तान में भुट्टों की पार्टी जीती थी उसके बाद ही किसिंगर हिन्दुस्तान में आये और पाकिस्तान फिर गये थे तो रावलपिंडी में एक दावत हुई थी। इधर तो मुजीब साहब जीते थे और उधर भुट्टो की पार्टी चुनाव में जीती थी। यहिया खां के साथ किसिंगर भी दावत में मौजूद थे। ड्रिंक चल रहा था। उस समय यहिया खां श्री किसिंगर के पास गये और उनसे पूछा—क्या मैं डिक्टेटर हूं, क्या मैं तानाशाह हूं। किसिंगर चुप हो जाते हैं, सन्नाटा छा जाता है, दो मिनट के बाद किसिंगर हंस कर कहते हैं नहीं, आप डिक्टेटर नहीं हैं। डिक्टेटर तो वह हो सकता है जो चुनाव में रिग करे, आपने तो चुनाव में रिग किया नहीं इसलिये आप डिक्टेटर नहीं हो सकते। मान्यवर, मैं तो चुनौती करता हूं कि इसकी निश्चित रूप से जांच की जाय जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि उत्तर प्रदेश के ग्राम चुनाव में जो कुछ हुआ, और जिस तरह के काले रुपये का इस्तेमाल किया गया और फिर वह जांच कमेटी अपना फैसला दे कि वास्तविकता क्या है। यह मेरा सबसे पहला और सबसे बड़ा चार्ज है इस सरकार के विरुद्ध।

मान्यवर मैं कई एक चीजें जो पुरानी और बासी हो गयीं हैं और कई एक चीजें जो नयी हैं उन पर बोलना चाहूंगा। हो सकता है कि कई एक माननीय सदस्य नाराजगी के साथ कहें कि इस पर चर्चा हो चुकी है और आप हम पर बेकार इल्जाम लगा रहे हैं तो मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि इल्जाम लगाते ही सरकार सजा की दोषी नहीं हो जाती है। इसी तरह से अगर जो इल्जाम हम लगाते हैं और उसका जवाब दे दिया जाता है तो वह जवाब भी कोई जजमेंट नहीं होता है। इसलिये इन चीजों को देखना जरूरी है।

मान्यवर, बिड़ला साहब की बिजली काटने का मामला मैं लेता हूं। बिजली काटने का फैसला हाई कोर्ट करता है कि उनकी बिजली काट दी जाय। बिजली काटने से पहले बिड़ला जी सुप्रीम कोर्ट चले जाते हैं। २ करोड़ ६० लाख जमा कराने के बीच में ही समझौते की एप्लीकेशन दी जाती है। इससे बड़ा मजाक और क्या हो सकता है ? जिस सूबे के मरीज बिना दवाइयों के मरते हों, जिस सूबे के मामूली तन्ख्वाह पाने वाले कर्मचारियों से कहा जाता हो कि तुमको इतना पैसा जमा करना पड़ेगा। जिस सूबे की सिंचाई की और जितनी भी विकास योजनायें एक साल के लिये ठप्प कर दी जाती हैं। उस सूबे के मुख्य मन्त्री ६० लाख रूपये लेकर २ करोड़ वापस कर देते हैं और कहते हैं कि बैंक गारन्टी है। इससे बड़ा मजाक इस प्रदेश की जनता के साथ और क्या किया जायगा। मान्यवर, यह काम करके सारे प्रदेश के साथ ज्यादती की गयी है।

मान्यवर, मैं माफी चाहूंगा, मैं किसी पर आक्षेप नहीं लगाना चाहता हूं। मैं किसी की चार्जशीट नहीं पढ़ना चाहता हूं पर अपने विशेषाधिकार को एक सदस्य होने के नाते इस्तेमाल करना चाहता हूं। मैं कहता हूं कि मुझे उनके इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं है, अगर यह सरकार कहे तो मैं बाहर भी इन सब चीजों को कहने के लिये तैयार हूं। अगर आप चाहते हैं कि इन चीजों से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम बतायें जायं तो मैं वह भी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना चाहता हूं।

(मेजों की थपथपाहट)

मान्यवर, दूसरी बात मैं पावर हाउस जो बेचे गये हैं, उनके बारे में कहना चाहता हूं। हमको इस सवाल पर जवाब दिये गये हैं पर वह जवाब जनता को कन्विन्स नहीं करते हैं। आपने पावर हाउसों को बेचा है और बाद में आप उनसे ५ प्रतिशत लास पर बिजली लेते हैं। जहां तक मेरी जानकारी है उत्तर प्रदेश में लगभग २५ प्रतिशत बिजली का लास ही होता है चाहे जो भी हो वह ५ प्रतिशत से ज्यादा होता है। मान्यवर, इसमें भी बहुत से रुपये का गोलमाल है।

मान्यवर, भगवान इन्डस्ट्रीज, लखनऊ का मामला है। टेंडर उसको दिया गया था। १ करोड़ कुछ लाख रुपये कम पर दिया था। बसूली की बात पर आपने कहा कि ४५ दिन

[श्री सत्य पाल मलिक]

के अन्दर सारा रुपया जमा हो जाना चाहिये, लेकिन जमा नहीं हुआ। आपने फिर उसको मौका दे दिया कि ३१ दिसम्बर तक सारा रुपया जमा कर दो। पर जहां तक मेरी जानकारी है कि कल शाम के ५ बजे तक वह रुपया जमा नहीं किया गया है।

मान्यवर, कई मामले हैं जिनके बारे में जवाब दिये जा चुके हैं पर उससे हम संतुष्ट नहीं हैं। मान्यवर, चाहे वह बाजरा स्कैंडल हो या पैडी स्कैंडल हो, जो जवाब दिये गये हैं उससे हम कन्विन्स नहीं हुये हैं। इस सम्बन्ध में मैं नेशनल डेली जो कि एक बड़ा अखबार है उसमें एडीटोरियल में उन्होंने लिखा है और कहा कि इस जांच से बचने के जितने तरीके मुख्य मन्त्री ने कन्विन्स करने के लिये दिये हैं उन तरीकों से सब लोग कन्विन्स नहीं हो सकते और सारी बातें साफ नहीं होती हैं।

मान्यवर, सरकार में भ्रष्टाचार पनप रहा है। यहां ही नहीं मान्यवर, केन्द्रीय मन्त्रियों ने भी न जाने कितने भ्रष्टाचार किये हैं। आप इस भ्रष्टाचार की रक्षा कर रहे हैं अगर आप थोड़ी सी जांच करालें तो सब मामला साफ हो जाय। पर आप खुद ही उसकी रक्षा कर रहे हैं। तो केन्द्र भ्रष्टाचार की गंगोत्री है.....

श्री अध्यक्ष--

अगर आप ज्यादा कहेंगे तो दूसरी जगह मामला चला जायगा।

श्री सत्य पाल मलिक--

अध्यक्ष महोदय, अभी ग्लूकोज का मामला उठा था। ६-७ महीने हुये होंगे। इसकी जांच सरकार ने अपनी मर्जी के मुताबिक कर ली है। मान्यवर, इसमें राजनीति में रहने वाले कई बड़े-बड़े लोगों का नाम शामिल था पर उनमें से किसी एक को भी मुख्य मन्त्री जी ने त्याग पत्र देने के लिये नहीं कहा। वह साफ-साफ बच गये हैं। मान्यवर, ड्रग कन्ट्रोलर डा० चतुर्वेदी की तरक्की हो गयी है। एक अन्य आई० ए० एस अधिकारी का भाई जो कि ड्रग इन्सपेक्टर था वह भी इस मामले से बचा दिया गया है। मान्यवर, दूसरा मामला स्टार पेपर मिल सहारनपुर का है। उसके रा मैटेरियल के इस्तेमाल में गड़बड़ी पाई जाती है और सरकार उसको रा मैटिरियल की सप्लाई बन्द कर देती है। लेकिन दिल्ली में डील होता है और यह तय होता है कि हमारी मरजी का डीलर नियुक्त कर दिया जाय तो सप्लाई जारी कर दी जायेगी। ओर आज की तारीख में जानकारी है कि सप्लाई जारी कर दी गयी है।

मान्यवर, लखनऊ की जो म्युनिसिपैल्टी है उसमें सलेज का एक साल का ठेका देते हैं। परन्तु सरकार ने अब यह हक अपने हाथ में लिया है और दिल्ली की किसी फर्म को ठेका दिया गया है जो कि मुख्य मन्त्री जी के निजी सचिव हैं वह उनकी जान-पहिचान के लोग हैं।

मैं कहना चाहता हूं कि मुख्य मन्त्री जी की भाषा में बहुत कन्फीडेन्स होता है और वे कन्फीडेन्स के साथ बोला करते हैं। श्री जयप्रकाश नारायण जो इस प्रदेश में यहां आये थे और उनका मुख्य मन्त्री जी ने स्वागत किया था। मैं जानना चाहता हूं कि श्री जय प्रकाश जी ने किसी मन्त्री का नाम लिया था कि आपके मन्त्रि-मन्डल में वह मन्त्री भ्रष्ट हैं। यदि ये भ्रष्टाचार कम करना चाहते थे, तो जिनका आप इतना लिहाज करते हैं कि अस्पताल में जब बीमार थे तो गवर्नर साहब को भेजा था, तो आपने उस मामले में क्यों जांच नहीं करायी है और न अपने मन्त्रि-मन्डल में कोई तबदीली ही की है।

मान्यवर, टेक्सट बुकों का मामला मैंने उठाया था कि मेरठ के प्रकाशकों से शिक्षा मंत्री जी ने रुपया ले लिया है। इस सम्बन्ध में जो फैसला शिक्षा मन्त्री और निदेशक ने किया है, जो कि दाम बढ़ने का था, यदि कोर्ट में आप जायेंगे तो हारेंगे और हारे। इसमें

कहा गया था कि जो कोर्ट का फैसला होगा, और शिक्षा मन्त्री या निदेशक का जो फैसला होगा उससे यदि हार होगी तो शिक्षा मन्त्री और निदेशक के खिलाफ एक्शन लेंगे। लेकिन कोई एक्शन नहीं लिया गया। शिक्षा मन्त्री जी मेरठ में गड़बड़ी करते हैं जैसे कि कोयले के बारे में और प्रकाशन के मामले में इसी तरह और गड़बड़ियां हैं और यदि गिनाने लगूं तो उसकी एक फेहरिस्त लम्बी हो जायेगी।

मान्यवर, श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी जी ने सवाल उठाया था कि फैक्टरियों पर रेड डाले जाते हैं और उनसे रुपया लिया जाता है। हमारे पास जानने के लिये कोई साधन नहीं हैं परन्तु आपके पास साधन हैं लेकिन आपकी नीयत साफ नहीं है। मोहन मेकिन की फैक्टरी पर आपके अधिकारी ने छापा मारा है। सेल्स टैक्स और इन्कम टैक्स के अधिकारियों के बीच में झगड़ा है उनका कहना है कि इन्कम टैक्स वाले इन्फारमेशन लीक कर देते हैं और इन्कम टैक्स वालों का कहना है कि सेल्स टैक्स वाले इन्फारमेशन लीक कर देते हैं। हालत यह है कि मेरठ के कलेक्टर ने चाहा कि मेरठ में ब्लैक करने वालों के वहां छापा मारा जाय तो जब समय आता था तो उसके पहले आपका प्रशासन इन्फारमेशन लीक कर देता था। मोहन मेकिन के वहां छापा मारा गया और फैक्टरी में १० हजार बोतलें गड़बड़ पायी गयीं। उनका हिसाब-किताब ठीक नहीं था। इक्साइज इन्सपेक्टर को पकड़ा गया और उसको मुअत्तल किया गया। लेकिन उसके जो प्रबन्ध निदेशक हैं वह गाजियाबाद से आते हैं और उसके बाद सारी चीजें हजम हो जाती हैं। तर्क यह दिया जाता है कि गलत लेबिल उन १० हजार बोतलों पर लग गया था? ऐक्ट में है कि फैक्टरी के अन्दर कोई डीलर की दुकान नहीं होगी लेकिन फैक्टरी के कम्पाउन्ड में दुकान है। वहां किसी का मकान नहीं होना चाहिये लेकिन गोल्ड वाटर कम्पनी में प्रबन्धक का मकान है। छापा में एक डायरी पायी गयी थी जिसमें बड़े-बड़े अधिकारियों के नाम हैं जिनके वहां मुफ्त में शराब सप्लाई की जाती है। इस तरह से मेकिन साहब का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है।

इसी प्रकार सीतापुर में बनस्पति फैक्टरी में २० हजार टिन पकड़ी गयी और आप कहते हैं कि २० हजार रुपये का मारजिन पाया गया। २०,००० टिन बतलाये गये हैं लेकिन यहां २०,००० रुपये के बारे में बतलाया गया है। तो हमारे पास कौन से साधन हैं जिससे यह साबित करें। यह तभी साबित होगा जब एक निष्पक्ष जांच बैठायी जाय। मैं नीचे आरोप नहीं लगाऊंगा लेकिन जो मकान का कोआपरेटिव सोसाइटी का मामला है उसके बारे में कहूंगा। मुख्य मन्त्री जी का जो मकान है उसमें कमरों की बढ़ोत्तरी की जाती है, उसको सुधारा जाता है तो मैं जानना चाहूंगा कि पहले कितना किराया था और बढ़ोत्तरी के बाद कितना किराया का इजाफा हुआ। कोआपरेटिव सोसाइटी का अभियोग पत्र कोई बड़े भारी कमाल की बात नहीं है। कोआपरेटिव सोसाइटीज जो देहात में चलाते हैं वह भी सारी की सारी प्रोसीडिंग्स बदल देते हैं। मैं केवल नीयत की बात कह रहा हूं। १९६६ में जिला उद्योग निरीक्षक ने जांच की थी और कहा कि उस सोसायटी ने जो हानि दिखाई वह गलत है लेकिन फिर भी आज तक उस पर ऐक्शन नहीं हुआ है। कारण यह है कि उसमें राजनीति करने वाले बड़े-बड़े लोगों का हाथ है।

एक बहुत जबरदस्त फैक्टर राजनीति में शुरू हुआ है। पंडित जवाहर लाल नेहरू को हिन्दुस्तान और इलाहाबाद की जनता ने बहुत आदर किया। जब वह निकलते थे तो लोगों के अभिवादन– में हाथ उठ जाते थे लेकिन वह भी इलाहाबाद से कभी अनअपोज्ड नहीं चुने गये। लेकिन जबसे मौजूदा मुख्य मन्त्री आये हैं कैन्डीडेट्स अनअपोज्ड चुने जाने लगे हैं। कौनसी पापुलेरिटी थी उन कैन्डीडेट्स की कि अनअपोज्ड चुने गये। बिजनौर में ऐसा हुआ और इलाहाबाद से श्रीमती कमला बहुगुणा अनअपोज्ड चुनी गई। कैन्डीडेट्स ने नामाकन पत्र वापस ले लिये हैं तो कौनसी दलील है जिसके कारण यह बात हुई है। यह इस देश के दुर्भाग्य का दिन है। राजनीति में खरीद फरोख्त की शुरुआत हो गई है। कल एक कमेटी बनती है। हमारे एक माननीय सदस्य को उसका मेम्बर बनाया जाता है। लाभ

[श्री सत्य पाल मलिक]

का पद नजीर सहाब को दिया गया और कल ही वह परचा भरा जाता है। संविधान में दिया है कि जो एम० एल० ए० होगा वह लाभ का पद नहीं लेगा लेकिन बाद में तरमीम कर देते हैं। आपकी पार्टी के कई एम० एल० एज० कारपोरेशन्स के सदस्य हैं। तो इससे नियत का पता लगता है। मैं जो कह रहा हूं, मैं नहीं कहता कि वह आखिरी चीज है लेकिन जनता में राय बनती है। जैसे चौधरी साहब के बारे में सरकारी कर्मचारी के दिमाग में राय बन गई है कि वह तनख्वाह बढ़ाने के फेवर में नहीं हैं। तो मैं मुख्य मन्त्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि अपने भरोसे के साथियों को वह जिम्मेदारी दें। ऐसे साथियों को जो हिम्मत के साथ आपकी गलतियां बतला सकें। यह भी बतला सकें कि आपके बारे में प्रदेश की जनता की क्या राय बन रही है। आज प्रदेश के लोगों की यह राय बन रही है कि वह जो कहते हैं उसका कोई मतलब नहीं है।

आज इस प्रदेश के मुख्य मन्त्री के शब्दों का अवमूल्यन जनता की निगाह में हो गया है। मोदीनगर में अभी तक म्युनिसिपैल्टी नहीं बन सकी क्योंकि उससे मोदी साहब को अधिक टैक्स देना पड़ता। सन् १९७२ में पंडित कमलापति त्रिपाठी के समय में नोटीफिकेशन निकाला गया था। उसके बाद इलाहाबाद में मोदी साहब की फर्म स्टे आर्डर के लिये पहल करती है। उस मुकदमें में मुख्य मन्त्री के सुपुत्र वकील बनते हैं। उसके बाद एक एप्लीकेशन जाती है कि हम लोग बातचीत करना चाहते हैं। सरकार का जो नोटीफिकेशन होता है, उसके विवरण में मैं नहीं जाऊंगा लेकिन सरकार जो नोटीफिकेशन करती है, गजट होने के पहले उस नोटीफिकेशन की कापी मोदी साहब के वकील कोर्ट में पेश कर देते हैं। फिर सरकार का आदेश हो गया कि अब म्युनिसिपैल्टी नहीं बनेगी। इसके अलावा, गाजियाबाद का हिन्द सायकिल का मामला है। उसमें सरकार जीत चुकी थी; लेकिन ९ लाख रुपये में समझौता हुआ है उसमें माननीय बहुगुणा साहब के लड़के वकील थे। आज हमारे देश की यह हालत है। लेकिन दूसरे देशों में नासिर साहब का लड़का काहिरा यूनिवर्सिटी में दाखिल नहीं होता; क्या हमारे यहां भी बड़े लोगों के साथ, चौधरी साहब के लड़के के साथ, प्रधान मन्त्री के लड़के के साथ या दूसरे अन्य बड़े नेताओं के लड़कों के साथ यह हो सकता है? तो हमें आज यह देखना है कि कहीं आपके स्टेचर का फायदा आपके परिवार के लोग तो नहीं उठा रहे हैं।

मैं पूछना चाहता हूं कि इस वक्त विजय बहुगुणा के पास किन-किन फैक्टरियों और संस्थाओं के मुकदमें हैं, यह चीज बताई जाय। इस वक्त तमाम प्रशासन को डीमोरलाईज करने की कोशिश की जा रही है। नवम्बर में पी० सी० एस० आफिसरों की कान्फ्रेन्स होती है, सुबह के सेशन में राज्यपाल महोदय बुलाये जाते हैं और वह अपना भाषण करते हैं शाम के वक्त मुख्य मन्त्री जी जाते हैं और ४०-४५ मिनट तक पी० सी० एस० आफिसरों को डांटते हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस सब का क्या हस्र होगा। पी० ए० सी० का विद्रोह आप देख चुके हैं। मैंने यह भी सुना है कि जो पी० सी० एस० आफिसरों की लिस्ट है उसमें तबदीलियां की जा रही हैं। पुलिस के आफिसरों में भी तबदीलियां की जा रही हैं और यह सब बिल्कुल राजनैतिक कारणों से हो रहा है। जब इधर से लोग बोलते हैं तो सत्तारूढ़ दल के लोग कहते हैं कि अब चौधरी साहब की हुकूमत कभी नहीं आयेगी लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि आज से ५० साल बाद क्या होगा, जनता क्या फैसला करेगी यह आपको क्या मालूम जो लोग इस तरह की बात करते हैं वह कैसे डेमोक्रेट हो सकते हैं। आज क्या सत्तारूढ़ दल के सदस्यों के पास इसका कोई तर्क है। उनके पास सिर्फ एक ही तर्क है कि वह इस वक्त ताकतवर हैं और हम उनको सता नहीं सकते लेकिन यह लोकतन्त्र के लिये खतरनाक स्थिति है। तीन रैलियां कांग्रेस की हुईं मुख्य मन्त्री के जमाने में और एक रैली उनकी ताजपोशी के वक्त हुई। एक रैली ६ अक्तूबर को दिल्ली में हुई थी दूसरे एक सौ लोगों को बस की परमिट दिल्ली जाने के लिये नहीं देते लेकिन मेरठ से १२० बसें जाती हैं

दिल्ली को जहां पर कि रैली हुई। आज कांग्रेस के सदस्य घमन्ड के साथ कह देते हैं कि चौधरी साहब की हुकूमत नहीं आने वाली है। बड़ी जिम्मेदारी से कहते हैं और उनको ऐसा भरोसा है कि आज मणिपुर और आसाम में हमारी कोई शाखा नहीं है हमको वहां के लिये आदमी ढूढ़ने पड़ेंगे। लेकिन इनके पास कोई दिक्कत नहीं है। अगर किसी जिले में कन्वीनर नहीं है तो कलेक्टर इनकी पार्टी का कन्वीनर हो जाता है। जब भी कोई रैली होती है तो कलेक्टर, कमिश्नर और आर० टी० ओ० रातों-रात जागकर उसका प्रबन्ध कराते हैं और बसों का प्रबन्ध करते हैं। १२० बसें लखनऊ से दिल्ली के लिये गईं रिकर्ड से इसकी आप जानकारी करा सकते हैं कि कितनी बसों के परमिट बने। और करीब ३५ बसें लखनऊ की इस रैली में आईं। मेरी जानकारी है कि किसानों को डीजल नहीं मिल रहा था और डीजल बस के मालिकों ने मना कर दिया था कि हमारे पास पैसा नहीं है। लिहाजा मेरठ के कलेक्टर ने रात के १२ बजे जो सबसे बड़ा डीजल का डीलर था उसकी सील तुड़वा कर अपनी गारन्टी पर बसों में डीजल डलवाया। किसके खिलाफ सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल हुआ था। यह तरीका लोकतन्त्र का तरीका नहीं है। आप कहते हैं कि विरोध करने वाले लोग आज देश के दुश्मन हैं।

अभी लखनऊ यूनिवर्सिटी का मामला उठा। सारे प्रदेश में विद्यार्थियों को पकड़ा जा रहा है, जो आपसे सहमत नहीं है उनको पकड़ा जा रहा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के बारे में छपा था। नारायण दत्त जी जिस रिपोर्ट को पढ़ कर जवाब दे रहे थे अगर सी० आई० ए० की रिपोर्ट मेरे पास होती तो बात साफ हो जाती और कैसी जिम्मेदारी के साथ सदन में यह तस्वीर पेश करना चाहता हूं जो नवजीवन अखबारों में छपी है। पुलिस दो व्यक्तियों को पकड़े हुये है। छात्रों को गिरफ्तार करके ले जा रही है लखनऊ विश्वविद्यालय से। उनकी शिनाख्त करवाई जा सकती है परम जीत सिंह के खिलाफ गुंडा ऐक्ट के मातहत कार्यवाही होने के बावजूद वह एस० डी० एम० के बराबर कुर्सी पर बैठते हैं। पुलिस उनको पकड़ कर गिरफ्तार करती है लेकिन छोड़ देती है। दूसरे हैं वीरेन्द्र भाटिया। ट्रान्सपोर्ट में वकील बनाये गये हैं। पुलिस ने मौके पर गिरफ्तार किया लेकिन इस समय गिरफ्तार नहीं हैं इसके बरअक्स गोरखपुर के प्रेसीडेंट जिनके विचार आपके विचारों से मेल नहीं खाते उनको पकड़ कर ले जाते हैं। गाजीपुर के सतीश चन्द्र राय यूनिवर्सिटी जाते हुए गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। आपके एम० एल० एज० क्रिमिनल लोगों की गिरफ्तारी नहीं होती। आज किसी काबलियत की जरूरतें नहीं हैं कुछ होने के लिये। मैं इसको एलोबरेट करना चाहता हूं। एक आदमी बिलकुल बे पढ़ा लिखा हो, काबलियत कुछ न हो, कोई चरित्र उसके पास न हो, घर में और रिश्तेदारी में उसकी कोई इज्जत न हो। उसके पास एक तरीका आ गया है अपनी इज्जत बढ़वाने का, अपनी आमदनी तथा अपना स्तर बढ़वाने का। अगर वह चार आने का अथवा आठ आने का कांग्रेस का मेम्बर हो जाता है, अगर वह सत्तारूढ़ दल का सदस्य हो जाता है और खादी भंडार से धोती कुर्ता खरीद लेता है तो उसको बहुत से प्रिविलेजेज रात भर में मिल जाते हैं, उसकी इज्जत बढ़ जाती है, उसको राशन की कतार में खड़े होने की जरूरत नहीं है, उसको अस्पताल में बरामदे में लेटने की जरूरत नहीं है। फौरन उसका दाखिला हो जाता है जो प्रिविलेज मामूली आदमी को नहीं मिल रहा है।

मुख्य मन्त्री (श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा)—

गलतफहमी में मत रहना। एक रुपये से कम में नहीं बनता।

श्री सत्य पाल मलिक—

मैं तो चार आने वाला आपको समझता था। अब आप का रेट बढ़ गया है।

[श्री सत्य पाल मलिक]

अभी एक मामला लोक सभा में और उछला था माननीय चन्द्र जीत यादव का। वह यहां नहीं हैं। मुझे कायदन उनके विरुद्ध कोई बात नहीं कहनी चाहिये। नैतिकता के आधार पर वह अच्छी नहीं लगेगी। चूंकि इस सूबे में लूट हो रही है इसलिये कहना चाहता हूं। सियासत आपके मित्र का अखबार है। कई महीने पहले छपा था शमशाद साहब और चद्र जीत यादव के कारनामों के बारे में। पार्लियामेन्ट में यह बात कही गयी कि शमशाद साहब बिना कुछ उत्पादन किये लाइसेन्स इम्पोर्ट का कोटा लेते हैं। मैं फाइल से पढ़ देता हूं जो आपके डिप्टी चीफ कन्ट्रोलर ओ० एन० आनन्द, एक्सपोर्ट इम्पोर्ट, कानपुर में हैं वह फाइल पर लिखते हैं :—

'Shri Chandrajeet Yadav, M. P. has spoken to me regarding this case a couple of days back I have requested Shri Yadav to send the report of this firm discuss this case."

वह आते हैं और उसको लाइसेन्स मिल जाता है। और उसके बाद २७ लाख सन् १९७३ में मांगते हैं। एक कोई चटोपाध्याय हैं उनके ऊपर फाइल में नोटिंग है। मान्यवर, इसके अलावा सुल्तानपुर जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री ने डिप्टी मिनिस्टर के० एन० सिंह को एक चिट्ठी लिखी कि वे ट्रस्ट के नाम पर भूमिहीनों की जमीन हड़प रहे हैं। आपके विधायकों की परसों एक बैठक हुई जिसमें ७० विधायकों ने भाग लिया। उसमें यह इल्जाम लगाया जाता है कि अपने-अपने गुटों के लोगों को जगह-जगह पर भरा जा रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि एक प्रकार की अनियमिततायें, एक प्रकार की अनैतिकता और एक प्रकार का भ्रष्टाचार केन्द्र के लोगों में और यहां के लोगों में फैल गया है जिसकी न केवल आप रक्षा कर रहे हैं बल्कि उनमें आप सरीक भी हैं। मैं फिर दुहराना चाहता हूं और मुख्य मन्त्री जी को चुनौती देना चाहता हूं कि जब तक राजनीति में काम करने वाले लोगों का जो इस देश और समाज को रास्ता दिखाते हैं, चरित्र साफ नहीं होगा तब तक देश उन्नति नहीं कर सकता है।

एक सदस्य—

उन ७० विधायकों का आप नाम बता दें।

श्री सत्य पाल मलिक—

मान्यवर, मैं चुनौती देना चाहता हूं कि चौधरी साहब जी हमारे दल के नेता हैं, की सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति की आप जांच कर लें तथा जो भ्रष्टाचार के आरोप हमने आपके ऊपर लगाये हैं उनकी जांच कर लें। ६ जजेज के नाम हम आपको बता देंगे उनमें से किसी एक जज की आप नियुक्ति कर दें, एक सदस्यीय आयोग बना दें और उससे इस बात की जांच करा दें अथवा इस सदन की एक कमेटी बना दें जिसमें आपके दल की मैजोरिटी हो लेकिन चेयरमैन हमारे विरोधी पक्ष का हो वह इसकी जांच करें। यदि आप सही होते हैं तो मैं इस सदन में बड़ी जिम्मेदारी के साथ यह बात कहना चाहता हूं कि राजनीति में मुझे ज्यादा दिन शायद रहना है, मैं न सिर्फ उसे छोड़ दूंगा अपितु जो सजा माननीय मुख्य मन्त्री मुझे देने के लिये तय करेंगे, उसे भुगतने के लिये तैयार हो जाऊंगा। यह होना चाहिये और सारी चीजें जनता के सामने आनी चाहिये। जनता को यह मालूम होना चाहिए कि जिस दिन वह किसी एम० एल० ए० को चुनकर यहां भेजती है उस दिन उसकी क्या आमदनी है, क्या सम्पत्ति है और बाद में क्या हो सकती है। इस बात की जांच होनी चाहिए कि चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी जब अमेरिका गईं तो उसके लिये उनके पास रुपया कहां से आया और मुख्य मंत्री जब विदेश जाते हैं तो खर्चा कहां से आता है। मैं बड़ी तकलीफ के साथ कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में लोकतंत्र खत्म हो रहा है। तानाशाह आप बनें या फौजी जनरल बने, इस मुल्क में डिमोक्रेसी खत्म हो गयी है।

मैं फिर दुहराना चाहता हूं कि इस अविश्वास के प्रस्ताव को आप कैजुअल तौर पर न लें, इसे आप बासी और पुराने तरीके से न लें, इसमें वोट न लें उसकी जरूरत नहीं है बल्कि सहमत हो जाइये और एक स्वर से कह दीजिये कि हम जांच के लिये एक कमेंटी नियुक्त करते हैं जो मुख्य मंत्री और नेता विरोधी दल दोनों की निजी और सार्वजनिक जिन्दगी की जांच करें और अगर जरूरत हो तो तमाम एम० एल० एज० की सार्वजनिक और निजी जिन्दगी की जांच भी करें। अगर आज उत्तर प्रदेश की विधान सभा ने ऐसा किया तो यह एक ऐतिहासिक कदम होगा और अगर यह काम नहीं किया तो अध्यक्ष महोदय, मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि इस मुल्क में राजनीति करने वालों की पूरी की पूरी कौम आज बदनाम हो चुकी है। मान्यवर आज अगर कोई व्यक्ति धोती, कुर्ता पहन कर निकलता है तो जनता के लोग खुसर-पुसर करते हैं और शक की निगाह से हम लोगों को देखते हैं। आज अगर सदन यह फैसला नहीं करता है तो सारे देश को जनता के सामने यह बात आयेगी कि राजनीति करने वाले लोग खासतौर पर हुकूमत करने वाले जो बोलते हैं उसका कोई मतलब नहीं होता। तो मैं फिर एक बार कहना चहता हूं कि जो आरोप मैंने लगाये हैं उनको पूरी जिम्मेदारी से सदन में और बाहर भी उठाना चहता हूं और निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री इसे स्वीकार करें और यह सदन फैसला करे कि हम तमाम लोगों की जांच हो।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

मान्यवर, मेरा एक निवेदन है। मैं यह कहना चहता हूं कि आपने कोई समय निश्चित किया है? नहीं तो ऐसा कर दें ताकि हम लोग जो बोलना चाहते हैं उस तरह से मालूम हो जाय।

श्री अध्यक्ष—

ऐसा है कि १० घंटे का समय आवंटित हुआ। तो भारतीय लोक दल को ३ घंटे अभी १.४६ मिनट चौधरी साहब बोले थे और ४० मिनट श्री मलिक बोले (व्यवधान) और भी हैं। फिर १.०६ घंटे (श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी) आप बोलें (व्यवधान) और आपको डेढ़ घंटा रख दिया, सबको अवसर मिलेगा।

*श्री प्रभु नारायण सिंह (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, इस अविश्वास, प्रस्ताव को रखते हुए जनसंघ के नेता माननीय माधव बाबू ने जो तर्क सदन के सामने दिये उसमें उन्होंने यह कह कर बात को टाल दिया कि नई बात मैं नहीं कहना चाहता हूं लेकिन उसको हम अपने तर्क में रखते हैं और अवसर पाने पर अंत में उसे निकालेंगे। इसलिये माधव बाबू ने जो अविश्वास प्रस्ताव पर अपना भाषण किया वह आमतौर पर वही बातें थी जो साधारणतया इस अवसर पर बोलने की होती हैं। माननीय सत्यपाल मलिक ने जो पहले सवाल आ चुके हैं उन्हीं सवालों को फिर से उठाने के साथ ही साथ उन्होंने कुछ नई बातें कहीं हैं जिनका समय पर उत्तर देने की बात अवश्य होनी चाहिये और होगी।

(इस समय १ बजकर ३५ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री रामायण राय पीठासीन हुए।)

माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय नेता विरोधी दल ने जो अविश्वास के प्रस्ताव पर अपना भाषण दिया वह उत्तर प्रदेश की सरकार के खिलाफ भाषण नहीं था बल्कि वह एक तरीके से उन्होंने भारतीय लोक दल की हैसियत से सारे देश के सामने अपनी बात कहने के लिये अपनी तकरीर दी। इस मौके पर मैं यह कहना चहता हूं कि बजट भाषण के अवसर पर मैंने यह कहा था कि माननीय नेता विरोधी दल ने अपने जो संशोधन दिये हैं उसमें उन्होंने यह सवाल उठाया कि यदि यह काम नहीं होते हैं तो हिंसा की स्थिति पैदा हो सकती है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री प्रभु नारायण सिंह]

मैंने उस सिलसिले में कहा था कि आज विरोध पक्ष अराजकता की स्थिति पैदा कर रहा है और वह अराजकता की स्थिति आज जो है सत्य में तबदील हो गई है। उस अराजकता के कारण आज राजनीतिक हत्यायें होने लगी हैं। मैं इस सदन में कहना चाहता हूं, अधिष्ठाता महोदय, मुझे बड़ा दुख होता है विरोध पक्ष ने जो राजनीति की शुरुवात की है उसके कारण समस्तीपुर में बम विस्फोट हुआ और उसमें माननीय ललितनारायण मिश्र जी की मृत्यु हुई है। मैं यह कहना चाहता हूं कि आज अराजक तत्वों के कारण इस देश में राजनीतिक हत्यायें शुरू होने लगी हैं और यह विरोध पक्ष के कारण हुई है। मान्यवर, यह बड़े दुख की बात है कि समस्तीपुर में श्री ललितनारायण मिश्र के ऊपर बम विस्फोट हुआ, तो यह उनकी राजनीतिक मीटिंग में बम विस्फोट हुआ है। उससे सीधी बात है कि आज विरोध पक्ष जो है वह इस देश में राजनीति में हिंसा को जन्म देना चाहता है और मैं विरोध पक्ष की इस राजनीति को चुनौती देना चाहता हूं कि यदि आपने अपना रास्ता नहीं बदला तो इस देश में हत्याओं की राजनीति के माध्यम से आप इस देश में जनतन्त्र का खात्मा करेंगे, जनतन्त्र को देश में नहीं रहने देंगे।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा (जिला गोरखपुर)--

माननीय सदस्य का यह आरोप बिलकुल असत्य है। हत्याओं की राजनीति विरोध पक्ष की ओर से नहीं खेली गई है, यह बिलकुल साफ बात है। यह बिलकुल नहीं होना चाहिये जबतक जांच के उपरान्त हत्याओं की बात साफ नहीं हो जाती। इस तरह से विरोधी दलों को बदनाम करना बहुत ही आपत्तिजनक बात है, मैं इसका घोर विरोध करता हूं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

भूतपूर्व मंत्री जी से निवेदन है कि जब कोई मामूली बात हो जाती है और यहां पर किसी के विरुद्ध कोई चार्ज लगाया जाता है, तो उधर से कहा जाता है कि इससे इंक्वायरी एडवर्सली एफेक्टेड हो जाएगी, फिर इतने गम्भीर मामले में इस तरह की बात कैसे उनके द्वारा कही जाती है। मुझे इससे बड़ी तकलीफ हुई है कि एक जिम्मेदार आदमी के मुंह से इस तरह की बात निकली, मुझे महान् दुःख हुआ है, ये दोनों ही जो दुखद घटनाएं हुई हैं। रायबरेली के पास जो हुआ, उससे भी मेरा दिल हिल गया है। ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये जिसमें मेरे साथ या किसी साथी के साथ कोई अन्याय हो।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा--

आप माननीय सदस्य को इंगित करें कि वह इसको वापस लें।

(व्यवधान)

इससे हमें भी अफसोस है। सार्वजनिक कार्यकर्ता होने के नाते मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं कि उनसे आप कहें कि वह आरोप अपने वापस लें।

एक सदस्य--

बहुगुणा जी ने नये रेक्रूटेड रंगरूट प्रभुनारायण सिंह जी ने अपने पहले भाषण में यह बात कही थी..... (व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता--

जब आपका अवसर आए तब उसका जवाब दीजिएगा।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा--

यह व्यक्तिगत आक्षेप है, उनको इसको वापस लेना चाहिये।

श्री मोहम्मद शकील अहमद (जिला लखनऊ)—

यह आरोप सही है, यह वापस नहीं होगा जो प्रभु नारायण सिंह ने कहा है।

श्री तीरथ राम कोहली (जिला इलाहाबाद)—

जब तक जांच न हो जाए, वह अपने शब्द वापस लें।

श्री मोहम्मद शकील अहमद—

वापस नहीं होंगे और बराबर कहे जाएंगे और आपको सुनना होगा।

श्री अधिष्ठाता—

मैं आपसे यह आग्रह करता हूं कि यदि आपके सुनने में कोई आरोप किसी इंडीविजुवल के खिलाफ आया है तो मैं उसे देख लूंगा। मुझे कार्यवाही देखकर ऐसा करने का अधिकार है। ऐसी कोई बात जो माननीय सदस्य को नहीं कहनी चाहिये, यदि कही होगी, यद्यपि मैंने नहीं सुना, जिस पर आपको आक्रोश है तो मैं कार्यवाही देखकर उसे अलग कर दूंगा। आप मुझे मौका तो दीजिए।

एक सदस्य—

आप मंगाकर देख लीजिए।

श्री अधिष्ठाता—

आपको मालूम होना चाहिये, सदन की कोई कार्यवाही माननीय अध्यक्ष की स्वीकृति के बिना प्रकाशित नहीं होती है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

ठीक है, आप उसे देख लीजिए।

श्री अधिष्ठाता—

मैं अवश्य देख लूंगा।

मैं आपको पूरा विश्वास दिलाता हूं कोई भी बात असंसदीय, अशोभनीय होगी या अकारण कोई आरोप लगाया होगा तो कार्यवाही देखने के बाद उसको निकालने की मैं व्यवस्था दे दूंगा। आप अपना स्थान ग्रहण करें।

कोहली साहब स्थान ग्रहण करें। इस सदन में मैं आश्वासन दे रहा हूं आपको।

माननीय प्रभुनारायण सिंह।

श्री राज ब्रजराज सिंह (जिला लखीमपुर खीरी)—

यह शब्द वापस ले रहे हैं?

श्री प्यारे लाल (जिला मेरठ)—

वापस होने का सवाल नहीं होता है?

श्री अधिष्ठाता—

बैठिये शर्मा जी, बैठिये।

शकील साहब मेरा काम आप क्यों कर रहे हैं। मुझे करने दीजिये।

श्री प्रभु नारायण—

विरोधी दल के लोगों ने कर दिया, ऐसी बात मैंने नहीं कहीं। मैंने यह बात कही है कि जो राजनीति आपने इस देश में पैदा की है। (व्यवधान) जरा सुनिए।

श्री अधिष्ठाता—

प्रभु नारायण सिंह जी, आपका समय नष्ट हो रहा है। आपको और बातें कहनी हों वह कहिए।

ओझा जी बैठिए न। आपका आब्जेक्शन नोट करवा लिया। मैं देखूंगा उसको।

श्री प्रभु नारायण—

जो अराजकता की नीति आप चला रहे हैं, जो अराजकता का वातारण आप पैदा कर रहे हैं उससे हत्या की राजनीति को जन्म मिलेगा।

श्री अधिष्ठाता—

मैंने कोई अराजकता का वातावरण पैदा नहीं किया। आप लोग बैठ जाएं।

श्री जनार्दन प्रसाद ओझा—

अगर इस तरह से आरोप प्रत्यारोप होगा तो सदन में कार्यवाही नहीं चलेगी। अराजकता इस देश में कौन पैदा कर रहा है? शासक दल पैदा कर रहा है।

श्री अधिष्ठाता—

समय मिलेगा आपको आप का विचार अखबारों में प्रकाशित होगा। आप क्यों परेशान हैं। जनतन्त्र में सबकी बात सुननी चाहिये।

माननीय प्रभु नारायण जी मुझसे बात करें।

श्री प्रभु नारायण—

तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि यदि माननीय नेता विरोधी दल ने जो भाषण लोक सभा में होना चाहिये, वह भाषण अविश्वास के प्रस्ताव पर न किया होता तो मैं शायद इन सब बातों का जिक्र न करता। लेकिन जब देश की राजनीति पर चर्चा होगी, माननीय नेता विरोधी दल इस सिलसिले में चीजों को उठाएंगे तो ऐसी स्थिति में जो दूसरी पालिटिकल राय है वह भी सदन के सामने आयेगी। इस सिलसिले में मैं यह कहना चाहता हूं कि आज जो देश की स्थिति बन रही है और जो विरोधी पक्ष गलत कार्य कर रहा है उसमें अहिंसा के आधार को छोड़ अराजकता की तरफ जाना चहता है, ऐसी स्थिति में उस अराजकता से न देश को कोई लाभ होगा न उन दलों को लाभ होगा जिनका डेमोक्रैसी और अहिंसा में विश्वास है।

माननीय नेता विरोधी दल ने अपने भाषण में कई बातों का जिक्र किया। माननीया इंदिरा जी का भी जिक्र किया। मैं इस मौके पर इंदिरा जी के एक वाक्य को कहना चहता हूं। माननीया इंदिरा जी ने अपने भाषण में कहा है, आज इस देश में जब विरोधी पक्ष में आडियालिजकल यूनिटी, सैद्धांतिक एकता नहीं है, ऐसी स्थिति में उनके लिये स्थिर सरकार बनाना सम्भव नहीं है और अगर अस्थिर सरकारें बनती रहीं तो देश का विकास का कार्य हमेशा रुक जायगी। उन्होंने यह सवाल उठाया कि आज की स्थिति में, आज जो माहौल है, उस स्थिति में यह सरकार अस्थायी विकास कर सकती है, माननीय नेता विरोधी दल का भी कहना है कि अब टालने से काम नहीं चलेगा और संविद सरकार से काम नहीं चलेगा। एक पार्टी बनाने से काम चलेगा वरना तालमेल नहीं हो सकता है। यह भी शुरुआत उन्होंने कर दी है। ऐसे लोग जो जनसंघ के बारे में कुछ भी राय रखते हों या भारतीय लोक दल के बारे में कुछ भी राय रखते हों, यदि सभी एक साथ मिलकर अविश्वास का प्रस्ताव लाते हैं तो सरकार यदि हट भी जाये तो सूबे का, देश का क्या हाल होगा। यह विरोधी दल के लोगों को समझना चाहिये।

इस मौके पर मैं यह कहना चाहता हूं कि जो आंदोलन का सिलसिला विरोधी दलों ने शुरू किया था आज उसमें दरार पड़ चुकी है। वह बिखराव की तरफ चला जा रहा है,

वह टूटता चला जा रहा है, वह चरमरा रहा है। बिहार की स्थिति हमारे सामने है। मैं कुछ कहना नहीं चाहता हूं क्योंकि उससे लोगों को चोट लगती है। लेकिन उत्तर प्रदेश में भी जनसंघ इस आंदोलन के पक्ष में नहीं है। माननीय जयप्रकाश जी ने जब निर्दलीय लोकतंत्र की बात कही तो भारतीय लोक दल के नेता का विश्वास उसमें नहीं है। आज जनतंत्र के लिये समाज परिवर्तन के लिये राजनीतिक पार्टियों की बहुत जरूरत है। जयप्रकाश जी के निर्दलीय शासन के पक्ष में वे नहीं हैं। उनका कहना है कि दलों की जरूरत है और बिना इसके कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है। जनसंघ के भाई चाहते थे कि एक साथ आंदोलन हो लेकिन चौधरी साहब ने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि इससे ताकत निकल रही है। इसलिये सब भाई नहीं मिल पाये। उन्होंने कहा कि हम अकेले आन्दोलन करेंगे। आंदोलन के पीछे उनकी कोई भी किसी तरह की एकता नहीं रह गई है। कांग्रेस संगठन तथा अन्य पार्टियों ने भी इन्कार कर दिया है। आज जो विरोधी दलों का गठबंधन हुआ है वह टूट रहा है और उससे काम चलने वाला नहीं है।

आज हमारे देश में भ्रष्टाचार की बात उठा कर स्त्रीपिंग रिमार्क्स पास करके अविश्वास को राजनीति में तब्दील करना चाहते हैं। वह श्रद्धा और मर्यादा की राजनीतिक को तिलांजलि देना चाहते हैं। केवल भ्रष्टाचार के आधार पर आप अपना आंदोलन बिल्ड अप नहीं कर सकते हैं। सिद्धान्त के आधार पर ही आप अपना आंदोलन बिल्ड अप कर सकते हैं। इस मौके पर मैं कहना चाहता हूं कि मेरा बहुत सा समय झंझट में निकल गया। चौधरी साहब ने कुलक की परिभाषा करते हुये कहा कि जमींदारी एबालीशन के कानून के सिलसिले में उन्होंने बहुत काम किया। जो कुछ भी इसके संबंध में हुआ वह उनकी वजह से ही हुआ। उनकी वजह से नहीं हुआ बल्कि इसलिये हुआ कि देश के किसानों को संगठित करके साम्राज्यवाद के खिलाफ जो लडाई लड़ी गई, उसका नतीजा था कि जमींदारियां खत्म हुईं। चौधरी साहब को इसका श्रेय नहीं दिया जा सकता है। इतिहास जानता है कि किसने किसान और मजदूरों को इस संघर्ष में शामिल किया था। १९३० में माननीय पुरषोत्तम दास टंडन, जवाहरलाल जी नेहरू तथा आंचार्य नरेन्द्रदेव जी ने किसान आंदोलन चलाया था जो लगान न देने का आन्दोलन था, उसका नतीजा था कि जमींदारियां खत्म हुईं।

श्री त्रिवेणी सहाय (जिला गोंडा)—

मान्यवर, मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूं।

श्री अधिष्ठाता—

माननीय त्रिवेणी सहाय जी, जब तक माननीय प्रभु नारायण जी बैठ नहीं जाते हैं, तब तक आप स्पष्टीकरण कैसे देंगे ?

(श्री त्रिवेणी सहाय बोलने के लिए खड़े रहे और बोलने लगे)

यह लिखा नहीं जायगा। माननीय त्रिवेणी सहाय जी जो कुछ कहेंगे वह लिखा नहीं जायगा।

(श्री त्रिवेणी सहाय बिना अनुमति के बोलते ही रहे)

आप बिना मेरी आज्ञा के बोल रहे हैं, यह लिखा नहीं जायगा।

(श्री त्रिवेणी सहाय कुछ बोलते रहे और शासक दल की तरफ से मेजें थपथपायी जाती रहीं)

माननीय त्रिवेणी सहाय जी आप जो कुछ कह रहे हैं यह कार्यवाही का अंग नहीं बनेगा।

(शासक दल की तरफ से मेजें थपथपाई जाती रहीं)

श्री त्रिवेणी सहाय—

[* * *]

श्री अधिष्ठाता—

इसलिए कि आप बिना आज्ञा के बोल रहे हैं। माननीय प्रभुनारायण जी बोल रहे थे और वह अभी बैठे नहीं है और आप बिना आज्ञा के खड़े होकर बोलने लगे हैं।

(माननीय त्रिवेणी सहाय कुछ बोलते रहे और व्यवधान जारी रहा।)

माननीय त्रिवेणी सहाय जी से आग्रह है कि वह अपना आसन ग्रहण करें।

(श्री त्रिवेणी सहाय बैठ गये)

माननीय प्रभुनारायण सिंह जी आप अभी कितना समय और चाहते हैं ?

श्री प्रभु नारायण—

मान्यवर, १० मिनट मैं और चाहता हूं। मैं अपनी बात १० मिनट में समाप्त कर दूंगा।

(व्यवधान)

श्री बाबू लाल वर्मा (जिला बहराइच)—

आप कृपा करके सवा ६ एकड़ के बारे में भी बता दीजिएगा।

(व्यवधान)

श्री प्रभुनारायण—

मान्यवर, ट्रेस–पासर को जो हक मिला है, किसानों के मजदूरों के संघर्ष का मामला यह है कि जिस जमीन पर किसान का कब्जा है उस जमीन से किसी भी तरीके से किसानों को नहीं हटाया जायगा। यह आन्दोलन बनारस और आजमग में छिड़ा था, उस समय १९३१ में यह ट्रेसपासर ऐक्ट पास हुआ था, जिसमें किसानों को उस जमीन पर हक मिला। माननीय चौधरी साहब का कहना है कि माननीय स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू जी ने मजदूर किसानों को हक नहीं दिया। मैं चौधरी साहब से कहना चाहता हूं कि जो जमीन का मामला है, उसको किसने पैदा किया? जवाहर लाल जी चाहते थे कि रिडम्पशन हो, लेकिन उन्होंने एतराज किया नहीं। कांग्रेस और सरकार जो थी, उसके वह नेता थे। और सरकार ने फैसला किया कि रिडम्पशन नहीं होगा। मैं चौधरी साहेब को याद दिला देना चाहता हूं कि १९३० में पहली बैठक हुई थी, समाजवादी गोष्ठी की काशी में तो जवाहर लाल जी पहले व्यक्ति थे जो वहां जाकर बैठे थे। चौधरी साहेब समाजवाद की बात क्या करते हैं। मैं आज इस मौके पर कह देना चाहता हूं चौधरी साहेब ने बोनस का सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि बोनस जो फैक्टरियां घाटे में चलें उनको बोनस नहीं देना चाहिये। मैं पूछना चाहता हूं कि जो आपके विरोध पक्ष में बैठे हुए हैं कि क्या चौधरी साहेब इस राय से सहमत हैं कि मिनिमम वेज उनको नहीं दी जानी चाहिये। क्या वह इससे सहमत हैं। जब केन्द्रीय सरकार कहती है कि मुल्क में इनफ्लेशन बढ़ रहा है और कम्पलसरी डिपाजिट में जमा करने का आग्रह करती है, तो यही लोग कहते है कि कम्पलसरी डिपाजिट में नहीं जाने देंगे। आज देश की स्थिति खराब हो रही है। मजदूरों का हक नहीं मारा जाना चाहिये। और भारतीय लोक दल के अध्यक्ष कहते हैं कि मजदूरो को जो बोनस कानून है वह गलत है। क्या यह समाजवाद है। आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है। हमारे माननीय सदस्य आज इस सवाल को बार-बार उठाते रहे हैं। सवा ६ एकड़ के मामले में त्रिवेणी सहाय जी बड़े बेचैन मालूम पड़ते हैं।

[* * *] श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

श्री बांके लाल (जिला देवरिया)—

[* * *]

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—

यह कार्यवाही में नहीं लिखा जायेगा।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक (जिला देवरिया)—

[* * *]

श्री अधिष्ठाता—

यह लिखा नहीं जायेगा।

श्री प्रभु नारायण—

(व्यवधान) बार-बार सवाल उठाया जाता है कि ३२ फीसदी मतों से जीत कर यह सरकार बनी है और यह कहा जाता है कि सरकारी मशीनरी का दुरपयोग किया गया है। —खैर मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। आज जो सत्ता पक्ष यहां पर बैठा हुआ है वह, मैं बता देना चाहता हूं कि उन गरीब तबके के लोगों के मतों से जीत कर आया है। जो समाज का सबसे गिरा हुआ है, उसी ने वोट दिया है।...

(श्री जमुना प्रसाद बोस का नाम पुकारे जाने पर)

श्री राज ब्रज राज सिंह—

के खड़े हो कर कुछ कहने पर।

श्री अधिष्ठाता—

मैं माननीय त्रिपाठी जी से अनुरोध करूंगा कि मैंने एक माननीय सदस्य को बोलने के लिये बुला लिया है तो माननीय ब्रज राज सिंह जी के खड़े होने का कोई औचित्य नहीं है। मैं माननीय सदस्य से भी अनुरोध करूंगा कि जब वे बोलने लगे तो अपने विचार व्यक्त कीजियेगा।

(इस समय २ बजे श्री अयध्क्ष पुन: पीठासीन हुए।)

*श्री जमुना प्रसाद बोस (जिला बांदा)—

अभी हमारे एक माननीय सदस्य ने कहा कि बिहार में जो माननीय ललित नारायण मिश्र की हत्या हुई है वह विरोध पक्ष की राजनीति के कारण हुई है। मैं उनको बताना चाहता हूं कि यह विरोध पक्ष की राजनीति के कारण नहीं बल्कि २७ साल की कांग्रेस की राजनीति के कारण ही ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है। जिस कारण भी हत्या हुई हो, हम इस हत्या की निन्दा करते है। आज जो ऐसा वातावरण पैदा हुआ है, बम कांड हुआ है यह इस बात का द्योतक है कि कांग्रेस ने देश और प्रदेश में एक ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दिया है कि सारे हिन्दुस्तान का संतुलन ही खो दिया है।

उन्होंने यह भी कहा कि सोशलिस्ट पार्टी ने, कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क-सिस्ट) ने दूसरी पार्टियों के साथ मिल कर अविश्वास प्रस्ताव रखा है। लेकिन मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उन्होंने अलग से अपना प्रस्ताव रखा है, उनके साथ नहीं रखा है। आज जो लोग समाजवाद की बात करते हैं, वे कैसे साढ़े ६ एकड़ की जोतों पर लगान लगवाने

[***]श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री जमुना प्रसाद बोस]

के पक्ष पर हो गये हैं, आज कैसे वे माध्यमिक शिक्षक संघ की जो मांग है कि स्कूलों का राष्ट्रीयकरण किया जाय, उसे क्यों नहीं स्वीकार कराते हैं? आज वे, समाजवादी होने के नाते हमारे जो चीनी मिल हैं, उनका राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं कराते हैं। २७ वर्ष से सत्तारूढ़ दल ने क्यों इसे रोक रखा है? विद्यालयों में ८० फीसदी रुपया सरकार देती है और २० फीसदी रुपया विद्यार्थियों की फीस से आता है। स्कूलों की जो मैनेजिंग कमेटीज होती हैं, उनको एक पैसा भी नहीं लगाना पड़ता है, तब उन मैनेजरों और मैनेजिंग कमटीज का स्कूलों के ऊपर क्यों असर बना हुआ है? क्यों नहीं उनका राष्ट्रीयकरण किया जाता है। आज प्रदेश की स्थिति एक ऐसी गम्भीर परिस्थिति है कि सारे प्रदेश का जो युवा वर्ग है, वह अपना संतुलन खो रहा है और हमारी सरकार कहती है कि हमारे पास पैसा नहीं है। इसलिए प्रदेश में जो नौकरियां है उनमें प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस प्रदेश की जन-संख्या ९ करोड़ है लेकिन इस प्रतिबन्ध लग जाने के कारण किसी को भी काम नहीं मिल सकता है। एक साल से ऐसी स्थिति हो गई है कि जो यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी है, या उसने हाई स्कूल या इन्टरमीडिएट पास कर लिया उनके सामने जीविका पाने का प्रश्न है। तो मैं पूछना चाहता हूं कि क्या इस कारण प्रदेश में अराजकता का वातावरण पैदा नहीं होगा? आज जो नौजवान, बी० ए० या एम० ए० पास करता है, प्रतिबन्ध लग जाने के कारण, वह क्या करेगा? वह आज मजबूर है दूसरा रास्ता अख्तियार करने के लिये। जो हत्या हुई है, हम उसकी निन्दा करते हैं लेकिन जो राजनीति अब पैदा हुई है, उसकी जिम्मेदारी विरोध पक्ष की नहीं, उसकी जिम्मेदारी सत्तारूढ़ पर ही है। आज लोग कहते हैं कि सत्तारूढ़ दल वह चीज करता है जो सही है यह बिल्कुल गलत बात है। हमारे माननीय सत्यपाल मलिक जी ने कहा कि प्रदेश के लोगों में कुछ ऐसा विश्वास हो गया है कि हमारे मुख्य मन्त्री जो कुछ कहते हैं वह शायद करते नहीं हैं, बांदा जिले के सभी सदस्यों ने जो जनता द्वारा चुने गये हैं जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी, जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय लोकदल, सभी विरोधी दलों के सदस्य हैं उन्होंने मुख्य मन्त्री से अनुरोध किया था कि वहां एक ईमानदार हरिजन अधिकारी को रखा जाय। लेकिन उसे इसलिये नहीं रखा गया क्योंकि उनके समय में चुनाव कांग्रेस नहीं जीत सकी। तो आज जो कांग्रेस के लोग चाहते हैं वही होता है। ईमानदार अधिकारी के लिये कोई स्थान नहीं है। एशिया की जो सब से बड़ी ग्रामीण पेय जल योजना है जो तीन करोड़ की लागत से बुन्देलखंड क्षेत्र मे चल रही है उसमें करोड़ ढाई करोड़ का स्कैंडल है और वह विभाग हमारे मुख्य मन्त्री के पास है। कहते हैं कि मक्खी वहीं जाती है जहां शक्कर होती है। उस पेय जल योजना की जिम्मेदारी एक ऐसे इन्जीनियर के पास है जो सन् १९४४ से लेकर आज तक हेरफेर कर वहीं रहता रहा है। वह कौन सी चीज है जो सरकार कोई दूसरा इन्जीनियर नहीं पाती और उसी इन्जीनियर को बार-बार वहां भेजती है। आप बहुत से स्कैन्डल सुनते हैं, बाजरा कांड, धान कांड, लेकिन इस स्कैंडल के लिये सरकार क्या कर रही है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है:

अनुनय विनय नहीं सुनते हैं विकल शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया।

तो जब हम प्रशासन से मांग करते हैं तो हमारी बात नहीं सुनते। आज सारा पैसा हिमालय की तलहटी के उत्तरी जिलों में लगाया जा रहा है और जो दक्षिण के जिले हैं उनकी अवलहेना की जा रही है। आज सरकार ने १७ हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट कालेज और २ डिग्री कालेज पहाड़ी जिलों में खोले हैं लेकिन बुन्देलखंड में एक भी डिग्री कालेज नहीं खोला गया। मुख्य मन्त्री का जो बाराह क्षेत्र है उसी से लगा हुआ मऊ क्षेत्र है वहां आदिवासी कोल रहते हैं। वहां दो कोलों की भुखमरी से मृत्यु भी हो चुकी है। वहां लोगों ने मांग की कि डिग्री कालेज खोला जाय। वहां की जनता ने पैसा इकठ्ठा किया, डिग्री कालेज खोलने की सारी शर्तें पूरी कीं लेकिन सरकार कहती है कि वहां पर डिग्री कालेज

नहीं खोल सकते इस लिये कि यू०जी० सी० परमीशन नहीं देती है। अगर ऐसा है तो और जिलों में डिग्री कालेज खोलने की परमीशन सरकार को कैसे मिल जाती है।

जहां तक भ्रष्टाचार की बात है, बांदा के कम्युनिस्ट पार्टी के, जनसंघ के, सोशलिस्ट पार्टी के, सभी दलों के सदस्यों ने वहां की बात ऐडजर्नमेंट मोशन के रूप में रखी थी। मुख्य मन्त्री के पास पहुंच गई। उसमें उन्होने कहा था कि बांदा का खाद्य विभाग इतना भ्रष्ट है कि उसके विरोध में सारा बांदा बन्द रहा, वहां पर कांग्रेस पार्टी के जो महा मन्त्री हैं उनके नेतृत्व में कोतवाली के सामने एक विराट सभा हुई जिसमें यह मांग सरकार से की गयी भ्रष्टाचारी लोगों के खिलाफ कार्यवाही की जाय, मगर आज तक सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की। (व्यवधान) !

मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि अगर न इन चीजों पर सरकार ने ध्यान नहीं दिया तो उत्तर प्रदेश में भी वही स्थिति होगी जो आज बिहार में हुई है। मैं छोटे-छोटे प्रान्तों के पक्ष में नहीं हूं। मगर बुन्देलखड की जो समस्यायें हैं, यदि उनकी ओर सरकार ने ध्यान नहीं दिया तो बुन्देलखंड एक नया प्रान्त बन कर रहेगा और देश की कोई भी ताकत उसे रोक नहीं पायेगी। (व्यवधान)।

*सार्वजनिक निर्माण मन्त्री (श्री लक्ष्मी शंकर यादव)—

मैं सूचना के लिये कुछ निवेदन करना चाहता हूं। अभी ग्लूकोस कांड के बारे में कहा गया कि सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की। मैं निवेदन कर दूं कि सी० आई० डी० द्वारा जांच का कार्य चल रहा है। ६ आदमियों के खिलाफ मुकदमा भी अदालत में जा चुका है। ७ आदमी मुअत्तल भी हो चुके हैं। जांच अभी भी चल रही है।. जांच में जिसके खिलाफ भी सन्देह निकलेगा, सरकार कार्यवाही करेगी।

कल माननीय नेता विरोधी दल ने कहा था कि डाइरेक्टर आफ इन्डस्ट्री और डायरेक्टर आफ हेल्थ में तालमेल नहीं है जिसके कारण अस्पतालों में दवायें नहीं पहुंच रही हैं। दवाओं के लिये इस वर्ष के बजट में पौने ४ करोड़ का प्राविधान था और अब केवल २६ लाख रुपया बचा है, जेष की दवायें खरीदी जा चुकी हैं। वह अस्पतालों में पहुंच रही हैं। (व्यवधान)।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी —

अस्पतालों में दवाओं का अभाव है कि नहीं ?

एक सदस्य—

आपने आयुर्वेद की दवाओं के लिये कितना दिया है ? और एलोपैथिक दवाओं के लिये कितना रुपया दिया है (व्यवधान)।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव—

बजट में जो प्राविधान था वह मैंने बताया और यह सूचना दी कि इस वक्त केवल २६ लाख रुपया ही बचा है, शेष की दवायें खरीदी जा चुकी हैं। वह अस्पतालों में जा रही हैं। उसके लिये आर्डर हो गये हैं। जिला हेड क्वार्टर से सीधे दवायें भेज दी जाती हैं। लाइव सेविंग ड्रग्स हैं औई जो इसी तरह की दवाइयां हैं वह हमेशा मौजूद रहें इस बात का ध्यान रखा जाता है। दवाओं को हम यहां की भी फर्मों से खरीदते हैं। और बाहर की फर्मों को भी आर्डर दिया जाता है। आज कल चूंकि कड़ी कार्यवाही हो रही है जिसकी वजह से छोटी-छोटी फर्में बन्द हो गयी हैं ? इस वजह से हो सकता है कि कुछ हद तक दवाओं की कमी हो गई हो इस सम्बन्ध में मैं यह भी बता दूं कि एक फैक्टरी गाजियाबाद में बन रही है।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री लक्ष्मी शंकर यादव]

शायद २/३ महीने में तैयार भी हो जायेगी। इसमें आवश्यक दवायें बनना जल्द शुरू हो जायगा तो जो दवाओं की आवश्यकता है वह पूरी कर सकेंगे। दूसरा निवेदन.....

श्री शफीकुर्रहमान बर्क (जिला मुरादाबाद)--

मन्त्री जी आप लगे हाथों यह भी बता दीजिये कि दारुल सफा में जो एम० एल० एल० हैं उनको कितनी सुविधा है आप इस बात को भी बताइये।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव--

माननीय सदस्य किसी अस्पताल या दारुल सफा के बारे में देंगे तो मैं बता दूगा।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

मन्त्री जी यह भी बता दें कि आज प्रदेश में वास्तव में दवाओं की कमी है या नहीं जो दवायें हैं क्या वह पर्याप्त हैं ?

श्री लक्ष्मी शंकर यादव--

मान्यवर, जितना बजट में प्राविधान होता है उतनी दवायें अस्पतालों में पहुंच जाती हैं और जो यह कहा गया कि डाइरेक्टर आफ इन्डस्ट्रीज या मेडिकल हेल्थ का आपस में तालमेल नहीं है, यह भी बात नहीं है।

दूसरा निवेदन मैं करना चाहता हूं। माननीय नेता जनसंघ ने कहा था कि मैं उनकी बड़ी इज्जत करता हूं। मैं केवल सूचनार्थ निवेदन कर रहा हूं उन्होंने सार्वजनिक निर्माण विभाग में ट्रान्सफर के मामले में कहा था। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी बात नहीं है। इस सम्बन्ध में आर्डर पहले से ही कर दिये गये हैं। एक तारीख मुकर्रर कर दिया कि इस तारीख तक आप चार्ज दे दें और इस तारीख तक आप चार्ज ले लीजिये। ३ तारीख तक चार्ज दे दें और ९ अगस्त तक ले लें। इसमें कोई शक नहीं है और इसके बाद ऐसा नहीं हुआ है। यह जरूर है कि कुछ जूनियर इन्जीनियर और इन्जीनियर बाहर डेपुटेशन पर गये हों और उनकी जगह पर कोई रखा गया हो। जहां तक मेरी जानकारी है करीब ७०० जूनियर इन्जीनियर और २६० इन्जीनियर गये हैं। इनकी जगह पर कोई हो सकता है कि एक आध भेजा गया हो पर ९ अगस्त के बाद और कोई अन्य ट्रान्सफर नहीं किया गया है।

ट्रान्सफर के बारे में जिसने सिफारिश की है उसमें से कई को सस्पेन्ड किया गया है। लखनऊ में ही हमने ५/६ आदमियों को सस्पेंड किया है। यह बात मैंने केवल सूचनार्थ कही है। कहीं-कहीं यह भी होता है कि बहुत सारे ट्रान्सफर होते हैं। लोगों का दवाब पड़ता है, वे आकर हमसे कहते हैं, तो हम कह देते हैं कि कोशिश करेंगे। लेकिन कहीं इनक्वायरी चल रही होती है, कहीं विजिलेंस की इनक्वायरी हो रही होती है तो उसके अन्दर हम कुछ नहीं कर सकते हैं जिससे कुछ लोग नाखुश हो जाते हैं। ये थोड़ी सी चीजें हैं जिनको मैंने निवेदन किया। (व्यवधान)।

श्री शिव कुमार पांडेय (जिला सुल्तानपुर)--

क्या यह सही है कि बस्ती के पी० डब्ल्यू० डी० के इन्जीनियर जो हैं, उनके खिलाफ विजिलेंस की इनक्वायरी चल रही है और उसमें भी माननीय नेता जनसंघ ने कई बार आप पर दवाब डाला कि उनका ट्रान्सफर रोक दिया जाय ?

श्री लक्ष्मी शंकर यादव--

व्यक्तिगत रूप से किसी इन्जीनियर या किसी के खिलाफ विजिलेंस इनक्वायरी चल रही है या नहीं, इसको बतलाना मेरे लिये उचित नहीं है और इसे मैं नहीं बतलाना चाहता। यह ठीक नहीं है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

अच्छा, तो मैं अब मै आपकी तमाम सब पोल व्यक्तिगत और दूसरी भी सदन के सामने खोलूगा, इसको आप समझ लें, आप सावधान रहियेगा।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव—

मैं उनकी बात का जवाब नहीं दे रहा हूं। (व्यवधान) मैंने पहले ही निवेदन किया जो कि ग्रामबात थी और जिसकी आपने चर्चा की अब मैं कोआपरेटिव के सिलसिले में कहना चाहता हूं जो माननीय नेता जनसंघ ने कहा था। (व्यवधान)

श्री जंगबहादुर वर्मा (जिला बाराबंकी)—

मान्यवर, अविश्वास के प्रस्ताव पर अधिकतर लोग बोलने वाले हैं और इस तरह से सूचना के सम्बन्ध में ही तमाम समय खत्म हो जाता है। तो आगे के लिये समय बढ़ाया जाय।

(व्यवधान)

श्री लक्ष्मी शंकर यादव—

माननीय नेता जनसंघ ने कोआपरेटिव के सिलसिले में कहा कि १०० करोड़ रुपये का गबन है। वैसे १९७० से जब से चेक से पैसा दिया जाने लगा, चेक के सिलसिले में काफी सतर्कता बरती गयी है, उनकी फोटो होती है, दस्तखत होता है। फोटो सोसाइटी में रहती है, बैंक में भी रहती है। यह बात सही है कि जो उन्होने कहा कि सन् १९७० के पहले बहुत सारे मामले इस तरह के हुए कि पैसा तो लिख गया किसी के नाम लेकिन वह लिया असल में किसी और ने। ऐसे सारे मामले बहुत से थे, इसमें कोई शक नहीं है लेकिन बाद में वहां पुलिस सेल बनाया गया है जो कार्यवाही इस सम्बन्ध में कर रहा है और उस सिलसिले में मेरा निवेदन यह है कि उसके द्वारा ऐसे ही २१९ मामले में विवेचना हो चुकी है और ११८१ अभियुक्तों को बन्दी बनाया गया तथा २ करोड़ ९६ लाख ७२ हजार २२१ रुपये का जो मामला था उसमें से करीब ६ लाख ८५ हजार रुपया जमा हो गया है और आज भी ३३८ मामले अदालतों में हैं और आगे उसकी कार्यवाही अभी जारी है। तो यह कह देना,यह बात सही नहीं है कि १०० करोड़ रुपये के गबन का मामला है।

वैसे ही कपड़े के वितरण के सिलसिले में भी कुछ कहा गया था। उस सिलसिले में मैं निवेदन करना चाहता हूं कि ३५० रुपये माह से कम आमदनी वाले लोगों को ही यह कपड़ा मिलता है। इसके लिये ब्लाक स्तर पर समितियां बनायी गयी हैं, वे जिसको कहते हैं उन्हीं को कपड़ा मिलता है।

(व्यवधान)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, यह बड़ी गम्भीर बात है। यह कहा गया हैकि प्रदेश की १० करोड़ जनता को नियन्त्रित मूल्य पर कपड़ा मिलता है और अब कपड़े की मात्रा कई लाख मीटर बढ़ गयी है। लेकिन मैं चुनौती के साथ कहता हूं कि एक मीटर भी कपड़ा बढ़ा नहीं है। जिस कपड़े की लम्बाई सवा गज थी उसकी लम्बाई अब केवल १० गिरह ही रह गयी है। इस तरह से आप देखेंगे कि कपड़े की लम्बाई बढ़ गयी है लेकिन चौड़ाई नहीं बढ़ी है। फिर यह किस तरह से कहा जाता है कि लाखों मीटर कपड़ा बढ़ गया है? मान्यवर, इस तरह की बड़ी जालसाजी किसी भी सरकार ने कभी नहीं की है मानव इतिहास में।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव—

मान्यवर, वितरण का जो तरीका है उसको बता दिया।

*श्री राम प्रकाश त्रिपाठी (जिला फर्रुखाबाद)—

मान्यवर, मैं आपको सर्वप्रथम धन्यवाद देना चाहता हूं कि जो आपने मुझे इस अविश्वास प्रस्ताव पर विचार प्रकट करने का अवसर दिया। मैं माननीय नेता विरोधी दल और माननीय सदस्य तथा हमारे नेता श्री त्रिपाठी जी द्वारा प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। अध्यक्ष जी, मुझे आपके माध्यम से सरकार से कहते हुये दुख होता है कि जो अविश्वास प्रस्ताव की गरिमा है और जो उसकी गम्भीरता है। तो उस गम्भीरता को हमारे शासक दल में बैठे हुये लोग समझने की चेष्टा नहीं कर रहे हैं। जो वाद-विवाद मैं देख रहा हूं उसमें हमारे मंत्री गण केवल उसको एक दृष्टि से देखते हैं कि जो सूचना विरोधी दल की ओर से दी जाती है वह नोट की जा रही है कि उनका किस तरीके से खंडन करेंगे। इस दृष्टि से नोट कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से अपने मंत्री गणों से यह प्रार्थना करना चाहूंगा कि आखिर इस ओर बैठे हुये लोग भी जनता द्वारा चुन कर आये हैं और जनता का विश्वास लेकर आये हैं। अपने क्षेत्र में कुछ रचनात्मक कार्य करने की दृष्टि लेकर आये हैं। परन्तु आपके शासन में जो भ्रष्टाचार है, जो गड्ढे हैं उनकी ओर हम लोग इंगित करते हैं। चूंकि आप शासन की जिम्मेदारी पर बैठे हुये हैं इसलिये सूचना दे रहे हैं। लेकिन वह केवल इस दृष्टि से नोट कर रहे हैं कि उनका खंडन करेंगे और अविश्वास प्रस्ताव की गम्भीरता को नहीं समझा जा रहा है।

एक सदस्य ने कहा था कि यह प्रस्ताव क्यों लाया जा रहा है तो उसको विरोधी दल के नेता ने जवाब दिया था। इस सरकार के नेता हमारे मुख्य मंत्री जी ने जिस प्रस्ताव को विभिन्न अधिवेशनों में जैसे कि सवा छः एकड़ के प्रस्ताव को रखा था और कांग्रेस के घोषणा-पत्र में भी लिखा और आज मुख्य मंत्री जी किसानों से अलग हो जायं तो उस दल और उस सरकार को कुर्सी पर बैठने का अधिकार नहीं है। जिस घोषणा पत्र के आधार पर चुन कर आये थे और उसकी इस सदन में अवहेलना करें तो अपनी ही स्याही को चाटते हुये कौनसा लोकतांत्रिक हक है, इस प्रदेश के शासन को चलाने का। यदि आप घोषणा-पत्र की कुछ पेचीदिगियां और सोचें तो ठीक है लेकिन सभी ने दिवालों पर कांग्रेस की ओर से बड़े—बड़े पोस्टर लगाये गये थे और उस पर लिखा कि 'कांग्रेस जिताओ और उत्तर प्रदेश उठाओ'। इस प्रकार कांग्रेस ने अब अनुभव किया कि इस प्रदेश को किसी ने गिराया है। इसलिये अबकी बार कांग्रेस जीतेगी तो उत्तर प्रदेश उठेगा। मैं पूछना चाहता हूं कि अभी तक कांग्रेस ने क्या किया है ?

हमारे विरोधी दल के नेता ने सारे प्रदेश की कृषि की ओर ध्यान आकर्षित किया था और मैं उत्तर प्रदेश की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इस प्रदेश के अन्दर १९४७ में १८ प्रतिशत जमीन सिंचित थी कुल कृषि योग्य भूमि का। १९७४ में वह सिंचित क्षेत्र ३१ प्रतिशत आया और इस प्रकार केवल १३ प्रतिशत आप बढ़ पाये हैं। अध्यक्ष जी, ऐसी स्थितियां हैं कि उनके बयान करने में बहुत समय लग जावेगा। यह कागजी आंकड़े हैं। राजकीय नलकूप के केन्द्रीय कार्यालय में रिकार्ड देखें तो कितने बंद पड़े हैं और कितने चल रहें हैं। तो कागज जो कहता है उसको देखकर लज्जा आती है। अध्यक्ष जी, मैं फर्रुखाबाद की बात कहता हूं। फतेहगढ़ रीजन में ५० प्रतिशत ट्यूबवेल्स बंद पड़े हैं। हम लोगों ने वहां के अधिशासी अभियन्ता के विरुद्ध कई बार समय—समय पर मंत्री जी का ध्यान आकर्षित किया है और बतलाया है कि उनके विरुद्ध सैकड़ों शिकायतें हैं। तो शासन को इस बात को गंभीरतापूर्वक लेना चाहिये कि इतने ट्यूबवेल्स बंद क्यों पड़े हैं ? मैं आपके माध्यम से बतलाना चाहता हूं कि वहां के अधिशासी अभियन्ता ने जो सामान मेन्टिनेन्स के लिये ट्यूबवेल्स की मशीनरी आदि खरीदा है उसमें बड़ा घोटाला है। यह घोटाला शासन के ध्यान में लाते हैं तो मंत्री जी कहते हैं कि यह तो सारे प्रदेश में हैं। उन्होंने ८०,००० रुपये का सामान खरीदा है मेसर्स न्यू इन्डिया इन्जीनियरिंग वर्क्स, मेरठ से। यह फर्म न तो इसमें व्यापार करती है और

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

न इसकी इक्जिस्टेन्स है। इसमें ४२,००० रुपया किराये में दिलाया गया है और जिसने ढुलाई की है उसके पास कोई ट्रक नहीं है। मेसर्स वी० एस० कपूर कम्पनी, कानपुर के पास कोई ट्रक नहीं है जिसने ढुलाई की है। ऊंचे दाम पर ढुलाई कराई गई है। इनेमिल्ड वायर खरीदा गया और आई० सी० सी० के दाम दिये। तमाम नकली सामान खरीदा गया है और ओवरसाइज का माल लगवा दिया गया है जिससे ट्यूबवेल अक्सर खराब रहते हैं। एक ट्यूबवेल तो जब से बना है सिर्फ एक दिन चला है।

अविश्वास प्रस्ताव के द्वारा जब यह बातें सरकार के ध्यान में लाई जाती हैं तो उसको गंभीरता पूर्वक इनको लेना चाहिये। अब तो भ्रष्टाचार के बारे में शासन का दृष्टिकोण ही बदल गया है। यह बड़ी खेदजनक बात है। प्रधान मंत्री जी ने एक वक्तव्य में कहा था। वह फ्रन्ट पेज पर छपा था कि भ्रष्टाचार की अधिक बातें करने से देश की बदनामी होती है, देश की तस्वीर खराब होती है। यहां के लोग मंत्रीजी वगैरह भी यही कहते हैं कि भ्रष्टाचार के बारे में शोर न मचाओ। मैं पूछना चाहता हूं कि आप लुटाते रहें और खाते रहें और जनता के लोग उस पर संकेत भी न करें। देश की बदनामी का डर दिखाकर इसको दबाने की चेष्टा की जाती है तो यह लोकतंत्र के लिये कोई अच्छी बात नहीं है। बहुत से सदस्यों ने सिंचाई के बारे में कहा। कहा गया कि बहराइच के एक ब्लाक हरिहरपुर में एक भी नलकूप नहीं है। ऐसे बहुत से ब्लाक हैं फिर भी विकास का ढिंढोरा पीटा जाता है। आपने अभी अभी एक विधेयक के द्वारा उत्तर प्रदेश के किसानों पर टैक्स लगाया है। इसके कारण यह सदन ही नहीं सारे प्रदेश की १० करोड़ जनता क्षुब्ध है। सरकार ने बिजली की दरें बढ़ा दी हैं।

मान्यवर, बिजली की दरों को बढ़ाने में जो सबसे विचित्र चीज है, उसमें यह किया है कि अब १५ रुपये प्रति हार्स पावर प्रति मास रैट कर दिया है और अगर निश्चित समय पर न दें तो ३ रुपया प्रति हार्स पावर पेनाल्टी रखी जाय। यह तब भी लगेगा, चाहे बिजली पूरे समय तक मिले या न मिले, उसकी मोटर फुक जाय, बिजली बंद हो जाय या उसका ट्रान्सफार्मर चोरी चला जाय। तो क्या विद्युत विभाग सरकार का कार्मशियल डिपार्टमेंट है? पहले तो १५ रुपये का शुल्क निहायत अनुचित है, जबकि कोई गारन्टी नहीं होती बिजली की। उसके बाद ३ रुपया पेनाल्टी यानी १८ रुपये उससे चार्ज करना चाहते हैं और इसी की घोषणा की है। मैं उधर के भी माननीय सदस्यों से पूछना चाहता हूं क्योंकि उधर के भी तमाम लोग देहात से चुनकर आये हैं और किसान हैं, कि बिजली की दरों को बढ़ाकर सरकार ने जनता के साथ विश्वासघात किया है कि नहीं? इसलिये आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार एक बार गम्भीरता से सोचे इन तमाम समस्याओं के बारे में और जिस विश्वास के साथ जिस नारे के साथ वह चुनकर आयी है, उस वायदे को पूरा करे। इन्ही शब्दों के साथ मैं, मान्यवर, अपनी बात समाप्त करता हूं और आपको इतना समय देने के लिये धन्यवाद देता हूं।

*श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, वैसे तो मेरा कुछ इरादा इस विवाद में भाग लेने का था नहीं, लेकिन मलिक साहब के कहने के बाद कुछ मुझे ऐसा आभास हुआ कि मैं भी अपने विचारों को व्यक्त करूं। मान्यवर, मलिक साहब जैसा व्यक्ति, जिसकी सराहना मुख्य मंत्री जी ने ट्रेजरी बेंचेज से की यह ऐसा भारतीय नौजवान है जिसकी इन्टीग्रिटी और आनेस्टी और इफीसियेन्सी के बारे में हम लोगों को बहुत घमण्ड है, और हम लोगों की जब मलिक से मुलाकात किसी कार्यतावश या वैसे भी होती थी, तो हम उनको आदर करते थे और मैं तो व्यक्तिगतरूप से उनसे काफी प्रभावित हूं, लेकिन उनके मुंह से जो बातें मैंने सुनीं, उससे मुझको बड़ा क्लेश हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि ये तो केवल आरोप हैं और इनकी सत्यता का बाद में पता चलेगा। मान्यवर, जहां तक भ्रष्टाचारों की बात है ये हमेशा से कहे जाते रहे हैं और कुर्सियों के बदलने के साथ-साथ

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राज मंगल पांडेय]

भ्रष्टाचार की मान्यता भी बदल गयी है। चौधरी साहब जब इधर बैठते, तो उधर के लोगों पर आरोप लगाते थे और आज जब उधर हैं, तो इधर के लोगों पर आरोप लगा रहे हैं और यह बात तब तक चलती रहेगी, जब तक कि यह असेम्बली रहेगी और जब तक पार्टी सिस्टम रहेगा। अगर मलिक साहब की बात यहीं तक सीमित रहती तो कोई शिकायत नहीं थी। लेकिन जब स्वतः कहते हैं कि हमारे जो आरोप हैं वे सामान्य स्थिति से ऊपर हैं। इसलिये आवश्यकता पड़ी कि उसका जवाब दूं।

मान्यवर, हमारे उधर के एक-एक मित्र, जिनमें हमारे बहुत से मित्र हैं, और जो आज हमें गालियां देते हैं, वे ही किसान मजदूरों से हमारी सरकार की तारीफ करते हैं और कहते हैं कि इन १३ महीने में जो कुछ इस सरकार ने किया है, वह पिछले २० वर्षों की गवर्नमेन्ट ने नहीं किया। यह बात हमारे उधर के साथी ही किसान-मजदूरों से कहते हैं और किसान-मजदूर हमको यह बात बताते हैं कि उन लोगों ने यह बात उनसे कही है। इतना ही नहीं, मैं इस प्रदेश के मुख्य मंत्री के बारे में कहना चाहता हूं। जो इस प्रदेश की राजनीति के क्षितिज में बहुत ऊंचे स्थान पर रहे हैं, अगर उन पर गलत आरोप लगायें जाते हैं, तो यह कहने में कोई संकोच नहीं होता कि बहुगुणा जी ही एक ऐसा व्यक्ति है, जो आज की इन विषम परिस्थितियों में प्रदेश के प्रशासन को इतने सुचारुपूर्वक ढंग से चला रहे हैं। (व्यवधान) अगर मुझे सर्टिफिकेट लेने की आवश्यकता होती तो चौधरी साहब से मागूंगा, आपसे नहीं। यह कहने का सौभाग्य इसलिये प्राप्त हुआ है कि आरोप कैसे बनते हैं और बिगड़ते हैं ?

हमारे व्यक्तिगत केस में ७० में कोलीजन गवर्नमेंट बनने की बात थी। उस समय चौधरी साहब ने एक्स स्पीकर जगदीश शरण जी से कहा मैं किसी को भी शामिल कर लूंगा लेकिन राज मंगल पांडेय को सरकार में नहीं लूंगा। हमारी तरफ पार्टी में कुछ स्थान थे। हम आये सरकार में। १४ दिन नहीं बीते। जगदीश शरण अग्रवाल मौजूद हैं। उन्हीं चौधरी साहब ने ४५ मिनट तक मेरी भरि-भूरि प्रशंसा की। उनके जमाने में शुगर फैक्टरीज का काम किया। पालिसी मैंने डिक्टेट की और उसमें तक इंटरफियरेंस नहीं किया। मैंने चौधरी साहब से पूछा कि इस सारी केबिनेट में एक व्यक्ति को छोड़कर सारे व्यक्ति सन् ७० में आपके साथ थे तो चौधरी साहब ने जवाब दिया जो ७० में अच्छा होगा क्या अब भी वह मुमकिन है ? इसका कोई जवाब मेरे पास नहीं है। हम लोगों की बदकिस्मती से कोलीजन टूट गयी तो कोलीशन टूटने के साथ मान्यता भी बदल गयी और हम लोग भ्रष्ट हो गये। आज राजनीतिक भ्रष्टाचार सारे भ्रष्टाचारों से बड़ा गन्दा है। मैं ६७ की ओर ले जाना चाहता हूं। रामचन्द्र विकल जिस पार्टी से हुए थे वह अपोजीशन के नेता बना दिये गये। बदकिस्मती से अथवा खुशकिस्मती से कुछ-कुछ राजनीतिक प्रेरणा से प्रेरित होकर, कांग्रेस की नीतियों से दुखी हो कर, कुछ व्यक्तिगत परेशानियों के कारण वह चले गये और जाने के बाद मुख्य मंत्री हो गये।

मेरा यह दावा है कि यह राजनीतिक भ्रष्टाचार इस प्रदेश में सन् ६७ से आया, सन् ६७ से पहले कभी नहीं था क्योंकि उस समय एस० वी० डी० की सरकार थी (व्यवधान) मान्यवर, यह साधारण नियम है कि जब सरकार का बहुमत १, २, ३ अथवा ४ से होगा तो यह स्वाभाविक है कि भ्रष्टाचार की जो बातें हैं काम करने वालों का जो तरीका है वह बदल जाता है। एस० वी० डी० की वह सरकार १० महीने से ज्यादा इसीलिये नहीं चल सकी। ६९ में परिषद् बनी। हम लोगों की सरकार फिर चौधरी साहब के साथ बनी और फिर वह ५ महीने नहीं चली। आज हमको जनता ने चुन कर भेजा और हम सरकार चला रहे हैं। १३, १४ महीने में देखा होगा कि हमने कितना कार्य किया। पंचायतों का चुनाव हुआ, जिला परिषदों का चुनाव हुआ, रोडवेज में १० गुना काम बढ़ गया। (व्यवधान) सारी परिस्थितियों के बावजूद, कोयले की कमी, बिजली की कमी से १४ महीने से इण्डस्ट्रियल बनी हुई है। (व्यवधान)

श्री बाबू लाल वर्मा—

मान्यवर, १९ मार्च, १९७४ को राज्यपाल ने घोषणा की थी कि जो आज १३१० मेगावाट बिजली बन रही है वह वर्ष के अन्त में जाकर २१२४ मेगावाट हो जायेगी। तो मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि उस समय कितनी बिजली बन रह थी और आज कितनी बिजली बन रही है?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, यह तो इसी से पता चल जायेगा कि इस वर्ष परिस्थितियां कितनी खराब थीं लेकिन फिर भी पहले ३ घंटे बिजली नहीं देते थे और अब केवल २ घंटे ही बिजली कटती है?

श्री बाबू लाल वर्मा—

मैं तो यह पूछ रहा हूं कि कितनी मेगावाट बिजली उस समय बन रही थी और आज कितनी बन रही है?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मेरे पास आंकड़े नहीं हैं कि यह बता सकूं कि आज कितनी बन रही है। लेकिन आप लोगों को अगर केवल विरोध पक्ष के होने के नाते यह बातें कहनी हैं तो कहिये, मुझे कुछ नहीं कहना है। यह बातें सुनने के हम आदी हो गये हैं लेकिन जब आप कुछ व्यक्तिगत चीजें कह देते हैं तब तकलीफ होती है। मैं यह कह रहा था कि इन चौदह महीनों में जितना इण्डस्ट्रियल पीस है वह कभी नहीं रहा। इतिहास मौजूद है। कोई विभाग ऐसा नहीं है कि इतनी कटौतियों के बावजूद भी आज प्रशासन का कार्य सुचारुरूप से चल रहा है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

आप कृपया यह बतला दें कि क्या यह सही है कि आप उसी इण्डस्ट्रियल पीस की चर्चा कर रहे हैं जिसमें इस वर्ष ९७ हजार वर्कर्स बेकार हो गये?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, ९७ हजार की बात तो दूर रही, अगर ९७ सौ वर्कर्स की बात कहते कि वे बेकार हैं और ले आफ भी बेकार नहीं है। तीन-तीन मिलों ने ले आफ किया। आज भी कानपुर के लिये कहा जाता है जिसे "ए सिटी आफ प्राब्लेम" कहा जाता है। यदि हम लोग बड़े भारी कैपिटलिस्ट हैं और कुछ नहीं कर रहे हैं तो आप जो अपने को श्रमिकों और कृषकों के हितैषी समझते हैं तो सन् ६७ से सन् ७४ तक आपने देख लिया कि शुगर में, लेदर में, टेक्सटाइल में, ग्लुकोस फैक्टरी में और राइस मिल्स इत्यादि में आपने क्या किया। सारी चीजें आप देख लें। मेरा ख्याल है कि श्रमिकों को जितना मिला है मैं दावे के साथ कहना चाहता हूं कि उतना इन २५ वर्षों में उनको कभी नहीं मिला है। आज हम टेक्सटाइल में हाइयेस्ट रेट दे रहे हैं। इसके लिये आल इंडिया निर्णय हुआ था दिल्ली में और इसे सारी सरकारों ने माना है। लेकिन यह हमारी बदकिस्मती है कि हमको गाली देना नहीं सिखाया गया है...

श्री गिरिजा शंकर पाठक (जिला वाराणसी)—

मन्त्री जी ने कहा है कि भ्रष्टाचार को बढ़ावा सन् १९६७ से मिला है लेकिन वे कृपया यह बतला दें कि एक औरत को भगाने की सजा मन्त्री जी को सन् १९६७ में मिली थी या सन् १९५६ में मिली थी?

श्री राज मंगल पाण्डेय—

आपको भ्रष्टाचार सन् १९५६ से नजर आ रहा है जब कि मैं सन् १९६७ से सन् १९७४ तक के बारे में कह रहा हूं (व्यवधान)।

आज जो परिस्थिति है उससे आपको मालूम हो गया है कि आपको चुनकर नहीं आना है। मैं मानता हूं कि चौधरी साहब का नैतिक स्तर जितना ऊंचा था उतना उत्तर प्रदेश में बहुत कम लोगों का है लेकिन चौधरी साहब ने अपनी मान्यतायें बदल दी हैं और उनका विश्वास लोकतन्त्र से उठ कर गोली से हो गया है क्योंकि यहीं से उन्होंने अपना

[श्री गिरिजा शंकर पाठक]
संशोधन पेश किया है। जो कुर्सियां पाने के लिये अपनी मान्यतायें बदलते हों, जो अपनी पार्टियां बदलते हों (व्यवधान)। पहले सुन लीजिये। काबिलियत का एक नियम है। हम लोगों को चुन कर आये हुए ११ महीने हो गये हैं और किस तरह से शासन चला रहे हैं यह सब जानते हैं लेकिन आप विरोध पक्ष के लोग एक डिप्टी स्पीकर का चुनाव नहीं कर पा रहे हैं, सर्वसम्मति से उसका चुनाव नहीं कर पा रहे हैं तो यह है आपकी काबिलियत यह मान्यवर सरकार चलायेंगे जो १० महीने में एक डिप्टी स्पीकर सर्वसम्मति से नहीं चुन सके। (व्यवधान)।

एक सदस्य—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक सवाल पूछना चाहता हूं...

श्री राज मंगल पाण्डेय—

मान्यवर, यह मान्यता बदलने का क्या कारण है?

एक सदस्य—

मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं कि रोडवेज के रूट्स पर प्राइवेट बसें कैसे चल रही हैं हमारे चन्दौसी में....

श्री राज मंगल पाण्डेय—

आप बैठिये, बैठिये, मुझे मालूम है आप सब को मालूम है, काहे के लिये खुलवा रहे हैं। हमारी बदकिस्मती है कि हम लोगों को खोलना आता नहीं। (व्यवधान)

श्री जंग बहादुर वर्मा—

अध्यक्ष महोदय, माननीय मन्त्री जी से एक चीज.....हैलीकाप्टर के बारे में भी बता दें।

श्री अध्यक्ष—

जब वह बैठें तब आप बोलें आप बैठ जायं।

श्री राज मंगल पाण्डेय—

अध्यक्ष महोदय (व्यवधान) मान्यवर, अगर उनको नहीं रोकेंगे तो कैसे चलेगा।

श्री अध्यक्ष—

आप बैठ जायं जब वह बोल लें उनके बाद बोलें।

श्री राज मंगल पांडेय—

मान्यवर, जब तक आप २०९ चुन कर नहीं आये थे तब तक तो देखते रहे और जब देखा कि अब तो नहीं आना है तो फिर चुनाव का तरीका भ्रष्ट नजर आने लगा। प्रदेश की जनता ने हमको शासन चलाने के लिये मंजूर किया। (व्यवधान) सरकार चाहे चौधरी साहब चलायें या माधव बाबू चलायें तब तक तो भ्रष्टाचार नजर नहीं आया और जब वह नहीं हो पाया तो फिर इलेक्शन का तरीका गलत हो गया (व्यवधान) आज ऐसी परिस्थितियां जब हों और हिंसा का वातावरण हर जगह हो और यह गोलियों से बात करें तो उसका कारण अध्यक्ष महोदय, हम लोग समझ गये हैं, यह चुन कर नहीं आ सके। आज जनता समझ चुकी है जो वोटर हैं वह जानते हैं। लेकिन इनके आज वोटर कौन हैं? कालेज के वह लड़के जो वोटर नहीं हैं उनके बल पर यह वोट लेना चाहते हैं यह जनता के योग्य नहीं हैं और कालेज और युनिवर्सिटीज के छोटे-छोटे बच्चों को एक्स-प्लोइट कर रहे हैं। गोरखपुर में ६, ६ और ७, ७ साल के बच्चों से ढेले और ईंटें फेंकवाये और उसके बाद कहते हैं कि पुलिस ज्यादती करती है अगर कहीं पर कुछ किया तो बड़ी भारी ज्यादती हो जाती है (व्यवधान) आज आप लम्बी चौड़ी दलीलें देते हैं (व्यवधान) पहले आप सुनिये। जब चौधरी साहब बोलते हैं तो मैं बड़े आदर से सुनता हूं।

मान्यवर, १९६७–६८ के सीजन में जब पूरब के केन ग्रोवर्स को उन्होंने १२.८४ रुपया का रेट दिलाया, पश्चिम के किसानों को १७–साढ़े १७ रुपये का रेट दिलाया। मैं राज्य मन्त्री था, आपके समय मेरठ और बुलन्दशहर के क्षेत्र में ८ लाख क्विंटल खेतों में खड़ा रह गया और बरेली तथा अन्य दूसरी जगहों पर १४ आने में क्रेशर पर गिरा ऐक्साइज ड्यूटी के रेट में रिबेट हमने ही दिलाया।

(व्यवधान)

सरकार का कर्त्तव्य है कि मई और जून में जो फैक्टरी चला रहे हैं, तो हम उनको हर हालत में दें। वही मैंने किया जो हमें कहना और करना चाहिये था। हम तो इधर बैठे हैं और वह हमें कहने और बदनाम करने के लिये ही बैठे हैं। यह केवल कुर्सी का चक्कर है। बदकिस्मती से यह कुर्सी उनको नहीं लिखी है। कुर्सी उनको मिल जाए तो वह भी बेईमान हो जायेंगे और हम ईमानदार हो जायेंगे। बड़े अफसोस की बात है कि आज वह हिंसा के माध्यम से कुर्सी पर आना चाहते हैं। किन्तु यह उनको नहीं मालूम है कि विद्यार्थी जो इम्मेच्योर माइन्ड्स के हैं, वह तो एक बार किसी गलती के लिये क्षमा भी किये जा सकते हैं, उनका दुरुपयोग करना राष्ट्र के हित में और स्वयं उनके हित में ठीक नहीं है। १५-२० वर्षों से जो यूनिवर्सिटी में पड़े हुए हैं, जिनको कोई पढ़ाई-लिखाई नहीं करनी है, चौधरी साहब के जमाने में गुन्डा ऐक्ट पास होता है, उसी को हम विशेष परिस्थितियों में उनके विरुद्ध प्रयोग करते हैं तो उनको आपत्ति होती है और वह उनके बड़े हितैषी अपने स्वार्थ के कारण बन जाते हैं।

आज दुःख इस बात का है कि विरोध पक्ष किसी बात को सही परिपेक्ष में नहीं उठाता है, वह केवल हर बात की आलोचना करने के लिये उसे उठाता है। दो पावर हाउस के बारे में बात कही गई, उसके बारे में मैं बताना चाहता हूं, यद्यपि वह मेरा सब्जेक्ट नहीं है, जितने पैसे पर उन दोनों का आक्शन हुआ है, उन दोनों का वह उतना मूल्य अब भी दिलवा दें, तो लेने वाला आज भी वापस देने को तैयार है। इंग्लैन्ड के मैकैनिक आये, लेकिन उसमें सुधार नहीं हो सका। एक करोड़ ५ लाख महाराष्ट्र की फर्म दे रही थी, १ करोड़ १० लाख उत्तर प्रदेश की कम्पनी ने दिया। मेरा अपना मत तो यह था कि उत्तर प्रदेश की कम्पनी ९५ लाख भी देती तो उसे दे देना चाहिये था, क्योंकि उसके द्वारा उत्पादित बिजली उत्तर प्रदेश में ही रहती। लेकिन १ करोड़ ५ लाख के मुकाबले में यहां के आदमी ने १ करोड़ १० लाख दिया। तब भी आपको आपत्ति है, इसमें कौनसा भ्रष्टाचार हो गया। ५४ लाख के बजाये ५९ लाख देते हैं तब भी आपको आपत्ति, तो मेरी समझ में नहीं आता है कि यह कैसे आरोप हैं और यह कैसी राजनीति है? मैं कहना नहीं चाहता, इस सदन में चौधरी साहब ने कुछ आरोप लगाये, यह उनकी मान्यता हो सकती है, वह कहें। लेकिन हमारी मान्यता है, हमने चौधरी साहब या किसी साहब के खिलाफ एक शब्द भी नहीं निकाला, चूंकि हमारी एक मान्यता है, वह कुछ भी कहें, वह क्षम्य है। श्रीमन् जी, आप इनको क्षमा कीजियेगा।

*श्री तेज सिंह (जिला बुलन्दशहर)—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से आज की सरकार से यह कहना चाहता हूं कि जो परिस्थिति आज है इस प्रदेश की है—किसान, मजदूर, विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी कोई भी वर्ग ऐसा है जो सन्तुष्ट है? कोई भी वर्ग ऐसा है जो सन्तुष्ट नहीं है? यदि कोई सन्तुष्ट वर्ग आपको दिखायी पड़ता है तो आपकी सूझ-बूझ को धन्यवाद। आपकी इस मनन मनोवृत्ति के लिये जो आप महसूस करते हैं कि सरकार इन दिनों में इतना आगे बढ़ गयी है, आप संतुष्ट हैं अपने कार्य से तो आपको धन्यवाद। आपकी पैदावार १९७२ से चल कर आज कहां पहुंच गयी है, आज आपको अन्न का संकट है। आज इस तरह का संकट है कि आज

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री तेज सिंह]

आप तनख्वाह देने में असमर्थ हैं। आज नेता सदन ने घोषणा की कि आपके सरकारी कर्मचारियों के साथ जबरदस्ती हो रही है उनसे २५ परसेंट बचत करने का आवाहन किया गया है और वहां पर उनके आला अफसरों को बिठा देना, इन परिस्थितियों, इन हालतों में आप बहुत ही संतुष्ट हैं।

जहां तक भ्रष्टाचार की बात आपने कही, जहां तक बच्चों को भड़काने का आरोप आपने लगाया, उस आरोप के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं कि अनुशासनहीनता इस देश में प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी की अनुशासनहीनता से राष्ट्रपति के चुनाव से प्रारम्भ हो जाती है और आज वह बच्चों तक पहुंच गयी है। मैं आपको कहना आवश्यक समझता हूं, मैं नहीं जानता कि आप आवागमन को मानते हैं या नहीं, गांधी फिर जन्म लेकर बच्चों में हैं, नेहरू फिर जन्म लेकर बच्चों में हैं। उन बच्चों को बच्चे मान कर, उन बातों को बच्चों की बातें मान कर उधर आप का विचार करने का दृष्टिकोण नहीं है। बल्कि सोच रहे हैं कि हमारी सूझबूझ अधिक है। आप सन्तुष्ट हैं या कुछ भ्रष्ट कर्मचारी संतुष्ट हैं। जो आज नेक कर्मचारी हैं उनकी क्या हालत है? उनके साथ क्या बीत रही है? रिटायरमेंट के बाद मैं देख रहा हूं मेरे पास ऐसी मिसालें हैं। चार साल हो गये, वह अपनी पेंशन चाहते हैं लेकिन नहीं मिल पायी। एक तेजपाल नाम के जिलेदार हैं चार साल रिटायर हुए हो गये, न पैसा है न पेंशन है। मैंने आपको इस लिये मिसाल दी कि आप संतुष्ट हैं। संतुष्टि में आगे कदम नहीं बढ़ाना चाहते हैं।

आप खेती में फेल हैं, आप किसान के लिये फेल हैं और ट्रैक्टर की बात मेरे मित्र ने कही। खाद्य मन्त्राणी कल कह रही थीं कि ट्रैक्टर से खेती हो। तो बड़े ट्रैक्टर तो आपने देश में लाना बन्द कर दिया, चूंकि उसकी आवश्यकता नहीं है। फिर छोटे ट्रैक्टर आप कुछ दिन में बन्द कर देंगे क्यों बारह एकड़ पर ट्रैक्टर चलता नहीं है और आप जमीन बांटने की बात करते हैं? आपको शौक हो गया है, जमीनें बटेंगी, जमीन बटेंगी। मेरे कम्युनिस्ट भाई कहें, चाहे सोशलिस्ट भाई कहें, यह कोई भी भाई कहें अगर जमीन बराबर बंटेगी तो नौ करोड़ जनता में जमीन का एक दिन बैठ कर बराबर बटबारा किया जाय तो उस हिसाब से इस प्रदेश में गाय, भैंस तो दूर बकरी और मुर्गे को रहने की जगह नहीं रह जायगी। पांच व्यक्तियों के परिवार को आंकने के बाद मुर्गे को बैठने की भी जगह नहीं रह जायगी। इसलिये, उनको बहकाकर आप वोट चाहते हैं। उनसे वोट लेकर आप बैठ गये जैसे तैसे। आपकी सरकार है। आप जिम्मेदार हैं। आप उस जिम्मेदारी को कहां तक निभा रहे हैं।

मेरे मित्र कांग्रेस पार्टी के जो पावर में हैं, वह विधायक अपने नेता सदन को यह आश्वासन दे आये हैं कि मुझे मन्त्रि-पद की जरूरत नहीं है। मैं असेम्बली का मेम्बर रहने योग्य हूं। मेरे ख्याल में २१५ से २२५ और आज की तारीख में २२८ हुये हैं, मैं समझता हूं कि कोई मन्त्रि-पद से पीछे रहने वाला नहीं है। आज नेता सदन सोच रहे हैं कि कैसे सरकार बढ़ायें, किसको मन्त्री बनायें और किसको न बनायें। कैबिनेट की हालत भी वही है जो वहां बैठे हैं वह सब जानते हैं। लेकिन मेरी अपनी रीडिंग है कि नेता सदन की टांग खींचने के लिये ही मेम्बर हैं। ऐसी दशा में आज की सरकार है और मेरे मित्र माननीय राज मंगल पाण्डेय ने ठीक ही कहा कि एक दो तीन की हालत मे जो होता है वही हो रहा है और नेता सदन उसको सही चला रहे हैं। मैं मानता हूं कि आज की परिस्थिति में जो सरकार चल रही है वह उसी तरह से है जैसे एक होशियार कुम्हार सब गधों को देखता है और देखता है कि इनमें से चालाक गधा कौन सा है, जो उसकी नजर में चालाक होता है उसके गले में रस्सी डाल देता है और कुछ की गर्दन पर हाथ रख देता है। वह समझते हैं कि हमारे भी रस्सी लग गई। आप अपना समय पास करने के लिये बैठे हुये हैं। यह आपकी पार्टी की बात है। अनुशासनहीन पार्टी है। नेता विरोधी दल को बड़े भाई कह कर सम्बोधित किया। उन्होंने देसाई पर हमला किया। उनके

आमरण अनशन करने पर एक सूबा दब गया। एक्जीक्यूटिव पार्टी को नहीं बुलाया गया। ए० आई० सी० सी० का मेम्बर पहले था। लेकिन आप विचार करें कि एक सूबे का राज्य तब्दील हो गया, वहां राष्ट्रपति शासन हो गया।

आपको फिक्र है कि कैसे अपोजीशन को बढ़ायें। आपको धन्यवाद है। आप फिक्र कीजिये और अपने नेता सदन की मदद कीजिये। लोगों ने कहा कि हमें मिनिस्टरी की जरूरत नहीं है। अगर १०० आदमी ऐसा कह आये तो फिर सरकार क्यों नहीं बढ़ाई जाती है। हम कहते हैं कि सरकार ठीक नहीं चल रही है। एक आदमी इतने विभाग को कैसे चला सकता है। एक का भी आपको आश्वासन नहीं कि मुझे मिनिस्टरी नहीं चाहिये। जहां तक आपकी पार्टी की बात है उसको आप जानते हैं। मैं आपको बताऊं कि मेरे जिले नरोरा में एक मीटिंग हुई और हमने भी वहां एक मीटिंग की जब मैं कांग्रेस कमेटी का सेक्रेटरी था। हमने माननीय जवाहरलाल नेहरू को बुलाया था। हमने आपकी मीटिंग में एक सवाल भेजा है। मैं समझता हूं कि उसका जवाब नहीं आयेगा। उनकी मीटिंग कैसी हुई मेरे एक मित्र जो विधायक हैं और केन्द्र में मन्त्री थे। उनको बहुत दूर बिठा दिया गया। गोपनीयता की बात पार्टी में क्या होती है। क्या वह व्यक्ति कोई डकैती करने जा रहा था। आपका इरादा किस तरह से सरकार को चलाने का है इसको आप जानें। अभी २५ रुपये रोज मिलते हैं इसलिये सब लोग आ गये हैं एक-एक लाख जनता के यह प्रतिनिधि हैं। लेकिन क्या आपके इशारे पर कुछ कार्य होता है। आप २२५ की शक्ति पर बैठे हैं। माननीय नेता सदन हैं वह रोज दिल्ली की तरफ देखते हैं कि उसका इशारा राजी का है या नाराजी का है।

मैं आपसे यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप अपने चुनने के बाद १ लाख का प्रतिनिधि होने के बाद अपने अधिकार की रक्षा करेंगे और नेता सदन की मदद करेंगे और सरकार को ऐसा चलवायेंगे ? मैं जहां आदर करता हूं माननीय राज मंगल पाण्डेय जी की उस बात का वहां उसका विरोध भी करता हूं। एक बार आपकी सरकार बनी है, तो उस सरकार को चलाने के लिये वह मजबूत भी होनी चाहिये। आपको यह सिद्ध करना चाहिए कि सरकार मजबूत चल रही है और अगर यह सोचें कि सरकार डर जायगी तो उधर जाकर बैठेंगे, तो सरकार आप कैसे चला सकते हैं। आप ऐसा कार्य क्यों करते हैं कि लोग असन्तुष्ट रहें। आप ऐसी बात जो सोच रहे हैं कि मेरा काम ठीक रहे, मेरे रिस्तेदार का काम ठीक रहे, मेरे बिरादरी का काम ठीक रहे, यह संकीर्णता की बात है। इस तरह से आप जो विधान सभा के सदस्य चुनकर आये हैं, आप अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर रहे हैं और न ही आप इस तरह से अपने कर्त्तव्यों का पालन ही कर रहे हैं। देखिये ऊपर से कब आदेश आ जाय कि चुनाव इस साल ही हो जाय। आपका अधिकार है चुनाव हो जाय और यदि आपका अधिकार आपके लिये नहीं, तो आप अपने आप जीवित नहीं, आप अगर एक लाख के प्रतिनिधि होने योग्य नहीं हैं, तो वाकाई वही बात जो हो रही है होनी चाहिये। मैं अपने मित्रों से आशा करता हूं कि आप अपने अधिकार की रक्षा करें।

भ्रष्टाचार का जहां तक सवाल है आप देखें एक एस० पी० के खिलाफ लिखकर दे दिया गया वाइस चांस्लर जो आगरा के हैं ३२-४० एम० एल० एज० ने लिखकर दे दिया। आज जो आन्दोलन होते हैं, उसमें आप आफिसर्स की मदद लेते हैं। पहले भी आन्दोलन होते थे लेकिन इस तरह से नहीं होता था। अगर आप आफिसर्स की मदद लेते हैं, तो आप कमजोर हैं। आप अपने आफिसर्स के वगैर कुछ नहीं कर सकते हैं। मैं एक निवेदन यह करना चाहता हूं कि अलीगढ़ से दिल्ली और दिल्ली से अलीगढ़ तथा ४ बसें दिल्ली से बुलन्दशहर और बुलन्दशहर से दिल्ली रोजाना जाती हैं और उन पर क्या तमाशा है कि कोई परमिट सरमिट नहीं है और रोजाना ये बसें चल रही हैं। अब आप उन्हें देखें मैं क्या कहूं, कहने से कुछ अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार नाम लेकर किसी को कह देना अच्छा नहीं लगता है। लेकिन आप इन्क्वायरी कराइये कि वे बसें किनकी हैं, किसकी राय से चल रही हैं ? आप सरकार हैं, आप अपने को सोचें। आप अपनी

[श्री तेज सिंह]

कर्त्तव्यपरायणता को सोचें। आपकी स्वच्छ इन्कम हो, स्वच्छ आपका कार्य हो और आपका विश्वास हो, आपका स्वच्छ प्रशासन हो। लेकिन आज सब कुछ आपका इसके विपरीत है। आज आपकी इन्कम शराब से है, लाटरी से है। इन वोटर वालों का कहां-कहां पर खुराफात है, उस इन्कम को कहने योग्य नहीं है, आप उस इन्कम से सरकार चला रहे हैं और फिर भी भूखे हैं, पैसा नहीं है, तनख्वाह देने के लिये। तो मेरा आपसे अनुरोध है कि आप अपने आप को समझें।

ये राष्ट्रीयकरण की बात करते हैं। राष्ट्रीयकरण बैंकों का हो गया, उनकी क्या हालत है। राष्ट्रीयकरण के बाद उनकी पोजीशन, उनकी हैसियत बढ़ी है या घटी है। प्राइवेट सेक्टर में या पब्लिक सेक्टर में आमदनी पीछे जा रही है। इसीलिए भ्रष्टाचार बराबर बढा है और मैं कहता हूं कि अभी बढेगा। अगर आप अपने मन की करेंगे तो कुछ नहीं होगा। आप इसके स्वयं ही जिम्मेदार हैं। आप प्रशासन के लिये जिम्मेदार हैं। आप कहते हैं कि जब चौधरी साहेब की सरकार थी तो उन्होंने यह किया। सदन में कुछ लोग जो मेरे मित्र हैं, जो आज पावर में है, उन्होंने सोच लिया है कि अगर चार बुरी बातें चौधरी साहब को कहेंगे तो शायद उनको मंत्री बनने का मौका मिल जाये, शायद मंत्री बन जायें, लेकिन जब उन्होंने देखा बहुगुणा जी के रवैये को तो अपने रवैये में भी तबदीली की है। नेता को सदन को दिखलाना चाहते हैं कि वे इतने योग्य हैं। विचार बनते हैं, जब उन विचारों को देखते हैं तो उनका निराकरण कैसे हो। तो मेरा शौक अपोजीशन करने का नहीं है।

भ्रष्टाचार आज बहुत बढ़ गया है। प्रशासन ढीला हो गया है। मैं सारी चीजें देखता हूं। ऐसी हालत में आपकी सरकार का विरोध करता हूं और आशा करता हूं कि आप अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे। आप उसको ऐसा बनावें कि कोई दल आपको गाली न देने पावे। आप यह सिद्ध करें, मैं तो इस लायक नहीं हूं। जो लायक हों वह आगे जायं और सरकार का काम ठीक से चलावें। मैं किसी का नाम लेकर नहीं कहना चाहता हूं। आज रिश्वत ली जाती है। मेरी नालेज में है एक एम० एल० ए० थानेदारों से माहवारी वसूल करता है। मैं उसे जानता हूं। पुलिस के दलाल, चोरों के दलाल और एस० पी० के दलाल हैं। ऐसी स्थिति में मैं मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि अपनी पार्टी के एम० एल० एज०की देखभाल करें। जो बात मानने वाली हो उसको अवश्य मानें और जो न मानने वाली हो उसको न माने। आप का सम्पूर्णानन्द की तरह नाम लिया जायेगा। आप का कर्मचारी रिश्वत लेता है। मैं आशा करता हूं कि आप जब तक सरकार चलायें मजबूती के साथ चलायें और आप लोग अपने कर्त्तव्य और अधिकार की रक्षा करें।

श्री वीरेन्द्र वर्मा (जिला मुजफ्फर नगर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री माधो प्रसाद त्रिपाठी, नेता जनसंघ ने जो अविश्वास का प्रस्ताव इस सरकार के विरुद्ध रखा है और उसका समर्थन नेता विरोधी दल ने किया है, उसका विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। माननीय नेता विरोधी दल के विचार मैंने कल सुनें। इससे पूर्व भी उनके विचार सुने थे तो उनमें और आज के विचारों में कुछ अन्तर नहीं पाया। सदन के बाहर और सदन में उनके विचारों में कोई अन्तर नहीं रहता है। मुझे उनके विचारों में कुछ नवीनता मालूम नहीं पड़ती।

एक सदस्य—

आप ही विचार बदला करते हैं, वे नहीं बदलते हैं।

श्री वीरेन्द्र वर्मा—

पहली अप्रैल, १९६७ से पूर्व जब कि वे माल मंत्री और कृषि मंत्री रहे, उस समय भी उनके बिचार, उनका भाषण सुनने का मुझे अवसर मिलता रहा है। उन्होंने हमेशा कृषि के उत्पादन की बढ़ोत्तरी, सिंचाई के साधनों में प्रदेश ने जो उन्नति की, और विद्युत् का जो उत्पादन

बढ़ा था, उसकी सदैव प्रशंसा पब्लिक मीटिंग्स में की थी। मैं जानकारी के आधार पर यह बता देना चाहता हूं कि १९५०–५१ में इस प्रदेश में सिंचाई ४८ लाख ४० हजार हेक्टेयर में होती थी और १९७३–७४ के अन्त तक यह बढ़ कर ७४ लाख हैक्टेयर में हो गई है। इसका मतलब यह है कि ९० प्रतिशत सिंचाई क्षेत्र १९५१–५२ से १९७३–७४ तक बढ़ा है। यहां पर यह भी कहा गया कि कृषि का क्षेत्रफल घट रहा है। खाद्यान्नों में कमी आई है, यह बात भी उनकी सही नहीं है। मैं आंकड़ों से बता देना चाहता हूं कि १९५०-५१ में खाद्यान्नों का उत्पादन ११७ लाख ७५ हजार टन इस प्रदेश में हुआ था और १९७२–७३ में १८१ लाख ३३ हजार टन हुआ। इसी प्रकार से प्रदेश में आलू ६ लाख ५३ हजार टन १९५०–५१ के पूर्व पैदा होता था और चौथी योजना के अन्त तक १६ लाख टन से अधिक पैदा होने लगा था।

इसी प्रकार गन्ने के उत्पादन की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। पहली पंचवर्षीय योजना में २ करोड़ ७७ लाख टन, गुड़ के रूप में, यहां गन्ना पैदा होता था जो कि चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्त में बढ़कर ५६६ लाख ६८ हजार टन हो गया। इसी प्रकार विद्युत् की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चहता हूं। १९५१ से पूर्व इस प्रदेश की इन्सटाल्ड कैपेसिटी १७९ मेगावाट थी जब कि चौथी पंच वर्षीय योजना के अन्त तक वह बढ़कर १६७४ लाख मेगावाट हो गई। यह कहना कि इन सब कामों के लिये कोई धन नहीं रखा जा रहा है, यह मुझे उचित नहीं मालूम पड़ता है। इस पंचवर्षीय योजना के अंत में कुल ९४.८५ लाख हैक्टेयर भूमि की सिंचाई हो जायगी। इस योजना में ३३ लाख ६१ हजार हैक्टेयर भूमि में अतिरिक्त सिंचाई प्रोवाइड करनी है और तथा २,८९८ मेगावाट अतिरिक्त बिजली उत्पन्न करने के लिये १६९५ करोड़ रुपया आगामी पंचवर्षीय योजना में सरकार ने प्रोवाइड किया है। तो इन सारे तथ्यों से यह जाहिर होता है कि कृषि के उत्पादन, सिंचाई के क्षेत्र को बढ़ाने और विद्युत् का उत्पादन बढ़ाने के लिये सरकार का पूरा ध्यान है। यदि पिछले साल और इस साल की आप तुलना करें तो आप देखेंगे कि पिछले साल सरकार किसानों को बिजली देने की उचित व्यवस्था नहीं कर सकी थी, उतनी बिजली प्रोवाइड नहीं कर सकी थी जितनी कि इस वर्ष की है, सरकार का विशेष ध्यान कृषि को अतिरिक्त बिजली देने की ओर गया है। १२ घंटे, १४ घंटे, १८ घंटे तक सरकार ने खाद्यान्नों के लिये बिजली दी है। जहां तक डीजल आयल का सवाल है, इस वर्ष प्रदेश में डीजल आयल की कोई कमी नहीं है। पिछले साल किसान त्रसित था। ब्लैक में भी उसको डीजल उपलब्ध नहीं था। पंजाब और हरियाना ज्यादा कोटा ले जाते थे। लेकिन आज हमारे यहां डीजल फ्री है। मैं विरोध पक्ष का ध्यान इस ओर भी दिलाना चाहता हूं कि प्रदेश की सरकार ने कृषि के ऊपर आधारित उद्योग अर्थात् ३० चीनी मिलों को स्थापित करने का निर्णय लिया है। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त तक ७–८ नयी मिलें ही इस प्रदेश में स्थापित की गयी थीं लेकिन अब इस सरकार ने ३० चीनी मिलों को स्थापित करने का निश्चय किया है जिसमें से १७-१८ के आशय–पत्र भी प्राप्त हो गये हैं।

माननीय चौधरी चरण सिंह जी ने छोटे उद्योगों की स्थापना पर विशेष बल दिया है। मैं मानता हूं कि यह प्रदेश गरीब है। छोटे उद्योगों के सहारे बहुत लोगों को रोजगार मिल सकता है और आवश्यकता भी उसकी प्रदेश में है, लेकिन दो दफा माननीय नेता विरोधी दल इस प्रदेश में मुख्य मंत्री रहे। एक दफा साढ़े १० महीने और दूसरी दफा साढ़े ७ महीने लेकिन क्या इस बीच उन्होंने कोई निर्णय छोटे उद्योगों को यहां स्थापित करने का लिया या कभी मंत्रिपरिषद् में उन्होंने इसके ऊपर २–४ घंटे का डिस्कशन किया ? वह मुझे अभी बता दें।

चौधरी चरण सिंह—

मैं जानता हूं कि उनका भाषण केवल मेरे नुक्स निकालने तक ही महदूद रहेगा लेकिन मैं केवल एक बात कहना चाहता हूं कि मैं ने इसलिये काटेज इन्डस्ट्री पर जोर नहीं दिया क्योंकि काटेज इन्डस्ट्री तब बढ़ेगी जब गवर्नमेन्ट आफ इंडिया फैक्टरीज के ऊपर अंकुश लगायेगी।

[चौधरी चरण सिंह]

अगर आप स्वतः काटेज इन्डस्ट्री को बढ़ाना चाहते हैं तो नहीं बढ़ा सकते। यह मैंने कल भी कहा था कि कोई भी स्टेट गवर्नमेन्ट काटेज इन्डस्ट्री को प्रोटेक्शन और एक्सटेन्शन नहीं कर सकती जब तक फैक्टरीज पर रोक नहीं लगेगी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

इसी लिये मैं बार-बार कहता हूं कि चौधरी साहब का स्थान यहां है ही नहीं, दिल्ली में है। पता नहीं यहां क्यों आते हैं।

(हंसी)

श्री वीरेन्द्र वर्मा—

माननीय नेता विरोधी दल सदैव अपनी सार्वजनिक सभाओं में और हाउस में यह निरन्तर चर्चा करते रहे हैं कि प्रदेश में छोटे उद्योगों की स्थापना होनी चाहिये। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में इस प्रदेश में बावजूद उन कठिनाइयों के, जिसकी तरफ चौधरी साहब ने ध्यान आकर्षित किया है १०२० छोटी इकाइयां निर्मित हुयी हैं। अगर माननीय सदस्य लुधियाने में जा कर देखें कि इन्हीं परिस्थितियों में वहां स्माल और काटेज इन्डस्ट्रीज को कितना बढ़ावा वहां की सरकार ने दिया है। प्रदेश सरकार ने ३० कताई मिलों की स्थापना का भी निश्चय किया है जिससे जुलाहों को सूत सस्ते भाव पर मिल सके और इससे काटेज इन्डस्ट्रीज को बढ़ावा मिले। यह बातें मैंने इसलिये कहीं क्यों कि इनकी चर्चा खासतौर से कल माननीय नेता विरोधी दल ने की थी।

मान्यवर, मैं मानता हूं कि महंगाई बढ़ी है, आवश्यक वस्तुओं की कमी है और तस्करी भी इस देश और प्रदेश में होती थी। तस्करी और ब्लैक मनी को रोकने के लिये सरकार ने आवश्यक ठोस कदम उठाये हैं। सितम्बर से १५ दिसम्बर तक के आंकड़े बताते हैं कि कीमतें कुछ गिरी हैं और इन्फ्लेशन में भी कमी आयी है।

मान्यवर, आये दिन जो बन्द और हड़तालें करायी जाती हैं, रेल हड़ताल जो अभी हुई थी इसका प्रभाव भी कीमतों पर पड़ा है। आवश्यक वस्तुओं की सप्लायी में भी व्यवस्था गड़बड़ हो जाने से कमी हो जाती है। पिछली रेल हड़ताल ने जनता को अनेकों कठिनाइयों में डाल दिया था। यह सही है कि जनता आज परेशान है। हिन्दुस्तान आज कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है। पिछले ३ सालों में निरन्तर कई प्रदेशों में देश में भयंकर सूखे की स्थिति आयी। आज तक ऐसा सूखा कभी देखने में नहीं आया। इसके कारण उत्पादन पर भारी प्रतिकूल असर पड़ा। जलाशयों में पानी न होने के कारण बिजली उत्पादन पर भी असर पड़ा और बिजली कम होने के कारण कल कारखानों पर उसका बुरा प्रभाव पड़ा जिसके कारण उत्पादन कम हुआ तथा अनेक कठिनाइयां पैदा हुईं। सरकार की आमदनी पर भी असर हुआ। यह सब चीजें ध्यान में रखना चाहिये।

मान्यवर, स्मगलर्स के खिलाफ भी हमारी सरकार ने कठोर कदम उठाये हैं। कानून भी बनाया है। विरोध पक्ष वाले एक तरफ शिकायत करते हैं कि स्मगलर्स के खिलाफ सरकार कार्यवाही नहीं करती, दूसरी ओर जब उनके विरुद्ध में कानून बनाने की बात आई तो उस ओर से उसका विरोध होता है। माननीय सदस्य वाक आऊट तक करते हैं।

(व्यवधान)

एक सदस्य—

हाजी मस्तान को मेरठ में मेहमान किसने बनाया ?

श्री वीरेन्द्र वर्मा—

मान्यवर, आज सूखा और बिजली आदि की कमी के कारण देश-प्रदेश में जो कठिन स्थिति है उसके लिये आवश्यकता इस बात की थी कि कभी माननीय सदस्यों की ओर से जनता के मनोबल को ऊंचा किया जाता। किन्तु मुझे अफसोस है कि विरोध पक्ष की ओर से जनता

के मनोबल को नीचा करने का का प्रयास किया जाता रहा है। उनके जजबात को भड़काया जा रहा है।

मान्यवर, देश के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास के लिये हमने संविधान में स्पष्ट रूप से जिक्र किया है। शोषण रहित समाज की स्थापना क लिये यह सरकार कटिबद्ध है और यही उद्देश्य हमारे संविधान का है। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति में कोई रुकावट आती है तो उसे दूर करना सरकार का फर्ज है। उन रुकावटों को दूर करने के लिये संविधान में संशोधन भी करना होगा। संविधान बनाने वाले भी जनता के प्रतिनिधि थे, आज बदली हुई परिस्थितियों में, उसमें परिवर्तन करने वाले भी जनता के प्रतिनिधि हैं। जो संशोधन केन्द्र की सरकार ने किये हैं वह देश की बदली हुई परिस्थिति में किये हैं। इसलिये वे आवश्यकीय थे। मैं एक दो बात आपके जरिये माननीय मुख्य मंत्री को भी कहना चाहूंगा। माननीय नेता विरोधी दल ने २४ जुलाई, १९६९ को इस स्थान पर बैठ कर भाषण दिया था कि शुगर फैक्टरियों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये। एक कमेटी भी बनी थी, जिसका कि मैं चेयरमैन था। उस कमठी की रिपोर्ट भी आयी। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि वे किसानों, मजदूरों और उपभोक्ताओं के हित को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द शुगर फैक्टरियों के राष्ट्रीकरण के लिये अधिक से अधिक प्रयास करें।

इसके अलावा मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से यह भी प्रार्थना करूंगा कि व्हीट का व्यापार, गेहूं का व्यापार लेने का निश्चय जो १९७३ में केन्द्रीय सरकार ने किया था, प्रदेश की सरकार यह कोशिश करे कि गेहूं के व्यापार को टेक ओवर किया जाय। पिछले साल का तजुर्बा उनके सामने है, उससे भी वे सबक लें और अनाज के व्यापार को अपने हाथ में लें। तीसरा सुझाव यह है कि सन् 56 में सारे प्रदेश में शहरी जमीदारी का खातमा हुआ लेकिन सन् ५६ के बाद १८ साल हो गये, आज भी ११ शहर ऐसे हैं जहां जमींदारी एबालिशन ऐक्ट लागू नहीं हो सका, किन्हीं भी कारणों से हुआ हो। मैं प्रार्थना करता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री जी इस पर ध्यान दें।

जहां तक और बहुत सी नुक्ताचीनी विरोधी पक्ष के लोगों ने की हैं, माननीय नेता विरोधी दल या माननीय नेता जनसंघ ने कही है वहां किसी की जबान से यह नहीं निकल सका कि इस सरकार नें हरिजनों, बैकवर्ड क्लास के लोगों, पिछड़ी जाति के लोगों या वे किसान जिनके पास एक एकड़ से कम खेती है उनको कर्जे से मुक्त किये है। उसकी कोई प्रशंसा ये नहीं कर सके।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

यह तो मेरा प्राइवेट प्रस्ताव था जिसको सरकार ने मान लिया।

श्री वीरेन्द्र वर्मा—

सन् ६७ में जबकि चौधरी चरण सिंह जी इस प्रदेश के मुख्य मंत्री बने तो मैंने उन्हें लिखा था फाइल में देखें और फिर ७० में भी मैंने कोशिश की थी उन्हें लिखा भी था और कैबिनेट में भी डिस्कशन किया था कि हरिजनों, भूमिहीन और पिछड़ी जाति के लोगों का साहूकारों के कर्जे से शोषण होता है, उस कर्जे को समाप्त किया जाय जिससे साहूकार लोगों से गरीबों को नजात मिल सके। मैं बधाई देता हूं माननीय मुख्य मंत्री जी को कि ७ साल बाद आखिर एक सही कदम, एक नेक कदम उन्होंने उठाया है, जैसा कि इस प्रदेश में १९३७ में प्रदेश सरकार ने इनकमबर्ड इस्टेट्स ऐक्ट पास करके किसानों को साहूकारों के कर्जे से मुक्ति दिलायी गयी थी। सरकार ने हरिजनों व गरीब भूमिहीन आदमियों को जिनके पास अपना मकान बनाने के लिये जमीन नहीं थी उनको जमीन भी दी जा रही है। जिस भूमि पर उनकी झोपड़ियां बनी थीं उसकी मिल्कियत दी है इसके लिये भी मैं उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूं। आज जो टाइट आर्थिक स्थिति है हमारे प्रदेश में, उसके होते हुए भी पूर्वी क्षेत्र, बुन्देलखंड और पर्वतीय क्षेत्रों के लिये धन की व्यवस्था की है उसके लिये भी वे बधाई के पात्र हैं। इन शब्दों के साथ में, यह जो अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया है, उसका घोर विरोध करता हूं।

*बाबा रामनाथ (जिला मैनपुरी)—

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से इस मंत्रि-परिषद् के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव इसलिये रखता हूं कि इस मंत्रि-परिषद् के एक एक मिनिस्टर को ले लिया जाय—और सबसे पहले मैं सहकारिता मंत्री को लेता हूं। १२—१३ महीने के अन्दर २ करोड़ ३१ लाख रुपये का गबन जिस संस्था के अन्दर हो, क्या ऐसे मंत्री को मंत्रि-परिषद् में बैठने का अधिकार है ?

(विरोधी पक्ष से आवाजें—नहीं है, नहीं है।)

मान्यवर, कृषि मन्त्री की ही बात ले लें। अगर देखा जाय तो पता लगेगा। सन् १९७०-७१ के आंकड़े देख लिये जायं और सन् १९७३-७४ के आंकड़े देख लिये जायं। लाखों टन गल्ले की कमी हुयी है। खाने के लिये अनाज तक नहीं मिल रहा है, क्या ऐसी हालत में कृषि मन्त्री को अधिकार है कि वह यहां बैठे, उनको इस्तीफा दे देना चाहिये।

(नहीं बैठना चाहिये की आवाजें।)

मान्यवर, सरकार बड़ी दुहाई देती है कि हमने सिंचाई की योजनायें बनायी हैं, यह योजनायें बनायीं हैं और वह योजनायें बनायी हैं। हमने यह उपलब्धियां प्राप्त कर ली हैं। पर देख लीजिये हमारा उत्पादन गिरता जा रहा है, और १५ मिलियन के हिसाब से आबादी हर साल बढ़ती जा रही है देश की। ऐसी परिस्थिति में कृषि मन्त्री को कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने पद पर बने रहें।

मैं सार्वजनिक निर्माण मन्त्री जी को भी लेता हूं। आज २० हजार कर्मचारी, गरीब कर्मचारी जो सड़क कूटते थे। सड़क का कांस्ट्रक्शन करते थे, नौकरी से अलग कर दिये गये हैं। लाखों रुपयों का गोलमाल इस विभाग में होता है। कहीं भी कोई सड़क तक नहीं बनायी जा रही है। सभी कांस्ट्रक्शन रोक दिये गये हैं। ऐसी स्थिति में हमारे सार्वजनिक निर्माण मन्त्री जी को कोई अधिकार नहीं है कि वह मन्त्रि परिषद् में रहें उनको भी इस्तीफा दे देना चाहिये।

(शेम शेम की आवाजें)

मान्यवर, अब मैं राजस्व मन्त्री जी पर आता हूं। मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि यहां भूमि-व्यवस्था के सवाल और राजस्व के सवाल में केन्द्रीय सरकार का बराबर हस्तक्षेप इस प्रदेश की सरकार में रहा है। चाहे प्लानिंग कमीशन हो, चाहे कृषि मन्त्रालय हो बराबर हस्तक्षेप रहता है। मान्यवर, सवा ६ एकड़ तक लगान को फिर से लागू कर दिया है। मंगल देव विशारद कमेटी की रिपोर्ट को नहीं माना गया है। मैं आपके माध्यम से, अध्यक्ष महोदय, पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस के रेज्योल्यूशन्स को देख लिया जाय सन् १९३० से लगाकर सन् १९४६ तक बराबर कांग्रेस यह चीज कहती रही है कि स्माल होल्डिंग्स पर किसानों को रेवेन्यू की सुविधा मिलनी चाहिये। पर आज देखिये, मैं समझता हूं कि यह लोग जिन्दा मक्खी खा रहे हैं। जो वादे हैं उनसे खिलाफ जा रहे हैं तो मैं पूछना चाहता हूं कि क्या इन परिस्थितियों में राजस्व मन्त्री को अधिकार है कि वह मन्त्री पद पर बने रहें।

(नहीं है—नहीं है की आवाजें)

इसके अलावा जहां तक मान्यवर, विधान का सवाल है। उसमें है कि सोशल, पोलीटिकल, एकोनामिक अधिकार हम देंगे। मान्यवर, मैं पूछना चाहता हूं कि आज जो हरिजन है क्या उसको सोशेल, पोलीटिकल और इकोनामिक अधिकार मिल रहे हैं ? नहीं मिल रहे हैं। आर्थिक समस्या को ही ले लीजिये। ४ करोड़ लोग ऐसे हैं जिनको नरिश लेविल का खाना नहीं मिल पा रहा है। २ करोड़ जनता ऐसी है जिनकी परकैपिटा इन्कम १५ से लेकर 25 रुपये महीने की है। आप बराबर कहते जा रहे हैं कि हमारी यह उपलब्धियां हैं और

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हम इतना-इतना कर रहे हैं। कम से कम यह तो सोचना चाहिये कि हम कह क्या रहे हैं और क्या कर रहे हैं। जहां तक पुलिस और भ्रष्टाचार की बात है उसके बारे में सब जानते हैं। ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। आपके दोस्त टाइम्स ने लिखा है, मैं आपको पढ़ कर सुनाना चाहता हूं। मैं उसका उद्धरण पढ़ रहा हूं:

'Times magazine has in its issue said that Government officials from the highest to the lowest levels in India have been become 'unshameably corrupt'.

'It now takes bribe to get a child into school, to get a milk card even to get long distance ticket.'

'The gross national product has not grown at all for two years while the population increases by about 15 million every year.'

India is suffering from a nation wide sense of depression, frustration and malaise.

एक सदस्य—

हिन्दी में बतायें।

बाबा राम नाथ—

आपके दोस्तों ने जो अमेरिका आदि देशों में बैठे हैं उन्होंने यह कहा है, आप पढ़कर देखें।

अब मैं स्वास्थ्य मन्त्री पर आता हूं। पहले जब श्री कमलापति त्रिपाठी जी इस मन्त्रिमन्डल के मुख्य मन्त्री थे तो उन्होंने डाक्टरों की प्राइवेट प्रैक्टिस पर रोक लगा दी थी। पर आज जब हम डाक्टर के पास जाते हैं तो वह कहता है कि अगर तुम्हारे पास २५ रुपया फीस हो तो तुमको अस्पताल में देखा जायगा। मान्यवर, मेरा तो कहना है कि इस प्राइवेट प्रैक्टिस को रोक देना चाहिये। यह डाक्टर मनमानी कर रहे हैं। हमारे मुख्य मन्त्री श्री बहुगुणा जी ने लूटने का फिर आदेश कर दिया है। ऐसी स्थिति में जो भी इस विभाग के मन्त्री हों उनको इस विभाग से इस्तीफा दे देना चाहिये। माननीय अध्यक्ष जी, सिर्फ एक सवाल शासक दल कर सकता है कि विरोधी पक्ष आलोचनायें बहुत करता है किन्तु सुझाव नहीं देता है। तो राजस्व विभाग का सवाल है तो रिजर्व बैंक की टीम और भगवती कमेटी की रिपोर्ट को मैं पेश करता हूं कि किस प्रकार टैक्स लगाना चाहिये—रिजव बैंक के स्टडी के आंकड़े हैं वह मैं देता हूं—

A study conducted by the Reserve Bank of India revealed that 177 companies at the top accounted for 63 persent of total paidup capital of all companies. Assets of the largest 20 industrial houses increased from Rs. 1780 crores in 63---64 to 2752 crores in 67---68. To take individual houses, the assets of Tatas, the biggest of them all, which stood at Rs. 94 crores in 50---51, increased to Rs. 584·6 crores in 68, Rs. 850 crores in 72 and to an estimated Rs. 1,000 crores today. Birlas have increased their assets from 50 crores in 1950 to 575.6 crores in 1968 and are almost on a par with Tatas at present

इन लोगों की ९४ करोड़ की संपत्ति थी जो कि ६०० करोड़ की हो गयी है। क्या सरकार उन पर टैक्स नहीं लगा सकती है? परन्तु सरकार टैक्स लगायेगी उनके ऊपर जिनके घर में खाने को नहीं है।

मान्यवर, शिक्षा मन्त्री से शिकायत है कि यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन ने लिखा था जिसको कि माननीय बहुगुणा जी ने माना था कि वेतन कमीशन की संस्तुति के अनुसार

[बाबा राम नाथ]
दिया जायेगा लेकिन उनको वेतन अभी संस्तुति के अनुसार नहीं मिला है। जहां तक शिक्षा का सवाल है तो एक प्रान्त को छोड़कर सभी से यहां शिक्षा पिछड़ी है। इस प्रदेश की शिक्षा २१ प्रतिशत है जो कि सभी से कम है। क्या वजह है कि शिक्षा के अन्दर प्रगति नहीं हो रही है।

मान्यवर, इसके अलावा आपके पास है भगवती कमेटी की रिपोर्ट जिसमें कहा है कि सब से ज्यादा खर्च बेकार का है जिसको कि आप रोक सकते हैं। उसमें है कि ५ हजार करोड़ रुपया ऐसा है जिसको कि आप खर्च होने से रोक सकते हैं वह है नान डेवेलपमेन्टल खर्चा जो खर्चा किसी प्रकार का नहीं है। इसलिये सरकार को चाहिये कि वह टाटा और बिरला पर टैक्स लगाये तो उनसे आपको मिलेगा यह साधन के स्रोत हैं।

अध्यक्ष महोदय, ला एण्ड आर्डर के मुताल्लिक कुछ कहना चाहता हूं। इटावा जिला इसमें सबसे ऊपर है। वहां पुलिस के डी० एस० पी० पुराने क्रान्तिकारी नेता के घर में घुसकर उनके परिवार के लोगों की बेइज्जती करते हैं। एस० पी० और डी०एस० पी० के वहां शादी और किसी उत्सव में उनके घर दरोगा और सिपाही उपहार देते हैं। तो चाहे जो हो विवाह आदि में यह चीजें दरोगा, सिपाही या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं दी जानी चाहिये इनको रोकना चाहिये।

मान्यवर, तीसरे माननीय बहुगुणा जी को सहायता के लिये सेन्टर के लड़ना पड़ेगा। योजना आयोग को सेन्टर से कम सहायता मिली है। यदि योजना आयोग हमारी समस्याओं पर विचार करे तो अधिक सहायता मिल सकती है अन्यथा नहीं। इसलिये आर्थिक संकट होने से यह डेढ़ किलो जिसको आलू खाने को नहीं मिलता है उन पर कर बढ़ाने जा रहे हैं। इसलिये जो काम करें वह बुद्धि का काम करें नहीं तो जो जनता दुखी है वह आपको गद्दी से उतार देगी और ऐसा बदला लेगी जिसका इतिहास भी साक्षी नहीं होगा।

श्री धीरेन्द्र सहाय (जिला पीलीभीत)—
मुख्य मन्त्रीजी ने कहा था कि ४० प्रतिशत लोग उनकी ओर से बोलेंगे और ६० प्रतिशत लोग इधर से बोलेंगे।

श्री अध्यक्ष—
उसी हिसाब से समय का आबंटन कर दिया गया है।

श्री धमवीर (जिला इलाहाबाद)—
मैं श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत किया गया और श्री करण सिंह द्वारा समर्पित अविश्वास के प्रस्ताव के विरोध में खड़ा हुआ हूं। मान्यवर, इस सत्र में जो हालत इस विधान सभा में हमारे नेता विरोधी दल और उनके साथियों ने जो तस्वीर आज प्रदेश की जनता के सामने खींची है, भले ही वह अपने मन में खुश होते हों कि हमने गालियां दी हैं, इल्जाम लगाये हैं, भ्रष्टाचार के आरोप लगाये हैं, इस बार शायद जनता सुन ले, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि दूसरे पर इल्जाम लगाने के पहले अपने गरेबान में हाथ डालकर देखें कि आप कहां पर हैं। आपका जनता पर विश्वास नहीं है कि इस तरह शोर मचा रहे हैं। बिना किसी बात के सोचे समझे यहां बातें आने लगती हैं और जब कोई उत्तर देता है तो कहते हैं कि बैठ जाओ। महाभारत में एक कथा आती है। युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा के मारने के बारे में जो बात कही थी उसके अन्तिम शब्द शोर मचाकर सुनने नहीं दिये। वही हाल यहां भी होता है। तो सही बात सुनने के पहले आप शोर मचा देते हैं। इसी तरह की एक दूसरी कहावत है। एक आदमी भागता हुआ आया और कहा चल गई दूसरे ने सुना और उसने भी कहा कि चल गई। इस तरह से भगदड़ मच गई और लोग घायल हो गये। परन्तु पता लगाने पर मालूम हुआ कि एक खोटी चवन्नी चल गई है। इन इल्जामों का भी यही हाल है।.... (व्यवधान)

जबसे हमारे चौधरी साहब कांग्रेस दल से अलग हो गये हैं, देश म राजनैतिक भ्रष्टाचार फैल गया है और मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि उसकी बुनियाद चौधरी चरण सिंह ने रक्खी है। यह उसी तरह की बात है कि एक शेर बुड्ढा होने पर एक पेड़ के नीचे सोने का कड़ा लेकर बैठ गया और कहने लगा कि उसके पास दांत नहीं हैं वह हिंसा नहीं करता है, अतएव उसके पास आओ। लेकिन फिर भी किसी तरह का मतभेद न होने पर भी श्री उदितनारायण शर्मा और श्री जय राम वर्मा को मन्त्री नहीं बनाया गया यह कर वह फ्लोर क्रास करते हैं। यह राजनैतिक भ्रष्टाचार नहीं तो क्या है? तो मैं जानना चाहता हूं कि जब १९६९ में कांग्रेस का डिवीजन हुआ और श्री सी० बी० गुप्ता मृत्यु शैया पर थे तो यह तय हुआ था कि चौधरी साहब बैलेन्स कर रहे हैं। लेकिन वह रात के १२ बजे कहते हैं कि गुप्ताजी उनको मुख्य मन्त्री बनायेंगे तो वह रहेंगे, नहीं तो नहीं। इस बीच श्री उमाशंकर दीक्षित और डी० पी० मिश्रा उनसे मिले। विद-इन नो टाइम देखा कि गुप्ता मिनिस्ट्री के साथ टेम्पोरेरी रहेंगी और कांग्रेस के साथ आने पर ज्यादा दिन तक चीफ मिनिस्टर रहेंगे, तो दिन निकलते ही डिक्लेयर कर दिया कि मैं कांग्रेस के साथ हूं। और कहा कि समाजवादी नीतियों के अनुसार इन्दिरा जी देश को आगे ले जा सकती हैं। यह धोखा नहीं तो क्या है?

माननीय चौधरी साहब मुख्य मन्त्री बनने का ख्वाब हमेशा देखते रहे हैं। सन् १९६५ में जब चौधरी साहब ने इस्तीफा दिया तो कहा कि सोशलिस्ट पार्टी सबसे ज्यादा गैर-जिम्मेदार पार्टी है और वही राजनारायण आज आपके साथ हैं। मोदीजी, पटनायक और माया बाबू जिन्हें अदालत से सजा भी मिल चुकी है, आज चौधरी साहब उनसे मिल गये हैं और भ्रष्टाचार की बात करते हैं। क्या इसका जवाब चौधरी साहब दे सकते हैं? चौधरी साहब बार-बार मुख्य मन्त्री बनना चाहते हैं मिड टर्म चुनाव कराया, लेकिन जनता ने बदल दिया। प्रदेश की बागडोर कांग्रेस को दी। जनता इन्हें बारबार ठुकराती रही है। सन् १९७४ के चुनाव में चौधरी साहब ने कहा कि हम मुख्य मन्त्री बनेंगे, लेकिन जनता ने इन्हें ठुकरा दिया। जनता चौधरी साहब को कभी मुख्य मन्त्री नहीं बनने देगी। ये हमेशा तिकड़म से मुख्य मन्त्री बनते रहे हैं। यह भ्रष्टाचार नहीं तो और क्या है? आप आज नीतियों की बात करते हैं और इन्दिरा जी को रणचन्डी नहीं मान सकते। लेकिन वह सारे राष्ट्र द्वारा रणचन्डी मानी गयी हैं। मैं बताना चाहता हूं कि इन्दिराजी ने इस देश के अन्दर ही नहीं, दुनिया के अन्दर जो काम किये हैं, इतिहास में उस तरह का दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता। आप बंगला देश की दुहाई देते हैं। मान्यवर, इन्दिरा जी ने जिस मुल्क को फतेह किया, आज दुनिया के नकशे से गायब है। मान्यवर, आज इन्दिरा जी की वजह से हिन्दुस्तान का स्तर ऊपर उठ गया है और दुनिया के देश आज हिन्दुस्तान के नाम से थरथरा रहे हैं। उन्हीं इन्दिरा जी के नेतृत्व को आप गाली देते हैं। इल्जाम लगा रहे हैं। मैं कहता हूं कि इससे आप पब्लिक लाइफ तो गन्दी ही करेंगे, डेमोक्रेसी को भी कमजोर करेंगे। आप कोई कन्क्रीट सुझाव नहीं देना चाहते कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। बस 'चल गयी', 'चल गयी', यही कहना चाहते हैं। और सोचते हैं कि हो सकता है कि अबकी जनता में चल जाय। आज ललित नारायण मिश्र का जिस तह से निधन हुआ, वह कितना दर्दनाक कान्ड है, जिसके बारे में चौधरी साहब को गम्भीरता से विचार करना चाहिये। आज वे शक्तियां जो डेमोक्रेसी को बर्बाद करना चाहती हैं, बढ़ रही हैं।

मैं मान्यवर, दो-एक आंकड़े देना चाहता हूं। लेकिन इसके पहले मैं एक बात और कह देना चाहता हूं कि आप लोग बहुगुणा जी के ऊपर चाजज फ्रेम करना चाहते हैं। लेकिन बहुगुणा जी क्या, मैं कहता हूं कि आप इस मिनिस्ट्री के किसी मन्त्री के विरुद्ध चार्ज का कोई प्रमाण नहीं दे सकते। मान्यवर, अब मैं कुछ आंकड़े देकर बात समाप्त करता हूं। पहले मैं खाद्य विभाग के आंकड़े देना चाहता हूं। मान्यवर, एक साल के अन्दर १३७३ दूकानों के लाइसेंस रद्द किये गये और १११३ दूकानों को सस्पेन्ड किया गया। जखीरेबाजों और तस्करों के विरुद्ध पिछले मार्च से अक्तूबर तक ६२५० व्यापारियों को गिरफ्तार किया

[श्री धर्मवीर]

गया। 'मिसा' के अन्तर्गत ५५ तस्करों को गिरफ्तार किया गया। १.४० लाख क्विन्टल अनाज, ११,६७४ बनस्पति के डिब्बे, ५२८४ क्विन्टल घी, २६४३ क्विन्टल चीनी, १.४० लाख लिटर मिट्टी का तेल, ५७ ४०० बोरी सीमेंट पकड़ी गयी। २.५ लाख के सोने-चांदी का सामान और विदेशी घड़ियां बरामद हुयीं। जहां तक सेल्स टैक्स का सवाल है २००० छापे पड़े जिसमें करोड़ों रुपयों का बकाया कर मिला कर १९७३-७४ मे ८३ करोड़ का बिक्री-कर वसूल हुआ ...

इस तरह से, मान्यवर भ्रष्टाचार को दफा करने के लिए यह सरकार बराबर कदम उठा रही है। लेकिन चूंकि यह सब नहीं हो पाता है इसलिये ऐसा कहा जाता है। (व्यवधान) आपको मालूम होना चाहिये कि बकाया धनराशि से ८३ करोड़ रुपया वसूल किया गया। यह क्या एचीवमेंट नहीं है? गरीबों की बांह पकड़ कर, हरिजनों की बांह पकड़ कर उनको बहुगुणा जी ने उठाया। आज प्रदेश का हरिजन कहता है कि कांग्रेस की हुकूमत में वह खुशहाल है। मैं चाहता हूं कि आप अपने नौजवान साथियों को नसीहत दें जो बुनियादी उसलों पर चल सकें। झूठ आरोप तथा छींटाकशी करक जनता के विश्वासपात्र आप नहीं बन सकते। इन शब्दों के साथ मैं इस अविश्वास के प्रस्ताव का जोरदार विरोध करता हूं।

*श्री शतरुद्ध प्रकाश (जिला वाराणसी)—

अध्यक्ष महोदय, मैं शब्दों के जाल में जाकर न तो जनतन्त्र की दुहाई दूंगा और न जनतन्त्र पर शिकायत करूंगा। अभी राज मगल पांडेय जी ने विपक्ष पर आरोप लगाया और गम्भीरता से कहा कि विरोधी लोग विद्यार्थियों का तथा प्राइमरी स्कूल के बच्चों को एक्सप्लायट कर रहे हैं लेकिन उनके पास इसका क्या जवाब है जब १५ दिसम्बर, को श्रीमती इन्दिरा गांधी लखनऊ में आईं तो ५ साल से ८ साल, ९ साल के बच्चे सड़क के दोनों ओर हाथ उठाकर इसलिये खड़े कर दिये गये कि वे इन्दिरा गांधी का स्वागत करें। इससे बढ़कर ५ साल के विद्यार्थियों का दूसरा एक्सप्लायटेशन नहीं हो सकता जब तक कि उनको इस बात की जानकारी न हो कि राजनीति में इन्दिरा गांधी किस दर्शन को लेकर चल रही हैं। लेकिन जब १५ से १८ साल के विद्यार्थी स्कूलों तथा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी आन्दोलन करते हैं तो अनुशासन हीन कहलाते हैं और तब विरोधी दल उनका एक्सप्लायटेशन करता है। यह भी आरोप लगाया गया है कि विरोधियों मे एकता नहीं है। यह सही बात है। किसी विद्वान ने यह कहा है कि जहां पर बेवकूफ रहते हैं, जहां पर भेड़ें रहती हैं वहां पर मतभेद नहीं होता है लेकिन जहां पर सोचने समझने वाले लोग रहते हैं वहां पर विचार विमर्श होता है और मतभेद भी होता है। (व्यवधान)

श्री गोविन्द प्रसाद गैरोला (जिला टिहरी गढ़वाल)—

[* * * *]

श्री अध्यक्ष—

माननीय सदस्य ने जो कुछ कहा है वह नहीं लिखा जायगा। इस तरह से बीच में बोलने का कोई तरीका नहीं है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि मुझे समय बहुत कम मिला है और अगर इसी तरह से व्यवधान होते रहेंगे तो मेरे समय को काटा न जाय। मान्यवर, मैं कह रहा था कि आज जनता को अमंगल है क्यों कि बहुगुणा जी के मत्रि–मंडल में श्री राज मगल हैं। मेरा उनके

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[* * * *] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

प्रति कोई इरादा नहीं है लेकिन अगर जय प्रकाश जी की भाषा को समझ लिया जाय और जय प्रकाश जी का कहना मान लिया जाय तो मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि जिन भ्रष्ट मंत्रि–गण के बारे में उन्होंने कहा था क्या वह नाम श्री राज मंगल पांडेय का नहीं है ?

(व्यवधान)

श्री राज मंगल पांडेय—

आपने मेरा नाम लिया कि जय प्रकाश जी ने मेरे बारे में कहा है। मैं चैलेंज करता हूं कि अगर उन्होंने मेरा नाम लिया है और मेरे ऊपर वे आरोप सिद्ध हो जाते हैं तो मैं इसी वक्त अभी इतीफा देने के लिये तैयार हूं लेकिन अगर यह साबित नहीं होता है तो क्या जय प्रकाश जी अपने मूवमेंट को विदड्रा कर देंगे ?

(व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (जिला इलाहाबाद)—

जय प्रकाश जी के बारे में सदन में कुछ बोलने का अधिकार है ?

श्री राज मंगल पांडेय—

मेरी जांच मुख्य मंत्री जी नहीं करेंगे चौधरी साहब करेंगे और विरोध पक्ष के माननीय सदस्य जो बोल रहे हैं वे करें कि यदि जय प्रकाश जी ने मेरा नाम लिया है और वे इसे साबित कर दें तो इसी वक्त मेरा इस्तीफा है. . . . . (घोर व्यवधान) नहीं तो जय प्रकाश जी अपना मूवमेंट विदड्रा करने के लिये तैयार हैं ?

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

मैं आपकी बात का जवाब दे रहा हूं।

श्री राज मंगल पांडेय—

पहले आप यह बतायें कि आप इसके लिये तैयार हैं ?

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

मैं यह कह रहा था कि अगर आप भ्रष्ट नहीं होंगे आपके खिलाफ कोई आन्दोलन नहीं चल रहा है तो जय प्रकाश नारायण निश्चित तौर पर अपना मूवमेंट विदड्रा कर लेंगे।

श्री राज मंगल पांडेय—

मेरे खिलाफ कोई आन्दोलन ही नहीं है।

(कई सदस्य खड़े होकर एक साथ बोलने लगे)

मेरा इस्तीफा मुख्य मंत्री जी के हाथ में है और चौधरी साहब के हाथ में है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

आपका इस्तीफा नहीं चाहिये। हमें तो बहुगुणा जी का इस्तीफा चाहिये। आप ही नहीं, इतने ही नहीं, मंत्रि परिषद् में बहुत से ऐसे मंत्री हैं . . . . . (व्यवधान)

श्री चेतराम गंगवार (जिला बरेली)—

इन्होंने पांडेय जी का नाम लिया है, इनसे कहें कि ये अपने शब्द वापस लें . . . . . .

(सदन में घोर व्यवधान हो गया)

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

पूरी की पूरी मान्यतायें जनतंत्र के खिलाफ चल रही हैं। अभी राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी वृन्दावन में गई थीं। उन्होंने वहां भाषण दिया खेती को पानी नहीं मिल रहा है और खेती में पानी देने के लिये जो हमारा कृत्रिम वर्षा का प्रयत्न हो रहा था वह असफल हो गया। खेतों में पानी देने के लिये और सूखा दूर करने के लिये राजेन्द्र कुमारी बाजपेई जी ने कहा कि तानसेन और हरिदास को पैदा करना होगा क्योंकि वह पैदा होंगे तो उससे संगीत निकलेगा उसके द्वारा वर्षा होगी। यह डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेई का बयान दिनमान में छपा है। तो इस

[श्री शतरुद्ध प्रकाश]
तरह के बयान कांग्रेस के मंत्री देते हैं जो कि कांग्रेस की नीतियों के खिलाफ हैं कि आबादी को बढ़ाया जाय। एक तरफ आप कहते हैं कि हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं और दूसरी तरफ पानी और सूखे की समस्या के लिये तानसेन को पैदा करना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। माननीय मुख्य मन्त्री जी को कड़ुवी लगेगी क्योंकि मैं एक सत्य बात कह रहा हूं जो कड़ुवी है। हमारे देश में राम भी हुए, कृष्ण भी हुए जो १६ कलाओं के निपुण थे। हमारे देश में कृष्ण की रास लीला भी प्रसिद्ध है। तो इलाहाबाद में उनको नगर भारत सेवक समाज की तरफ से एक मानपत्र दिया उसमें लिखा है आप उस स्कूल के विद्यार्थी हैं जिसके संरक्षक गांधी जी किताब, मानवतावाद गुरु नेहरू जी तथा मानीटर इंदिरा गांधी है। आगे कहते हैं आपमें राम की मर्यादा, कृष्ण को नीतिज्ञता, बुद्ध की करुणा, गांधी के सत्य एवं अहिंसा के प्रति अनुराग, नेहरू की उदारता एवं इंदिरा जी की रहनुमाई में चल कर . . . . . आदि आदि तो इतनी अतिशयोक्ति की गई है जो कहीं नहीं मिलेगी। तो राम की मर्यादा और कृष्ण की नीतिज्ञता और बुद्ध की करुणा सभी उसमें लिख दिये गये। तो उसके बारे में मैं आपको कहना चाहता हूं।

(व्यवधान)

श्री काशी नाथ मिश्र (जिला बलिया)—
अगर जनता किसी मंन्त्री को राम कहे तो उसमें उनका क्या दोष है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—
तो उसी नैतिकता के बारे में बतला रहा हूं तो मेरा सबसे बड़ा आरोप है कि दिनांक १३ जुलाई सन् १९७४ के पृष्ठ ३१४४ के गजट में नोटिफिकेशन संख्या यू० ओ० ४७९/राजस्व-१/७४ सरकारी विज्ञप्ति संख्या ९ (१) राजस्व १/३(१)-७४ दिनांक २५ जनवरी, १९७४ का आंशिक परिष्कार में जिला मेरठ, तहसील गाजियाबाद, परगना जलालपुर, गांव सिकरी खुर्द में पक्का नाला बनाने के लिये सेंड्प्प में हिन्दी भाषा में इस गजट में छापा है 'मोदी उद्योग द्वारा पक्का नाला बनाने हेतु। लेकिन अंग्रेजी में इस प्रकार अनुवाद है।

For constructing cemented drain by Industries department.

तो दूसरी तरफ लिखा है कि इंडस्ट्रीज डिपार्टमेंट बनायेगा तो इससे ज्यादा राजनैतिक भ्रष्टाचार और क्या हो सकता है मैं नहीं समझ सकता हूं।

दूसरा अध्यक्ष महोदय, चुनाव आयोग ने जो चुनाव के खर्च की सीमा बांधी है उससे भी ऊपर चुनाव में यह खर्च करते हैं और सत्ता का दुरुपयोग किया जाता है जोकि बड़े पैमाने पर होती है। मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी को चुनाव के दौरान एक जीप नं० एम० आर० एफ० ७७०९ ब्रिटेनियां विस्कुट कंपनी बम्बई ने दी। जो आपके चुनाव में खर्च संबंधी राशि रखी है यह उससे अलग है। तो चुनाव खतम होने के बाद इस जीप को माननीय मुख्य मंत्री जी ने ले लिया। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि यह कैसे लिया, कैसे इसका ट्रांसफर हुआ, किसने कराया, कब कराया इसका पैसा कहां से आया तो यह सब संदिग्ध बातें हैं जिनकी जांच होनी चाहिये। इतना ही नहीं अध्यक्ष महोदय, राजनीतिक शिष्टाचार की किताब में लिखा हुआ है ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे किसी भी राजनीतिक जीवन में कार्य करने वाले के रिश्तेदारों को,उसके परिवार वालों को उसके पद से कोई लाभ मिल सके। इसे हम जनतंत्र की बुनियाद मानते हैं। लेकिन बहुगुणा जी के पुत्र श्री विजय बहुगुणा जिसकी आमदनी १९७१ से १९७४ तक आमदनी के रिटर्न के अनुसार २२ हजार रुपया है लेकिन उनके नाम डी० एच० बी० ६५४० नम्बर की ऐम्बेसेडर कार जिसकी कीमत २५ हजार रुपया है खरीदी गई। अध्यक्ष महोदय, एक तरफ जब मुख्य मंत्री होंगे या प्रधान मंत्री होंगे तो उनके पुत्रों को रिश्तेदारों को उनके मंत्री पद का लाभ नहीं होना

चाहिये यह जनतन्त्र की मान्यता है। लेकिन जैसा दिल्ली में हुआ, उत्तर प्रदेश में भी हो रहा है। मुझे नहीं मालूम इसमें कितना वह दोषी हैं, लेकिन इंदिरा गांधी की परम्परा को अपनाते हुए उनके परिवार के लोग अपना इलाज कराने के लिये इंग्लैंड सपरिवार गये। इसी उत्तर प्रदेश में धूमिल नाम के एक प्रमुख कवि हैं, जो अज्ञेय जी के समान एक प्रसिद्ध और योग्य कवि हैं तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे क्रान्तिकारी कवि हैं, वह ब्रेनट्यूमर से एक लम्बे अर्से से बीमार मेडिकल कालेज हास्पिटल में पड़े हैं, लेकिन उनका इलाज ठीक तरह से नहीं हो रहा है, उनका जीवन खतरे में है। उनके इलाज के लिये पैसा तक नहीं है और सरकार की तरफ से उनके इलाज का कोई इंतजाम नहीं है। लेकिन जब हमारे मुख्य मंत्री बहुगुणा जी के ससुर बीमार होते हैं तो वह हिन्दुस्तान के किसी हिस्से में नहीं बल्कि बाहर इंग्लैंड में अपना इलाज कराने के लिये जाते हैं। और वह ही नहीं, उनके साथ उनके सारे परिवार के लोग वहां जाते हैं और एक आरोप यह भी है कि वहां इन लोगों ने स्वीटजरलैण्ड के बैंक में कुछ रुपया जमा कराया है। आपको मालूम होना चाहिये कि वहां एकाउन्ट नाम से नहीं बल्कि कोड नम्बर के अनुसार चलता है। इस तरह से वहां जो रुपया जमा करता है उसका पता किसी को भी किसी हालत में चल नहीं पाता है। तो इस तरह से उन लोगों द्वारा वहां के बैंकों में लाखों रुपया जमा कराया गया है।

अभी आपके सामने मोदीनगर इन्डस्ट्री का एक केस बताया गया। उसके अलावा एन० सी० इंडस्ट्रीज, सूबेदारगंज, इलाहाबाद को आपके संकेत से सैकड़ों हजारों टन लोहा दिया गया, जिसका दुरुपयोग हुआ। यह ३ कमरों का ५० रु० किराया दिया करते थे, लेकिन जब मुख्य मंत्री हो गये उसके बाद उस मकान का किराया केवल १० रुपया बढ़ा, लेकिन उसमें ११ अतिरिक्त कमरे जोड़ दिए गये हैं तथा आधुनिक साज-सामान वा एअर कंडीशन आदि से वह मकान सुसज्जित कर दिया गया है, उसके फर्श मोजेईक के कर दिये गये हैं। तो इतने खर्च और सुविधाएं उपलब्ध कराने के बाद केवल किराया १० रुपया बढ़ाया गया है, तो यह क्या भ्रष्टाचार नहीं है। इस स्पष्ट भ्रष्टाचार से भी क्या किसी को कोई शक है। इतना बड़ा भ्रष्टाचार और पद का दुरुपयोग, किन्तु उनकी तरफ से जवाब में यह कहा गया है कि यदि मेरे ऊपर आरोप सिद्ध हो जायंगे तो मैं राजनीति से सन्यास लेकर गेरुवा वस्त्र पहन लूंगा। मैं उनकी इस बात पर ज्यादा तो कुछ नहीं कहना चाहता किन्तु मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि मैं इस सदन का सबसे छोटी आयु का सदस्य हूं, मेरे मुंह से यह बात छोटे मुंह बड़ी बात लोगों को लगेगी यदि यह आरोप और सारी बात गलत साबित हो जाती है तो राजनीति से संन्यास लेने का पलायनवादी दृष्टिकोण तो मेरा नहीं है, लेकिन इस सदन से इस्तीफा देकर बाहर अवश्य चला जाऊंगा।

पर इसके लिए शर्त केवल एक ही है, जैसा कि मलिक साहब ने कहा ६ जजों के हम नाम दे देंगे और उनमें से कोई एक जज आप जांच के लिये नियुक्त कर दें। किन्तु इसके अतिरिक्त किसी एजेन्सी द्वारा जांच न करायें—यह चाहे किसी मंत्री मैजिस्ट्रेट, सेक्रेटरी द्वारा हो। यदि आप जज से जांच नहीं कराते हैं तो इस सदन के सदस्यों की समिति से जांच कराएं। जांच में यह आरोप असत्य साबित हो जाते हैं तो हम कोई भी सजा भोगने के लिये तैयार हैं।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूं कि ३१७ करोड़ रुपये घाटे की यह सरकार है। यह सरकार दो जबान की सरकार है। इनकी जबान दो हैं। यह कहते हैं कि १८ घंटे बिजली दी जायगी, लेकिन ३ घंटे दी जाती है। यह कहते हैं कि प्रशासन में ट्रांसफर के मामले में किसी किस्म की सिफारिश नहीं सुनी जाएगी, लेकिन केवल सिफारिशों पर हर तरह के ट्रांसफर समय समय पर किये जा रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, यह सरकार फिजूलखर्ची, शराबखोरी, भ्रष्टाचार कालाबाजार के ऊपर टिकी हुई है। यह सरकार अपनी काली शक्ति के जरिये से विरोधियों और जनता पर लद कर पूरी पूरी ईमानदारी के साथ समाजवाद और गरीबों का हमदर्द बनने का ढोंग रच रही है। सरकार ने विद्यार्थियों का बड़े पैमाने पर दमन किया है। विद्यार्थियों को गुंडा ऐक्ट में बन्द किया है और जो सचमुच में गुंडे हैं उनको कोई पूछने वाला नहीं है। जो

[श्री शतरुद्ध प्रकाश]

यहां पर अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। इन सारी बातों के साथ अविश्वास प्रस्ताव पर बहुगुणा मंत्रिमडल को इस्तीफा दे देना चाहिये।

एक सदस्य,—

माननीय अध्यक्ष जी, एक निवेदन सुन लीजिये।

*श्री रामायण राय (जिला देवरिया)—

माननीय अध्यक्षजी, माननीय नेता विरोधी दल को जब कल सुन रहा था, आद्योपान्त, उनका भाषण तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। प्रथम, जब वह बोल रहे थे, तो मेरे जैसे आदमी पर यह प्रभाव पड़ा कि अपने दल के अखिल भारतीय स्तर के सर्वोच्च नेता हैं, उस हैसियत से सम्बन्धित वह जन सभा या लोक सभा में बोल रहे हैं। मान्यवर, उसके बाद, जब वह इस दल में थे उस दल में मंत्री की हैसियत से जो कुछ उन्होंने किया और बहुत से अच्छे काम किये, उसकी वह चर्चा कर रहे थे। मान्यवर, और अपना भाषण् समाप्त करने के बाद पूर्व में जिस चौधरी साहब ने जिन नीतियों की चर्चा की, उन नीतियों के सम्बन्ध में, जो उनके विचार हैं, जिन का बराबर लेखों के द्वारा, अपनी पुस्तकों में निरन्तर, उनके कुछ विश्वास हैं, उनके अनुकूल, उद्योग के सम्बन्ध में, घरेलू उद्योग धंधों के सम्बन्ध में, कृषि के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे, लेकिन भाषण समाप्त करने के पूर्व कल उन्होंने कहा कि शेष बातों की चर्चा कल हमारे दल के मेरठ के जो हमारे नौजवान विधायक हैं वह करेंगे ?

मैं ध्यान से आज उनकी बात सुनता रहा। मैं ऐसा समझता हूं मान्यवर कि मलिक साहब का भाषण और खास कर उस भाषण का वह अंश जैसे ही समाचारपत्रों में प्रकाशित होगा जिस में यहिया खां और हैनरी किसिंजर की वार्ता की चर्चा की है उसकी चौधरी साहब के भाषण के उस अंश से जोड़ा जायगा जिस अंश में उन्होंने सी आई० ए० की ऐक्टिविटीज क बारे में कल इस सदन के समक्ष विचार व्यक्त किया था तो निसन्देह कुछ लोगों को भ्रष्ट हो सकता है, कम से कम मेरे जैसे आदमी को बग्रत नहीं है, उन्होंने सी० आई० ए० ऐक्टिविटीज को जिस साहस से, जिस शौर्य और ऊंचे ढंग से इस माननीय सदन में उसकी चर्चा की उसके लिये सी० आई० ए० उनको जरूर बधाई देगी और इधर के लोगों को चौधरी साहब का आभारी होना चाहिये, वह सच बोलते हैं, ईमानदारी से बात करते हैं, इसलिये सी० आई० ए० के बारे में क्या उनके ऊचे खयालात, हैं, इसका थोड़ा इधर के बैठने वालो को हो जाना चाहिये।

मैं अपने दोस्त प्रभु नारायण सिंह जी से एक आग्रह करना चाहता हूं। उनको क्यों शिकायत होती है कि यह हिंसा फैलाना चाहते हैं। अगर उनका विश्वास अहिंसा में है तो उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि अहिंसा के रास्ते पर चलने वालों को हमेशा अहिंसा की बलि-वेदी पर बलिदान होना पड़ा है।

चाहे वह ईसा मसीह रहे हों, चाहे महात्मा गांधी रहे हों, चाहे भगवान महावीर रहे हों। अहिंसा के पथ पर चलने वाले को प्रत्येक आदमी को हिंसा की बलिवेदी पर बलिदान होने के लिये सदैव उद्यत रहना चाहिये। चौधरी साहब के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूं। यह एक किताब है जो आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा छापी गई है। उत्तर प्रदेश में जातिवाद की राजनीति पर शोध कार्य करते हुये एक विदेशी लिखता है कि जातिवाद के काज को बढ़ावा देने वाले सब से बड़े चैम्पियन उत्तर प्रदेश में चौधरी साहब हैं।

चौधरी चरण सिंह—

श्रीमान् जी, मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह डेलीबरेट मिस स्टेटमेंट है। उस ने ६ जिले देवरिया, मेरठ आदि के बारे में लिखा है मेरे बाबत जो उन्होंने लिखा है उसको पूरा पढ़ दीजिये।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री रामायण राय—

चौधरी साहब, मैं आपकी खिदमत में यह अर्ज कर रहा हूं। यह अंग्रेजी में पुस्तक है। आपकी खिदमत में भेजे देता हूं। इसमें लिखा है कि—

Most faction leaders in the district and state Congress party use their community ties as a stepping-stone to political power. Still, the reputation that a politician has within his own community is only a prerequisite for power. In addition the aspiring faction leader must able to talk to and share power with faction leaders from other social groups. Thus, in Meerut district, Chaudhuri Charan Singh initially came to prominence as a leader of his (at community. But, Charan Singh cannot control the Meerut Congress on the basis of Jat support alone. To maintain power, Charan Singh as allied with other community leaders. Those who have opposed Charan Singh have also had to seek inter community alliances.

चौधरी चरण सिंह—

मुझे भेज दीजिये।

श्री रामायण राय—

मैं भेज रहा हूं। आपने फरमाया था कि मैं ७० प्रतिशत वोट्स से जीत कर आता हूं। क्या आप बतायेंगे कि १९५२ तथा ५७ में आपकी जीत का प्रतिशत क्या था। आप केवल कुछ सौ वोटों से ही जीते थे।

चौधरी चरण सिंह—

पहली बात तो यह है कि मैंने पर्सनल अटैक नहीं किया।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

श्रीमन्, मैं जानना चाहता हूं कि . . . (व्यवधान)

श्री रामायण राय—

कहा जाता है कि यह सरकार बिड़ला जी को रियायत देती है। त्रिपाठी जी आप बुजुर्ग आदमी हैं, आप कृपया बैठ जाइये। बिड़ला जी को क्या रियायत दी जाती है और मोदी को हमने क्या रियायत दी है मोदी साहब को चौधरी साहब ने पद्मश्री दिलाई थी। बिड़ला जी का प्रपोजल उनके दल के माननीय सदस्य बना कर बैठे हुये हैं। लेकिन कहा जाता है कि हम बिड़ला मोदी को रियात देते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि दूसरों की आलोचना करने से पहले स्वयं अपने कृत्यों की आलोचना करनी चाहिये। आप मुख्य मंत्री थे और देवरिया तशरीफ ले गये थे। गन्ने के मूल्य के संबंध में आपने उस समय किसानों को तीन तरह के दाम दिलाये। जब मैंने शिकायत की तो आपने उस आदमी को जो आपके दल का माननीय सदस्य था बुलाया जिसने पैसा लिया था मिल मालिक से आपके चुनने के बाद और क्या यह सही नहीं है कि वह पैसा जो चेक में था, उसको वापस किया गया और कैश जो था जहां का तहां धरा रह गया। म यह कहना चाहता हूं कि बहुगुणा जी के बेटे की चर्चा होती है. . . . . .

(व्यवधान—शोरगुल)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, जिस व्यक्ति की चर्चा कर रहे हैं क्या वह इस सदन का सदस्य है ?

(व्यवधान—शोरगुल)

चौधरी चरण सिंह—

एक साहब थे, जिनका नाम मैं नहीं लेना चाहता, आज वह कांग्रेस के अन्दर हैं, बी० के० डी० के टिकट पर गालिबन चुनकर आ गये, एम० एल० ए० थे, नहीं एम० एल० ए० थे जब तक, मैंने उनको ७० में एम०एल०ए० बनाया था। वह वहीं चले गये जहां उनकी कुर्सी थी। आप जो रूपया की बात कर रहे हैं जान बूझकर, वह थे डिस्ट्रिक्ट देवरिया के, मुझको यह मालूम हुआ कि किसी एलेक्शन में उन्होंने फैक्टरी वालों से २४ हजार रुपया चन्दा ले लिया। मैं इस बात के खिलाफ था कि किसी बड़े आदमी से फैक्टरी वालों से, चन्दा लिया जाय। मने वह रुपया फैक्टरी वालों को वापस करा दिया। आपने यह गलत बात जान बूझकर कही है।

(व्यवधान—शोरगुल)

आपने क्या कहा कि चेक वाला वापस कर दिया और कैश अपने आप ले लिया। बजाय उस पर आप तारीफ करने के, उल्टा कह रहे हैं।

(व्यवधान)

आप मुझे बतायें कि आपके मिनिस्टर्स स्वयं फैक्टरी वालों से रुपया लेते हैं . . .

(व्यवधान)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मान्यवर, जिस वक्त लोगों को पानी पीने को नहीं मिलता है, उस वक्त ये मंत्रीगण व्हिस्की पीते हैं।

(व्यवधान—शोरगुल)

श्री रामायण राय—

विजय बहुगुणा अच्छे वकील हैं। अपने सगे भाई मानसिंह के बारे में कोई चर्चा यहां पर नहीं करूंगा।

(व्वधान—शोरगुल)

चौधरी चरण सिंह—

वह रिकार्ड आपके दफ्तर में मौजूद है, ७०–७१ को. . .

श्री रामायण राय—

चौधरी साहेब मैं आपसे कहना चाहता हूं कि हमारे मुख्य मंत्री इलाहाबाद में किराये के मकान में रहते हैं और आप माल एवेन्यू में जिस कोठी में. . . . . .

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, मेरे ऊपर इतनी बौछार हुई, मरे दल वाले वैचन नहीं हुए, अब यह बेचैनी क्यों ?

(व्यवधान, दोनों पक्ष के सदस्य खड़े हो गये और शोर होने लगा।)

श्री बांके लाल—

आपसे ज्यादा गुस्सा मेरे पास है। इस सरकार ने संतुलन खो दिया है।

(व्यवधान)

श्री रामायण राय—

मैं इनसे कहना चाहता हूं. . . . . .

(व्यवधान)

श्री बांके लाल--

माननीय मुख्य मंत्री जी इतने ऊंचे पद पर हैं और इनके ऊपर इतनी जिम्मेदारी है। अगर यह ऐसा करेंगे तो सदन चलेगा नहीं।

(व्यवधान)

एक सदस्य--

आप बैठ जाइये ?

श्री रामायण राय--

आप लोगों को बता देना चाहता हूं कि एक मिश्रा नाम के व्यक्ति हैं।

(व्यवधान)

मैं बोलूंगा और आपको सुनना पड़ेगा और जवाब देना पड़ेगा, अगर आपमें हिम्मत होगी। सुचेता जी के जमाने में.....

(व्यवधान)

मैं किसी की निन्दा नहीं करता हूं।

एक सदस्य--

आप हमें बुरा कहते हैं, हम आपको बुरा कहते हैं, तो क्यों नहीं जांच करवा लेते हैं ?

श्री रामायण राय--

मैंने किसी के खिलाफ कोई बात नहीं कही है। मैंने जो कहा है, केवल इशारा किया है। हां तो एक श्री मिश्रा नाम के आर० डी० ओ० हैं। वे बनारस के रहने वाले हैं। माननीया सुचेता कृपालानी के मुख्य मंत्रित्व काल में ट्रक वालों की हड़ताल हुई। वे भ्रष्ट अधिकारी थे, आज भी वे परिवहन विभाग में बने हुए हैं। उन्होंने मेरे जैसे व्यक्ति के खिलाफ माननीय गया प्रसाद सिंह से उल्टा सीधा भाषण करवाया था और मेरे कुछ नौजवान दोस्तों के भड़काने पर और कहने पर माननीय मुख्य मंत्री के खिलाफ भाषण करवाये थे। असली मुल्जिम कौन है, हमें मालूम है। गया प्रसाद जी भी आपकी ही पार्टी के थे। आज आपने हमारे भोले साथी शतरुद्ध प्रकाश को शिकार बना लिया है। लेकिन पता लगाइये कि वे अब तक ब्लैकमेलिंग की कितनी धनराशि कमा चुके हैं।

श्री अब्दुल रऊफ लारी (जिला गोरखपुर)--

आपके राज्य में इतना गन्दा आदमी अगर रुपया कमा चुका तो आपको तो डूब कर मर जाना चाहिये।

श्री रामायण राय--

माननीय चौधरी साहब जब परिवहन मंत्री थे तब से लेकर आज तक वे बने हुए हैं।

एक सदस्य--

पहले अपनी ब्लैकमेलिंग की धनराशि बता दीजिए ?

श्री रामायण राय--

कास्ट सुप्रीमेंसी की राजनीति, व्यक्ति व्यक्ति में भेद की नीति, घृणा की नीति, जर्मनी से आरम्भ हुई थी और उसका सबसे बड़ा नेता हिटलर था। उन्होंने यहूदियों के प्रति घृणा और अहिंसा की राजनीति फैलाई थी। उन्होंने स्त्रियों के खिलाफ यह कहा था कि स्त्रियों का स्थान चूल्हा है और उन्हें कार्यालयों से निकाल दिया था। चौधरी साहब ने अगर महिला मंगल योजना को समाप्त कर दिया था तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। आपने कहा कि सूचना विभाग को तोड़ दिया जाय।

(व्यवधान)

सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों से जो इस दल में सम्मिलित हुए हैं, उनसे आग्रह कर रहा हूं।

श्री कृष्णा राय (जिला देवरिया)—

और जो सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य कांग्रेस में गये, उनको क्या कहा जायगा।

(व्यवधान)

ये सपना देख रहे हैं कि राज मंगल पांडेय हटें तो हम मंत्री हो जायेंगे।

(व्यवधान)

श्री रामायण राय—

चौधरी साहब कहते हैं कि पूर्वी जिलों में हरिजनों पर बड़ा अत्याचार हो रहा है और मिसाल देते हैं बांदा और प्रतापगढ़ की जैसे बांदा और प्रतापगढ़ पूर्व में हों। क्या कहूं, बुजुर्ग हैं, वह जो कुछ भी हैं श्रेष्ठ हैं, आदरणीय हैं। मैं तो कुछ तथ्यों की चर्चा करना चाहता था। मैंने इस सदन को यह नहीं बताया कि आपके भाई, आपके दामाद और आपके रिश्तेदार क्या करते हैं। ऐसी धृष्टता मैं नहीं करूंगा लेकिन अगर किसी का लड़का या भाई योग्य डाक्टर या इन्जीनियर हैतो क्या उसे अपनी रोजी रोटी कमाने का हक नहीं है। अपने पीछे बैठने वालों को यह समझाइये। तो अगर आपके परिवार के लोगों को सरकारी नौकरी करने का हक है, कुछ दायें बायें चलने का हक है तो क्या इधर क लोगों को अपनी बात कहने का हक नहीं है। कहते है कि दवाइयों की ग़ड़बड़ी होती है। मुझे याद है किजिस समय श्रद्धेय स्वर्गीय राम सेवक जी यादव बीमार पड़े थे तो उत्तर प्रदेश की सरकार ने यह आदेश दिया था कि उनके जीवन की रक्षा के लिये जो भी धन की आवश्यकता हो वह दिया जाय। मुख्य मंत्री के समधी की चर्चा की गयी। वह इस देश के बहुत बड़े न्यायाधीश, चीफ जस्टिस थे। वह स्वयं इस हैसियत क थे कि अपना इलाज इंग्लैंड और अमरीका में करा सकते थे। मुख्य मंत्री का रिश्तेदार बनने के बाद बीमार पड़ने पर क्या उन्हें अपना इलाज भी कराने का हक नहीं था ?

श्री मुहम्मद असरार अहमद—

हिटलर ने तो यहूदियों को निकाला, बुरा किया। लेकिन रूस ने यहूदियों को निकाला तो नाता जोड़ा ?

श्री रामायण राय—

चौधरी साहब की अपनी मान्यतायें हैं। वह कोआपरेटिव फार्मिगं को नहीं पसन्द करते। स्वर्गीय पं० जवाहरलाल के बारे में उन्हें कहा कि उन्होंने बड़ी बड़ी बेसिक इंडस्ट्रीज पब्लिक सेक्टर में क्यों खड़ी कीं। मैं जानता हूं क्यों आप ऐसा कहते हैं। असवान बांध बनाने के लिये अमरीका का मुआहिदा था। वह मुकर गया। रूस ने मदद की। अब अमरीका के इशारे पर अगर हमारी सरकार न चले तो वह गुनाह है। हमारे देश में इंडस्ट्रीज को अमरीका एक जमाने मे मदद करना चाहता था। मगर वह चाहता था कि हम केवल कंज्यूमर गुड्स की फैक्टरीज ही लगायें, बल्कि इंडस्ट्रीज पर पैसा न खर्च करें। तो प्रतिक्रियावादी के वह प्रतीक रहे हैं और जातिवाद के वह बहुत बड़े चैम्पियन रहे हैं। यह उनको मुबारक हो। इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनके प्रस्ताव की घोर घोर निन्दा करता हूं।

श्री अध्यक्ष—

माननीय जगदीश नारायण जी। आपको ८ मिनट का मौका है।

*श्री जगदीश नरायन त्रिपाठी (जिला मैनपुरी)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी यहां अविश्वास के प्रस्ताव पर बहुत ही गरमागरम चर्चा हुई और समूचे सदन ने देखा कि दोनों पक्षों के कारनामों की किस तरह से छीछालेदर यहां हुई। भारत सरकार और राज्य सरकार की गलत नीतियों के कारण आज प्रदेश और

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

देश में गम्भीर संकट पैदा हो गया है। हमारा प्रदेश आज एक भयंकर संकट के दौर से गुजर रहा है। यह बात बिलकुल सही है और इसमें दो मत नहीं हो सकते। पर सवाल यह है कि हमारे राज्य की यह हालत हुई कैसे? इसका कारण यह है कि आजादी के बाद से हमारे यहां विकास के लिये जो रास्ता अपनाया गया वह पूंजीवादी रास्ता था। इस रास्ते पर चलने के लिये जहां शासक दल के लोग जिम्मेदार हैं वहां विरोध पक्ष के हमारे बहुत से साथी भी उतने ही जिम्मेदार हैं। इसलिये आज हमें विचार यह करना चाहिये कि प्रदेश की जो हालत हुई है उसके कारण क्या हैं।

मैं कुछ घटनाओं की ओर विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूं। इस राज्य सरकार द्वारा घोषणायें तो बहुत होती हैं मगर उन पर अमल नहीं होता है। सरकार की नीति मजदूर विरोधी रही है और उसी के कारण आज एक के बाद एक विभाग में धीरे-धीरे छटनी होती चली जा रही है, हजारों मजदूर बेकार होते चले जा रहे हैं। मजदूरों के वेतन से जबरदस्ती कटौती की जा रही है और सरकार कहती है कि यह स्वेच्छा पर है। हर विभाग में कटौती अनिवार्य रूप से हो रही है। यह बातें ऐसी हैं जिनसे पता चलता है कि सरकार को नीति मजदूर विरोधी है।

सवा ६ एकड़ तक लगान फिर से लगाने का जो कानून इस सरकार ने अभी पास किया इससे स्पष्ट पता चलता है कि यह सरकार किसानों की कितनी हिमायती है। जहां तक भूमिहीनों को जमीन देने की बात है उसमें भी सरकार सफल नहीं हुई है। मैं अपने मैनपुरी जिले के बारे में बता रहा हूं कि वहां ५० लोग रोज जिलाधीश के कार्यालय के सामने धरना देकर बैठते हैं और मांग की जा रही है कि भूमि हीनों को सही मानी में जमीन दी जाय। वहां गलत लोगों को पट्टे पर जमीन दे दी गयी है, गलत आदमियों का जमीन पर कब्जा है और सरकार कुछ नहीं कर रही है।

बांदा जिले के अत्याचार का जिक्र यहां सदन में हो चुका है। बबेरू थाने में थानेदार ने एक शिवप्रसाद नाम नवयुवक को पकड़ कर उसकी हजामत बनवायी, गले में जूतों की माला पहनायी, जबरन अप्राकृतिक बलात्कार उसके साथ किया, उसके गुप्तांग में जहर डाला गया, आदि-आदि बातें पुलिस ने कीं। राज्य सरकार को शिकायत की गयी, मगर सरकार ने कोई कार्यवाही वहां के थानेदार के खिलाफ नहीं की।

पीलीभीत की घटना को ही ले लीजिये। वहा अल्पमत के लोगों के साथ कितना अत्याचार किया गया, लूटपाट की गयी, करीब १० लाख का नुकसान हुआ, मगर सरकार की ओर से कोई भी प्रभावशाली कदम आज तक नहीं उठाया गया। सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

मैं अंत में यह कहना चाहता हूं कि सरकार ने विकास का जो रास्ता अख्तियार किया उसकी दिशा गलत थी। यह अविश्वास का प्रस्ताव जो पेश किया गया है वह महल इस सरकार को गिराकर किसी दूसरी सरकार को प्रतिष्ठित करने का नहीं है, यह प्रस्ताव सही माने में हमारे राष्ट्र के लिये एक चुनौती है। तमाम समाजवादी ताकतों को चाहिये कि वे सब इन देश के किसानों और जमदूरों के लिये लड़ाई लड़ें और उनकी सरकार यहां आवे। आज हमारे सदन की स्थिति ऐसी है कि अगर यह प्रस्ताव पास हो जाता है तो उसकी जगह विकल्प क्या है। इसका विकल्प तो यही होता कि कोई प्रगतिशील सरकार आती, मजदूर वर्ग की पक्षपाती सरकार आती जो समाजवाद के रास्ते पर चलने वाली होती और फिर उसका हम आंख मूंद कर समर्थन करते। लेकिन आज की स्थिति तो यह है कि अगर यह सरकार जाती है तो उसके स्थान पर गरीबों को राहत देने वाली सरकार नहीं आयेगी बल्कि ऐसी सरकार आयेगी जिसकी वजह से देश में फासिज्म आयेगा। कांग्रेस पार्टी की जो नीति है उसको मैं आपके माध्यम से बहुत संक्षेप में सदन के सामने रखना चाहता हूं। आप जानते हैं कि इस सरकार की जगह विकल्प में ऐसी सरकार लाने की कोशिश कर रहे हैं जो जनता विरोधी नीतियों से संघर्ष कर सके और इसके लिये लड़ाई लड़ते हैं। आज हमारा देश इस तरह से दो शिविरों

[श्री जगदीश नरायन त्रिपाठी]

में बंटा हुआ है। एक शिविर तो प्रगतिशील लोगों का है जिनमें किसान मजदूर हैं और दूसरे शिविर में, प्रतिगामी शक्तियां हैं जो समाजवाबद विरोधी हैं।

यह कहा गया कि कम्युनिस्ट पार्टी ने किसी दल से सगाई कर ली लेकिन सारी दुनिया जानतीहै कि उसका क्रान्तिकारी इतिहास इस बात का गवाह है कि कम्युनिस्ट पार्टी किसी से शादी व्याह नहीं रचाती। वहतो इस देश के अन्दर इनक्लाब लाने के लिये लड़ रही है और इनक्लाब के रास्ते पर आगे बढ़ रही है लेकिन हमें एक खतरा उन ताकतों से जरूर है जिन्होंने अमेरिकन साम्राज्यवादियों से अपना रिश्ता जोड़ रखा है, शादी की है। इसलिये मान्यवर, मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि जितने भी प्रगतिलील लोग हैं वे समाज विरोधी ताकतों से इस देश की रक्षा के लिये कंधे से कंधा मिला कर एक होकर इस अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करें।

(चौधरी चरण सिंह के खड़े होने पर।)

श्री अध्यक्ष—

आपके दल का अब केवल १६ मिनट बाकी है। ३ घंटे समय में से २ घंटे ४४ मिनट आपका दल ले चुका है। कोई और बोलना चाहे तो बोल ले या आप चाहें तो इसका जवाब दे सकतेहैं।

चौधरी चरण सिंह—

और कोई नहीं बोलेगा।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

यह नियम मेरे लिये न लगाया जाय।

श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी (जिला लखनऊ)—

अध्यक्ष जी, आप महिलाओं को बोलने के लिये इजाजत दीजियेगा कि नहीं दीजियेगा?

श्री अध्यक्ष—

आप खड़ी नहीं होतीं तो हम क्या करें?

सवाल यह है कि ३ घंटे का समय बढ़ाना चाहिये। उसमें मुख्य मंत्री जी सवा घंटे, माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी जी ४५ मिनट चाहेंगे तथा और लोग भी कुछ समय चाहेंगे। अब समय नहीं है। (व्यवधान)

आप सब अभी बैठ जायं।

सवाल यह है कि अब ५ बजे के बाद माननीय संसदीय कार्य मंत्री समय बढ़ाने का, प्रस्ताव रखगे तब २ घंटे का समय बढ़ सकेगा न?

वित्त मंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)—

मान्यवर, मैं प्रस्ताव करता हूं कि आज २ घंटे के लिये सदन का समय बढ़ा दिया जाय।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि आज सदन का समय २ घंटे के लिये बढ़ा दिया जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

(इस समय 5 बजे अधिष्ठाता श्री मुहम्मद असरार अहमद पीठासीन हुये।)

चौधरी चरण सिंह—

मैं समय के बारे में सहमत हूं।

श्रीमती स्वरुप कुमारी बख्शी—

अधिष्ठाता महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। महिलाओं को भी बोलने की इजाजत मिलनी चाहिये।

श्री अधिष्ठाता—

वह तो आप अपने नेता से कहिये, आप तिवारी जी से कहिये।

श्रीमती स्वरुप कुमारी बख्शी —

अधिष्ठाता महोदय, महिलाओं को आपसे बड़ी आशा है। मान्यवर, पूरी आशा है। मुझे भी समय मिलना चाहिये ?

श्री अधिष्ठाता—

मैं इजाजत नहीं देता। आपको जो समय दिया गया है उसमें सवा घंटा मुख्य मंत्री जी लेंगे।

*चौधरी चरण सिंह—

(सदन में हल्का शोर होने पर)

आप लोग शांत रहिये।

अधिष्ठाता महोदय, मैं आपसे समय न चाहता। अगर मैंने जो तकरीर की थी उसकी आलोचना तक ही माननीय रामायण राय अपने को महदूद रखते। वह बहस तक ही महदूद रखते। अधिष्ठाता महोदय. . . . . .

(नेता विरोधी दल के कुछ देर तक चुप रहने पर—हंसी)

अधिष्ठाता महोदय, रामायण राय जी ने यह कहा कि, चरण सिंह ने यह नहीं किया वह नहीं किया। मान्यवर बहुत सी उन्होंने मेरी कमियां बतायी हैं। मैं इसका जिक्र न करता अगर वहमेरे ऊपर इल्जाम न लगाते कि मैं कुलक का साथी हूं मुझे याद है कल मैंने कुछ बातों का जमींदारी एबोलीशन के सिलसिले में जिक्र किया था। इसपर मुझे आरोप लगाया गया, इसलिये मैं बोला।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि फर्ज कर लें कि मेरी कुछ गल्तियां हैं, कुछ बेईमानियां हैं। तो मैं तो इस बात के लिये तैयार था और तैयार हूं और तैयार रहूंगा कि उनकी तहकीकात कर ली जाय। मैं यह बात पहले भी कह चुका हूं। रोज रोज इसका जिक्र करना बेकार है।

(एक सदस्य के कुछ कहने पर—आप न बोलें—न बोलें की आवाजें।)

अधिष्ठाता महोदय, यह बात नहीं है कि मैंने क्या किया, आज सवाल यह है कि किसी की गल्ती है। आप लोगों ने गल्ती की है इसलिये आप लोगों के खिलाफ 'नो कांफीडेंस' मोशन है। इस पर आप यह जवाब देरहे हैं कि हमने यह किया, हमने वह किया और विरोधी दल पर यह चार्ज था, हमने डाका डाला था यह जवाब नहीं है इस समय मुझ पर चार्ज लगाये जा रहे हैं जबकि यह समय मुझे पर चार्जलगाने का नहीं है। आपके ऊपर जो आरोप लगाये जाते हैं आपको उनका जवाब देना चाहिये। हो यह रहा है कि मेरे ऊपर चार्ज लगाये जा रहे हैं। मैं तो पहले ही कह चुका हूं कि उनकी तहकीकात हो जाय,पर आप एक्सेप्ट नहीं करते हैं। हमने जो आप पर इलजाम लगाये हैं. . . . . .

श्री राम लाल राही (जिला सीतापुर)—

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

(इस समय ५ बजकर ५ मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

चौधरी चरण सिंह—

आपने क्या कहा, फिरसे फरमाइये। मैंने नहीं सुना।

(माननीय सदस्यों, ने बताया कि यह कह रहे हैं कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[चौधरी चरण सिंह]

यही तो गल्ती है, सारे उधर बैठे हुये लोग इधर को डांट रहे हैं।

हम चार्ज लगा रहे हैं आप पर, हम कहते हैं कि तहकीकात करवा लो। यह राजी होने के बजाय इधर चार्ज लगा रहे हैं। मैं चार्ज से भागता नहीं हूं। इसलिये वह चाज गलत हैं।

एक चार्ज है कि चौधरी साहब बिरादरी के लीडर होने के नाते बढ़े हैं। मैं वह बताना चाहता हूं कि मैं जन्म से ही बिरादरी के प्रचार के खिलाफ हूं। १९६९, १९७२ और १९७४ इन सब मैनीफेस्टों में जाति बिरादरी के खिलाफ हूं। मैं जानना चाहूंगा कि कांग्रेस के मैनीफेस्टों में जाति बिरादरी को मिटाने का है कि नहीं? कांग्रस में महात्मा गांधी तथा उनके और पहले के लीडरों के मैनीफेस्टों को मानते हैं। यदि माननीय सदस्य जानना चाहते हैं तो मैंने पं० जवाहर लाल नेहरू जी को ३ सफे का नोट बिरादरी को मिटाने के खिलाफ लिखा था जिसको कि देख सकते हैं। पं० सम्पूर्णा नन्द, पंत जी और गुप्ता जी को हमने जाति बिरादरी के खिलाफ लिखा है कि जिसको कि फाइलों में देख सकते हैं परन्तु बिरादरी मिटाने को वह राजी नहीं हुये। इन्दिरा गांधी जी से भी कहा कि यह बिरादरी सबसे ज्यादा इविल है उसको मिटाना चाहिये परन्तु वह भी तैयार नहीं हुयीं। कांग्रेस के लीडर इसके लिये भी तैयार नहीं हुये कि शिक्षा संस्थाओं कालेजों, स्कूलों से बिरादरी का नाम हटा दिया जाय। हमने अपने समय में पहली मीटिंग में दो काम किये हैं—एक तो स्कूल और कालेज जो नाम पर हैं उसको समाप्त किया जाय नहीं तो उस स्कूल या कालेज की ग्रान्ट बन्द कर दी जाय। परन्तु इसके लिये भी कांग्रेस तैयार नहीं हुयी। इसलिये जो खुद बिरादरी में शराबोर हैं वह उल्टे इल्जाम लगाने को तैयार हैं। यदि एक भी बात इनमें सही न हो तो मैं इस्तीफा दे देने को तैयार हूं। रामायण राय जी आप बिना सोचे समझे बात कह देते हैं। आपने हाऊस को मिसलीड करने की कोशिश की है इसलिये चाजों को मैं पढ़ देता हूं। पढ़ने से पहले दावा करता हूं कि जो अच्छे शब्द किताब में कहे गये हैं वह किस व्यक्ति द्वारा कहे गये हैं यह जान लें। किताब के २–४ उद्धरण पढे देता हूं।

श्री रामायण राय—

चौधरी साहब मैंने जो पंक्ति पढ़ी है वह हैं कि नहीं।

चौधरी चरण सिंह—

उसम आपने न पहली पढ़ी है और न अगली।

एक सदस्य—

आनरेरी मैजिस्ट्रेट जब मारे गये थे तो चौधरी साहब आपको याद है कि नहीं।

चौधरी चरण सिंह—

मान्यवर, ६ अप्रैल को आनरेरी मैजिस्ट्रेट की प्रथा जो गंदी हो चुकी थी वह १९६७ में एस० वी० डी० गवर्नमेन्ट ने समाप्त किया। दूसरे जो रेजोलूशन कैबिनेट का पास हुआ वह था कि जितने स्कूलों और कालेजों पर बिरादरी का नाम लिखा हुआ है उनको बिरादरी का नाम हटा लेनाचाहिये क्योंकि इससे बच्चों के दिमाग में यह बिरादरी की बात घुस जाती है।

३० जून तक का मौका दिया कि ३० जून तक बिरादरी का नाम नहीं हटाओगे तो सरकार फाइनेन्सिअल एड समाप्त कर देगी। इसका कांग्रेस के लोगों ने विरोध किया था। अब जो बिरादरी वाली बात आपने कही उसका पैराग्राफ पढूंगा। वह यह कहते हैं:

"Chaudhuri Sahib, as he is reverentially called by his followers, has been an unusually successful faction leader in Uttar Pradesh politics. Inspired less by a desire for power than by an invincible belief in the rightness of his actions and policies, Charan Singh seeks neither friend nor favour and gives no quarter to those who oppose him."

बजाय इसके कि सत्ता से प्रेरित हो वह इसके लिये प्रेरित हैं कि अपना विश्वास सही समझता है। न किसी की दोस्ती की परवा करता है और न किसी की रियायत करता है। जो उसके विरोधी हैं उनको भी कोई रियायत नहीं देता है। आगे जो लिखा है उसको मैं छोड़े देता हूं।

आगे कहता है :

"Charan Singh has many of the qualities of the ideal Indian faction leader. He is known for his intellectual abilities and has a reputation for integrity. No one has ever charged him with a desire for material advantages for himself. The major criticisms levelled against Charan Singh as a party leader are that he is proud by nature and uncompromising in is relations with others."

मुझे अफसोस है कि मुझे यह अपनी जबान से पढ़ना पड़ रहा है। मैंने इसको नहीं पढ़ा था लेकिन आपने हवाला दिया है इसलिये पढ़ना पड़ा है। आजतक मुझ पर यह आरोप नहीं लगा है कि अपने हित केलिये काम किया है। किसी दूसरे लीडर के लिये इतना अच्छा इसमें नहीं कहा गया है।

श्री रामायण राय—

मैं छोटा सा आदमी हूं। कहिये तो अपनी तारीफ भी इसमें से सुना दूं।

चौधरी चरण सिंह—

देवरिया का मैं सुना दूंगा। वह यह है कि बिरादरी विशेष के लीडर्स ने अपने लोगों को बढ़ाया है इसलिये ५२ से सोशलिस्ट पार्टी कांग्रेस को हराती आ रही है। इसलिये कांग्रेस ५ सीटें चुनाव में हार गई है।

श्री रामायण राय—

५ प्रतिशत भूमिहार हैं देवरिया जिले में ?

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

आप वही व्यक्ति हैं जो १९६९ में हार गये थे और ब्लाक में ५ वर्ष तक जमे रहे।

श्री चौधरी चरण सिंह—

The major criticisms levelled against Charan Singh as a party leader are that he is proud by nature and uncompromising in his relations with others.

यह स्वाभिमानी व्यक्ति है। दूसरों से फैसला नहीं करता।

.The following description of Charan Singh by a Congressman of Meerut district is typical of the comments made by his opponents:---

उनके मेरठ के विरोधी, जो कांग्रेस के हैं, वे क्या कहते हैं, उसका उदाहरण देता हूं।

He is not accommodating, not being accommodating is not a virtue of a politician.

कि वह वसूलों से समझौता नहीं करते वह कांग्रेस मेन कहते हैं कि किसी के साथ समझौता न करना, यह पोलिटिक्स में अच्छी चीज नहीं है।

He is not even accommodating to his own people to the extent he should be.

[चौधरी चरण सिंह]

अपने आदमियों के साथ भी रियायत नहीं करते ।

अब आपका क्या क्वेश्चन है ?

एक सदस्य—

मान्यवर व्यवस्था का प्रश्न है ।

(शोर)

श्री मुहम्मद असरार अहमद—

मान्यवर, मेरा भी व्यवस्था का प्रश्न है कि इन्होंने कोई व्यवस्था की किताब पढ़ी ही नहीं ।

चौधरी चरण सिंह—

फिर आगे है

..Most faction leaders in the district and state Congress party use their community to stepping stones to political power.

डिस्ट्रिक्ट और सूबे के स्टेट कांग्रेस के लीडर्स में है और—

पोलिटिकल पावर हासिल करने के लिये अपनी बिरादरी के प्रभाव को इस्तेमाल करते हैं ।

Still the reputation that a politician has within his own community is only a prerequisite for power.

लेकिन यह पहली शर्त है । अब आगे क्या कहते हैं ।

In addition, aspiring faction leader must be able to talk to and share power with factional leaders from their social groups.

(शोर)

गाली देते हैं तो सुन तो लें ।

श्री अध्यक्ष—

अब हो गया. . . . . .

चौधरी चरण सिंह—

आप १० मिनट त्रिपाठी जी के समय से काट लें, लेकिन मुझको सुन तो लें ।

(व्यवधान)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

समय तो उतना ही चाहिये जितना कि मुख्य मंत्री जी को जवाब केलिये चाहिये।

चौधरी चरण सिंह—

In addition the aspiring faction leader must be able to talk to and share power with faction leaders from other social groups.

जो सोशल लीडर हैं उसको दूसरे फैक्शनल लीडर, दूसरी बिरादरियों के साथ में मिलकर चलना चाहिये । मिसाल के तौर पर आगे इसमें कहते हैं :—

Thus, in Meerut district, Chaudhri Charan Singh initially came prominence as a leader of his jat community. But Charan Singh cannot control the Meerut Congress on the basis of Jat support alone.

अगर्चे यह रीडिंग उसकी गलत है लेकिन जो सबके लिये बात यह लिखी गयी है मेरे लिये भी लिख दी है ।

एक सदस्य—

आपके माफिक सारी बातें सही थीं लेकिन इतनी बात जो आपके खिलाफ पड़ती हैं वह उसने गलत लिख दीं ?

चौधरी चरण सिंह—

To maintain power, Charn has allied with other community leaders. Those who have opposed Charan Singh have also had to seek inter community alliances.

उन्होंने कहा कि यह कास्टरिडन सोसाइटी पालीटिक्स में भी अपनी बिरादरी को सपोर्ट करने में बहुत बड़ा हिस्सा होता है लेकिन दूसरी बिरादरियों को अपने साथ लेकर ही कोई जिले या स्टेट लेबिल पर कामयाब हो सकता है। कास्ट से प्रेरित पालिटिक्स को हटाने के लिये जो मैंने सुझाव दिये रामायण जी उन पर अमल करने के लिये तैयार नहीं हैं। वह स्वयं अपने आप बिरादरीवाद की बीमारी से पीड़ित हैं और दूसरों पर इल्जाम लगाते हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, कल से आज तक इस माननीय सदन ने इस सरकार के सम्बन्ध में विश्वास और अविश्वास दोनों की चर्चा सुनी। कुछ माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किये राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से। कुछ माननीय सदस्यों ने अपनी दिलचस्पी नीतियों के सम्बन्ध में और कुछ लोगों ने व्यक्तिगत स्तर पर कुछ बातें कहीं। मैं शुरू करूंगा उस बात से जहां माननीय चौधरी चरण सिंह ने अपनी बात शुरू की थी। उन्होंने दो बातें कही थीं। एक तो इस बात पर गुस्सा था कि प्रजातंत्र कैसे कायम रहेगा जब विरोधी दल की इज्जत यह सरकार नहीं करती और उसको मान्यता नहीं देती और उदारहण के लिये उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि इंग्लैंड में हिज मेजस्टीज गवर्नमेंट और हिज मेजस्टीज अपोजीशन होता है लेकिन भारत में चाहे वह दिल्ली हो या उत्तर प्रदेश विरोधी दल की कोई कद्र सरकार नहीं करती और अगर नहीं करती तो प्रजातंत्र का कायम रहना कैसे मुमकिन होगा ? मुझे खुशी है कि चौधरी साहब को प्रजातंत्र के लिये उतनी पीड़ा है जितनी बाजिब होनी चाहिये।

इसके लिये उन्होंने दो सबूत दिये। एक उन्होंने यह कहा कि प्रधान मंत्री जी ने विरोधी दलों को क्या कुछ नहीं कहा और अखबारों की चर्चा की जिनमें कि कुत्ता और बिल्ली तक इनके लिये छपा। नवजीवन और जागरण में जिन दो अखबारों में पहले दिन यह चर्चा छपी थी। नवजीवन में जो कि १९ दिसम्बर का है उसमें भूल सुधार हेडिंग से निकला है—यह प्रथम पृष्ठ पर है। "प्रधान मंत्री के गत रविवार के भाषण के उस अंश का समाचार देते हुये, जिसमें उन्होंने कांग्रेस की तुलना हाथी से की थी, हमारे संवाददाता ने भूल से लिख दिया कि उन्होंने आन्दोलन करने वालों को कुत्ता–बिल्ली की संज्ञा दी। प्रधान मंत्री ने यह नहीं कहा था। उन्होंने इस संदर्भ में विरोधी दलों या आन्दोलनकारियों का जिक्र नहीं किया था। इस भूल के लिये हमें खेद है।

एक सदस्य—

यह कांग्रेसी अखबार है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं भी कांग्रेसी आदमी हूं जो बोल रहा हूं। आप भालोद के हैं इसलिये ब्रह्मा बोल रहे हैं और मैं कांग्रेस का हूं इसलिये शैतान बोल रहा हूं यह मैं नहीं कह सकता हूं। एक चीज भूल सुधार के रूप में वह चीज सार्वजनिक रूप में आ गई तब भी आप न मानें तो क्या किया जाय। दूसरी बात मान्यवर, यह है कि मैं भी स्वयं उस रैली में मौजूद था। ऐसी बात नहीं कही गई। इस माननीय सदन की एक परम्परा पहले थी कि अगर कोई सदस्य यह कहे कि ऐसा नहीं हुआ तो उसे सब लोगों को मान लेना चाहिये। यह परम्परा सन् ५२ से ५७ और ५७ से ६२ तथा.....

एक सदस्य—

कहने वाले तो कहते ही हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, एक दूसरी जगह "दैनिक जागरण" जो कि २० दिसम्बर का है, में भी इस सम्बन्ध में कहा गया है कि "मुख्य मंत्री ने एक वक्तव्य में कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित इस आशय के समाचारों का खन्डन किया कि प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विरोधी दलों अथवा आन्दोलन करने वाले को कुत्तों और बिल्ली की संज्ञा दी"।

चौधरी चरण सिंह—

यह कौन सी तारीख में छपा है, क्यों कि हो सकता है कि जब १८ तारीख को हमने शिकायत की तो उसके बाद निकाला हो ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

यह १९ तारीख के अखबार में छपा है। हमारे सामने जब आया तब हमने उसका स्पष्टीकरण दिया। (विरोध पक्ष के एक माननीय सदस्य के खड़े होने पर) . . . . . आप सब लोगों ने कुल मिलाकर जितना बोला है मैं मुश्किल से उसका १/५ भी नहीं बोलूंगा। प्रश्न यह है कि कल राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी जी ने कहा था कि आप टेप सुन लीजिये। वह टेप हुआ है। आपने यह नहीं कहा कि हम उसे नहीं सुनेंगे। उस टेप को आप अवश्य सुन लें ताकि हमेशा के लिये किस्सा खतम हो जाय। इसलिये नहीं सुनवाना चाहता हूं कि कोई बड़ा काम या मैं समझता हूं कि सचमुच उधर से प्रजातंत्र को मजबूत करने के लिये यह बात उठायी जा रही है क्यों कि मैं समझता हूं कि आज सारे उत्तर प्रदेश में या पूरे भारत में राजनीति की कैसी शक्ल बिगाड़ रखी है। कुछ लोग या दल जिनकी कोई नीति नहीं है कोई बुनियादी बात नहीं है तो वे व्यक्ति को पकड़ते हैं। यदि किसी की गर्दन पकड़ नहीं मिली तो पल्लू पकड़ लिया। पकड़ जरूर लिया। कोई दल या नेता उसकी नीतियों के द्वारा मुखरित होता है। अनीति से कोई नेता नहीं होता। (व्यवधान) नीति, नेता और झंडा एक ही होना चाहिये। चौधरी साहब के दल के जितने लोग हैं वे चौधरी साहब के बराबर हो जायं तो मुझे बड़ी खुशी है। यह एलान वे ही करें, मैं तो नहीं कह सकता हूं। जो किताब उन्होंने पढ़ी, वह उन्हीं पर खरी उतरती है तो उन्हें बधाई है। मेरा दावा यह नहीं है। हम मनुष्य हैं और हमारे साथ के लोग बराबर नहीं हैं। महात्मा गांधी के बराबर हम नहीं हैं, जवाहर लाल नेहरू के बराबर हम नहीं हैं, इंदिरा गांधी के बराबर हम नहीं हैं। हम जिस कद के हैं, हम अपने कद से वाकिफ हैं उसमें कोई गलतफहमी नहीं है कि हमारा कद लम्बा हो गया है। महज कद लम्बा होने से भी बात नहीं बनती है। अगर राष्ट्र की सेवा करते-करते इस पद पर पहुंच गये तो उसमें भी हम अपने कद से वाकिफ हैं। बहरहाल मैं उस बात का जिक्र कर रहा हूं कि प्रजातंत्र के लिये क्या चीज जरूरी है। पहली बात का तो मैंने जबाब दे दिया है।

दूसरा इन्होंने कहा कि प्रजातंत्र कैसे कायम रहेगा जब ३८ परसेंट वालों को ६२ परसेंट वाले कह नहीं सकते हैं कि चले जाओ। तो ऐसा है जो हमारा संविधान है, मान्यवर यह बात चौधरी साहब ने कही और दूसरे माननीय सदस्यों ने भी कही, जो उस संविधान को मानते हैं उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा। जिन्होंने संविधान को बनाया, जो उस कांस्टीटुवेंट एसेम्बली में रहे होंगे उन्होंने इस बात को सोचा होगा और जो यहां उस संविधान की कसम खाकर बैठते हैं वह भी जानते हैं। मैं जानना चाहता हूं उन्होंने ६८ परसेंट में जो ३ परसेंट छोड़ दिया है उसमें कौन आते हैं। मैं नहीं जानता शायद उसमें ३ परसेंट वाले कम्युनिस्ट पार्टी वालों को छोड़ा हो, सी० पी० एम० वालों को छोड़ा हो (व्यवधान) उस ६५ परसेंट में से भी ६३ परसेंट ही रह गये। (व्यवधान) चौधरी साहब तो कभी मिलेंगे नहीं क्योंकि कांग्रेस का उसमें इतना असर है। आप आकर अगर भालोद से मिल जायं अगर आप जनसंघ को समाप्त कर सकते हैं तो मुझे बड़ी खुशी होगी और तब आप ५८ फीसदी नहीं ५१ फीसदी भी ले आयें तो मैं मान लूंगा। मेरे माननीय मित्र बोल रहे हैं ५१ फीसदी

की बात कहते हैं। अगर हिसाब देखा जाय तो उसमें ४९ फीसदी भी हैं ४० फीसदी भी हैं मैंने बड़े-बड़े लीडरों का हिसाब देखा है जो ५१ फीसदी में कभी नहीं आये और ५० फीसदी में नहीं आये और ४० और ४८ फीसदी में आये और तब भी बैठे हैं और उन्होंने जनप्रतिनिधित्व किया है। तो हमारे संविधान में जो आज कांग्रेस को सबसे बड़ी कठिनाई है वह विरोधी दल की एकता न होने से है जो कि व्यवस्थित नहीं है। तो उसमें हमारा कोई कसूर नहीं है और उस हालत में लीडर आफ दि अपोजिशन मुझको ही बना दिया जाय और चौधरी साहब को बरखास्त कर दिया जाय तो उसमें मेरी जिम्मेदारी नहीं है। यह जिम्मेदारी विरोधी दल कि वह एक संगठित विरोधी दल की रचना करे और अगर वह इस तरह की रचना नहीं करता है तो शासन के ऊपर उसका दोष डालना वाजिब नहीं होगा।

श्रीमती गायत्री देवी (जिला मथुरा)—

लेकिन कांग्रेस वाले तो लोगों को रुपये दे देकर खरीद लेते हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

शायद चौधरी साहब ने कहा होता तो मैं कुछ कहता। आपको मैं माता जी कहता हूं और इसका कोई उत्तर नहीं करूंगा। जब कभी कुछ बोला नहीं है तो मेरा धर्म है कि मैं उत्तर न करूं और सिर्फ इतना ही कह सकता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि ऐसा कोई काम नहीं किया है जिसका फैसला वह कर रही हैं।

दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि वह कहते हैं कि इलेक्शन में रिग किया गया और कहते हैं कि अगर नहीं किया गया तो उसके लिए आयोग बैठाया जाय। हर चीज में कहते हैं अगर ऐसा नहीं है तो आयोग बैठाया जाय। अगर ऐसा हो, तो आयोग का कब्रिस्तान हो जायेगा और बाकी काम कुछ नहीं हो पायेंगे। सिर्फ उसी काम में लगे रहेंगे। अगर ऐसी बात है तो उसके लिये इलेक्शन पेटीशन का रास्ता खुला है उसके अलावा और कोई रास्ता हमारे पास है नहीं। श्रीमन् जब रास्ता मौजूद है तो वहां आयोग बैठाने की क्या जरूरत है। यह जो १९७४ में चुनाव हुए हैं उसके ५१ केसेज इलेक्शन पीटीशन के पड़े हुए हैं हाई कोर्ट में।

श्री मोती लाल देहलवी (जिला कानपुर)—

अध्यक्ष महोदय, मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं, श्री राजनारायण जी ने प्रधान मंत्री इंदिरा नेहरू गांधी के खिलाफ इलेक्शन पीटीशन किया है जिसमें यह कहा गया है कि श्री यशपाल कपूर जो सरकारी सेवा में थे जिनके लिये कहा गया है कि सरकारी सेवा में नहीं थे और उन्होंने चुनाव का संचालन नहीं किया तो क्या यह सही है और उन्होंने चुनाव का संचालन नहीं किया है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, मोतीलाल देहलवी जी तो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हैं और मैं प्रक्रिया नियमावली में बंधा हुआ हूं। जो चीज कोर्ट में आ जाती है, उसका निर्णय कोर्ट देगी। यदि देहलवी जी कहते हैं कि मेरे ऊपर फैसला है यदि उसे वह मान लें तो मैं बोलूं।

चौधरी चरण सिंह—

इनको कहना यह चाहिए था कि उसमें ४ साल लग गये। हर पिटीशन में यह होता है, रुपया हजारों लगता है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

यह कहा जाए कि मोदीनगर का कब आपने आयोग बिठाया था और कब उसका फैसला आया, तो आपका क्या जवाब होगा ? तो आयोगों और एलेक्शन पिटीशन में हमेशा समय लगता है, क्योंकि उसका जूडिशियल प्रोसीजर है। हम कोर्ट को डंडे मारकर नहीं कह सकते हैं कि जल्दी करो। इन्दिरा जी के खिलाफ जो पिटीशन है, उस सम्बन्ध में मैं जानना चाहता हूं कि राज नारायण जी कितने बार सुप्रीम कोर्ट गये, कितने बार वहां से जजमेंट लाए, किस-किस कारण से और कितने बार एडजर्नमेन्ट लिए गए ? मैं चौधरी साहब को बताऊंगा

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

कि पेटीशन चलते रहने में ज्यादा फायदा होता है बजाय फैसला होने के। जिसको फायदा होता है, वह चाहता है पेटीशन चलता रहे, पेटीशन चले, जिससे उनका फायदा बना रहे।

(व्यवधान)

जब उसका फैसला आएगा तो वास्तविकता सामने आ जाएगी। तो मैं कह रहा था आज ५१ पेटीशंस आयोग के सामने पेंडिंग हैं। इसमें से कांग्रेस के खिलाफ २० पेटीशंस हैं, बी० के० डी० के खिलाफ १२, जनसंघ के खिलाफ १४, कांग्रेस (ओ०) के खिलाफ २ और स्वतन्त्र के खिलाफ दो तथा सोशलिस्ट के खिलाफ एक पेटीशन है। मान्यवर, उपरोक्त में से कांग्रेसवालों की तरफ से सबसे ज्यादा पेटीशंस हैं। १७ कांग्रेस वालों ने पेटीशंस किए हैं. . .

(व्यवधान)

श्री धीरेन्द्र सहाय—

क्या इस सन्दर्भ में वह बताने की कृपा करेंगे कि जो चुनाव याचिका आर्डिनेन्स आया है, उसका क्या औचित्य है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, बहुत सारे सदस्य चौधरी साहब का अनुकरण इस बात में न करें। हम और वह, हम सब लोग छोटे लोग हैं। हम सब इसी सदन की बात करें तो वह अच्छी बात है। आप अखिल भारतीय न बनिए। चौधरी साहब तक वह सीमित रहने दीजिए।

अब मैं एक बात इस सम्बन्ध में रुपयों और चार्जेज के सिलसिले में कहना चाहता हूं। एक आदमी ने अपनी पार्टी से अलग होकर अपने दल के नेता के लिये कहा कि इनको सी० आई० ए० से रुपया मिलता है। तो हिन्दुस्तान में अपने-अपने तरह के लोग हैं, और अपने-अपने तरह से बात कहने वाले लोग हैं। लेकिन उनकी बात हर आदमी मानता नहीं है। तो यह अपनी-अपनी बात हमेशा से रही है।

चौधरी चरण सिंह—

पर्सनल एक्सप्लेनेशन, क्योंकि आपका रेफरेंश मेरे ऊपर है। वह आपकी पार्टी के अब मेम्बर बन चुके हैं। मैं उसमें भी चैलेंज करता हूं, आप इंक्वायरी करवा दो।

श्री राम अधार (जिला आजमगढ़)—

इलाहाबाद में एस० एल० मिश्रा ने कांग्रेस वालों को क्या कहा है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब में सेंसीविटी ज्यादा है, लेकिन रिऐक्टविटी ज्यादा नहीं होनी चाहिये। बुजुर्ग आदमी हैं, वह हमारी बात सुन लें, फिर बाद में भले कह दें। माधव बाबू का वह समय ले ही सकते हैं, इस बार भी ले सकते हैं। फिर मैं वहीं आता हूं, १७ जगह हमें शिकायतें हैं और बी० के० डी० यानी भालोद को १२ जगह शिकायतें हैं। तो जिस दल को ज्यादा शिकायत हैं, १७ जगह हैं दो सी पी आई, एक सी पी एम, जनसंघ पांच। तब भी माधव बाबू शामिल हो जायं तो शामिल बाजे वाली कहानी पसन्द नहीं आती है। उनकी अपनी धुन है, वह धुन बेसुरी सही, बेवक्त की सही, लेकिन वह धुन बजती रहेगी तो मालूम पड़ेगा कि कौन बोल रहा है। अगर शामिल बाजा हो जायेंगे, हर चीज हां हो, तो उचित नहीं होगा। तीन इंडेपेंडेंट कैंडीडेट्स ने कर रखा है। बाकी ८। कुल ५१ इस तरह के पेटीशंस हैं। १९७४ के चुनाव के एक पेटीशन का फैसला बड़ा इन्टरेस्टिंग है। उसमें हाईकोर्ट क्या वह लिखती है मैं सुनाना चाहता हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव (जिला इटावा)—

बंगाल में एक भी पेटीशन नहीं हुआ।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

भाई बंगाल पहुंच गये। माननीय चौधरी साहब को जाने दें। आप कहां जा रहे हो, मैनपुरी से यहां, यहां से मैनपुरी, ज्यादा नहीं जाना है। झगड़े में पड़ जायेंगे।

(व्यवधान)

इटावा सही। मैनपुरी भी जाते हैं कभी-कभी। लेकिन वहां तक जायं। एक हाईकोर्ट का जजमेंट है, शान्ति प्रपन्न शर्मा के पक्ष में हाईकोर्ट का फैसला है। कृपाल सिंह रावत का पेटीशन था। उसमें कृपाल सिंह ने कहा था कि चुनाव में रिग हुई है। जो मजबूत आदमी होता है उसे कुछ कह दें, हमारे दल को भी गुस्सा आता है, लेकिन जो कमजोर दल हैं, विरोधी दल कमजोर कहा जायगा, उनको ऐसा नहीं कहना चाहिये। कृपाल सिंह जी ने किया। किसी दल का हो। मैं नहीं कहना चाहता सब जानते हैं कि वह किस दल के हैं। उन्होंने अपने पेटीशन में हाईकोर्ट के सामने कहा कि चुनाव में शान्ति प्रपन्न ने सारे कैम्पों में वोट डलवा दिये, बैलट पेपर गड़बड़ करवा दिया और हमको हरवा दिया। हाईकोर्ट ने सारी बातें लिखी हैं और फैन्टास्टिक शब्द तक का इस्तेमाल किया है। उन्होंने कहा है जजमेंट में..

"That allegation on the face of it would have been fantastic. Learned counsel for the petitioner, therefore, contended that while stating in paragrph 7 that further equal number of ballot papers did not bear the seal and signatures of the presiding officers, the petitioner meant the same 25,000 as referred to earlier."

तो जो पेटीशंश हो रहे हैं रिगिंग के सिलसिले में, जो स्पेसिफिक चार्ज लगा, कृपाल सिंह वर्सेज शान्ति प्रपन्न शर्मा के केस में, मेरे पास सारा जजमेंट है, सारा पढ़ने का टाइम नहीं है, इसलिये मैं कोट करता हूं।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक--

सी० आई० ए० की आलोचना करनेवालों को पी० एल० ४८० के अन्तर्गत जो खैरात मिली है, उसमें उत्तर प्रदेश का कितना हिस्सा है?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

एक बात और कही गयी थी, जजेज के सिलसिले में चौधरी साहब ने कहा, शायद उनका सुप्रीम कोर्ट के जजेज से मतलब होगा, उन्होंने कहा कि जब जज अपने मन के बना दिये जायेंगे, अगर पेटीशन में दूसरी तरफ गड़बड़ कर दिया तो उसको सुपरसीड कर दिया जाता है। आज नहीं पतंजलि शास्त्री जब सुप्रीम कोर्ट का निर्माण हुआ था तो उसमें चीफ जस्टिस थे। न वह कम्युनिस्ट थे, न रिऐक्शनरी थे, न प्रोग्रेसिव थे। ट्रैडीशनल जज थे। तो उन्होंने और पांच अन्य जजों ने एक जजमेंट दिया था। उसमें लिखा कि जिस वक्त जज फैसला करता है उसकी सोशल फिलासफी उसके रास्ते में आती है, उसको गाइड करती है। उदाहरण के लिये एक आदमी अगर बराबर मजदूरों की तरफ से मुकदमा करता रहा है वकील की हैसियत से अगर वह जज बना दिया जायगा तो उसका माइंड ओवरहेलमिंगली प्रोलेबर रहेगा। इसी तरह से जो बिड़ला जी की बराबर वकालत करता रहेगा उन्हें अगर बेंच पर बिठा दिया जायेगा तो जो उसकी वकालत की ट्रेडीशन्स हैं उसके प्रति वह प्रो जरूर होगा। पतंजलि शास्त्री का यह जजमेंट मौजूद है। हम जब किसी जज को रखते हैं या इसको रिकमेंड करते हैं तो उसकी सोशल फिलासफी देखते हैं।

The social philosophy of the judge should be determinal in giving him a seat of power.

सुप्रीम कोर्ट एक तरह की थर्ड चैम्बर हो गई थी। हमने जजों को सुपरसीड करके ठीक कर दिया। आप देखिये अमेरिका के डेमोक्रेसी की बड़ी दुहाई दी जाती है और वहां की डेमोक्रेसी बहुत अच्छी मानी जाती है। वहां पर रूजवेल्ट ने जज से कहा था कि आप या मेरी बात मानिये और अपने जजमेंट को बदलिये।

(व्यवधान)

श्री बांके लाल—

आप बेसमझी की बात कर रहे हैं। मैं समझ रहा हूं।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मेरी बात चौधरी साहब तक पहुंच रही है।

चौधरी चरण सिंह—

मैं उनको रोक रहा हूं। उन जजों ने जिनसे उनको शिकायत थी, किसी पर्सनल केस में तो जजमेंट नहीं दिया।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

जहां तक उनको सुपरसीड करने की बात है क्या वह सब जजों में थी। आपका खयाल है कि इंदिरा जी के सिलसिले में जजेज सुपरसीड हुये। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि वे सोशल फिलासफी आफ दि जज की वजह से अलग हुये।

श्री सत्य पाल मलिक—

[* * *]

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

यह भी मेरी बात को साबित करती है। मैं उनकी कोई बात नहीं कहना चाहता हूं। अगर ऐसी बात आपको मालूम है तो आपको रिजोल्यूशन लाना चाहिये था। मेरी बात को आप भी मानते हैं कि यह सोशल फिलासफी आफ दि जज होती है। अगर आप नहीं चाहते हैं कि हम जिस डायरेक्शन में मुल्क को ले जा रहे हैं न ले जायं तो आप हमको उलट दीजिये। इस तरह की बात कहना वाजिब बात नहीं है। इससे जनतंत्र को मजबूती नहीं मिलती है। एक विद्वान ने कहा है कि जनतंत्र इक्वल वोट पर ही कायम नहीं है बल्कि इसका जितना सारा फ्रेम वर्क है सब में इक्वैलिटी होनी चाहिये तब जनतंत्र कायम रह सकता है। जो जनतंत्र के विरोधी हैं उनको लाने की जरूरत नहीं है।

श्री अध्यक्ष—

हाई कोर्ट जजेज के बारे में जो बात यहां आयी है उसको निकाल दिया जायेगा। यहां नहीं कहा जा सकता है।

श्री मधुकर दिघे (जिला गोरखपुर)—

सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के बदलने के लिये आर्डीनेंस लायेंगे।

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

एक बात कही गई कि यह गवर्नमेन्ट पावर आफ लेजिस्लेशन को इरोड कर रही है जो यह सदन है इसकी जो देखरेख की बात कही गयी है सरकारी कार्यक्रमों पर, वह सरकार निगम बना-बना कर ऐसा करती रही है, जिसमें इस सदन की देख-रेख कम हो जाय, उसमें मान्यवर, मुझे यह कहना है कि आपका सबसे पहला कारपोरेशन कहां बना ? गवर्नमेंट का निगम कहां बना ? यह बिजली का निगम सबसे पहले बना और सबसे पहले आस्ट्रेलिया में बना और आज तक चला आ रहा है। निगम हमने भी बनाया। जब यह निगम बन रहा था, तब हमने कहा था कि ज्वाइन्ट निगम बने, जैसे पी० ए० सी० बनती है। पी० ए० सी० जैसे सरकारी विभागों की छानबीन करके हाउस में अपनी रिपोर्ट देती है और हाउस में उस पर डिस्कशन होता है, उसी प्रकार से इन निगमों पर भी एक कमेटी दोनों सदनों की हो। मैंने इन दोनों सदनों की एक समिति बना कर पब्लिक अंडरटेकिंग कमेटी बनवाया और हमने उसका प्रस्ताव खुद किया। मैंने इसलिये नहीं किया कि मुझ पर कोई जोर पड़ा हो। चौधरी साहब हमको चिट्ठी बहुत कम लिखते हैं। मुझे तो चौधरी साहब कोई परिवर्तन

[* * *] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

की दिशा में डायरेक्शन देंगे कि तुम ऐसा–ऐसा करो, तो अच्छा रहेगा, मैं उनको दावत दे रहा हूं, खुली दावत और अगर वह मुझे कहेंगे कि फलां-फलां समय पर मेरे घर पर आ जाओ बतलाऊंगा तो मैं आ जाऊंगा। अगर मुझे डर होती, इस हाउस से निकलने की मंशा होती, तो हम पब्लिक अंडरटेकिंग कमेटी क्यों बनाते। मैंने पब्लिक अंडरटेकिंग कमेटी बनाया।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश के बारे में एक बात कही गई कि कई कमीशन या कमेटियां बनीं यह माधव बाबू ने कहा। जितने कमीशन मैंने देखा और देखवाया जो माधव बाबू के मस्तिष्क में है और मेरे पास नहीं है। पे–कमीशन बैठा जिसने तनख्वाहें बढ़ाने के सिलसिले में अपनी रिपोर्ट दी और उस कमीशन की रिपोर्ट को मैंने माना। वैसे गवर्नमेन्ट ने समय-समय पर कुछ कमीशन्स बनाये। जांच आयोग समय-समय पर बैठाया जो कि मारपीट के सिलसिले में रहा। मंगल देव विशारद कमीशन बैठाया गया था।

(व्यवधान)

श्री जंग बहादुर वर्मा––

मान्यवर, बैकवर्ड कमीशन का तो नामही नहीं लिया. . . . . .

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा––

बैकवर्ड कमीशन नेयह लिखा है कि बैकवर्ड के लिये क्या-क्या होना चाहिये। बैकवर्ड कमीशन ने टैक्स के बारे में कुछ नहीं किया है, इसलिये उसकी चर्चा यहां पर न करें।

श्री जंग बहादुर वर्मा––

बैकवर्ड कमीशन की रिपोर्ट और मंगलदेव विशारद कमीशन को आपने माना है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा––

मान्यवर, बैकवर्ड कमीशन की रिपोर्ट आयी किस सन् में और मैं कब आया ?

श्री बांके लाल––

जनम की फुहरी कमी न सुधरी। वह इनका हाल है।

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा––

तो मान्यवर, मैं कह रहा था. . . . . .

(सरकारी पक्ष की ओर से पटवारी है, पटवारी है की आवाजें)

श्री बांके लाल––

आप भांड़ हैं, बेहना हैं। वह मुझे पटवारी कहते हैं तो मैं जरूर कहूंगा।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा––

मैं गाली गुप्ता दे नहीं सकता. . . . . .

(व्यवधान)

श्री बांकेलाल––

रुपया बांट कर भले ही ज्यादा आये हों. . . . . .

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा––

हम ऐसी हजार मंजिले देख चुके हैं. . . . . .

श्री प्रभाकर नाथ द्विवेदी (जिला प्रतापगढ़)––

अध्यक्ष जी, आप व्यवस्था दें। इस प्रकार वे ही नहीं बोलना जानते हैं, हम भी बोलना जानते हैं।

श्री अध्यक्ष––

इस तरह से बहस कैसे चलेगी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--
बोलने नहीं देते हैं. . . . . .

श्री बांके लाल--
आप अपने आदमियों को सिखायें कि सही बोलें।

श्री अध्यक्ष--
बांके लाल जी अब आप बैठें।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--
अध्यक्ष महोदय,. . . . . .

श्री अध्यक्ष--
कायदा यह है जब वह खड़े हों और आप खड़े हो जाते हैं तब वह बैठ जायें तब हक हो जाता है। इस तरह बहस कैसे चलेगी ? आप बैठ जायें।

श्री मुहम्मद असरार अहमद--
माननीय मुख्य मंत्री जी ने यह कहाकि उन्होंने पी० यू० सी० कमेटी बनायी है। मैं कहता हूं कि यह तो ऐसी झूठ है जैसे यह कहना कि सूरज पूरब में नहीं पश्चिम में निकलता है। यह तो आपसे पहले ही बन चुकी थी ७१ में श्री ए० जी० खेर के जमाने में। इनके जमाने में नहीं बनी है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--
मैंने किया यानी कांग्रेस सरकार ने किया और हमने दोनों हाउसेज की ज्वाइन्ट कमेटी बनाई। मान्यवर, एक बात और कही गयी और उस पर यह कहा गया, बल्कि दो बातें कही गयीं। कर्मचारियों के सिलसिले में सरकार का क्या रवैया रहा है। माधो बाबू ने कहा कि पेंशन नहीं मिलती है। अगर कोई दूसरा होता तो उत्तर देकर समय नष्ट न करता। उन्होंने कहा है इसलिये उत्तर दे रहा हूं। उत्तर प्रदेश के पेंशन रूल्स जो हैं वह सन् ५२ से चले आ रहे हैं। यह जरूर है कि उनमें कई बार संशोधन हुआ है। इस प्रकार से प्रत्येक कर्मचारी इन नियमों में से किसी न किसी के अन्तर्गत शासित है। और वे नियम मौजूद हैं। पता नहीं किसने उन्हें बता दिया। हां पेन्शन के फाइनेलाइजेशन के बारे में देर होती है जिसके लिये हमारी सरकार चिन्तित है और हम प्रयत्नशील हैं कि किस प्रकार ग्रेचुएटी, पेंशन, प्रोवीडेन्ट फंड, सरकारी कर्मचारी को रिटायर होने के तुरन्त बाद में दिला सकें। उसके लिये हमारे तिवारी जी ए० जी० आदि से सलाह मश्विरा कर रहे हैं।

एक बात यहां पर यह कही गई कि हम लोग लिस्ट बदल रहे हैं। और कर्मचारियों के ऊपर बड़ा अन्धेर होने वाला है। अर्थात् जो आई० ए० एस० की प्रोमोशन लिस्ट है, उसमें हम उलट पुलट कर रहे हैं। उसके बारे में भी बता दूं कि बात क्या है। असल बात यह हुई कि १९६७ में मान्यवर, एक सेलेक्शन की लिस्ट बनी। उस समय सेलेक्शन कमेटी में ये लोग थे :

(१) श्री के० आर० डामले, चेयरमैन, यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन,
(२) श्री एच० सी० गुप्ता, चेयरमैन, बोर्ड आफ रेवेन्यु,
(३) श्री जे० डी० शुक्ला, कमिश्नर, इलाहाबाद डिवीजन,
(४) श्री बी० बी० लाल, चीफ सेक्रेट्री,
(५) श्री ए० के० मुस्तफी, कमिश्नर एंड सेक्रेट्री,
(६) श्री एस० पी० मुकर्जी, ज्वाइन्ट सेक्रेट्री।

इन लोगों ने २३ दिसम्बर, १९६७ को जो अपनी रिकमेंडेशन्स की थीं, उनको माननीय चौधरी साहब ने मन्जूर कर लिया। इसमें ४-५ आदमी ऐसे थे जो सुपरसीड हो गये थे।

उन लोगों ने अपनी अपील लगाई सिंगिल बेंच में, वे हार गये, फिर उन्होंने अपनी अपील डबल बेंच में लगाई, वहां भी हार गये, फिर इन्होंने सुप्रीम कोर्ट में लगाई वहां से शायद उनके फेवर में हो गया। तो गवर्नमेन्ट आफ इंडिया ने हमें लिखा कि दुबारा बनाओ। तब का फैसला अब अगर होता है तो यह कहना कि लिस्ट दुबारा बनाई जा रही है उचित नहीं है। जो लिस्ट माननीय चौधरी साहब ने ऐज चीफ मिनिस्टर फाइनल की थी फौरचुनैटली या अनफौरचुनेटली वह कायम नहीं रह पाई, अब दुबारा फिर बनाई जा रही है। अब भी उसमें वे लोग ही हैं जैसे :

१—चेयरमैन, यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन,

२—गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के एक आदमी,

३—हमारे चीफ सेक्रेटी,

४—होम सेक्रट्री, और

५—एक सीनियर मेम्बर, बोर्ड आफ रेवेन्यु।

जैसा पहले का ढांचा था, उसी में यह हो रहा है। इसलिये कर्मचारियों में यह कहना और यह बताना कि शायद कोई गड़बड़ हो रही है उचित नहीं है क्योंकि इससे अनायास ही भ्रम पैदा होगा। मुझे आशा है माननीय सदस्य मेरे इस स्पष्टीकरण को समझ लेंगे।

पी० सी० एस० वालों के लिये कहा गया कि उनके साथ बड़ा जोर जुल्म हो रहा है उनकी हकतल्फी हो रही है। मैंने सदन में पिछली बार भी कहा था और मैं माननीय नेता विरोधी दल से अपील करूंगा कि वे मुझे प्रोटेक्शन व हेल्प दें। सर्विसेज के मामले में अगर सदन सख्ती से काम नहीं लेगा, जब तक उसके लिये कोई काज न हो तो खतरनाक स्थिति पैदा हो सकती है।

अभी हाल में डिप्टी कलेक्टर्स का एक सेशन हुआ था। उसमें मैं भी गया था। इस बार मैंने उन्हें काफी सख्त बातें सुनाईं, जैसे कभी-कभी माननीय चौधरी साहब खरी सुना देते हैं। मेरे में भी उस दिन स्पार्क आ गया। मैंने उनसे स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि तुम ट्रेड यूनियन नहीं हो, तुम एडमिनिस्ट्रेशन के मामले में हमारी रीढ़ की हड्डी हो। आई स्टैन्ड बाई एवरी वर्ड दैट आई हैव स्पोकेन देयर। अगर सीनियर सर्विसेज के लोग भी ट्रेड यूनियन हैबिट्स में इन्डल्ज करेंगे तो गवर्नमेंट कोई क्वार्टर देने वाली नहीं है चाहे कुछ भी हो। वे इस तरह की हरकतों में नहीं आ सकते हैं। चूंकि सदन में एक गलत फहमी फैल गई है, इसलिये एक बात और इस सम्बन्ध में मैं सदन को बता देना चाहता हूं। डिप्टी कलेक्टर्स की ८०पोस्ट्स थीं। जिस दिन से मैं आया हूं उनमें से ७९ को परमानेन्ट कर चुका हूं। एक खाली है जिसके लिये आदमी नहीं है। इसमें जातिवाद का कोई प्रश्न नहीं है। ८० थे, ७९ हो गये। एक मिल ही नहीं रहा है। पक्षपात किस के साथ करें। पक्षपात तो तब करें जब मैं बाकी रह जाऊं या आप बाकी रह जायें।

एक सदस्य—

अयोग्य ले लिये गये हैं योग्य छोड़ दिये गये हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

गलत बात है। जो स्टेटमेंट मैं दे रहा हूं उसको साबित करने के लिये तैयार हूं।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

आपकी हुकूमत में जितने ईमानदार अफसर हैं वह कराह रहे हैं और बेईमान अफसर पदोन्नति पर हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अब अगर यह राय हो कि ७९ के ७९ बेईमान हैं तो मुझे कोई उज्र नहीं है। ८० वां आप ढूंढ कर दे दीजिये, कम से कम एक तो भला आ जायेगा।

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

जहां तक पी० सी० एस० की दूसरी चीज का सवाल है ३६ पोस्ट्स उनके लिये रिजर्व हैं डी० एम०, ए० डी० एम०, इस तरह की। अब मैं टोटल डिकैटोगराइजेशन कर नहीं सकता, चौधरी साहब इस बात को जानते हैं, उनको पूरा अनुभव है।

अब इस पर आइये जो चौधरी साहब ने अपनी रीति-नीति के सम्बन्ध में कहा। हमारे कई मित्र उनका जवाब दे चुके हैं। उनका जो भाषण हमारी एग्रीकल्चरल योजना, हमारी आर्थिक दृष्टि के सिलसले में हुआ या मेरे को जो कहा कि तुम जो बोल रहे हो उसमें भी खम है और खम में उन्होंने यही बताया कि तुम मिलें लगा रहे हो और बात छोटे उद्योग की कर रहे हो और माननीय वीरेन्द्र वर्मा के उत्तर में माननीय चौधरी साहब ने यह कहा कि गवर्नमेंट आफ इंडिया अगर न चाहे तो कोई चीफ मिनिस्टरी नहीं कर सकता। मैं समझता हूं यह सच नहीं है। मैं उदाहरण देता हूं कि कौन-कौन से छोटे उद्योग हैं। जो सहारनपुर में लकड़ी पर नक्काशी का काम करता है या जो मुरादाबाद में बर्तन बनाता है, जलेसर में छोटी-छोटी घंटियां बनाता है या फर्रुखाबाद में छींट बनाता है, ये सारी चीजें जिनका निर्यात हो सकता है अगर हम इनके लिये कच्चे माल और पैसे का इंतजाम न करें इसके माने यह होंगे कि गवर्नमेन्ट ने ठीक काम नहीं किया। हमारी नजर उस तरफ है कि जो हमारा करधा है, जो हमारा हाथ का कारीगर है, चाहे व सहारनपुर का लकड़ी पर नक्कासी का काम हो, चाहे लखनऊ की चिकन का काम हो और चाहे बनारस का रेशमी साड़ियों का काम हो, इस सारे काम के लिये उत्तर प्रदेश की सरकार को जिम्मेदारी लेनी होगी, उसकी नाकामियाबी बुनियादी तौर पर उत्तर प्रदेश सरकार की नाकामियाबी होगी क्योंकि यह सब प्रदेशीय सरकार कर सकती है। आगरे में चमड़े के जूते का काम करनेवालों से पूछिये कि जो सेल्स में उनको रियायत दी गयी है और जो वहां कारपोरेशन बना कर हम काम कर रहे हैं उससे उन लोगों को जिन्दगी में कुछ फर्क आया या नहीं। जो देख सकते हैं वही देख सकेंगे। दूर क्षितिज पर गिद्ध की आंख मरी हुई गाय पर ही टिकती है और कुछ नहीं और मैं चाहता हूं कि मुझे सब कुछ दिखायी पड़े जो जिन्दा है वह भी और जो मरा हुआ है वह भी। जहां तक हमारी सरकार का सम्बन्ध है . . . .

चौधरी चरण सिंह—

एक बात अर्ज करना चाहता था। काटेज इंडस्ट्रीज जिनका फैक्टरीज से कम्पिटीशन है उसमें आप कुछ नहीं कर सकते। जिनका फैक्टरीज से कम्पिटीशन नहीं है उसमें कर सकते हैं। मसलन चर्खा और हैंडलूम, सब से बड़ा उद्योग यह है। जितनी इंडस्ट्रीज आपने गिनायीं उनसे दस गुना ज्यादा लेबर इनमें लगता है। अगर आप उससे शुरू करें तो अनइम्प्लायमेंट में फर्क आयेगा, लेकिन वह तब तक आप नहीं कर सकते जब तक कि केन्द्र उसके लिये राजी न हो।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

जो हम कर सकते हैं वह किया नहीं। किस-किस ने नहीं किया, मैं वह नाम नहीं लेना चाहता।

(व्यवधान)

एक सदस्य—

२७ सालों में आपने क्या किया ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

२५ साल की बात आप माननीय चौधरी साहब से पूछ लें, २ साल की बात मैं बता रहा हूं. . . . . (हंसी)

एक सदस्य—

तेली और लोहार बेकार हैं, उनको काम नहीं मिल रहा है। बड़ी-बड़ी मशीनों के कारण वे बेकार हो गये। आप छोटे उद्योग क्यों नहीं लगा रहे हैं ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैंने जितनी भी बातें कही हैं वह अपने दायरे में हैं। कई चीजें अभी ऐसी हैं जिनका बड़े उद्योग मुकाबला नहीं कर रहे हैं। उदाहरण के लिये हाथी दांत का काम है, लकड़ी पर नक्काशी का काम है, एक काश्मीर को छोड़कर, हमारे यहां सब जगह से अच्छा काम होता है। उसका कहीं मुकाबला नहीं है। माननीय चौधरी साहब का कहना है कि जब अपने दोष हों तो मेरे दोष क्यों बताते हो, अपने दोषों के बारे में बताओ. . . . . .

(व्यवधान)

मैं यह कहना चाहता हूं कि छोटे उद्योगों के संबंध में यह सरकार जाग्रत है और रहेगी। इन उद्योगों से करोड़ों रुपयों की दौलत हम पैदा करते हैं। २०–२५ लाख आदमी इसमें काम करते हैं। चौधरी साहब ने कहा कि पंडित जवाहरलाल जी ने कभी उनकी बात नहीं मानी। उन्होंने जो कहा मैं उसे कहना चाहता हूं. . . . . .

चौधरी चरण सिंह—

मैंने यह नहीं कहा है। मैंने यह कहा था कि प्लानिंग कमीशन की रिकमेन्डेशन ये थी। फर्स्ट फाइव इयर प्लान में, सेकिन्ड फाइव इयर प्लान में और थर्ड फाइव इयर प्लान में इसका जिक्र है कि राइट आफ रेडम्शन दिया जाय। एक बार प्लानिंग कमीशन ने मुझे बुलाया, मैं उसके लिये राजी नहीं हुआ, यह आपके रेकार्ड्स में मौजूद है। मैं यह नाम नहीं लेना चाहता, हमारे बहुत से साथी भी इसी राय के थे। बहुत ज्यादा स्ट्रगिल के बाद पंडित जी राजी हुये, तब जाकर यह हक मिला। यह मैंने कहा था।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब ने ठीक कहा, मगर मैं जवाहर लाल जी ने एग्रीकल्चर के विषय में क्या कहा है मैं उसे पढ़ देना चाहता हूं। प्लानिंग कमीशन की किस रिपोर्ट में, किस फाइव इयर प्लान में राइट आफ रेडम्शन दिया है वह मुझे नहीं मिला।

(व्यवधान)

चौधरी चरण सिंह—

आप पहली, दूसरी, तीसरी व चौथी पंचवर्षीय योजना की किताब में देख लीजिये उसमें राइट आफ रेडम्शन की बात है। और वह चीज बिना प्राइम मिनिस्टर के एप्रूवल के उसमें आ नहीं सकती।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

दो स्टेटमेंट हाउस के सामने आ गये। मेरा कहना है कि पहली पंचवर्षीय योजना, दूसरी पंच वर्षीय योजना या तीसरी या चौथी पंचवर्षीय योजना में कहीं राइट आफ रेडम्शन की चर्चा नहीं है। चौधरी साहब का कहना है कि उसमें है, तो वे मुझे दिखा दें। मैं देख लूंगा। लेकिन जवाहर लाल जी ने एग्रीकल्चर के विषय में जो कहा है, उनकी स्पीच का कुछ हिस्सा मैं आपके सामने पढ़ने जा रहा था। अंग्रेजी में उन्होंने कहा है, मैं उसे हिन्दी में कहता जाऊंगा :

"Agriculture is more important than industry for the simple reason that industry depends on agriculture. Industry, which is, no doubt, very important, will not progress unless agriculture is sound and stable and progressive. I find there is a passion in many areas of India for industrial plants. Well, all good luck to those who want them. Let them have it. People seem to think that an industrial plant solves all the problems of poverty, which it does not. It has a long-term effect on the economy, no doubt. And I have no doubt in my mind that the problem of poverty will not be solved in India except through industrial progress, industrial progress of the latest type. That is the truth."

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

लेकिन एक बात याद रखें कि जो लोग समझते हैं कि खाली उद्योगों के लगाने से ही हिन्दुस्तान की गरीबी का सवाल हल हो जायेगा, तो ऐसा होने वाला नहीं है। उन्होंने कहा है कि इसका देर में असर होता है इकोनामी के ऊपर। इन्डस्ट्रियल प्रगति हो, यह ठीक है लेकिन मुझे यह साफ-साफ कहना पड़ता है कि खेती पहले है, खेती जरूरी है। पंडित जवाहर लाल जी की यह तकरीर पंडित जवाहर लालजी के मरने के पहले की नहीं है जो वे छोड़ गये हैं,बल्कि यह बहुत पहले की तकरीर है जिसकी चर्चा उन्होंने सेकेन्ड प्लानिंग कमीशन की बैठक में की थी और जब वे तीसरे प्लान को इन्ट्रोड्यूस कर रहे थे तब भी सिमिलर टोन में उन्होंने यह बात कही थी।

चौधरी चरण सिंह—

किस तारीख की तकरीर है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आकेजन मैंने बतला दिया, तारीख बाद को दे दूंगा। मान्यवर, माननीय विरोधी दल के कई सदस्यों ने एक बात और कही थी। ला ऐंड आर्डर के सिलसिले में बहुत सारी बातें कहीं। चौधरी साहब को जैसी दिक्कत होती है, आज वैसी ही कठिनाई मुझे भी हो रही है। उस बाबत मैं कैसे कुछ कहूं, अपने मुंह से कैसे कुछ कहूं, इसमें दिक्कत है। लेकिन कम्परेटिव बात मैं कर रहा हूं। माननीय चौधरी साहब ने कहा कि जब मैं चीफ मिनिस्टर हुआ तो मैंने बुलाया एस० पीज० को, बस क्राइम्स बन्द। मैं ऐसा नहीं कर सका। मुझसे भी कहते हैं कि तुम भी बुलाओ और डांट दो, क्राइम्स सब बन्द। मैं आपके सामने लखनऊ की कम्परेटिव स्टेटिसटिक्स दे रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री जंगबहादुर वर्मा—

जो बड़े लोग शराब पीते हैं उन पर तो आप टैक्स लगाते नहीं, जब कि किसानों पर लगान लगाते हैं।

(व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

ऐसा है कि वे शोभा हैं सदन की, बोल रहे हैं तो बोलने दें। उसके लिये हल्ला करने की जरूरत नहीं है। मेरा कहना यह है कि चाहे डकैती हो, चाहे राहजनी हो, हत्या हो, नकबजनी हो, आप देखेंगे कि उस जमाने में जब कि पंत जी चीफ मिनिस्टर थे, चौधरी साहब चीफ मिनिस्टर थे और आज के जमाने में कितना फर्क आ गया है। मेरा मतलब है कि समाज के वातावरण में कितना फर्क आ गया है कि जब पंतजी चीफ मिनिस्टर थे तब क्या यहां की सामाजिक स्थिति थी और आज के वातावरण में क्या स्थिति है। मैं कहना चाहता हूं कि न्याय व्यवस्था कायम हो इसके लिये आपको न्याय व्यवस्था को कायम करने वाले माहौल पैदा करना होगा। पिछले १३ महीने से जबकि हमारी सरकार रही है, चुनाव के बाद और चुनाव के पहले इन तेरह महीनों में कितने बन्द, कितनी हड़तालें और हमारे मुकाबले में जगह-जगह कितना शोर और गुल हुआ। आज सूरत साफ है। बदकिस्मती से लखनऊ में शिया-सुन्नी का झगड़ा फसाद भी हो गया और वातावरण इस तरह से दूषित रहा जिसके अन्दर हमें बहुत कठिनाइयां आयी हैं और फिर भी मैं कहता हूं कि इन १३ महीनों में मैं १० महीने की फिगर रखता हूं और चौधरी साहब के जमाने की दस माह की फिगर रखता हूं जिससे मालूम हो जायेगा कि उस जमाने से आज के जमाने में वह कम है—मर्डर्स, डकैती और इसके लिये केवल लखनऊ टाउन को ही ले लें।

(व्यवधान)

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

आज के जमाने में एफ० आई० आर० लिखी नहीं जाती। आपके फीगर्स गलत हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

यहां पर जो सूरत है वह साफ है। डकैतों से ८५४ मुठभेंड़ें हुईं, जिसमें १४९ डकैत मारे गये, ३,४४१ गिरफ्तार हुए, २,३८० आग्नेयास्त्र पकड़े गये। एटा के माननीय सदस्य महसूस करते हैं कि वहां जिस मशहूर डकैत का गैंग था उससे वहां के लोग कितने अधिक त्रसित थे। उसके ऊपर ५ हजार का इनाम था। इसके अलावा, मथुआ का गैंग, हब्बू का गैंग, रमेश्वर, अहमद और वंदा उर्फ महादेवा के गैंगों का मान्यवर, सफाया किया गया है।

श्री जंग बहादुर वर्मा—

यह भी बतला दीजिये कि कितनी विधवाओं, अनाथों और बच्चों का सफाया किया गया है।

(शोर)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, मेरा कहना यह है कि न्याय और व्यवस्था को कायम रखने के लिये यह सरकार हर तरह से कोशिश कर रही है। एक केस के बारे में चौधरी साहब ने और कहा. . . . . .

श्री जंग बहादुर वर्मा--

होटलों में जो शराब पी जाती है। आपने उस पर छूट दी है. . . . . .

(शोर)

श्री अध्यक्ष--

माननीय वर्मा जी आप इतने बुजुर्ग सदस्य हैं और आप बार-बार खड़े हो जाते हैं। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप उचित मर्यादा का पालन करें।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा--

मान्यवर, चौधरी साहब ने ऋषि बल्लभ सुंदरियाल की चर्चा की थी। उन्होंने जिक्र किया था कि उनको जहर दिया गया। मान्यवर, किसी की मृत्यु तो दुख की बात है साथ ही वह हम सबके लिये दुख की बात होती है। सुंदरियाल जी एक जमाने में जनसंघ में थे फिर वह स्वतंत्र पार्टी में रहे और फिर बलराज मधोक के साथ थे, लोकतांत्रिक दल के साथ थे। वह नौजवान आदमी थे, लड़ने-भिड़ने वाले आदमी थे, अपने हक के लिये और अपनी बात के लिये। इसमें दो राय नहीं हैं।

हुआ यह कि १ तारीख को, १ अगस्त, ७४ को कीरतपुर थाने के अन्दर २ बजकर २५ मिनट पर एक डा० डी० पी० एस० राना ने रिपोर्ट लिखायी जिसमें उन्होंने कहा कि मेरे यहां सुंदरियाल जी इलाज के लिये आये थे और वह मर गये हैं। मान्यवर, डाक्टर वहां कई सालों से प्रैक्टिस कर रहे हैं, इसमें किसी दल विशेष की बात नहीं हैं। सुंदरियाल जी ने उनको बताया कि सीने में दर्द है। उन्होंने दो गोलियां खाने को दीं। गोलियां देने के बाद भी दर्द कम नहीं हुआ। यह डाक्टर राना का बयान है एफ०आई० आर० में यह सब है। फिर डाक्टर ने पैथेड्रीन और फिर मार्फिया का इन्जेक्शन लगाया। विसरा और आंतें जो केमिकल इग्जामिनेशन के लिए भेजी गयी थीं उसकी रिपोर्ट में भी यह कहा गया कि विसरा और आंतों में पैथेड्रीन और मार्फिया, इन अंगों में मौजूद है।

मान्यवर, यह दो प्वाइजन हैं। लेकिन हार्ट ट्रबुल में दर्द को रोकने के लिये इनको दिया जाता है, कि मरीज सो जाय और हार्ट नारमल स्थिति में आ जाय। मान्यवर मेरे भी हार्ट अटैक हुआ है, मुझे भी बलराम पुर अस्पताल में यही इंजेक्शन दिये गये थे।

तो मान्यवर, आगरे से जो रिपोर्ट आयी कैमिकल इग्जामिनेशन की उसको भी बहुत बारीकी से देखा गया। कहीं पर भी गुंजाइश नहीं है, संदेह की।

चौधरी साहब ने डी० एम० की बात कही। सुन्दरियाल जी डी० एम० के खिलाफ थे, वह गेहूं वसूली का विरोध कर रहे थे, मुखालिफत कर रहे थे। डी० एम० के साथ और

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा]

कोई उनका झगड़ा नहीं था। वह डी० एम० फरवरी के महीने में रिटायर हो रहा है। उसने धामपुर और अन्य जगहों पर हिन्दू मुस्लिम फसाद होने से बचाया था। मान्यवर, वह फरवरी में रिटायर हो रहा है, उसने बड़ा अच्छा काम किया इसलिये वह बधाई का पात्र है। मैं उसको बधाई देना चाहता हूं कि उसने हिन्द मुस्लिम फसाद होने से बचाया। मान्यवर, हिन्दू और मुस्लिम दंगे जहां हुये हैं यदि उनमें कोई अधिकारी जो दोषी पाया जायेगा उसको अवश्य दंड दिया जायेगा। पी० सी०एस० के अफसरों में उसका नं० ऐसा था कि उसमें कोई बुराई नहीं होगी। माइनारिटी को हम कुछ चान्स देते हैं। इसलिये कई कारणों से उसको वहां रखा। उसने जस्टिफाइड काम किया।

एक सदस्य—

मोस्ट जूनियर को वहां रखा।

चौधरी चरण सिंह—

मान्यवर, जो आदमी कन्फरम्ड नहीं था, आफिशियेट कर रहा था और उसकी केवल माइनारिटी पर रखें तो उससे कोई फायदा नहीं है। बिजनौर में हिन्दू मुस्लिम के दंगे नहीं हुए परन्तु उनके जमाने में दंगे हुये। इसलिये नीचे की रिपोर्ट का भरोसा न करें और मालूम करे सी० आई० डी० द्वारा कि उसको जहर दिया गया कि नहीं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, सी० आई० डी० की जांच साफ है कि उसको जहर नहीं दिया गया।

मान्यवर, मैं एक बात के संबंध में कहना चाहता हूं कि माधव बाबू ने कहा कि बाढ़ में बस्ती जिला बरबाद हो गया और बहुगुणा जी कोई परवाह नहीं करते हैं। तो हमने मान्यवर, परवाह बस्ती जिले में ही नही जहां कहीं भी बाढ़ और सूखे की स्थिति पैदा हुयी वहां गल्ला भेजा है। बस्ती जिले में ही १० हजार टन गल्ला भेजा, गोरखपुर में ६,६५० टन गल्ला भेजा और इसी प्रकार गोरखपुर से लेकर बांदा तक अलग-अलग स्थानों को अलग-अलग समय में गल्ला भेजा है। दूसरी समस्या हमारे सामने है कि हम गल्ला किससे मांगे केन्द्र के अलावा। चौधरी साहब कांग्रेस में जब थे तब भी बोलते थे और आज भी। वह कहते हैं कि देश को भिखमंगा बना दिया है। तो पहले हर चीज के लिये कहा जाता था कि मांगना लोग अपनी बेइज्जती समझते थें परन्तु अब तो रईस आदमी भी कहता है कि जो मांगे मिले वह ले लो।

एक सदस्य—

मांगना तो इनकी आदत पड़ गयी है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब आप अपने बगल के साथी को मना करलें। मैं नहीं चाहता हूं कि इनकी बात को काटूं और यह नहीं समझ रहे हैं।

श्री अठई राम (जिला इलाहाबाद)—

मान्यवर, हंडिया तहसील में आपने तकावी भेजी है लेकिन वह गरीब किसानों को नहीं मिली और फर्जी लोगों के द्वारा निकाल ली गयी है। गरीब किसानों से वह तकावी वसूल की जा रही है, उनकी कुड़की हो रही है। परन्तु उनको तकावी नहीं मिली है। जो आदमी मर गये हैं उनसे भी तकावी वसूल की जा रही है और ऐसे हजारों आदमी हैं जिनसे वसूली जा रही है।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

मुझे एक बात पूछनी है। मैं यह मानता हूं कि आप प्रतिभावान हैं, मृदुभाषी हैं, हम उसका सम्मान करते हैं। लेकिन मानव हैं, अति मानव नहीं है। तो बतला दें कि किसी सूबे के चीफ मिनिस्टर के पास, अलाउद्दीन खिल्जी को छोड़कर, २९ विभाग रहे हैं?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब की हंसी इसका जवाब दे चुकी है, तो मैं जवाब नहीं दूंगा। बजट में इस पर जवाब हो चुका है।

चौधरी चरण सिंह—

आप जवाब दे दें।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चौधरी साहब के पास २९ मिनिस्टर और १४ मुहकमें थे, मेरे पास १४ मिनिस्टर २९ मुहकमें हैं, तो कोई बड़ी बात नहीं हुई। इस मामले में अधिक समझाने बुझाने की बात नहीं है और मैं अलाउद्दीन खिल्जी बनना नहीं चाहता हूं क्योंकि वह डिक्टेटर था।

चौधरी चरण सिंह—

आपने कहा था कि मेरे पास २९ मिनिस्टर और १४ मुहकमें थे.....

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

फिगर्स में मैं चौधरी साहब का मुकाबला नहीं करना चाहता हूं। जैसे मार्क्स ने हीगिला को उल्टा खड़ा कर दिया है, वैसे ही मैंने उनके मैथेमेटिक्स को उल्टा खड़ा करके सरकार बनाई है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

क्या आप बतलावेंगे कि प्रदेश के दिवालियापन और आर्थिक संकट का क्या कारण है?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

उस पर आ रहा हूं। मान्यवर, यह कहा गया कि क्रय शक्ति घटी और मूल्य बढ़े हैं। मैं बहस में नहीं जाना चाहता हूं, सिर्फ दो चार बातें कहना चाहूंगा। क्रय शक्ति कितनी भी घटी हो, रुपये का कितना भी अवमूल्यन हुआ हो, लेकिन जो बंगाल में सन् ४३ में घटी थी, उतनी नहीं घटी है। वह दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी अभी नहीं आई है।

कई सदस्य—

आवेगी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आप तो मनायेंगे जिससे लोग गुस्सा हों और आपको राज्य मिले।

श्री सत्य पाल मलिक—

आप तो राज्य लेकर लोगों को मार रहे हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आप युगोस्लेवेकिआ को देखिये। वहां १३ प्रतिशत से अधिक क्रय शक्ति घटी है। क्रय शक्ति का ह्रास इंग्लैंड वगैरह सभी देशों में हुआ है। ब्राजील जो हमारे जैसा कृषि प्रधान देश है वहां ३४.३ प्रतिशत क्रय शक्ति घटी है। करीब-करीब यही हाल चिली, टर्की, अर्जेनटायना वगैरह का है। इन देशों में तो ३४.३ प्रतिशत से लेकर १६.२ प्रतिशत तक क्रय शक्ति घटी है जबकि हमारे यहां तो १० प्रतिशत ही घटी है।

श्री सत्यपाल मलिक—

यह देश जो आपने बतलाये हैं उनका साइज तो मेरठ से भी बड़ा नहीं है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

देश को साइज से नहीं नापा जाता। बल्कि विचार और आर्थिक शक्ति से नापा जाता है। इसमें ज्यादा बहस की जरूरत नहीं है। मैं नहीं मानता कि हमारी स्थिति ज्यादा खराब हुई है।

[श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा

एक बात चौधरी साहब ने और कही और वह यह है कि दिल्ली से खबर आयी है कि जरा से बादल आयें तो तालियां बजाओ। मैं पूछता हूं कि फिर कहा क्या जाता। यह कि पानी गिरा तो गम मनाओ? मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि देश और प्रदेश के जो सटोरिये और जमाखोर हैं, इस बारिस से उनकी मौत है. . . . . .

श्री सत्य पाल मलिक—

मान्यवर, इस बारिस के लिये कांग्रेस को शुक्रिया अदा करना चाहिये।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, चौधरी साहब को कुछ सोच-समझकर बात करनी चाहिये। चौधरी साहब की बात का अमरीका में कुछ वजन है। वे सोचेंगे कि चौधरी साहब कह रहे हैं कि पानी नहीं गिरा, तो दाम और बढ़ा देंगे। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की रबी ही नहीं अच्छी हुयी, इस बारिस से, बल्कि अगले साल की खरीफ की फसल अच्छे होने के लिये इन्श्योर हो गयी है क्योंकि जितनी बरफ इस साल गिरी है, पिछले १० साल में उतनी बरफ नहीं गिरी। इसलिये, जो लोग, इस देश में सोच रहे थे कि लोग भूख से मौत के शिकार होंगे कुदरत ने उनको नाकामयाब किया है। कुदरत को इसलिये शुक्रिया।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

इन्द्र भगवान खुश हो गये, इसलिये बारिस हो गयी। अब बिजली भी गिर पड़े तो बिजली की भी समस्या हल हो जायेगी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

कौशिकजी, बिजली क्यों गिरे, हमारी और आपकी दोनों की देश और प्रदेश की जरूरत हैं। फिर पडरौना की जनता का क्या होगा?

मान्यवर, मेरा चौधरी साहब से निवेदन है कि जब कभी हम अपनी आर्थिक नीतिके सवाल के बारे में कहते हैं, तो हमें एक बात पर ध्यान रखने की जरूरत है कि हमारी बात का विदेशों में क्या असर होता है। मान्यवर, हमारे देश के प्रजातंत्र के जो दुश्मन हैं, वह हमें किसी वक्त धोखा दे सकते हैं। चौधरी साहब ने सी० आई० ए० की बात कही। उन्होंने कहा कि 'बेगर्स हैव नो सेल्फ रेसपेक्ट'', हिन्दुस्तान चूंकि भीख मांगता है, इसलिये उसकी क्या रेसपेक्ट है?

चौधरी चरण सिंह—

मने नहीं कहा।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

तब खेद प्रकट करता हूं।

चौधरी चरण सिंह—

उनको दोष क्यों देते हैं गल्तियां आपकी हैं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

दोष नहीं देते, ऐक्शन करते हैं। यह तो हर देश करता है कि खबर लेता है कि दूसरे देश में क्या हो रहा है। लेकिस कुछ देश ऐसे हैं जो दूसरे देशों को उल्टवा देना चाहते हैं यह सिर्फ अमरीका का सी० आई० ए० करता है। इण्डोनेसिया से चिली तक, कहां तक उनकी शाखा नहीं है। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि हम अमरीका के दुश्मन नहीं हैं लेकिन. . . .

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

पी० एल० ४८० में जितना कर्ज माफ किया है बतायेंगे कि उत्तर प्रदेश को उससे कितना लाभ हुआ है? आप जिससे भीख मांगते हैं, उसी को दुश्मन मानते हैं। मैं कहता हूं कि अमरीका के सामने हांथ मत फैलाओ और पी०एल ४८० से भीख लेना बंद कर दो।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

भइया वह गल्ला कोई मेरे घर तो नहीं आने वाला. . . . . .

श्री सत्य पाल मलिक—

नेशनल हेराल्ड की बिल्डिग बनाने के लिये आई० बी० एम० ने, जो अमरीका की एक बिजनेस कारपोरेशन है, कर्ज दिया। मैं जानना चाहता हूं कि क्या वह सी० आई० ए० का एक विभाग है और सी० आई० ए० की मदद से चल रहा है ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं सब बातों में नहीं जाना चाहता। हमारे लखनऊ में कोई उनकी इमारत नहीं बन रही है। मैंने बुनियादी बात कही है जिसको समझने के लिए बुद्धि शक्ति की जरूरत है, वह मैं खरीद नहीं सकता। हमारे सामने इस देश में चुनौती की गयी है कि हमारे देश में लोग रो रहे हैं, भीख मांग रहे हैं। यह उस समय कहा जा रहा है जब अणु शक्ति हमारे हाथ में आ गयी और उसको देश के हित में इस्तेमाल करने में हम आगे बढ़ रहे हैं, जब देश में दुनिया के हर हिस्से से एक न एक आदमी दिल्ली में आ कर इन्दिरा गांधी से मिल कर जाता है और प्रशंसा करके जाता है कि भारत की शक्ति बढ़ी है और उधर से कहा जाता है कि भारत की शक्ति, इन्दिरा गांधी की शक्ति घटी है। (व्यवधान)

श्री शतरूद्ध प्रकाश—

चीन से जमीन वापस क्यों नहीं ले लेते ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

चीन की शक्ति बहुत महान है तो फारमूसा क्यों नहीं ले लेता ? यह राजनीति है, बचकाना खेल नहीं है जब चाहा ले लिया और जब चाहा छोड़ दिया ?

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

कुछ तो ले लेते ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

गोवा लिया, ड्यू व डामन लिया। इसके लिये इन्दिरा गांधी बधाई की पात्र हैं सारे देश की ओर से भविष्य की पीढ़ियों की ओर से उन्होंने इतना विश्वास इस देश का प्राप्त किया है। (व्यवधान)

श्री राम अधार—

[* * *]

श्री अध्यक्ष—

यह सब नहीं लिखा जायगा। जब आपको बोलना था बोल चुके। मुख्य मंत्री उत्तर दे रहे हैं और अन्तिम जवाब माधव प्रसाद त्रिपठी जी देंगे।

(व्यवधान) (शोरगुल)

यह तरीका नहीं है बहस चलाने का। इससे क्या फायदा है। जब कोई सुनने के लिये तैयार नहीं होता। जब इधर से आपके नेता बोलें या उधर से बोलें तो दोनों ओर से रुकावट डाली जाती है। बहस ठंढे दिल से चलते हैं। यह तरीका नहीं है बहस चलाने का।

(व्यवधान)

यह दुनिया भर में नहीं होता कि हर सदस्य बोल ले। हर दल को उसकी शक्ति के अनुसार समय बांट दिया जाता है उसी औसत से समय दिया जाता है।

श्री मोतीलाल देहलवी—

[* * *]

[* * *] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

श्री अध्यक्ष —

यह सब नहीं लिखा जायगा। यह स्टेज है यह सब कहने का। अब आप की संसदीय बुद्धि जगी है स्टेज पर। कुछ तो सोचिये। कुछ बुद्धि का इस्तेमाल कीजिये कि कब स्टेज होता है। अगर आप बोलना चाहते थे तो किस स्टेज पर आपको बोलना चाहिये था। इस तरह से नहीं चलेगा।

श्री गंजी प्रसाद (जिला वाराणसी)—

एक जानकारी चाहता हूं.....

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

माननीय मंगरे प्रसाद, आप बैठिए.....आप बैठिये..... आप बैठिये .....बैठिये आप। फिर आप कहेंगे कि डांटते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि इस तरह से सदन नहीं चल सकता है। मर्यादा का पालन आप करेंगे या नहीं? आपको बोलने का अधिकार है लेकिन यह व्यवहार अच्छा नहीं है। यह बाजार नहींहै। बैठिये आप।

(श्री गंजी प्रसाद के पुनः खड़े होने पर)। आपको शर्म नहीं आती। मैं इजाजत नहीं देता।

श्री गंजी प्रसाद—

मुझे बोलने का हक है।

श्री अध्यक्ष—

मैं आपको निकाल दूंगा। आप बैठिये। बैठिये आप। यह पागलों की जमात नहीं विधान सभा है।

श्री शफीकुर्रहमान बर्क—

आप थक गये होंगे।

श्री अध्यक्ष—

मैं माननीय बर्क साहब को कहना चाहता हूं कि मैं थकता नहीं हूं। आप चाहें तो रात भर बैठें।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

सिर्फ एक चीज कहूंगा.....

श्री अध्यक्ष—

अभी नहीं। आखिर कोई कायदा होगा। आपको अंतिम जवाब देने का मौका मिलेगा। अभी समय नहीं दिया जायेगा।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, मैं आपकी आज्ञा के विरोध में एक शब्द भी नहीं कहूंगा। जब हम लोगों की बात आप तक नहीं पहुंचती है तो जब आप क्रोध में होते हैं तो ऐसी व्यवस्था कर दें कि आपकी बात हम तक भी न पहुंचे।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, यह भी कहा गया कि हम लोगों ने पी० ए० सी० की इन्क्वायरी नहीं करी। इस सरकार ने एस० डी० सिंह कमीशन की रिपोर्ट से लेकर मंगल देव विशारद कमीशन की रिपोर्ट तक सदन के सामने रखी। यह बात नहीं है कि हम कुछ नहीं करना चाहते हैं। हमारा ऐसा इरादा नहीं है। अगर ऐसी भावना हमारी होती तो उनको सदन में रखने की आवश्यकता नहीं थी। हमारी पूर्व वर्ती सरकारों के सामने भी यह रिपोर्ट रखी गई होगी। लेकिन हमने इन रिपोर्ट्स को सदन के सामने रखा। पी० ए० सी० का जहां तक सवाल है उसमें हमारा

दिमाग बिलकुल साफ है क्योंकि हम पैरा मिलिट्री आर्गनाइजेशन के सिलसिले में इस तरह का खिलवाड़ नहीं कर सकते हैं। हम वही कर सकते हैं जो प्रजातंत्र के हित में हो। जहां तक मान्यवर, हमारे गजट के सिलसिले में एक माननीय सदस्य ने कहा हिन्दी में कुछ छपा था और अंग्रेजी मे कुछ छपा था वह ठीक है तो शायद इसी लिये कहा है 'प्रिंटर्स डैविल' छापे की भूल शैतान की। तो उसका शुद्धकरण कर दिया गया है। तो इस सिलसिले में ज्यादा नहीं कहना है। जहां तक संबंध इस बात का है क्योंकि यहां पर कारपोरेशन के बारे में सलेज फार्म को लेकर कहा गया, सलेज फार्म में कोई ठेके की बात कही मैंने बहुत ढूंढा अपने आफिस में आखिर यह क्या चीज है लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला। मुख्य नगर अधिकारी ने नियमानुकूल जो इनका काम सड़क, नहर, ड्रेनेज आदि की व्यवस्था करने की है वही किया है। सिवाय इन चीजों के और कोई काम नहीं किया इसलिये मेरे कार्यालय से इस संबंध में किसी तरह की बात होने की गुंजाइश नहीं है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

यह जो गजट में गलती निकली है इसको सेंट्रल आडिट ने बताया है आपके विभाग ने नहीं बताया।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं जो खुद कह रहा हूं कि वह गतल छपा है मैंने उसको स्वीकार कर लिया है कि वह प्रिंटर्स डैविल है। वह हमारे विभाग को पता नहीं चला और हम जो इतने बैठे हैं इनमें से किसी के हाथ नहीं आया। यह भूल हुई है। वहां पर तो कई लोग कमेटियों के चैयरमैन हैं कई चीजें तो वह भी नहीं पकड़ पाते हैं जो गजट में रोज-रोज छप जाते हैं और न ही मंत्री रोज उसे देखते हैं। यह गलती हुई है यह मैंने माना है और जिन आफिसर्स की भूल से हुआ है उनको प्रताड़ित किया जायेगा।

विशारद जी की रिपोर्ट के कार्यान्वियन के बारे में भी बात अई। तो विशारद समिति की सिफारिशों को सरकार कार्यान्वित करना चाहती है। मुझे खुशी है इस बात की कि विनोबा जी के मौन होने से पहले जब मैं उनसे मिला उनका आशिर्वाद लेने के लिये उन्होंने पाटिल साहब द्वारा भेज दिया है और पाटिल साहब ने पत्र लिखा है। भूमि सुधार के सिलसिले में तरह-तरह के विचार दिये हैं। हमारी परेशानी यह है कि हम कोई भी काम करें तो उसमें उधर से कहा जाता है कि दलीय दृष्टि से काम किया गया है और दल विशेष के आदमियों को फायदा पहुंचाया है तो उसके कारण हम अपने मंतव्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। हम चाहते हैं हम १०० फीसदी लैण्ड रिफार्म को ठीक करें और उसका इम्पलीमेंटेशन ठीक से करें और विनोबा जी का सहयोग हम चाहते हैं उनका जो सर्व सेवी संघ है जोकि एसेम्बली को तोड़ने में शामिल नही है और जो उत्तर प्रदेश में भूमि व्यवस्था को सुधारने में सरकार को मदद देना चाहते हैं तो उसके लिये श्री दयानंद जी पाटिल यहां आ रहे हैं। उनके १५ जनवरी तक यहां पहुंचने की उम्मीद है और ३० जनवरी तक वह शुरू कर दियाजायेगा। जो सीलिंग से जमीन निकलती है उसको भूमिहीन लोगों मे दिया जायेगा . . . . . .

श्री जंगबहादुर (जिला आजमगढ़)—

जो आ रहे हैं क्या वह रिटायर्ड आइ० ए० एस० नहीं हैं और वह इस काम को सफलता से कर सकेंगें।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

जी हां, आई० ए० एस० के हैं वह प्लानिंग कमीशन में भी रहे और मिनिस्ट्रीज में भी रहे और जिसे उन्होंने छोड़ कर विनोबा जी के सिविर में चले गये। उनको विनोबा जी के जजमेंट पर विश्वास है। मेरा अनुभव हैकि वह इस काम को अच्छी तरह से कर सकेंगे।

श्री जंगबहादुर (आजमगढ़)—

क्या वह श्री जय प्रकाश जी के आन्दोलन के विरोध में नहीं आ रहे हैं?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

किसी आन्दोलन को चलाना या तोड़ना खुद उसकी जिम्मेदारी होती है जो उसको मान्यवर चलाता है। मान्यवर मैं भूमि की सीलिंग के बारे में कहना चाहता हूं। भूमि सुधार के बहुत सारे काम हुए और उसमें चौधरी साहब ने भी बहुत काम किया है। जमींदारी एबोलीशन के बारे में मुझे एक सैक्शन याद नहीं है ठीक से कि कौन सा सैक्शन वह है शायद १५७ है। उसमें है कि अगर कोई काश्तकार है जो उसमें पट्टेदार के तौर पर है उसको हक नहीं होगा तो राइट आफ रेडम्पशन बटाईदार के खिलाफ उसने दिया था। जो हमने बाद में कानून बनाया है, उसमें उस दफा को खत्म किया है, ताकि बटाईदार है, तब भी उसका हक न मारा जाए। अब उसको प्रेसीडेंट की सहमति भी मिल गई है।

चौधरी चरण सिंह—

बटाईदार को टेनेन्ट माना गया था उसको हक दिया गया था, पार्टनर को नहीं दिया गया था।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

नहीं वह बटाईदार ही कहलाता था। पार्टनर फर्जी दाखिल हो जाता था। इस तरह से लाखों आदमी जो रह गये थे बटाई दार होने के नाते, उसको अधिकार मिला है। मैं मानता हूं, आपने बड़ी सेवा की है जो थोड़ा रह गया था, वह सेवा हमने भी कर दी। थोड़ी हमारी भी सेवा स्वीकार करें। आप ऐसे बुद्धिमान के सामने भूमि के मामले में मेरी बोलने की कैसे हिम्मत हो सकती है।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

मंगलदेव विशारद कमेटी की रिपोर्ट है—

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

(श्री शतरुद्ध प्रकाश के बोलने पर) अब आप बताएं कैसे हो? (श्री शतरूद्ध प्रकाश के बैठ जाने पर) मेरा सिर्फ निवेदन इतना ही है कि मैं अपनी शक्ति और बुद्धि के अनुसार कार्य कर रहा हूं। एक चार्ज माधव बाबू ने लगाया है। उन्होंने माननीय के० सी० पन्त का उसमें नाम लिया है उन्होंने बिक्री का जिक्र किया। मैं भी जिक्र कर दूं कि वह क्या चीज हैं—

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मेरा निवेदन है कि सदन का समय बढ़ा दिया जाए।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

ठीक है, मेरी प्रार्थना है कि बढ़ा दिया जाए। अभी आधा घंटे मैं बोलूंगा और उसके बाद माधव प्रसाद जी बोलेंगे।

मान्यवर, एक बात कहना चाहता हूं, मैं अपने दोस्त श्री के० सी० पन्त जी का बड़ा अनुगृहीत हूं उन्होंने कहा बहुत अच्छा होता यदि गवर्नमेन्ट आफ इंडिया से पूछ लिया जाता। उन्होंने जो कहा है, वह मैं पढ़े देता हूं। प्रकाशवीर शास्त्री ने प्रश्न किया था उसके जवाब में उन्होंने जो कहा है, उसे मैं सुनाए देता हूं।

श्री अध्यक्ष—

समय एक घंटा आपकी राय से बढ़ा दिया गया।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

यह इस प्रकार है "जहां तक बेचने का सवाल है,उसमें परामर्श की आवश्यकता नहीं होती। जो यूनिट्स हैं, उनमें से बहुत से यूनिट्स, मैं देखता हूं मैंने उनके बारे में सूचना भी उत्तर प्रदेश सरकार से प्राप्त की है। उन्होंने बताया बहुत पुराने यूनिट्स हैं। वह शायद यूनिट्स २५ साल पुराने हैं। उनमें से शायद केवल २, १ और ३ चल रहे थे, बाकी २१ सेट्स बन्द थे, नहीं चल रहे थे।" फिर उन्होंने कहा—१९७०—७१ के बीच इन सेटों को बन्द कर

दिया गया था।' फिर कहा—"क्योंकि जनरेटिंग कास्ट बहुत ऊंची थी, इसलिये बेच दिया। यह उनके अधिकार में था। कुछ को उन्होंने, जो प्राईवेट सेक्टर में इंडस्ट्रीज थीं, अपने कैप्टिव सेट बनाए हैं। अच्छा होता अगर कैप्टिव सेट के बारे में उनकी सरकार हमारे से परामर्श कर लेती।" लेकिन जहां तक बेचने का सवाल है ठीक है। मान्यवर, इन सेट्स के बेचने के सिलसिले में मुझे भी कहना पड़ता है, क्योंकि जब दिल्ली में बात कही गयी तो उसका उत्तर करना लाजिमी हो जाता है। सेट्स को बेचने के लिये टेंडर इस आधार पर मांगे गये कि सेंट्रल वाटर ऐंडपावर कमीशन ने १९६७ में उनको देख कर यह कहा था कि यह गड़बड़ हैं। गवर्नर्स रूल में १८ अगस्त, १९७३ को एडवाइजरी काउंसिल बैठती है राज्यपाल की, जब श्री के०सी० पंत स्वयं चार्ज में थे उत्तर प्रदेश के, दिल्ली में। उस वक्त गवर्नर साहब ने आदेश दिया, एडवाइजरी काउंसिल ने स्वीकार किया। "आदेश: स्वीकार किया गया। अनुदान २५ प्रतिशत अथवा अधिकतम १० लाख रुपये, दोनों में से जो भी कम हो होगा। यह सुविधा ३१ मार्च, १९७५ तक उपलब्ध होगी। यह निर्णय केवल नये सेटों के मामलों में लागू होगा। उन पुराने सेटों पर भी अनुदान देय होगा जो प्रथम बार उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत् परिषद् से क्रय किये गये हों।" उसके बाद टेंडर मांगे गये। गवर्नर्स रूल मे टेंडर मांगे गये। गवर्नर्स रूल में कंट्रैक्ट हुआ। यह सरकार कहां से आ गयी? इस लिये मेरी उनसे शिकायत है कि दिल्ली में बयान देने से पहले उन्होंने पूरी बात को ध्यान में नहीं रखा। गवर्नर्स रिजीम की बात है। जो सेट्स थे उनसे न लाभ था, न है, न हो सकता है। सारे के सारे सेट्स जो मोदी को दिये गये पांच मेगावाट से ज्यादा जनरेट नहीं कर रहे हैं और लाखों रुपये उसमें लगे हैं। ५० हजार रुपया साल किराया लिया है, क्वार्टर एक नहीं दिया, मकान एक दिया नहीं। जितने लगे हुए थे सेट खाली वही दिये। ५० हजार रुपया साल किराया लिया। फिर कहा कि हाई टेंशन लाइन में डालो। हमारे ग्रिड का टोटल लास है २३, २६ परसेंट, जाने कितने परसेंट। लेकिन हाई टेंशन पर बिजली चलती है तो लास पांच परसेंट से ज्यादा नहीं होता। हाई टेंशन लाइन मोदीनगर में है। ये हमारे आने से पहले के एग्रीमेंट्स हैं। उनके लिए हमारी सरकार उत्तरदायी नहीं है। एक तरह से उत्तरदायी हैं कि हम हर पूर्व सरकार के किये हुए कार्य का यहां उत्तर देने के लिये अपने को उत्तरदायी मानते हैं। भगवान इंडस्ट्रीज के बारे में एक बात कही गयी। उन्होंने एक टेंडर लगाया उनको दे दिया गया। कल आखिरी तारीख थी रुपया देने की, ३०–३१ लाख मैं जानता नहीं कितना। जो टेंडर की शर्तें हैं अगर उसके मुताबिक काम नहीं करेंगे तो पेनल क्लाज आपरेट करेंगे। वह एग्रीमेंट में दिया हुआ है। मैं नहीं जानता, अगर जमा नहीं हुआ होगा तो जो पैनल क्लाज है वह आपरेट करेगा।

श्री सत्यपाल मलिक—

पहले कोई और तारीख तय थी जिसको आपने बढ़ाया?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

मेरे पास जो सूचना प्राप्त है एक रुपया जमा कर दिया पेमेन्ट के दिन, एक रुपया जमा करने की कल आखिरी तारीख थी। इस लिए हरदुआगंज के सिलसिले में न कोई घुटाला है न पुटाला है। यह तो हर एक के सोचने की बात है जिनकी समझ में आता है कि हमने लिया है, जब चुनाव लड़ते हैं तो कहां कहां से पैसा लेते हैं, कौन किससे पैसा लेता है, इस बात को सब अन्दर बात करके पूछ लें। मैं एक बात कह सकता हूं खुले दिल से, यहीं के चीनी मिल मालिक से, उत्तर प्रदेश के, १९७३ में, मीटिंग में मैंने कहा कि एक पैसा तुम्हारा नहीं चाहिये। हमें कोई पैसा दिया गया तो रिश्वत मानेंगे।

(व्यवधान)

अहा–हा करने की बात नहीं है। बरेली चीनी मिल खटाका ले लिया।

श्री मोती लाल देहलवी—

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह हमारे पास बैंक आफ बड़ौदा का चेक है। (व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

आप इसको स्पीकर महोदय को दे दीजिये। (व्यवधान)

श्री मोती लाल देहलवी—

मान्यवर, ८ दिसम्बर को फिल्म स्टार नायक का स्टार नाइट का आयोजन किया गया था। उसका गवर्नर ने उद्घाटन किया और मुख्य मन्त्री जी वहां गये थे। (व्यवधान)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, मैं नहीं गया। आज तक जीवन में मैं किसी स्टार नाइट में नहीं गया। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

(माननीय मोती लाल देहलवी से) इसको आप दे दीजिये।

श्री मोती लाल देहलवी—

अब वह बैठ गये हैं। आप सुन लीजिये।

श्री अध्यक्ष—

यह प्रदर्शन की जगह नहीं है। इस तरह से आप नहीं कर सकते हैं।

श्री मोती लाल देहलवी—

[* * * *] (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

यह नहीं लिखा जायेगा। मैं इसको मान्यता नहीं देता हूं।

(श्री मोती लाल देहलवी बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष—

माननीय मोती लाल जी का यह काम अशोभनीय है। उनका कुछ नहीं लिखा जायेगा। मैं मान्यता नहीं देता हूं। समाचार पत्रों के लोग समझ लें कि उनका नाम नहीं आना चाहिये।

श्री कन्हैया लाल सोनकर (जिला इलाहाबाद)—

[* * * *]

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

मैं इसकी इजाजत नहीं देता। यह कोई तरीका नहीं है कि जब चाहें तब कोई खड़ा हो जाय। यह भी नहीं लिखा जायेगा। माननीय सोनकर जी ने जो कुछ कहा है वह नहीं लिखा जायेगा।

श्री मोती लाल देहलवी—

(* * * *)

(व्यवधान)।

श्री अध्यक्ष—

माननीय मोतीलाल जी का कुछ नहीं लिखा जायेगा। अगर वह एक मिनट में नहीं बैठते हैं तो फिर कार्यवाही की जायेगी। यह जानबूझ कर चेयर का अवमान बार-बार करते आये हैं तो मैं कठोर कार्यवाही की उनको सूचना देता हूं। यदि वह १ मिनट में नहीं बैठते तो आगे कार्यवाही की जायगी।

(श्री मोती लाल देहलवी बैठ गये)

[****] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, एक बात यह कही गई कि उत्तर प्रदेश के अन्दर बहुत कारपोरेशन्स हैं और बहुत सारे कारपोरेशन्स गड़बड़ हैं। हमारे उत्तर प्रदेश में मान्यवर, जहां तक छोटे यूनिट्स का ताल्लुक है वह बड़ी मात्रा में रहे हैं और इस सरकार के कार्यकाल में मैंने निश्चय किया कि जो कच्चा माल बेंच देते हैं, जिनकी वजह से सही कारखानों को नहीं मिलता, उनको काटछांट दिया, वहां इंडस्ट्रियल कारपोरेशन्स के नियम हैं और उस नियम के अन्तर्गत कर्जे की वसूली हो सकती है। अगर हमारी नियत खराब होती, तो हम ऐसी जगह पर बैठे थे, तो उसी जगह पर पड़े रहने देते। हम सब उसको दिखवा रहे हैं और हमारी आशा है कि हमारे उत्तर प्रदेश भर में जितनी फर्जी औद्योगिक इकाइयां हैं, जो रद्दी किस्म के कारखाने हैं उनको काट—छांट करने की जल्दी कोशिश करेंगे। जहां तक औद्योगीकरण की नीति की बात है हम खेती पर आधारित उद्योग को बढ़ावा देना चाहते हैं और हम चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश का जन-जीवन दुःख से सुख की ओर तेजी से आगे बढ़ने में कामयाब हो जाय।

एक बात मान्यवर, यह जरूर है कि कुछ लोगों ने मेरे ऊपर व्यक्तिगत रूप से लांछन लगाया है और सच पूछिये कि किसी ने मेरे लड़के पर, किसी ने मेरी स्त्री पर कहा है। जहां तक स्त्री का संबंध है, वह सोसायटी रजिस्ट्रेशन की मेम्बर रही हैं, और उन्होंने सोसायटी रजिस्ट्रेशन से इस्तीफा दे दिया। मैं यह भी कहता हूं कि जो उन पर जुर्म आयद होगा, उसमें अगर हम कुछ कमी करें, तो आप अवश्य कहें। एक साहब ने कहा कि कौन सा कमाल था कि वहां पर वह अनअपोज्ड हो गईं। आप उस समय भी कहेंगे, जब उत्तर प्रदेश में अगली बार चुनाव में कांग्रेस बहुत भारी मतों से जीत कर आयेगी। आप अपनी दांव पेंच चुनाव में जीतने की लगायेंगे कांग्रेस को हराने की और हम अपनी दांव पेंच लगायेंगे आपको हराने की और कांग्रेस को जिताने की। मैं सफाई के साथ कहना चाहता हूं कि यह चुनाव जो आजमाइश का होता है। इसमें आप और हम दोनों ही अपनी अपनी पूरी ताकत लगायेंगे। एक साहब ने मेरे लड़के के बारे में कहा कि वह हिन्द साइकिल, गाजियाबाद में काम करता है, उस फर्म पर सेल्स टैक्स का बकाया रहा है। मेरा लड़का वकील है। मुझे कहना नहीं चाहिए। एक भी सरकारी कारपोरेशन का या सरकारी कम्पनी का वह वकील नहीं रहा है। वकील है। गवर्नमेंट के खिलाफ मुकदमें करता है। जब वह मुझसे मिलता है तो कहता है कि पिता जी आप कानून बनायें, और हम तोड़ें। ज्यादा प्रैक्टिस उसकी क्रिमिनल ला की है। मेरे पास उसके आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। अगर आप नोटिस दे देते तो बता देता। इसका सवाल नहीं है कि किसकी क्या उम्र है। मेरी उम्र से बड़ी उम्र के लोग यहां बैठे हैं और मैं यहां पर चीफ मिनिस्टर हूं। सत्यपाल मलिक जी जिससे चुनाव में जीत कर आये हैं वह उनसे बड़ा है। तो उम्र की तो कोई बात नहीं हुई, किसकी कितनी है।

मुझे बहुत दुख हुआ, मेरे मरे हुए सम्बन्धियों के विषय में कहा गया, कहना नहीं चाहिये था लेकिन कहा गया। अगर पूछना था तो मुझे अकेले में बुलाकर पूछ लेते। वह दो बार स्वराज्य में जेल गये और वह बीमार थे और इलाज के लिये बिलायत गये। उनकी स्त्री अंग्रेजी नहीं जानती थी। मुझसे कहा कि मेरे साथ चलो। उनके पास पैसे की कमी थी। मैंने २४ हजार रुपया निकाला और उन्हें दिया। मेरे ससुर जो हिन्दुस्तान छोड़कर विलायत में बसे हैं उनकी दवा के सम्बन्ध में मेरी बीबी और बच्चे वहां पर रहे ह। अब कहते हैं कि जांच कराओ। किस बात की जांच कराऊं। अगर आप हलफनामा में लिखकर दे दें तो समझूंगा कि आपकी बात ठीक है। रोज कहां तक जांच कराऊं। मेरे पास न मकान है और न किसी किस्म की जायदाद है अगर है तो वह इन्सोरेन्स की रकम थी और उसे मुझे उनकी बीमारी में खर्च करनी पड़ी। लोक सभा के उपाध्यक्ष भी अपने पैसे से नहीं जा सकते थे, उनको भी सरकार ने पैसे की मदद की। अगर हमारे मरने वालों पर भी अफसोस नहीं और इनकी ऐसी प्रवृत्ति रही तो मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

श्री सत्यपाल मलिक—

चौधरी साहब ने कुछ नहीं कहा.....

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं वापस लेता हूं।

मेरे कहने का मतलब यह है कि मुझे अकेले में बुलाकर पूंछ लेते।

श्री सत्यपाल मलिक—

मैंने यह चीज नहीं कही। मैं आपकी तकलीफ में शरीक हूं। मैंने यह कहा था कि जो सार्वजनिक क्षेत्र में हैं उनकी जांच होनी चाहिए और मेरी भी होनी चाहिए, उसके रेफरेन्स में मैंने कहा था।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

ठीक है, उसकी विधि बनी हुई है। आप जांच की मांग करें लेकिन मैं अपने दिमाग में बिल्कुल साफ हूं।

पहले कहा गया कि मेरे पास एक बहुत बड़ा मकान है। बनवा लिया था और छुप-छुप कर उसे अपने नाम करवा लिया गया।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

यह पहले दिन भी नहीं कहा गया और न आज। यह आपने खुद कहा था कि पर्चे में ऐसा लिखा था। जो हमारा कार्य स्थगन का प्रस्ताव है, उसमें भी यह नहीं कहा गया है कि यह आपका निजी मकान है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आपका बहुत अनुग्रहीत हूं। मैंने आपके हाथ में पर्चा देखा था जो आप लिये हुये हैं। मैं किराये के मकान में हूं, यह बात साफ हो गई है। इस मकान के मालिक श्री बिशम्भर नाथ कपूर हैं, उनकी मृत्यु हो गई है। यह मकान अब जिसके हिस्से में है, वे हैं श्री सुरेशचन्द्र कपूर जो इन्जीनियर हैं, ठेकेदार नहीं हैं। उनके सामने ठेके का कोई सवाल नहीं आता है। मैं उनको किराया देता हूं। श्री बिशम्भर नाथ कपूर यह कह गये थे कि ३ चीज का पैसा ये देंगे, एक तो म्युनिसिपैलिटीज का, कन्जरवेन्सी का और वाटर टैक्स और एनुअल रिपेयर का। यह भी कह गये थे कि बहुगुणा जी इनको ५५ रुपया प्रति माह किराया देंगे, इसमें कोई भी असत्य बात नहीं है। जहां तक उसमें रहने का सम्बन्ध है मेरा परिवार, मेरा भाई जो टी० एस० एल० में काम करता है, एक मेरा लड़का जो हाई कोर्ट में प्रैक्टिस करता है, रहते हैं। कहा गया कि उसमें ३१ कमरे हैं, मेरा निवेदन है कि ३१ तो क्या अगर उसमें ११ कमरे भी बने हों तो मुझे दिखा दें। मैं माननीय शतरुद्ध प्रकाश को किसी दिन चाय पर बुलाकर अपने मकान को दिखा दूंगा और वे मुझे दिखा दें कि उसमें ११, १७ या १८ कमरे कहां पर बने हैं। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि चरित्र हनन का काम अच्छा नहीं है और उसका मेरे ऊपर कुछ असर भी नहीं पड़ने वाला है। मैंने उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद में और सुल्तानपुर की जेल से ६ रुपये ४ आने से जीवन आरम्भ किया था और मेरे जीवन से वे अच्छी तरह से परिचित हैं। मैं तो साफ कहना चाहता हूं कि जितना कीचड़ उछाला गया, वह कीचड़ उछालने से दबेगा नहीं। लेकिन ये बातें सत्य से परे हैं, इनका कोई औचित्य नहीं है अगर हम व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूंछें कि कोट कहां बनवाया रसीद दिखाओ, मफलर कहां से लिया रसीद दिखाओ, तमाम चीजों की डिशियल इन्क्वायरी कराओ कि मोटर कार कब खरीदी कहां से खरीदी। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मेरे जीवन में कोई परछांई नहीं आई। मैंने अपने जीवन की पवित्रता अक्षुण्ण रखने की कोशिश की है।

*श्री शतरुद्ध प्रकाश—

(कुछ माननीय सदस्यों के टोकने पर) ऐसे तो आप मुझे बैठा नहीं सकते हैं। मैं माननीय मुख्य मन्त्री जी से साफ कहना चाहता हूं कि ये व्यक्तिगत आरोप नहीं हैं, मैं माननीय चौधरी साहब के उन लफ्जों को आपके सामने रखना चाहता हूं, बहुत नम्रता के साथ अगर नहीं सुनायेंगे तो सफाई कैसे आयेगी। मुख्य मन्त्री जी जैसे आपने अपनी बात कही है, मुझे भी कुछ कहने का अधिकार है। मैं चौधरी साहब की उस बात को रखना चाहता हूं जिसमें उन्होंने कहा था कि आदमी की जिन्दगी के २ कम्पार्टमेंट होते हैं। पहला पब्लिक और दूसरा निजी, ये निजी आरोप नहीं हैं।

दूसरी बात जो मुझे कहनी है, वह यह है कि आपने जो मोदी इन्डस्ट्रीज की बात कही है, उसमें आपके जो सुपुत्र हैं, वे वकील हैं और आपने कहा है कि मेरा लड़का अगर सरकार के खिलाफ वकालत करता है तो मुझे कुछ नहीं कहना है। अगर आपका सुपुत्र सरकार के खिलाफ वकालत करता है तो उसकी सफाई होनी चाहिये। मोदी इन्डस्ट्रीज का जो किस्सा है, उसमें एक प्रतिशत भी झूठ नहीं है। ८ नवम्बर, १९७३ को आप चीफ मिनिस्टर हुये थे उत्तर प्रदेश के और १६ नवम्बर, १९७३ को मोदी इन्डस्ट्रीज में वह लीगल ऐडवाइजर मान लिये गये।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अच्छा अब बैठ जाइये, मैं इसका जवाब दे दूं। यह बात असत्य है। अगर यह सत्य हो, चौधरी चरण सिंह जी जिस कागज को चाहें देख लें, वह किसी के लीगल ऐडवाइजर नहीं हैं।

श्री शतरुद्ध प्रकाश—

बात खत्म नहीं हुई है। जो आरोप है वह अपनी जगह पर है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मान्यवर, ये बिल्कुल निराधार बात कह रहे हैं और अब मैं इनका कोई जवाब देना नहीं चाहता।

(श्री शतरुद्ध प्रकाश बोलते रहे)

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मैं एक अन्तिम बात कहना चाहता हूं। श्री ललित नारायण मिश्र का निधन, जिससे हम सब दुखी हैं, आज इस बात का स्मरण दिला रहा है कि चरित्र हत्या करते करते आदमी की भी हत्या हो सकती है। जिन प्रवृत्तियों ने गांधी जी को मारा था ठीक उसी प्रकार की प्रवृत्ति आज देश भर में पैदा की जा रही है। हम शक्ति भर उससे लड़ेंगे।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय—

[* * * *]

(श्री सत्य प्रकाश मालवीय माइक बन्द कर दिये जाने के बाद भी बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष—

अब यह कुछ लिखा नहीं जायगा।

(सदन में घोर शोर)

प्रजातन्त्र के हत्यारों बैठो, की आवाजें।

अब माननीय माधव प्रसाद जी त्रिपाठी जवाब देंगे।

(सदन में घोर शोर)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[****] श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार निकाल दिया गया।

[श्री अध्यक्ष]

मेरी यह प्रार्थना है कि आप शान्ति के साथ माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी जी की बात सुनें।

*श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, मैंने अविश्वास का जो प्रस्ताव रखा था उस पर दो दिन चर्चा हुई। माननीय चौधरी साहब ने कल ठीक ही कहा था कि हम दोनों व्यक्ति अविश्वास के प्रस्ताव को अब लाने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि अनेक बातों की चर्चा यहां हो चुकी थी। मगर कुछ कारणों से उसे लाना पड़ा। कुछ यहां चर्चा के मध्य ऐसी बातें हो गयीं जिसका मुझे महान दुख है ..... (व्यवधान)। मुझे कृपया प्रोवोक न करें। वरना मुझे वह सब कहना पड़ेगा जो मैं कहना नहीं चाहता। (व्यवधान)

मैं मान्यवर, कह रहा था कि मुझे उन घटनाओं का दुख है जो यहां हो गयीं अनेक विषय भी ऐसे सामने आये जिन्हें नहीं आना चाहिये था। मैं स्वयं बोलना नहीं चाहता था। मेरी तबियत भी ठीक नहीं थी। लेकिन चूंकि जवाब देना आवश्यक था। इसलिये खड़ा हुआ बोलने के लिये। मैं माननीय मुख्य मन्त्री का अन्तिम उत्तर सुनना चाहता था और मैंने सुना भी। मुझे इस बात की बड़ी चिन्ता और दुख है कि जितनी भी बातें उधर से कहीं गयीं। जो भी भाषण दिये गये, हमारे माननीय मुख्य मन्त्री जी ने भी जो भाषण दिया उसमें दो गलती हैं। पहली गलती तो यह है कि ललित नारायण मिश्र जी का नाम नहीं आना चाहिये था, मुझे वास्तव में बड़ा दुख है जो कुछ हुआ, उससे, आप अगर मेरे दुख को न समझ पायें तो मुझे उसकी चिन्ता नहीं है, लेकिन मुझे बड़ा दुख है। वह नहीं होना चाहिये था। माननीय प्रभु नारायण सिंह जी ने जो कहा उसने बड़ी चिन्ता पैदा कर दी। अवसर आने पर उस पर कुछ कहूंगा। इस समय मैं दूसरी मुख्य बात पर आता हूं।

मान्यवर, इस सरकार ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि राज्य दिवालिया हो गया है। क्यों हो गया, उसका कोई जवाब किसी ने नहीं दिया। माननीय मुख्य मन्त्री जी के चरण आते ही राज्य दिवालिया हो गया, आखिर इसका क्या कारण है, कौन इसके लिये जिम्मेदार है, किसी ने इसका जवाब नहीं दिया। मैं मुख्य मन्त्री जी को इसके लिये बधाई देता हूं कि उन्होंने सही बात को स्वीकार किया और स्वयं यह उन्होंने ही कहा कि सारा प्रदेश दिवालिया हो गया है। यह वह छिपा भी नहीं सकते थे क्योंकि वह सब कुछ किताबों में लिखा है, स्पष्ट है। किसी से वह छिपा नहीं है। मैं जानना चाहता था कि वे जवाब देंगे कि आखिर इस आर्थिक संकट के लिये जिम्मेदार कौन है। उन एक भी पहलू का जवाब नहीं दिया गया जिनसे आज सारी जनता दुखी है। महंगाई के बारे में भी कोई जिक्र नहीं किया गया, आज करोड़ों आदमी, इन्जीनियर्स, डाक्टर्स, बेकार हैं उसका कोई जवाब नहीं दिया गया। पार साल की बात मैं याद करता हूं जब कि बनारस में कांग्रेस की कान्फ्रेन्स हुई थी तो उसमें श्री कमलापति त्रिपाठी ने कहा था कि इस उत्तर प्रदेश में ५० प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो गरीबी के स्तर से भी नीचे रहते हैं या उनकी भाषा में कहूं तो उन्होंने यह कहा था कि उनको दो जून पेट भर भोजन भी नहीं मिलता। यह बात आज से साल डेढ़ साल पहले श्री कमलापति त्रिपाठी ने कहा था। अगर मैं श्री बहुगुणा जी से पूछूं कि तब से आज उनकी हालत गिरी है या बनी है तो बहुगुणा जी यही कहेंगे कि बनी है, ऐसा मेरा विश्वास है लेकिन आज एक तरफ वे छटपटाते हुए भूख से कराह रहे हैं, और दूसरी तरफ आप २ हजार पाने वाले आफिसरों की तनख्वाह बढ़ा रहे हैं। फिर भला उनकी गरीबी को आप क्या सोच और समझ सकते हैं? विरोधी

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पक्ष ही उस चीज को समझ सकता है। जो कुर्सी से अलग है वही इसको सोच सकता है, जो शासन में है वह इसको नहीं समझ सकता।

दूसरी बात यह कि पूर्वी उत्तर प्रदेश जो अनडेवलप्ड है, अविकसित है, जहां की जनता रो रही है, पूर्वी उत्तर प्रदेश क्या सारा प्रान्त ही रो रहा है, लेकिन विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश रो रहा है उसके लिये भी आपने कुछ नहीं किया। उसके लिये कुछ करने की आपकी नियत ही नहीं थी। जहां तक आयोगों की बात है, पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिये पटेल आयोग बैठाया गया, उसने अपनी रिपोर्ट भी दी लेकिन उस पर कोई अमल नहीं किया गया जिससे पूर्वी इलाके के लिये कुछ भी नहीं हो सका। अब चलते चलाते जो कुछ व्यक्तिगत आपके लिये कहा गया, उसका आपने जवाब दे दिया और जवाब देना चाहिये। लेकिन एडमिनिस्ट्रेटिव भ्रष्टाचार की जो मैंने एक दो मिसालें दी थीं उसको दूर करने के लिये आपकी तरफ से क्या प्रयास किया गया, उसके लिये आपने एक लफ्ज भी नहीं कहा। इस प्रदेश का क्या होगा? जो इतने वाइटल्स आस्पेक्ट्स थे उन पर आपने कोई प्रकाश नहीं डाला। आपकी ड्यूटी थी कि हमारे पास रुपया रहेगा तो उसका सदुपयोग होगा। हमारा रुपया और किसी भी पाकेट में न जाय जिससे विकास का कार्य न रुक सके। तमाम डेवलपमेंट के काम जो रुके पड़े हैं, चाहे पी० डब्ल्यू० डी० का हो, चाहे एग्रीकल्चर का हो, चाहे इर्रीगेशन का हो, चाहे विलेज इलेक्ट्रिफिकेशन का हो, उसके लिये आप क्या करने जा रहे हैं, उसके बारे में एक लफ्ज भी प्रकाश नहीं डाला। गरीबों पर आपने टैक्स लगाया और मुझ जैसे बड़े आदमियों पर आपने टैक्स नहीं लगाया। ऐसे मैं कोई बड़ा आदमी अपने को नहीं समझता लेकिन मेरा मतलब है कि घड़ी वाले पर टैक्स लगना चाहिये था। हमारी बात पर वे ज्यादा नाराज हो गये, इनकी स्पीच मिसफायर हो गयी।

मेरी तबियत ठीक नहीं है इसलिये मैं सरसरी तौर पर ही कहूंगा। पहले पहल परम आदरणीय काशी नाथ मिश्र जी ने प्रारम्भ किया था बकौल आदरणीय बहुगुणा जी के, हमारे लिये फ्यूडल पावर कहा। श्री काशीनाथ मिश्र जी तो मेरे बहुत पुराने मित्र हैं, न मालूम कैसे उन्होंने मेरे लिये फ्यूडल पावर की बात कह दी। इसकी मैं एक ही मिसाल देता हूं कि एक सौदागर था जो आलू का व्यापार करता था। जब बाजार में उसका आलू होता था तो सब से यही कहता था कि आलू सब्जी के लिये बड़ा ही लाजवाब है और दूसरा सौदागर जिसके पास भांटा था उसके लिये कहता कि भांटा बड़ा ही बादी होता है, बेकार होता है। लेकिन जब कभी उसके पास भांटा ही बेचने के लिये होता तो लोगों से कहता कि देखिये—भांटा सब तरकारियों का बदशाह है, यही सिद्धान्त उनका है। इधर से बदल कर उधर इसलिये गये कि वहां जाकर कभी न कभी मिनिस्टर, पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी या किसी कारपोरेशन के अध्यक्ष तो हो ही जायेंगे। मान्यवर, जब मैं हाउसिंग बोर्ड का चेयरमैन था, चुनाव हार गया था। मैं वहां का चेयरमैन था। जब मुझसे कहा गया तो मैंने जवाब दिया कि तनख्वाह पर नहीं जाता। लोगों ने कहा कि क्यों नाम के ऊपर बैठे हो। यहां तक कि मेरे भाई ने भी कहा कि छोड़ दीजिये हाउसिंग बोर्ड, पर मैंने कहा नहीं मगर आज आपकी सरकार है आप अमेंड कर दें। हर आदमी की ख्वाहिश होती है पैसे की। आप निगम बना रहे हैं। कारपोरेशन बना रहे हैं। जाने दीजिये इन बातों को। हर आदमी सोचता है कि हमारे बेटी बेटे हैं मैं क्या खाऊंगा जब मैं राजनीति छोड़ दूंगा। हर आदमी यह सोचता है। मैं यह बात अब आगे और नहीं कहना चाहता हूं मुझे बड़ा दुख हो रहा है।

मान्यवर, बड़ा अच्छा लगता था जब प्रभुनारायण सिंह जी यहां पर बैठते थे। मान्यवर, मुझे तो महसूस हुआ करता था कि वह मुझसे भी ज्यादा योग्य हैं। अब वह बात नहीं रही है। वह उधर चले गये हैं। हमको भूल गये हैं। कभी वह हमारे साथ रहते थे। मान्यवर, काशीनाथ जी भी इधर ही हमारे साथ बैठा करते थे। बड़ा कमाल करते थे। अब वह भी उधर चले गये। हमको छोड़ दिया है। नीतियां बदल दी हैं। अपनी राय बदल दिया है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा —

माधव बाबू, मैंने उनको रोका नहीं है, वह फिर कमाल करें।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मान्यवर, बहुत लोग उधर चले गये हैं, किस लिये गये हैं मैं बता नहीं सकता हूं। पर कुछ को अभी लालच है और एक ही चौथाई ऐसे हैं जो आपकी बात मानते हैं, आपके अनुगामी हैं। नहीं तो मीटिंग करके कहते जरूर कि आप विरोधी दल की शिकायतें सुनते हैं। मान्यवर, जब मैं कह देता हूं पी० डब्ल्यू० डी० की बात तो नाराज हो जाते हैं। मान्यवर, मैं उस पर अभी आऊंगा।

मान्यवर, तो मैं कह रहा था कि आप पर विश्वास नहीं रह गया है। 'यू हैव लोस्ट दि कांफीडेंस आफ दि हाउस'। केवल आप गाड़ी को खींचे जा रहे हैं। मान्यवर, यह राजा लोग जो आपके साथ बैठे हुये हैं, राजा अजीत प्रताप सिंह.....यह सब किसके रिप्रेजेंटेटिव हैं? मान्यवर, जब मौका आयेगा तो मदद वह आपकी करेंगे।

मान्यवर, खड़ाऊं और धोती की बात करते हैं। गांधी जी के पद चिन्हों की बात करते हैं। मेरा तो कहना है कि यह आज महात्मा जी को भूल गये हैं केवल नाम ही रखा है, इनका काम तो मान्यवर कुछ और है। मान्यवर, जैसे पहलवान छाप बीड़ी हो गयी वैसे गांधी जी का नाम बना दिया है। अन्दर चाहे मिट्टी को ही भर दिया गया है पर नाम तो पहलवान छाप बीड़ी है। जो देखेगा मुंह में लगा लेगा। नाम पहलवान छाप बीड़ी जो है।

(सदन में व्यापक हंसी)

मान्यवर, मेरा तो कहना है कि जहां किसी बात की आड़ आप लेते हैं तो उससे तो अच्छा है कि आप उस बात को खुलकर ही करें।

मान्यवर, मैंने मंगल देव विशारद की बात कही थी। कोई जवाब मुझको नहीं दिया गया है। उसमें तो मान्यवर सभी बातें साफ लिखी हैं, हमारे तिवारी जी कह दें कि हमारे वहां के लोगों के पास अब भी हजारों बीघा जमीन है, आज भी जोतते हैं तो मान्यवर, मुझे विश्वास तो कुछ हो ही जायगा।

दूसरी बात बहिन जी से कहना चाहता हूं। जवाब दें। ग्राइंड एलाइन्स। मान्यवर, मैंने तो इसका जब लड़ाई हो रही थी तभी सुना था। यह हिटलर के जमाने में ही था। मान्यवर, ब्लैक मार्केटिंग, घूसखोरी, चोर बाजारी यह तो मेरी जानकारी में सन् ४७ के समय इतनी नहीं थी। यह कहां से पैदा हुयी? इसका कोई जवाब नहीं दिया। मान्यवर, मैं यह शब्द इस्तेमाल न करता क्योंकि मान्यवर, हिटलर के जमाने में ही यह शब्द आया था। हमारे बहुगुणा जी न कहें.....

(हंसी)

मान्यवर, डाइरेक्टिव प्रिंसिपल्स की बात कहूंगा। मान्यवर, मैं ज्यादा इसके बारे में नहीं जाऊंगा। टाइम कम है। मैं ज्यादा बात नहीं करता, बिड़ला ने २ करोड़ चुनाव में दिया, गोवा में फर्टीलाइजर फैक्टरी उनको लगाने को दे दिया गया। यह आपके आदमी हैं। मान्यवर, अन्त में मैं बाजरा कांड और पैंडी कांड के बारे में कहना चाहता हूं कि अभी तक मैंने कांड शब्द रामायण में सुना था परन्तु अब कांड शब्द कांग्रेस में भी आ गया है। यदि इनके कांडों के बारे में कथा सुनाने लगूं तो वह अनन्त है।

अब मान्यवर, यह कहते हैं कि हमारी राष्ट्रीय नीति राष्ट्रीयकरण से है। यह कहते हैं कि माधव बाबू इसका विरोध करते हैं। तो मैं एक किस्सा सुनाना चाहता हूं। एक बुढ़िया दिल्ली गयी और प्रधान मन्त्री के कार्यालय में कहने लगी कि मैं बहन जी से भेंट करना चाहती हूं। वहां पूछा गया कि किस कारण मिलना चाहती हो। बुढ़िया ने

कहा कि बहुत जरूरी मिलना है । अन्त में वह बुढ़िया रोने लगी तब उसको मिलने जाने दिया गया। बहन जी ने पूछा तुम किस लिये आयी हो। बुढ़िया रोने लगी और कहा कि हमको कष्ट है। तो बहन जी ने कहा कि कष्ट है तो तुमको डाक्टर को दिखा दूं। उसने कहा नहीं। बहन जी ने कहा फिर क्या चाहती हो। बुढ़िया ने कहा कि बहन जी हमारी पीठ पर हाथ रख दो। बहन जी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। बुढ़िया ने कहा कि बस हमारा दर्द गायब हो गया। कहा यह कैसे? बुढ़िया ने कहा कि आपने जिस-जिस चीज पर हाथ रखा वह गायब हो गयी। इस प्रकार बहन जी हम सरकारी राष्ट्रीयकरण से दुखी हैं।

मान्यवर, उसके बाद बात आयी श्री गोविन्द सिंह नेगी जी की, उनको मैं बहुत प्यार करता हूं परन्तु उन्होंने दोलत्ती लगायी है और कहा कि माधव बाबू विरोधाभास कहते हैं। नेवाला और सांप में तो विरोधाभास होता है परन्तु कम्युनिस्ट और कांग्रेस में नहीं रह गया है। आपने कहा कि बड़ी जखीरेबाजी और गड़बड़ियां हैं परन्तु फिर भी अविश्वास प्रस्ताव में हाथ नहीं उठाया । इन्होंने घड़ियाल की तरह दो आंसू बहा दिये। डिमोक्रेसी में विश्वास करते हैं। यदि यह हट जायेंगे तो जनता फिर अपने प्रतिनिधियों को चुनेगी और फिर वह आयेंगे ऐसा यह समझते हैं। यहां बड़ों की सुनी जाती है और छोटों की सुनवाई नहीं है। रायल फेमली की सुनवाई है। आपका विश्वास प्रजातन्त्र में है नहीं इसलिये मैं इसमें नहीं कहूंगा। आपका हमेशा विश्वास इस पर रहा है कि पावर आती है दो नली से और दोनों (इशारा कम्युनिस्ट और कांग्रेस की तरफ) मिलकर काम कर रहे हैं। विद्रोह न होता अगर ऐसा होता। जरा अखबार देखिये। खत का मजमूं भांप लेते हैं, लिफाफा देखकर। नेगी जी ने यह बात कह दी तो मैं इस बारे में और अधिक नहीं कहूंगा। ईश्वरी सिंह कुछ कह रहे थे तो मैं उनसे कहूंगा कि मुख्य मन्त्री जी उनके लिये मार्गदर्शक हैं। एक दो बार पंडितजी ने कहा था कि सभी लोग कम्युनिस्ट लीनिंग्स के हैं। मान्यवर, कहा गया और दास कमीशन बैठा। उसने कहा कि सिराजुद्दीन वाले मामले में उनके खिलाफ क्यों मुकदमा न चलाया जाय। तो पंडित नेहरू ने कहा कि इतनी सजा काफी है कि वह नीचे उतर आये। श्रीमन्, चौकीदार भी डिस्मिस होकर अपनी जगह पर नहीं आ सकता है, आरडरली वापस अपनी जगह पर नहीं आ सकता है लेकिन बहनजी ने पंडित नेहरू द्वारा निकाले व्यक्ति को उसी जगह पर लाकर बिठा दिया। उसे ६८ प्रतिशत जनता की छाती पर लाकर रख दिया। यू कैन नाट रिमूव करप्शन। मिसाल देखी जाती है। बहुगुणा जी अगर अपने भाई के चपत लगा दें तो मैं भी डर जाऊंगा कि सख्त आदमी हैं। तो मैं कहना चाहता हूं कि हर कांग्रेस वाला जानता है कि आप हर एक की तलाशी ले रहे हैं। आप कहते हैं कि चौधरी साहब १९५२ में १० प्रतिशत से जीते।

मैं कहता हूं कि कांग्रेस की क्या ख्याति है उसको देखिये। आज का हर जवान आपकी शिक्षा लेकर २५ वर्ष का हुआ है। आदमी अपने बेटी-बेटों से कहता है कि जैसा बाहर बरताव करो वैसा ही घर में भी करो। क्योंकि बाहर ठीक नहीं करोगे तो घर में भी खराबी पैदा करोगे तो आपने मारल बैंक्रप्टसी, फाइनेंसियल बैंक्रप्टसी, एडमिनिस्ट्रेटिव बैंक्रप्टसी पैदा कर ली है। तो मैं यह कह रहा कि जब धोटाला कांड निकला तो मुझे बड़ी तकलीफ हुई। अब विश्वास नहीं रह गया है। एक कांग्रेसी सज्जन ने कहा था। पार्लियामेन्टरी सिक्रेटरी थे। उन्होंने कहा कि कमिटेड सर्विसेज होना चाहिये और बड़ी-बड़ी सर्विसेज कांग्रेस मैनों के पास होना चाहिये। आज यह स्थिति हो गई है। यह लोग कहते हैं या यह उन्हीं की देन है। जरा सी शंका हुई तो नेस्तनाबूद कर दिया। श्री एल० एन०मिश्रा की मौत के बारे में आपने कहा लेकिन यह क्यों हुआ, जरा इसकी गहराई में भी जाइये। क्या आपने भुखमरी, बेकारी, इन्जस्टिस दूर की? मेरे पास आफिसर्स आकर कहते हैं कि उनकी पूंछ नहीं है क्योंकि वह आपकी लाइन टो नहीं सकते है। मान्यवर, वाटरगेट में २ आदमी डिसमिस हो गये। आज हमारा चार्ज है कि नागरवाला ने ६० लाख चार्ज किया। मै चाहता हूं कि मेरी बात गलत है तो बहन

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

जी क्यों नहीं कहतीं कि गलत है। लेकिन उसमें एस० पी० गायब, इनवेस्टीगेटिंग आफिसर गायब, और वह कौन कश्यप,. . गायब। यही सीखा है इन्होंने रूस और चीन से। सी० बी०आई० भी जांच कर रही है, उसका भी खत्म हो गया। अडवानी साहब ने चार्ज लगाया कि सी० बी० आई० की भी हत्या हो गयी। १० बजे खबर आई और आपने विरोधी दलों पर लाद दिया कि ऐसा न करते तो अच्छा होता।

श्री प्रभुनारायण—

मान्यवर, मैं माधव बाबू से कहना चाहता हूं कि विरोधी दलों के मामले में इतना ही कहा कि जो अराजकता की राजनीति देश में पैदा कर रखी है, उससे हत्या राजनीति का जन्म हो गया है और अगर यह चलता रहा तो डेमोक्रेसी नहीं रहेगी और डिकटेटरशिप आ जायेगी।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

ठीक है, आपकी बात मान लेता हूं लेकिन अराजकता का कारण कौन है? लेकिन हमारी बहन जी कहती हैं कि इसको मत उठाओ। दंगे के पास मत जाओ, लेकिन बहुत मिलीजुलो नहीं। और क्या कहते हैं? प्रभुनारायण जी कहते है कि आइडोलाजिकल एकता नहीं है। मै कहता हूं कि आइडालोजिकल एकता क्यों नहीं है? प्रान्त और केन्द्र की नीति में अनबन क्यों है? क्या किया आपने आइडोलाजिकल एकता के लिये? मैं कहता हूं कि आपने देश को नष्ट कर दिया; भगवान जाने क्या स्थिति आयगी आगे। लेकिन आपकी गल्ती को हटाने के लिय हमको जितनी भी कुरबानी करनी पड़ेगी, हम तैयार रहेंगे, चाहे इस भागदौड़ में हमारी टांग ही क्यों न टूट जाय। मान्यवर, आज आइडियोलाजिकल यूनिटी हैज बीन होपलेसली इक्सप्लोडेड।

दूसरी बात मैं लक्ष्मी शंकर यादव जी के बारे में कहना चाहता हूं। कहने की इच्छा तो नहीं थी और मैंने मुख्य मन्त्री जी से कहा भी है कि मेरी किसी के व्यक्तिगत चरित्र पर हमला करने की आदत नहीं, जब तक कि वह बहुत ऐडमिनिस्ट्रेटिव मामला न हो। मैं कहता हूं ओवरसियर और इन्जीनियर के ट्रान्सफर में मैंने कभी नहीं कहा। लेकिन सूप बोले तो बोले चलनी क्यों बोले जिसमें ७२ छेद हैं? मान्यवर, मुझे बहुत दुख हुआ और मैं मुख्य मन्त्री जी से प्रार्थना करता हूं कि १८ साल से मै उत्तर प्रदेश में असेम्बली और कौंसिल में रहा हूं, किसी ने उंगली तक नहीं उठाई। मैं कहता हूं कि बुला लें मुझको वे और तब मेरी कथा को सुने और मेरे बारे में कहें कि मैंने क्या कहा। यही हमने किया उनसे सीख कर।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव—

अगर आप विश्वास करें तो मै आपको बतला दूं कि मेरी उनसे बातचीत नहीं हुई है।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

मैं यह मान नहीं सकता। जो बात मेरी हुई है वह तीसरा कैसे जान सकता है? सारे मन्त्रियों के बारे में मुझे मालूम है बल्कि माननीय बहुगुणा जी से पूछ कर अलग से बताऊंगा। अगर नहीं कहेंगे तो नहीं कहूंगा। मैंने किसी के बारे में चर्चा नहीं की। मेरे मन को बहुत दुखाया है। मैं तो चैलेंज करके कहता हूं कि सी० आई० डी० से सी० बी० आई० से जांच करा लीजिये, सारे रिसोर्सेज एगजास्ट करा लीजिये। अगर ऐसा होता तो यहां जीत कर नहीं आता। राजगोपालाचार्य ने कहा था कि पी० डब्ल्यू० डी० इज माई एनिमी नम्बर वन। मैं विभाग के लिये कह रहा हूं उसी तरह। मेडिकल के डायरेक्टर आये हैं। कहते हैं दवा नहीं मिलती अस्पतालों में। मुझसे किसी ने कुछ नहीं कहा। यह पैम्फलेट है मेरे पास। इसे आप देख लें। लक्ष्मी शंकर जी याद रखें आप कहते क्या हैं? इन्क्वायरी चल रही थी किसी के बारे में। कहा कि माधव बाबू बड़े जिम्मेदार आदमी हैं। उनके बारे में तो कुछ नहीं कहूंगा लेकिन कहते-कहते कह गये कि इसलिये वह नाराज

हो गये कि पी० डब्ल्यू० डी० के इंजीनियर को कहते थे कि स्टे कर दिया जाय। यह बिल्कुल मिथ्या है, निराधार है। किसी को रोकने को मैंने नहीं कहा। इस स्तर तक मैं नहीं जा सकता।

श्री अध्यक्ष—

मैं १५ मिनट का समय बढ़ाता हूं।

चौधरी चरण सिंह—

मैं प्रस्ताव करता हूं कि आधे घंटे का समय बढ़ा दिया जाय।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

बहुगुणा जी मान गये थे कि जितनी देर मैं बोलूंगा उतनी देर का समय मुझे मिलेगा।

चौधरी चरण सिंह—

बहुगुणा जी जब मान गये थे कि जितनी देर त्रिपाठी जी बोलना चाहें वह बोल सकते हैं तो मैं अपने प्रस्ताव वापस लेता हूं। और उनको बोलने दिया जाय जब तक वह बोलें।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि सदन का समय तब तक के लिये बढ़ाया जाता है जब तक श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी बोलें।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

लक्ष्मी शंकर जी से कहूंगा कि जो बात उन्होंने कही वह उनकी कल्पना थी, गलत बात उन्होंने कही थी। मैं आगे नहीं कहूंगा उनके बारे में। मान्यवर, अब मैं बहुगुणा जी वाली बात पर आता हूं। हमारे माननीय वीरेन्द्र वर्मा जी बोल रहे थे उन्होंने तमाम स्मगलर्स और संविधान आदि की बात कही। मान्यवर, मैं दो एक लफ्ज कह कर समाप्त करता हूं। आप स्मगलर्स के बयान पर लीजिये। माननीय बहुगुणा जी ने 15 लाख रुपया शराब वाले में कमाये। चौधरी साहब ने एक मुद्दा उठाया था और वह यह था कि प्रजातन्त्र में उनका विश्वास नहीं है। उस पर हमारे किसी एक भाई ने कहा कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। आपने चोर व कुत्ते की संज्ञा विरोध पक्ष को दी। इस पर बहुगुणा जी ने दो बातें कहीं। आपने कहा कि नवजीवन अखबार में इस बात का कन्ट्राडिक्शन निकला है। मान्यवर, यह तो साधारण सी बात है कि जिसने ऐसी बात कही हो उससे उस बात का प्रतिवाद कराना चाहिये था वह उनसे नहीं कराया गया और अपने सरकारी अखबार से कराया। आप किसी कुत्ते और चोर को पकड़ते तो मैं समझता। बहन जी ने गुस्से में यह कह दिया जिसको आप ढकने का प्रयास कर रहे हैं और ढक दिया। एक अखबार गलत सुन सकता था, दूसरा गलत सुन सकता था, कैसे इतने अखबारों में आ गया। आपने उनको डरा धमका दिया और उन लोगों ने रिजाइन करना शरू कर दिया जिससे उन्होंने यह कन्ट्राडिक्शन निकाल दिया।

आपने कहा कि आपका विश्वास अपोजीशन पर नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि आपके पास क्या सबूत है आर्डिनेन्स के ऊपर आर्डिनेन्स निकाल देते हैं। यही जो आपकी नीति है वह डिमोक्रेसी को चलने नहीं देती है। डिफेक्शन की नीति आपकी है। अभी दो-तीन सवारी आज ही गई है। आर्डिनेन्स और डिफेक्शन में आपको आनन्द आता है और तब आप डिमोक्रेसी में विश्वास करते हैं। आप विरोधी पक्ष को नहीं चाहते हैं। सुप्रीम कोर्ट के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूं। जितने भी हिन्दुस्तान

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

भर के बार एसोसियेशन्स हैं जो विधि अपनायी है। जजेज के बारे में राय नहीं दे सकता लेकिन उन्होंने आपकी नीतियों के खिलाफ इस्तीफा दिया है। सारी बार एसोशियेशन ने स्ट्राइक की और एक हलचल मच गई। वैसे स्ट्राइक में तो आप विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि नाना प्रकार के छलबल से उसे दबा देते हैं और उस पर भी कहते हैं कि हम अपोजिशन में विश्वास करते हैं। फिर निगम के बारे में चर्चा की गई। माननीय बहुगणा जी कहते हैं कि यह फलां-फलां ने बनाया हम क्या करें। तो मैं कहना चाहता हूं कि अगर हमने गलती की और मैं इन्डस्ट्री मिनिस्टर था तो क्या आप यह कहगे कि उन्होंने 20 लाख की चोरी की तो उसको हम उदाहरण मानें और वैसे ही करें। तो यह कोई उत्तर नहीं है 'दिस इज नो आनसर'। माधव प्रसाद ने अगर चोरी की थी तो उसको आपने रोकना चाहिये था। आपने ऐग्रो कार्पोरेशन से सबक नहीं लिया। आपको इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड से सबक लेना चाहिये जो आपकी अर्थव्यवस्था को धराशाही बना रहा है। आप हिल डेवलपमेंट बोर्ड को देखें, इरिगेशन में देखें। लखीमपुर-खीरी में आपने आर० एस० एस० और जनसंघ को ही दोष दिया। यह पार्टी गरीब है इसी बहाने आपने उसे बदनाम कर लिया, कहते हैं अगर बड़ा आदमी किसी मरे हुये के ऊपर लकड़ी भी डाल देता है तो कहते हैं कि बड़े आदमी ने लकड़ी डाली। तो बहन जी ने ऐसे ही नाम ले लिया तो अच्छा है। तो मैं कहना चाहता हूं कि लखीमपुर-खीरी में वहां के आफिसरों की गलती है वह दोषी हैं, उनके खिलाफ मुकदमा चलायें। उसकी रिपोर्ट तक हमको नहीं दिखाई गई, और दिनांक १ जनवरी, १९७४ को हमको रिपोर्ट दी जब कि सेशन खतम होने वाला है वह १० महीने बाद दिया। कहते हैं कि इसलिये नहीं दी कि इसका चुनाव में असर पड़ेगा। उनकी तो हर चीज में यही नीति रहती है जैसे मदारी कहीं सड़क पर खेल दिखाता है तो वह मुंह से गोला निकालना शुरू करता है और कहता है कि यह किसके लिये तो जवाब आता है पेट के लिये। इसी तरह से इनका भी हाल है यह भी हर चीज वोट और कुर्सियों के लिये करते हैं।

पेंशन के रूल्स के बारे में कहते हैं कि इसमें कुछ कमियां हैं। आप डेलिगेटेड लेजिसलेशन में पता लगायें कि कितने लेजिसलेशन पड़े हुए हैं जो अभी अधूरे हैं। तो इसकी चिन्ता आप करें।

श्री गोविन्द प्रसाद गैरोला—

अध्यक्ष जी, टाइम बताइये। यह क्या पूजन हो रहा है, सत्यनारायन की कथा हो रही है।

श्री पुरुषोत्तम कौशिक—

आप तो पाप कथा सुनने वाले हैं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

सर्विसेस के बारे में मैं भी यही कहूंगा कि आइ० ए० एस० और पी० सी० एस० में झगड़ा नहीं होना चाहिये लेकिन अगर कहीं पर कोई बेइंसाफी होगी तो मैं उसे कहूंगा। किसी के लिए अन्याय होगा तो उसकी बात को लेकर आयेंगे और कहेंगे चाहे उसे आप करें या न करें। मैं यह नहीं कहूंगा जैसा कि एक माननीय सदस्य ने कहा कि वह उनके कमरे में कभी नहीं जायेंगे। मैं जाऊंगा और जब-जब अन्याय होता देखूंगा कहूंगा इसमें कोई अफेंस नहीं है। १८ वर्ष की पब्लिक सर्विसेज में कभी किसी ने मुझे इस तरह से नहीं कहा। मैं श्री लक्ष्मी शंकर जी को याद दिलाता हूं एक दफे कमलापति जी के साथ खेर साहब के कमरे में बैठे थे, जैसा लोग मुझे समझते हैं कि मैं नाराज हो जाता हूं। तो उन्होंने भी कहा कि तुम नाराज हो जाते हो जब उठने लगा तो कहने लगे कि बैठो। अध्यक्ष महोदय, सच बतलाता हूं कहने लगे माधव बाबू विरोध पक्ष के लोग मेरे पास काम के लिये, ट्रांस्फर आदि के लिये आते हैं पर माधव बाबू तुम्हारा मैंने ट्रांस्फर

का कभी काम नहीं किया क्या तुम मुझे इतना नीच समझते हो कि मैं लोगों से यह कहा करूंगा कि तुम्हारा फलां-फंला काम किया या सिफारिश की। तो एक वह अवसर था। यह स्तर है इनका। इनकी हिम्मत नहीं है कि जो इमेज के बारे में कहा था उसके बारे में वह मुखालफत करते। आई० सी० एस० और पी० सी० एस० जो हैं उनसे हमारा कोई द्वेष नहीं है, हमारे कहने से सर्विसेज डिमारलाईज होने वाली हैं, तो मैं उसको वापस लेने को तैयार हूं। लेकिन आपने इस सदन में यह कहा था कि हम पी० सी० एस० वालों को आगे नहीं बढ़ाएंगे, क्योंकि ५०-५० साल वाले उसमें हैं। मैं उनको ठीक नहीं समझता। किन्तु मैं आपसे बताना चाहता हूं कि नये-नये डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट आज बेतहाशा दुखी हैं। बहुगुणा जी आप अपने रिजीम में ५८ वर्ष वालों को भी एक्शटेंशन दे रहे हैं। आपका यह डबल स्टैन्डर्ड है। आफिसर्स ट्रेनिंग कालेज में आप एक्स्टेंशन वालों को पकड़ कर ले जाते हैं। हमारी नुक्ता-चीनी डिमारलाईज नहीं करेगी जितना आपका यह डबल स्टैन्डर्ड। आपने कह दिया, बस्ती को बर्बाद कर दिया। १० लाख टन भेजा, पता लगा लिया जाए, वह मेरा क्षेत्र है, वहां के लोग महान् दुखी हैं, एक टेस्ट वर्क भी वहां नहीं शुरू हुआ है, उनकी आह निकल रही ह। गरीबों की आह कभी खाली नहीं जाती है, यह आप याद रखें। वहां एक बांध है चेकवा और नदवा बांध है, उसको आपने नहीं बनवाया, किन्तु थर्ड और फोर्थ इम्पार्टेन्स के कामों को किया जा रहा हैं। बहुगुणा जी कभी हमारी सुनने वाले नहीं है, मिठाई से बोल भले ही दें।

दो शब्द आपसे ला ऐण्ड आर्डर पोजीशन के बारे में कह दूं। कल की एक घटना है, फैजाबाद में विद्यार्थी परिषद् के लोगों को बुरी तरह से मारा गया, गिरफ्तार किया गया, क्योंकि उन्होंने एक्जीक्यूटिव अफसर से कहा था कि तुम अपने व्यक्तिगत काम के लिये सरकारी गाड़ी का प्रयोग न करो। कुछ करो, लेकिन इनके आदमियों के खिलाफ कुछ न करो, तो इस राज्य में सब माफ है। चम्बल घाटी के डकैत सोने की थाली में खाएंगे, लेकिन विद्यार्थियों को डी० आई० आर० और मीसा में बन्द कर दिया जाएगा। आप उदारता थोड़ी बरतो।

हरिजनों के बारे में इन्होंने कुछ कहा। आप बहुत व्यस्त हैं, फिर भी आप सदन में बैठे रहते हैं। किन्तु शायद उस दिन आप नहीं थे। हमारी पार्टी का प्रस्ताव था कि सब कर्ज माफ कर दिए जाएं, बिना कास्ट और क्रीड का ख्याल किये हुए। उसमें हमने यह भी कहा था कि मंगलदेव विशारद कमेटी की रिपोर्ट अमल में लाई जाए। जब आप कहते हैं कि मैं ही सब कुछ हूं, तब ही आपकी नियत में मुझे शक होने लगता है।

अब मैं हरदुआगंज के बारे में कुछ कहना चाहता हूं, मैंने आपकी व्यक्तिगत नीयत पर आघात नहीं किया है। मैंने इससे भी निष्कर्ष निकाला। आपके हाथ से एक चीज गयी और जाने के दो महीने के बाद, छः महीने के बाद बिजली पैदा कर दी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

बीस मेगावाट की हरदुआगंज की पावर है, अब तक पांच मेगावाट से ज्यादा बिजली नहीं बना पाये।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

आपके जमाने में कितनी बिजली बनी।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

मोदी की बात कर रहा हूं।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

(व्यवधान) तबियत खराब होने पर विरोधी की यह हालत है, अच्छी होती तो क्या होता। मेरे कहने का मतलब यह ह कि अगर आपको अधिकार था, आप बेच लेते। उनको क्वेश्चन नहीं करता। लेकिन क्या श्री के० सी० पंत से पूछा, एक ही चिठ्ठी भेजी होती, तो यह श्रेय ले लेते, हमारी बात नहीं मानी। केन्द्र और प्रान्त का एक मत नहीं है जिसकी चर्चा

[श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी]

प्रभुनारायण सिंह जी ने कर दिया। कोई कारण था जिसकी वजह से आपने पूछा नहीं उनसे। (व्यवधान) क्यों घबड़ा गये आप लोग ?

श्री त्रिवेनी--

त्रिपाठी जी, आपका स्वास्थ्य खराब है। कम बोलिए।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी--

कितना भी स्वास्थ्य खराब हो लेकिन जब बात मुनासिब कही जाती है तो कितनी ताकत हो जाती ह। दिल की हालत यह है। बहुगुणा जी ने कहा कि गवर्नर साहब ने इतने वर्ष पहले यह दिया था। इसको आप झुठलाइये। मैंने जो कहा था बिलकुल सही कहा था। अब मैं कहता हूं कि जिस वक्त की रिपोर्ट है उस वक्त रुपये की कीमत १९ पैसे नहीं हुई थी। उसके लिए अर्जेंटाइना, फ्रांस, ब्राजील जाने की जरूरत नहीं है। यहां के काश्तकारों की हालत यह है कि अगर कपड़ा पहनता है तो मालूम होता है कि खूंटी पर टंगा है। उसकी हालत यह है। उस वक्त क्या कीमत थी और आज क्या होगी ? कम से कम उस हिसाब से चौगुने, दस गुने कीमत होगी। उस लिहाज से आप की दलील गिर जाती है। क्षमा करेंगे माननीय मुख्य मंत्री देअर इज ए पालिटिकल गैंग इन इण्डिया लीडिंग दि कंट्री टु डिमारलाइजेशन। यह कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता, हम आह भी भरते हैं तो होते हैं बदनाम। क्यों गैंग कहते हैं ? जयप्रकाश नारायण जी का कुछ नहीं कर सके। आज जितनी मुसीबतें और पाप हैं सब को समेट कर हमारे सर पर लाद दिया। जितनी बातें मैंने कहीं, साक्षात एक शरीरधारी बन कर इन सारी मुसीबतों और शिकायतों का रूप वह आन्दोलन होगा जो आपके सामने जायेगा। आपके पास शक्ति है। आपके पास फौज है। मैं देख रहा हूं कि आपने डेमोक्रैसी का गला घोंट दिया। इतना कह कर मैं अपने विचार समाप्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न यह है कि यह सदन वर्तमान मंत्रि-परिषद् में अपना अविश्वास प्रकट करता है।

चौधरी चरण सिंह--

श्रीमन्, वोटिंग से पहले मैं एक बात कहना चाहता हूं। सुन लीजिये। एक मिनट में कहना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री काशी नाथ मिश्र--

माननीय अध्यक्ष जी, जब आप खड़े हो गये फिर क्या बात है, वोटिंग कराइये ?

चौधरी चरण सिंह--

अध्यक्ष महोदय, मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि हममें से किसी की मंशा चरित्रहनन करने का नहीं है। लेकिन वाकया यह है कि जनता के बहुत बड़े भाग में सन्देह है कि यह गवर्नमेंट सही और ईमानदारी से चल रही है या नहीं और संदेह के मुतालिक माननीय मलिक साहब ने कुछ बातें आपके सामने रखीं। हमेशा हर जगह हर काल में गवर्नमेन्ट के खिलाफ शिकायतें होती हैं। कभी कम और कभी ज्यादा तो गवर्नमेन्ट को चाहिये कि वह इनकी तहकीकात कराये और जनता के मन से संदेह को दूर करे।

"Caesar's wife must be above suspicious."

राज्य तभी चलेगा जब जनता का विश्वास हो (व्यवधान) मैं जानता हूं कि शासन उसी समय अच्छी तरह से चलता है जब जनता का एडमिनिस्ट्रेटर्स और पोलिटिशियन्स पर विश्वास होता है। इसलिये जाहिर है कि यह आपके इंट्रेस्ट में है और शासक दल के इंट्रेस्ट में है कि तहकीकात कराई जाय। (व्यवधान)

(चौधरी चरण सिंह अपने दल के साथ सदन त्याग कर चले गये)

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी—

ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि मंत्रियों की पहले क्या स्थिति थी और अब क्या है? यह एक समिति द्वारा जांच कराई जाय। चाहे वह गवर्नमेंट बाडी हो या लेजिस्लेशन की हो। (व्यवधान)

(श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी अपने दल के साथ सदन त्याग कर चले गये)

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, विरोधी दल की चाल सामने आ गई। यह अविश्वास का प्रस्ताव चरित्र हनन का प्रस्ताव था। वह इसको पास नहीं करा सकते थे। आम जनता जानती है कि कौन कितने पानी में है।

श्री काशी नाथ मिश्र—

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि जब आप वोट ले रहे थे तो माननीय नेता विरोधी दल खड़े हो गये। मैं प्रार्थना करूंगा कि विरोधी दल के वाक आउट को अव्यवस्थित और नियम के प्रतिकूल घोषित कीजिये। (व्यवधान) आप उनकी हाजिरी मान कर वोटिंग कराइये।

श्री अध्यक्ष—

यह संसदीय इतिहास में, मैं केवल इतना ही कहूंगा कि यह तो अविश्वास का प्रस्ताव लाये और इस तरह वाक आउट किया, यह अभूतपूर्व है। प्रश्न यह है कि यह सदन वर्तमान मन्त्रि-परिषद् में अपना अविश्वास प्रकट करता है। (व्यवधान)।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और अस्वीकृत हुआ।)

सदन के अनिश्चित काल के लिये स्थगन का प्रस्ताव

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा—

अध्यक्ष जी, मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन अनिश्चित काल के लिये स्थगित हो।

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि यह सदन अनिश्चित काल के लिये स्थगित हो।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री अध्यक्ष—

अब हम अनिश्चित काल के लिये उठते हैं।

(इसके बाद सदन ८ बजकर २६ मिनट पर अनिश्चित काल के लिये स्थगित हो गया।)

सत्य प्रियसिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ:
३ जनवरी, १९७५।

नत्थी 'क'

(देखिये तारांकित प्रश्न संख्या १ का उत्तर पीछे पृष्ठ ९७० पर)

तालिका

१९७४ में सूखा/बाढ़ प्रभावित जिलों की तालिका तथा टेस्ट वर्क के लिये आबंटित धनराशि

क्रम-सं०	जिले का नाम			टेस्ट वर्क के लिये आबंटित धनराशि
				रु०
१	सहारनपुर	..	..	..
२	बहराइच	..	..	..
३	वाराणसी	..	..	..
४	मुजफ्फरनगर	..	..	..
५	फतेहपुर	..	..	..
६	सीतापुर	..	..	..
७	इलाहाबाद	..	..	१,००,०००
८	बिजनौर	..	..	२,००,०००
९	मेरठ	..	..	
१०	मथुरा	..	..	..
११	कानपुर	..	..	..
१२	मुरादाबाद	..	..	..
१३	उन्नाव	..	..	..
१४	अलीगढ़	..	..	..
१५	बुलन्दशहर	..	..	..
१६	आगरा	..	..	२,००,०००
१७	मैनपुरी	..	..	५०,०००
१८	एटा	..	..	७५,०००
१९	बरेली	..	..	..
२०	बदायूं	..	..	..
२१	शाहजहांपुर	..	..	..
२२	रामपुर	..	..	..
२३	इटावा	..	..	..
२४	फर्रुखाबाद	..	..	..
२५	बलिया	..	..	..
२६	लखनऊ	..	..	..
२७	हरदोई	..	..	..
२८	खीरी	..	..	..
२९	फैजाबाद	..	..	..
३०	सुल्तानपुर	..	..	..
३१	गोरखपुर	..	..	१,५०,०००
३२	देवरिया	..	..	६,००,०००
३३	बस्ती	..	..	५,००,०००

उत्तर प्रदेश विधान सभा

१	२		३
			रु०
३४ आजमगढ़	..	..	..
३५ बहराइच	..	..	..
३६ गोंडा	..	..	..
३७ हमीरपुर	..	..	२,००,०००
३८ गाजीपुर	..	..	..
३९ मिर्जापुर	..	..	५,००,०००
४० बाराबंकी	..	..	..
४१ बांदा	..	..	५०,०००

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

नत्थी 'ख'

(देखिये तारांकित प्रश्न संख्या २ का उत्तर पीछे पृष्ठ ९७० पर)

तालिका–२

बाढ़ ग्रस्त जिलों में गृह निर्माण अनुदान/तकावी हेतु आबंटित धनराशि का विवरण

जिलों के नाम	गृह निर्माण अनुदान	तकावी
१	२	३
	रु०	रु०
गोरखपुर	१५,०५,०००	१३,४०,०००
बस्ती	१०,५५,०००	८,००,०००
आजमगढ	५५,०००	१,३०,०००
देवरिया	१५,१५,०००	५,५०,०००
बहराइच	६,०७५	१,१५,०००
बाराबंकी	७६,०००	१,१५,०००
सीतापुर	२८,४५०	१,२०,०००
बलिया	८०,०००	१,३०,०००
गोंडा	१६,०००	२५,०००
वाराणसी	५,०००	३५,०००
गाजीपुर	५,०००	१,१०,०००
मिर्जापुर	५,०००	१,३० ०००
हमीरपुर	१,०१,५००	२,००,०००

विधान सभा उत्तर प्रदेश

नत्थी 'ग'

(देखिये अतारांकित प्रश्न संख्या ४ का उत्तर पीछे पृष्ठ. ९८२ पर)

सूची

जिला देवरिया के तहसील हाटा के क्षतिग्रस्त मकानों की सूची तथा अब तक दी गयी सहायता का विवरण

क्षतिग्रस्त मकानों का विवरण

नाम विकास खण्ड	संख्या ग्राम	क्षतिग्रस्त/ध्वस्त मकानों की संख्या
१—हाटा	११०	१,४६६
२—पुकरौली	१०४	१,११६
३—रामकोला	६७	४,०४०
४—कप्तानगंज	९५	१,०५६
५—मोतीचक	८३	१,६३०
६—नौरगोया	११७	३,८२५
७—खड्डा	११६	३,०४१
योग ..	६९२	१६,१६४

दी गई सहायता का विवरण

नाम विकास क्षेत्र	ग्रामों की संख्या जिनमें सहायता दी गई	प्राप्तकर्त्ताओं की संख्या	दी गई सहायता की धनराशि (रु० में)
१—हाटा ..	८१	९७१	४४,६८०
२—पुकरौली ..	५१	६२१	२५,६९०
३—रामकोला ..	४३	१,००३	४९,११०
४—कप्तानगंज ..	४४	७२७	२७,८१०
५—मोतीचक ..	३५	५०७	२३,२००
६—नौरगोया ..	८	२००	११,४००
७—खड्डा ..	५५	१,१८०	४७,८१०
योग ..	३१७	५,२११	२,२९,७००

नोट—इसके अतिरिक्त गृह अनुदान का वितरण हो रहा है।

नत्थी 'घ'

(देखिये अतारांकित प्रश्न संख्या १४ का उत्तर पीछे पृष्ठ ९८४ पर।)

प्रभावित ग्रामों तथा उनमें दी गई सहायता का ववरण

क्रम-सं०	ग्राम का नाम			क्षति का प्रतिशत	दी गई सहायता का विवरण				
					नमक (के०जी)	दियासलाई (अदद)	चना (के०जी०)	मिट्टी का तेल (लीटर)	गृह निर्माण (रु० में)
१	२			३	४	५	६	७	८
१	डिगुराजोत	..	..	८९	..	..	..	..	..
२	मुतहा	..	..	८७	१००	१००	१००	१००	७००
३	मलौना खसियारी	..	..	८६	..	..	..	..	..
४	महरौली	..	..	९०	..	..	..	..	..
५	जगरावल	..	..	८७	..	..	..	..	..
६	नरायनजोत	..	..	७८	..	..	..	..	..
७	किडहौना	..	..	८२	..	..	..	..	..
८	मनकाकोट	..	..	८६	६३	६३	६३	१२	..
९	मनकोरा कोन्डरी	..	..	७८	१८१	१८१	१८१	१३३	..
१०	लुहरातारा	..	..	७८	..	..	..	..	..
११	कोलामार मझगवां	..	..	८२	..	..	..	..	..
१२	कोटवा	..	..	८३	..	..	..	..	..
१३	अवरपुरवा	..	..	८३	३७	३७	३७	..	..
१४	हजरिख	..	..	७६	..	..	..	..	..
१५	सेमरी तरहर	..	..	८१	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

१६	यकघरवा	..	..	८१	..	..	..	..	..
१७	मनोहरपुर	..	..	८२	..	..	..	..	..
१८	इमलिया तारा	..	..	७५	१००		१००	१००	..
१९	लालपुर खदीश	..	..	६९	..	..	..	..	..
२०	दहावर कलां	..	..	७५	..	..	..	..	..
२१	इटवरिया	..	..	५८	१५०	१५०	१५०	१५०	..
२२	मलबरिया	..	..	५९	..	..	..	..	..
२३	राजगढ़ गुलरिया	..	..	३८	..	..	..	..	..
२४	मोहम्मदपुर राजा	..	..	३२	..	..	..	..	..
२५	महब्बाशुमाल	..	..	३५	..	..	..	..	..
२६	चक्र भंडार	..	..	६	..	..	..	..	..
२७	खरगोरा गनेश	..	..	१५	..	..	..	..	..
२८	लेवडवा	..	..	२९	१७५	१७५	१७५	१००	..
२९	इकौना	..	..	३४	..	..	..	..	..
३०	चिचड़ी	..	..	४८	..	..	..	..	..
३१	समगढ़ा	..	..	३८	..	..	..	..	..
३२	कुम्हौरगढ़ी	..	..	४३	..	..	..	..	..
३३	बढ़ईपुरवा	..	..	३६	..	..	..	..	..
३४	कोन्डीदीगर	..	..	३२	..	..	..	..	..
३५	कोण्डरीकेवट	..	..	३३	..	..	..	..	..
३६	परसरामपुर	..	..	३५	..	..	..	..	..
३७	भरथापुर	..	..	३३	..	..	..	..	..
३८	बेनीडिहवा	..	..	३८	..	..	..	..	..
३९	गनेशपुर	..	..	३९	..	..	..	..	..
४०	मजेहनिया	..	..	३९	..	..	..	..	..
४१	धरमपुर	..	..	४५	..	..	..	..	..
४२	बेलकर	..	..	३८	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

१	२	३	४	५	६	७	८
४३	भोजपुर	४६	..	..	..	..	..
४४	शिवाजीत	४८	..	..	..	..	..
४५	गनेसीजोत	४५	..	..	..	..	..
४६	बहादुरपुर	४५	..	..	..	..	..
४७	रामपुरकटल	४५	..	..	..	..	..
४८	लक्ष्मणपुर गुडपुरवा	४५	..	..	..	..	..
४९	रामपुर ककरी	८७	..	..	..	..	..
५०	वासकूंडी	८६	..	..	..	..	..
५१	किशनपुर चौरबामारी	८६	..	..	..	..	..
५२	लालपुर महरी	९५	..	..	..	..	..
५३	एलहवा	८८	..	..	..	..	..
५४	शिवगढ़ कला	९०	..	..	..	..	..
५५	मटखनवा	९७	..	..	..	..	..
५६	मनही	८६	..	..	..	..	..
५७	वर्गी वर्गा	८७	..	..	..	..	..
५८	नेवादक भोजपुर	९०	..	..	..	..	..
५९	शाहपुर कलां	९२	..	..	..	..	..
६०	रामनगरा	७८	..	..	..	..	..
६१	हल्ला जोत	८४	..	..	..	..	..
६२	असवा	७७	..	..	..	..	..
६३	टिकइया	७८	..	..	..	..	..
६४	भगहा	८३	..	..	..	..	..
६५	भगड़ा	७८	..	..	..	..	..
६६	गजशेवरी	७७	..	..	..	..	..
६७	गोठवा	७७	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

६८	चकपेहानी	..	..	७६	..	..	..	..	..
६९	असरफनगर	..	..	७६	..	..	..	..	..
७०	महरौली	..	..	८१	..	..	..	..	..
७१	जरकसहा	..	..	६६	२४ १/२	३८	६२	..	..
७२	निलकपुर	..	..	६७	२०	३१	५९	..	..
७३	नरायनपुर	..	..	७४	..	..	..	..	..
७४	पहलादा	..	..	७५	..	५	१९	..	..
७५	केरनिया	..	..	७३	..	..	..	..	..
७६	किशनपुर चन्दनधारी	..	..	६३	..	..	..	..	..
७७	परसा डेहरिया	..	..	७०	..	..	..	..	..
७८	मछरिहवा	..	..	७४	..	..	..	..	..
७९	चहलवा	..	..	६५	..	..	..	..	..
८०	हरिहरपुर रानी	..	..	७०	..	..	..	..	..
८१	मुलरा बजारा	..	..	७४	..	..	..	..	..
८२	अमायल खुर्द	..	..	७४	..	..	..	..	..
८३	खेरा कलां	..	..	६४	..	..	..	..	..
८४	जोगत	..	..	६७	..	..	..	..	..
८५	केशवापुर	..	..	७०	..	..	..	..	..
८६	परशरमपुर	..	..	७४	..	..	..	..	..
८७	अमवा	..	..	५५	३८	७६	९३	..	..
८८	कल्यानपुर	..	..	६०	१	२	१३	..	..
८९	लालपुर रोहरातारा	..	..	५७	३	८	६८	..	..
९०	ठगरहना	..	..	६०	२	१	१०	..	..
९१	सेहनिया	..	..	५५	..	..	..	..	..
९२	मुहम्मदपुर कलां	..	..	५५	..	..	..	..	..
९३	रघुनाथपुर	.	..	५२	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

१	२			३	४	५	६	७	८
९४	खुजहा झुनझुनिया	..	..	५३	५५	८६	१३९	..	..
९५	गोड़पुरवा	..	..	५५	..	..	..	..	..
९६	लखाड़ीवेनीनगर	..	..	५७		..	..	..	..
९७	राजापुरवीरपुर	..	..	६३	..	..	..	..	..
९८	काकल	..	..	६०	..	..	..	..	..
९९	गुडफोरवा	..	..	५५	..	..	..	..	..
१००	मनका चक	..	..	५१	..	..	..	..	..
१०१	चकवा	..	..	५८	..	..	..	..	..
१०२	वेंराफीजोत	..	..	६०	..	..	..	..	..
१०३	केवलपुर	..	..	५१	..	..	..	..	..
१०४	नौवस्ता	..	..	५८	..	..	..	..	..
१०५	अलीनगर धरमनगर		..	५९	..	..	..	..	..
१०६	रेवलिया	..	..	४०	..	..	..	..	..
१०७	कीसेरापूर	..	..	३४	५ १/२	९	५१	..	..
१०८	विशकापुर	..	..	४३	..	१०	४१	..	..
१०९	रामपुरविभौना	..	..	४५	४ १/२	६	३३	..	..
११०	कोनरी खुर्द	..	..	१९	..	..	..	..	..
१११	रामगढ़ी	..	..	४६	..	..	..	..	..
११२	मोहनिरा	..	..	११	..	..	..	..	..
११३	मधुनगर	..	..	१९	..	..	..	..	..
११४	खर्चे	..	..	४८	..	..	..	..	..
११५	खपरिहा	..	..	६	..	..	..	..	..
११६	नकहा धरमनगर	..	..	२४	..	..	..	..	..
११७	खरकहिरा	..	..	४९	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

११८	भवानीनगर	..	..	२३	२२	५	६१ १/२	२१	..
११९	नीवाभारी	..	..	४२	२४ १/२	१	६० १/२	२४ १/२	..
१२०	लखाहीखास	..	..	२६	..	..	..	..	..
१२१	मनकापुर	..	..	१८	५४	२४	..	६४	..
१२२	लक्षमनपुर भगवानपुर	..	..	३५	..	..	..	..	..
१२३	कोन्डरी डेहरिया	..	..	१८	..	..	..	..	..
१२४	ककरदरी	..	..	३२	..	..	..	..	..
१२५	दयाली	..		१९	..	..	..	..	..
१२६	राजापुररानी	..	..	५०	..	..	..	..	..
१२७	भरयावेलभरिया	..	..	४९	..	..	..	..	..
१२८	सुल्तानजोत	..	..	३०	..	..	..	..	..
१२९	पतिझिरा	..	..	१४	..	..	..	..	..
१३०	पूरे अधारी	..	..	२२	..	..	..	..	..
१३१	बनकटवा	..	..	३८	..	..	..	..	..
१३२	भिट्ठी	..	..	२८	..	..	..	..	..
१३३	सलोरपुर	..	..	४९	..	..	..	..	..
१३४	पटनागार गोरा	..	..	४९	..	..	..	..	..
१३५	शिवाजोत	..	..	४५	..	..	..	..	..
१३६	वरगा	..	..	२३	..	..	..	..	..
१३७	यैरिया	.	..	७०	..	..	..	..	..
१३८	शाहनवाजपुर	..	..	५३	..	..	..		
१३९	सोहरवा	..	..	५१	..	..	..	..	..
१४०	बिसवरिया	..	..	६०	..	..	..	..	..
१४१	गुलरिहा	..	..	५८	..	..	..	..	..
१४२	बनवारी गोपालपुर	..	..	५४	..	..	..	..	
१४३	कटैहनादानगिरन्ट	..	..	५३	..	..	..	..	..

उत्तर प्रदेश विधान सभा

१	२	३	४	५	६	७	८
१४४	मकोलिया	..	..	..	..	..	..
१४५	जानीजोत	..	..	..	..	..	..
१४६	विछूला	..	..	..	..	..	.
१४७	चूपरिया	..	..	..	..	..	.
१४८	चुरैला	..	..	..	..	..	..
१४९	झांसा	..	..	..			
१५०	अवराचक	..	..	..	..	..	..
१५१	बेगमपुर	..	..	..	..	..	
१५२	मुराऊपुरा	..	..	..	..	..	..
१५३	मीरपुरकस्वां	..	..	..	..	..	..
१५४	बसीरगंज	..	..	..	..	..	
१५५	मोहम्मदनगर	..	..	..	..	..	..
१५६	राजापुरमाफी	..	..	..	..	..	..
१५७	रसूलीचक	..	..	..	..	..	..
१५८	सुजातपुर	..	..	..	..	..	..
१५९	रतनापुरठेपरहा	..	..	..	..	..	..
१६०	सुरजापुरमाफी	..	..	..	..	..	..
१६१	अलियावलकल	..	..	..	..	..	..
१६२	चन्दरेखाबुजग	..	..	..	..	..	.
१६३	खैराहसन	..	..	..	..	..	..
१६४	रामपुर गोड़वा	..	..	..	..	..	..

पी०एस०यू०पी०—एल० ८९ वि० सभा (५००)—१९७५—८४५।

उत्तर प्रदेश विधान सभा